ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

सिद्धयोग

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संस्थापक एवं संरक्षक: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

सिद्धयोग

(विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता
समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
के अद्वितीय लेखों का संकलन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
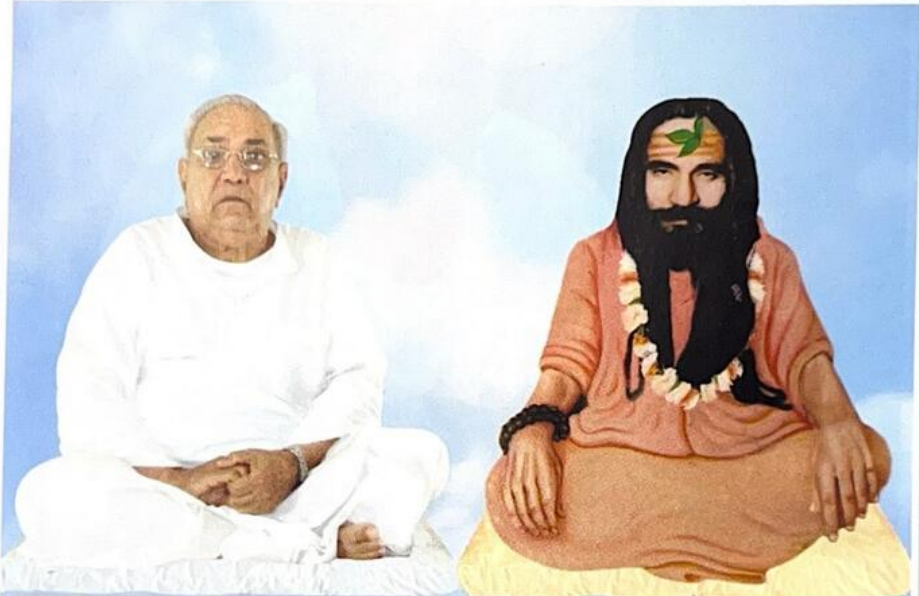
समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग | बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

मैं इस पृथ्वी का नहीं हूँ।
मैं असीम ऊँचाई से आया हूँ, मुझे यहाँ खींचा गया है।

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
(१३ सितम्बर २००९, जोधपुर)

अनुक्रमण

कुण्डलिनी और योग

धर्म और जीवन

अध्यात्म विज्ञान

सनातन धर्म एवं बाइबिल

भारत

ईश्वर एवं उसका साक्षात्कार

युग परिवर्तन

प्रेस विज्ञप्तियाँ एवं पत्राचार

गुरुदेव के प्रवचन

कृष्ण और कल्कि अवतार

सामान्य जानकारी

प्रस्तावना

आज हम विज्ञान प्रधान विश्व में जी रहे हैं। हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति की है। इसने हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हुए, इन्हें आरामदायक और आसान बनाया है, फिर भी शांति और आनन्द हमसे कोसों दूर है। विज्ञान के क्षेत्र में इतनी उपलब्धियों और अनेक भौतिक सुविधाओं के बावजूद, आज हर व्यक्ति एकदम अकेला और मानसिक रूप से अशांत है। अन्तर्मन की गहराई में, हम सभी अपने जीवन में आनन्द ढूँढ रहे हैं। इसका समाधान हमारे भीतर ही है। भारतीय योग दर्शन कहता है- जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है, और जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। अतः जो आनन्द हम बाहर ढूँढ रहे हैं, वह वास्तव में हमारे भीतर ही है। बिना अपने अन्दर की यात्रा किए, हम इस आनन्द को कभी प्राप्त नहीं कर सकते। गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, सिद्धयोग द्वारा, हमारा परिचय आनन्द के श्रोत से करवाते हैं।

ऋग्वेद के अनुसार मनुष्य शरीर की रचना सात प्रकार के कोशों से हुई है- अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश, आनन्दमयकोश, चित्मयकोश और सत्मयकोश। मनुष्य में पहले चार कोश काफी हद तक चेतन हो चुके हैं परन्तु आखिरी तीन कोश जिन्हें हम 'सच्चिदानन्द' भी कहते हैं, अभी चेतन होना बाकी हैं। इन आखिरी तीन कोशों के चेतन हुए बिना आनन्द, मृगतृष्णा के समान ही रहेगा। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग मंत्र जाप और ध्यान पर आधारित ऐसी आध्यात्मिक साधना है जिससे मनुष्य के ये आखिरी तीन कोश भी चेतन हो जाते हैं। परिणामस्वरूप साधक समत्वबोध की स्थिति प्राप्त कर, चिरस्थाई आनन्द का अनुभव करता है।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग का उद्देश्य मनुष्य मात्र का दिव्य रूपान्तरण है। गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अपने जीवनकाल में 'गायत्री' एवं 'कृष्ण' सिद्धि प्राप्त हुई जोकि एक अभूतपूर्व घटना है। महर्षि अरविन्द के अनुसार यदि एक ही जीवन में किसी व्यक्ति को यह दोनों सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं तो वह व्यक्ति मनुष्य मात्र का दिव्य रूपान्तरण कर सकता है। गुरुदेव के आध्यात्मिक गुरु, बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ने उन्हें शक्तिपात की सामर्थ्य देते हुए, इस कार्य को करने का आदेश दिया था। सन् १९९१ से, परम् पूज्य सद्गुरुदेव श्री

रामलाल जी सियाग, शक्तिपात दीक्षा द्वारा साधकों की कुण्डलिनी जाग्रत कर रहे हैं। सहस्त्रार की ओर उर्ध्वगमन करते हुए, यह जाग्रत कुण्डलिनी साधक को न केवल पतंजलि योगदर्शन में वर्णित विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ करवाती है बल्कि छह चक्रों एवं तीन ग्रंथियों का भेदन भी करती है। सहस्त्रार में कुण्डलिनी के अपने स्वामी से मिलन पर साधक 'सच्चिदानन्द' की स्थिति को प्राप्त होता है।

इस पुस्तक में अध्यात्म से संबंधित अनेक विषयों पर अद्वितीय लेख हैं जैसे कि सिद्धयोग, कुण्डलिनी जागरण, शक्तिपात दीक्षा, मोक्ष, मंत्र की शक्ति इत्यादि। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी लेख सद्‌गुरुदेव द्वारा अपनी डायरी में समय-समय पर लिखे गए हैं। इनमें से कुछ लेखों पर सद्‌गुरुदेव ने दिनांक नहीं लिखा है, फलस्वरूप उन लेखों के दिनांक पुस्तक में नहीं दिए जा सके।

हमारे पूरे प्रयास के बावजूद पुस्तक में कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ और छपाई से संबंधित गलतियाँ हो सकती हैं। अगले संस्करण में इनको सुधारने का प्रयास किया जाएगा। संस्था इस पुस्तक को समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग एवं बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) के श्री चरणों में सादर समर्पित करती है।

यद्यपि यह पुस्तक आपको आध्यात्मिकता की खोज में निस्संदेह मदद करेगी परन्तु यह भी, और पुस्तकों की तरह, मोक्ष नहीं दिला सकेगी। उसके लिए तो आपको अपने भीतर ही जाना होगा। सद्‌गुरुदेव की कृपा सदैव ऐसे मुमुक्षुओं के साथ होती है, जो इसे सच्चे मन से ढूँढ रहे हैं। सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की कृपा आपके जीवन में शांति, सद्‌बुद्धि और आध्यात्मिक प्रगति लाए। गुरुदेव सियाग सिद्धयोग को खुले दिल से अपनाएँ और अपने जीवन में अभूतपूर्व बदलाव पाएँ।

-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

१.

मेरे आध्यात्मिक जीवन का उद्देश्य

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

मेरे आध्यात्मिक जीवन का उद्देश्य।

" मैं मानवता में सतोगुण का उत्थान और तमोगुण का पतन करने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मुझ पर किसी भी जाति विशेष, धर्म विशेष एवं देश विशेष का एकाधिकार नहीं है।

राम लाल सियाग
01-01-1991

२.
मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ

(१२ फरवरी १९८८)

मैं, मेरे प्रारम्भिक जीवन में, पूर्णरूप से निरीश्वरवादी व्यक्ति रहा हूँ। ईश्वर नाम की किसी शक्ति में मुझे कोई विश्वास नहीं था। मैं, मानव की एकमात्र सत्ता में ही विश्वास रखता था, क्योंकि प्रारम्भ से ही मैं नौकरी में मजदूर संगठन में काम करने वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में आ गया था, अतः मेरा झुकाव राजनीति की तरफ अधिक होता गया। मेरा मूल रूप से यह स्वभाव रहा है कि मैं अपनी मान्यताओं पर हमेशा अडिग रहता हूँ। इस प्रकार अपने पथ पर चलकर कम से कम समय में, हर काम को पूरा करके, उसके परिणाम की अपेक्षा करता हूँ। मैं ऐसे किसी काम में विश्वास नहीं रखता हूँ, जो लम्बे समय तक कोई परिणाम न दे।

मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार किसी खाद्य पदार्थ को मुख में डालते ही उसके स्वाद की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है, उसी प्रकार हर काम के बारे में प्रत्यक्षानुभूति होनी चाहिए। परिणाम के अभाव में कोई भी काम करना व्यर्थ समझता हूँ। आज की 'बहिर्मुखी' आध्यात्मिक आराधना से कोई प्रत्यक्षानुभूति नहीं होती है। केवल अंधविश्वास के सहारे मनुष्य पूरे जीवन, कर्मकाण्ड में उलझा रहता है, परन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं मिलता। इस युग के चतुर धर्मगुरुओं ने बहुत चतुराई से, मान्यताएँ और सिद्धान्त बना रखे हैं। हर काम का (धार्मिक) परिणाम अगले जन्म में मिलेगा, अतः श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवनभर, तेली के बैल की तरह मनुष्य को चलाते रहते हैं। इस प्रकार संसार के असंख्य मनुष्यों का जीवन निरर्थक बना रखा है। यही कारण था कि मैं, धीरे-धीरे पूर्ण नास्तिक बन गया।

मेरा यह स्वभाव है कि मैं जैसा सोचता हूँ, वही कहता हूँ और जो कहता हूँ वही करता भी हूँ। लोग मात्र कहने को नास्तिक हैं, थोड़ा कष्ट आते ही नास्तिकता काफूर हो जाती है। रूस जैसे देश ने भी दूसरे विश्व युद्ध में सभी धर्मों के प्रार्थना स्थल पुनः खोल दिए थे। परन्तु मैं कालीदास की तरह, अपने हठ पर अड़ा ही रहा। इस प्रकार ज्योंही यह अति अपनी चरम सीमा का अतिक्रमण करने लगी, भारी विस्फोट हो गया। जैसी स्थिति हीरोशिमा वासियों की हुई, मैं ठीक वैसी ही स्थिति में पहुँच गया। ऐसी विचित्र भयावह मानसिक स्थिति हो गई कि कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। सारे भौतिक उपचार असफल हो गए।

ऐसी भयंकर स्थिति हो चुकी थी कि मैं स्वयं यह सोचने लगा कि अब अन्तिम समय

अधिक दूर नहीं है। ऐसी स्थिति में, मेरे एक मित्र श्रीराम दुबे ने गायत्री मंत्र का जप करने की सलाह दी। मैं जिस सत्ता में कुछ भी विश्वास नहीं रखता था, मृत्युभय के कारण सहर्ष जैसा बताया, वैसा करने को तैयार हो गया। उस समय की मेरी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि एक तरफ तो मृत्यु मुँह बाएं खड़ी थी, दूसरी तरफ उस अदृश्य शक्ति से प्राण रक्षा की करुण पुकार कर रहा था। ऐसी स्थिति में 'एकाग्रता' और 'करुण पुकार' कैसी होगी, आसानी से समझा जा सकता है। विधिवत् सवा लाख जप करने का लक्ष्य था और इस प्रकार करीब साढ़े तीन महीने का समय इस कार्य में लगा।

इतने लम्बे समय तक भी एकाग्रता और करुण पुकार की स्थिति निरन्तर एक जैसी ही बनी रही। प्रातः चार बजे उठकर, सवा सात बजे तक और शाम को सात से नौ बजे तक यह जप का कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहता था। जिस दिन सवा लाख जप पूरे हो गए, उसके अगले दिन जप बन्द कर दिया। परन्तु आदतवश प्रातः ही, ठीक चार बजे नींद खुल गई। क्योंकि जप करना नहीं था; आँख बंद किये बिस्तर पर ही लेटा रहा।

सन् १९६८ की सर्दी में प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि से जप प्रारम्भ किया था। अतः काफी सर्दी पड़ रही थी। मैं रजाई ओढ़े आँख बंद किए लेटा हुआ था कि क्या देखता हूँ कि मेरे अन्दर नाभि से लेकर कण्ठ तक एक अजीब प्रकार की सफेद रोशनी ही रोशनी दिखाई दी। रोशनी के अलावा शरीर का कोई अंग जैसे लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट(हृदय) आदि कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा था कि रोशनी आँखों से दिखती है, फिर यह अन्दर कैसी रोशनी है? इसके अतिरिक्त ऐसी भयंकर सफेद रोशनी में भी कोई अंग क्यों दिखाई नहीं देता है?

मैं ज्यों ही उधर अधिक एकाग्र हुआ तो मुझे भँवरे के गुँजन की आवाज सुनाई दी, जोकि नाभि में से आ रही थी। मैंने सोचा पेट में भँवरे की आवाज कैसे आ रही है? ज्यों-ज्यों मैं, उस आवाज की तरफ एकाग्र होता गया, मुझे स्पष्ट सुनाई देने लगा कि गायत्री मंत्र अपने आप ही अन्दर जपा जा रहा है। उसको जपने वाला कोई नजर ही नहीं आया, फिर भी वह अबाध गति से निरन्तर चलता रहा। करीब १०-१५ मिनट तक यह सब देखता, सुनता रहा और अपने मन में सोचता रहा कि कैसी विचित्र बात है कि रोशनी आँख से आती है और आवाज कण्ठ से, परन्तु यह सब उन अंगों से बहुत नीचे ही कैसे सुना और देखा जा रहा है? करीब पाँच बजे स्नानघर में नल का पानी जोर से फर्श (आँगन) पर गिरा तो ध्यान भंग हो गया। बच्चों ने शाम को नल खुला छोड़ दिया था।

इसके बाद उठकर, नित्यकर्म से निवृत्त होकर, अपने कार्य पर चला गया। सोचा, इतने लम्बे समय तक एक ही कार्यक्रम चलने और निरन्तर ध्यान उधर ही रहने के कारण, ऐसा ख्याल रह गया होगा। परन्तु इसके बाद एक ऐसा परिवर्तन आ गया कि मैं पान, सिगरेट, चाय आदि का प्रयोग करने में पूर्ण रूप से असमर्थ हो गया। इनके इस्तेमाल का ख्याल आते ही बहुत भयंकर घबराहट होने लगती थी। इस प्रकार चाहते हुए भी इन वस्तुओं का इस्तेमाल करना असम्भव हो गया। किसी के साथ खाना खाते और जीवन के किसी भी क्षेत्र में मुझे थोड़ा सा भी झूठ बोलते हुए भी भारी घबराहट होती थी।

क्योंकि जप पूर्ण रूप से बन्द कर चुका था, अतः धीरे-धीरे यह स्थिति शान्त हो गई और एक साधारण व्यक्ति की तरह, मैं फिर जीवन व्यतीत करने लगा। परन्तु एक विचित्रता शरीर में आ गई कि जीवन के किसी उद्देश्य पर अगर मेरा दिल-दिमाग अधिक एकाग्र होकर सोचने लगता तो उसका स्पष्ट परिणाम टेलीविजन की तरह, बहुत पहले स्पष्ट नजर आ जाता और आगे चलकर वह घटना ठीक वैसे ही घटती, जैसी मुझे दिखी थी। इस प्रकार करीब सालभर तक, मुझे असंख्य प्रमाण निरन्तर मिलते ही गए और सभी भौतिक जगत् में ठीक वैसे ही घटित होते चले गए, जैसे मुझे दिखे थे।

शब्दों के एक पुँज में ऐसी विचित्र सामर्थ्य और शक्ति होती है, उसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। अतः जिज्ञासावश मैंने फिर आराधना करने की सोची। विचार आया सबसे बड़ी शक्ति की आराधना की जाए। बहुत कुछ सोच-विचार के बाद भगवान् श्री कृष्ण की आराधना करने का निर्णय लेकर, आराधना प्रारम्भ कर दी। भगवान् श्री कृष्ण की तस्वीर, गायत्री की तरह सामने रखकर, कृष्ण के एक बीज मंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया। इसकी न तो कोई निश्चित संख्या तय की और न कोई विशेष उद्देश्य। इसी जिज्ञासा से कि देखें अब क्या होता है, उसी क्रम से, सुबह-शाम करीब ढाई-तीन साल तक जप चलता रहा।

एक दिन विचार किया कि गायत्री मंत्र से तो एक सौ गुणा से भी अधिक संख्या हो चुकी होगी, फिर अभी तक वैसी ही कोई अनुभूति तो नहीं हुई, ऐसा सोचना था कि एक विचित्र स्थिति पैदा हो गई। हर समय एक परछाई तिरछी नजर से दिखाई देने लगी। जब सीधा देखता तो कुछ नहीं दिखता। सोचा, आँखों की कोई बीमारी हो गई है, डॉक्टरों के पास गया, परन्तु ऐसी कोई बीमारी नहीं निकली। वह क्रम और जप चलता रहा। एक दिन विचार आया कि अपने को इस विद्या का कोई ज्ञान तो है नहीं, कहीं व्यर्थ कष्टों में न फँस जाएँ, यह सोचकर मंत्र जप बन्द कर दिया, परन्तु परछाई दिखनी बन्द नहीं हुई। सोचा, इससे कुछ नुकसान तो

नहीं हो रहा है, दिखती है तो दिखने दो।

इस प्रकार जप बन्द किये कुछ ही समय बीता होगा, एक रात्रि को मैं अपने गाँव में सो रहा था कि प्रातः करीब पाँच बजे एक आवाज सुनाई दी और उसने स्पष्ट कहा कि "बेटा अब केवल 'कृष्ण' का जप कर।" यह आवाज स्पष्ट दो बार सुनाई दी। अचानक मेरी आँख खुल गई, पर किसने आवाज दी, कुछ समझ नहीं सका। परन्तु फिर भी मैंने जप बन्द रखा। वर्षों की आदत थी, बिना जप के कुछ अटपटा सा लग रहा था। एक दिन विचार आया, 'बेटा' शब्द से सम्बोधित करके आवाज दी है, अतः जो भी भला-बुरा होगा, उसकी जिम्मेवारी आवाज देनेवाले की ही होगी। मैं इसके दोष का भागी क्यों बनूँगा? इसी विचार के साथ सभी प्रणव हटाकर केवल 'कृष्ण' का जप प्रारम्भ कर दिया। छोटा सा शब्द और फिर गति पकड़ने पर पहले वाले से दस गुणा से भी तेज गति से चलने लगा। करीब साल भर हुआ होगा कि एक बहुत ही विचित्र घटना घट गई।

एक दिन प्रातः करीब चार बजे के आसपास, अर्द्ध जाग्रत अवस्था में क्या देखता हूँ कि मैं एक कमरे में बैठा हूँ। एक वैसा ही दूसरा कमरा है, उसके और मेरे कमरे के बीच में, एक दरवाजा है जिसमें बहुत ही खूबसूरत गुलाबी मखमल का पर्दा ठीक नीचे तक लटक रहा है। ज्यों ही मैंने उस पर्दे की तरफ देखा तो वह मुझे ऐसे हिलते हुए दिखाई दिया, मानो हवा के झोंके से हिला हो। इतने में दूसरे कमरे में से आवाज आई कि देख! इसे हिला मत, यह अलग हो जाएगा। मैंने जवाब दिया कि अगर जोर का, हवा का झोंका आया तो अलग होकर फिर यथास्थिति में आ जाएगा। उधर से आवाज आई इसके हटने का अर्थ समझते हो क्या?

मैंने जवाब दिया कि मैंने अभी जो अर्थ बताया क्या उससे भी भिन्न कोई (अर्थ) होता

है? उधर से आवाज आई, हाँ! इसके हटने का क्या अर्थ होता है देख! इतना कहने के साथ वह पर्दे वाला दृश्य तो गायब हो गया और क्या देखता हूँ, एक मनुष्य जिसका पर्दा हट चुका है, त्रिकालदर्शी हो गया है। इस प्रकार उसका मोह पूर्ण रूप से भंग हो चुका है। उसका अपने-पराये का भेद पूर्ण रूप से खत्म हो चुका है। संसार के सभी प्राणियों को वह एक ही नजर से देखता है, न उसका किसी से मोह है और न ही द्वेष।

इसके तत्काल बाद फिर वही गुलाबी पर्दा दिखने लगता है और फिर उधर से आवाज आती है कि देखा, यह होता है इस पर्दे के हटने का अर्थ। मैंने कहा यह तो बहुत ही अच्छी बात है, इसी के लिए तो यह सब कर रहा हूँ। उधर से आवाज आती है कि यह सब तो ठीक है, परन्तु एक 'योगभ्रष्ट' शब्द होता है, वह क्या होता है, क्या उसके बारे में जानते हो? मैंने कहा, "आराधना के दौरान कोई बुरा काम हो जाता है, उससे आराधना का पतन हो जाता है।" दूसरी तरफ से आवाज आती है, "होता तो कुछ ऐसा ही है, परन्तु इसकी सही परिभाषा यह नहीं है। तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे हैं, पत्नी है, माँ है, वे सभी पूर्ण रूप से तुम पर आश्रित हैं। यह ठीक है कि अगर तुमने इस पर्दे को हटा दिया तो तुम्हारी स्थिति तो ठीक वैसी ही हो जायेगी, जैसी अभी तुमने देखी है, परन्तु इन प्राणियों को इसका ज्ञान थोड़े ही है। जब तुम इस जवानी में इनको छोड़कर चल दोगे तो इनकी आत्मा की करुण पुकार और क्रन्दन तुमको ले डूबेगी और इस प्रकार 'योगभ्रष्ट' हो जाने के कारण, तुम्हारा फिर पतन हो जाएगा। अब आगे जैसा तुम ठीक समझो, वैसा करो।"

यह बात सुनकर मैं बहुत ही दुविधा में फँस गया। पूछा, "आराधना का भी ऐसा भयंकर परिणाम हो सकता है, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।" दूसरी तरफ से आवाज आती है कि कर्मगति बहुत ही गहन है, इसको कोई नहीं जान सकता। कुछ देर विचार करने के बाद, जब मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया कि अब आगे क्या करना चाहिए तो मैंने उसी अदृश्य आवाज से पूछा, "मैं तो कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि अब मुझे क्या करना चाहिए। अतः कृपया मेरा पथ प्रदर्शन करें, मैं वैसा ही करने को तैयार हूँ।"

इस प्रकार मेरे प्रार्थना करने पर, दूसरे कमरे में से आवाज आती है कि जब यह हिल चुका है तो अपने निश्चित समय पर अपने आप हट जाएगा। अब इसे (पर्दे को)हिलाना बन्द करके कर्म क्षेत्र में विचरण करते हुए, अपने कर्तव्य का पालन करो। इन शब्दों के साथ ही साथ दृश्य गायब हो गया और मेरी आँख खुल गई। भोर हो चुकी थी, अतः नित्यकर्म से निवृत्त होकर, भगवान् श्री कृष्ण की तस्वीर को माला पहनाकर छुट्टी ले ली। यह करीब सन् १९७४

के अन्तिम समय की बात है।

इसके बाद १९८३ तक मजदूर संगठनों और राजस्थान किसान यूनियन के विभिन्न पदों पर सक्रिय होकर कार्य करता रहा। परन्तु जिस प्रकार से पूर्ण आस्था आध्यात्मिक जगत् के चमत्कारों से हो चुकी थी, ध्यान उस पर निरंतर ही लगा रहता था। भौतिक जगत् के अधिकतर काम आध्यात्मिक शक्तियों के पथ प्रदर्शन से करने का, एक प्रकार से आदी (अभ्यस्त) हो गया था। यही कारण रहा कि बहुत कम असफलता मिली। जिस काम में हाथ डाला, सफल हुआ। सन् १९८२ में एक प्रकार से स्पष्ट आदेश मिल चुका था कि अब मजदूर संगठन से अलग हो जाओ। परन्तु मैंने उसकी तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार आदेश को न मानने के कारण, मुझे भौतिक जीवन में भारी असफलताओं और निराशा का सामना करना पड़ा। जबकि पहले मैं जिस काम में हाथ डालता था, मेरा हर कार्य सफल होता था।

सौभाग्य से १९८३ के मार्च-अप्रैल में संत सद्गुरुदेव (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) की चरण रज माथे पर लगाने का सौभाग्य मिला। इससे जीवन में एक प्रकार से नई चेतना पैदा होकर, जीवन अधिक आनन्दमय हो गया। परन्तु मेरे जीवन में सुख का समय बहुत ही कम रहा है। जून-जुलाई १९८३ में भारी मानसिक उद्विग्नता का सामना करना पड़ा। जामसर जाने के आध्यात्मिक संकेत निरन्तर होते रहे, परन्तु मैं इन्हें दुर्भाग्यवश समझ नहीं सका। इस
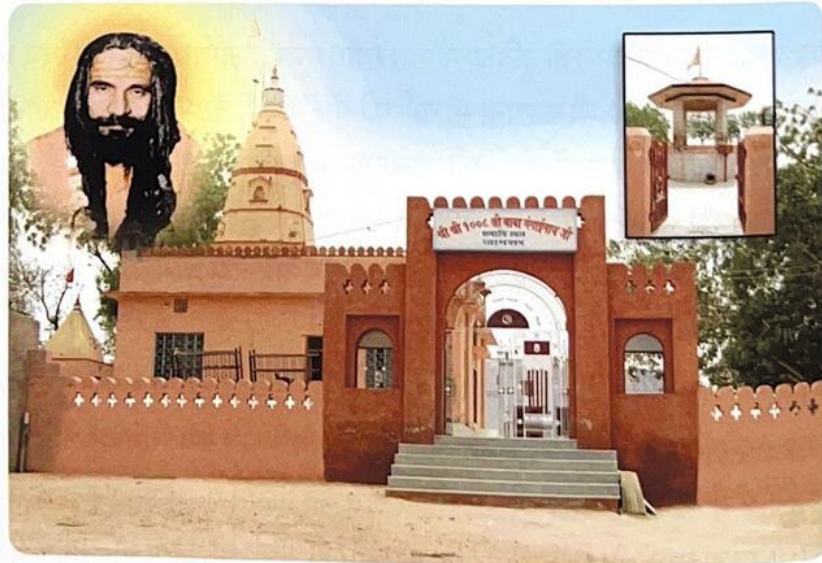
बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी का समाधि स्थल, जामसर (बीकानेर, राजस्थान)

प्रकार २३ अगस्त १९८३ को मेरे कार्य (नौकरी)से अकारण ही अलग हो गया। अकारण ही घर पर बैठा रहा, परन्तु गुरुदेव की शरण में फिर भी नहीं जा सका।
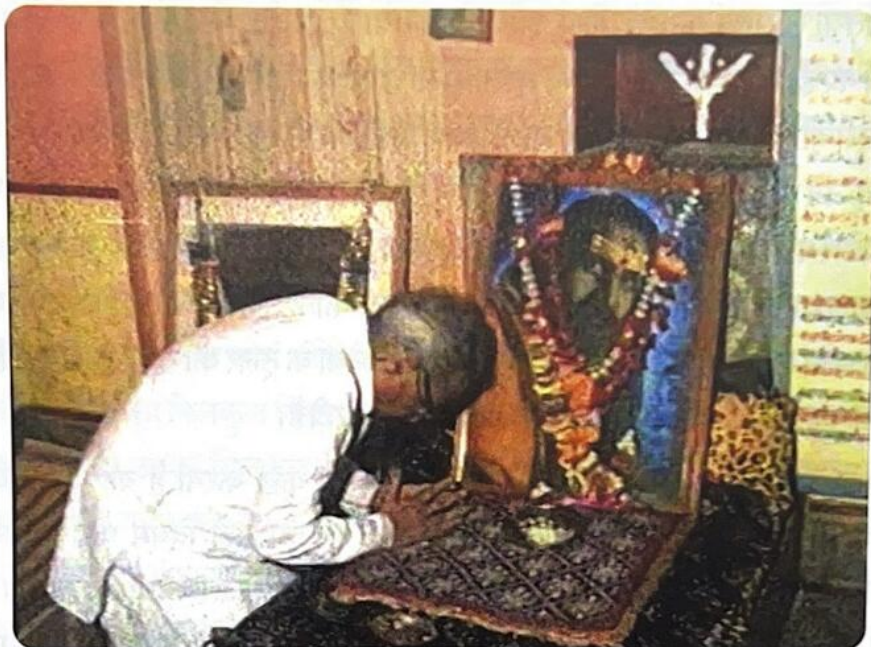
बाबा की समाधि पर गुरुदेव (जामसर, बीकानेर)

दुर्भाग्य से ३१ दिसम्बर १९८३ की कालरात्रि में वह (बाबाजी) भौतिक रूप से, संसार को छोड़कर चले गए। प्रथम भण्डारे की व्यवस्था के लिए सुजानदेसर निवासी बाबा रामनाथ जी जामसर जाते समय बीकानेर स्टेशन के सामने मिले। उनसे बाबा जी के स्वर्गवास की खबर सुनकर तो जमीन ही पैरों के नीचे से खिसकती नजर आई। बाबा रामनाथ जी ने भण्डारे में चलने के लिए काफी आग्रह किया, परन्तु भारी मन से उनसे क्षमा माँगकर, गंगाशहर चला गया। मेरे भौतिक पिता का सहारा भी तीन वर्ष की अल्पायु में ही छीन लिया गया और आध्यात्मिक पिता भी इसी प्रकार चन्द दिनों में ही ईश्वर के सहारे छोड़कर चले गए। इस प्रकार भौतिक जीवन की तरह, आगे का आध्यात्मिक जीवन भी मुझे संघर्षों में ही बिताने को मजबूर कर दिया गया।

भौतिक जीवन का सम्बन्ध तो केवल जीविकोपार्जन तक का ही बहुत सीमित दायरे का था, उसमें भी भयंकर संकटों से गुजरना पड़ा। सुख नाम की वस्तु का आभास तक कभी नहीं हुआ।

इस आध्यात्मिक जीवन का क्षेत्र तो सारे विश्व का मैदान है। भौतिक जीवन की तरह ही

इस जीवन में भी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करना ही पड़ेगा, यह स्पष्ट नजर आ रहा है। केवल ईश्वर के सहारे नितान्त अकेले, इस पूरे संसार के मैदान में बिलकुल विपरीत और विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए, झोंक दिया गया हूँ। अर्जुन की तरह सभी रास्ते अवरुद्ध कर दिये गए हैं। मात्र एक ही संघर्ष का रास्ता खुला छोड़ा गया है। मुझे अकेले ही संसार भर की इन आसुरी वृत्तियों से जूझना पड़ेगा, यह देखकर कभी-कभी भारी निराशा का अनुभव करता हूँ। परन्तु जब पीछे के जीवन पर नजर डालता हूँ कि किस प्रकार नितान्त अकेला ही विपरीत, विषम परिस्थितियों को परास्त करता हुआ, यहाँ तक आ पहुँचा हूँ तो कुछ हिम्मत बन्धती है। इसके अलावा दूसरा सहारा उस अदृश्य असीम सत्ता का है, जिसने पहले ही मेरे जीवन के अन्तिम सांस तक के पूरे जीवन के दृश्य, टुकड़ों में सिनेमा के ट्रेलर की तरह दिखा रखे हैं और आज भी वह पूर्ण सत्ता, पग-पग पर मेरा पथ प्रदर्शन कर रही है।

मुझे प्रमाण सहित यह बता दिया गया है कि जो कुछ करना है वह पूर्व निर्धारित व्यवस्था है, उसमें रत्तिभर की हेराफेरी भी सम्भव नहीं है। मुझे विषम परिस्थितियों में झोंककर, आध्यात्मिक आराधनाएँ करवाकर, कितनी शक्ति अर्जित करवा दी, उसका भी मैं हिसाब लगाने में असमर्थ था कि गुरुदेव अनायास ही इतनी अपार आध्यात्मिक सम्पति विरासत में दे गए, उसका अनुमान लगाना ही मेरे लिए संभव नहीं।

मैं स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष महसूस कर रहा हूँ कि मैं तो मात्र एक कठपुतली हूँ, जिसे असीम सत्ता अपनी इच्छा के अनुसार नचा रही है। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि मैं इस भवसागर के आखिरी किनारे पर पहुँच चुका हूँ। उस दयालु सर्वशक्तिमान ने झुककर मेरा दाहिना हाथ, अपने दाहिने हाथ में मजबूती से थाम लिया है। ऐसी स्थिति में, थोड़ा सा प्रयास करने पर ही, मैं, इस भवसागर से बाहर निकल जाऊँगा। मुझे स्पष्ट समझा दिया गया है कि इसके लिए मेरा प्रयास नितान्त आवश्यक है, उसके बिना कार्य पूरा होना सम्भव नहीं है। कुछ इसी प्रकार के दिशा-निर्देशों और आदेशों के सहारे अकेला ही चल पड़ा हूँ।

मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि किन घाटियों, दर्रों और भयंकर से भयंकर जंगलों और रेगिस्तानों को पार करता हुआ, कैसे ? मैं उस सबसे उच्च शिखर पर पहुँचूँगा ? संसार के लोग इस समय उस पूर्ण सत्ता के बारे में बहुत थोड़ा ज्ञान रखते हैं, परन्तु पिछले कुछ समय से इन प्रयासों में अभूतपूर्व तेजी आई है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उस परमसत्ता का अवतरण हो चुका है और तय क्रमिक विकास के साथ, वह अपना प्रकाश तेजी से संसार में फैला रही है। जैसे-जैसे सूर्योदय का समय नजदीक आता जाता है, तारों का प्रकाश क्षीण

होता जाता है। तारे अपनी सत्ता की इस गिरती हुई स्थिति को बिलकुल पसन्द नहीं करते हैं, परन्तु बावजूद इन सभी तारों के विरोध के, सूर्योदय का समय नहीं घटता। इस प्रकार ज्यों ही वह उदय होता है, सभी तारों की सत्ता उनके यथास्थिति बने रहने पर भी लोप हो जाती है, संसार की आज ठीक वही स्थिति है। विभिन्न मत-मतान्तरों और धर्मों के धर्मगुरुओं को यह स्थिति स्वीकार्य नहीं है, परन्तु तारों की तरह उनका भी कोई वश नहीं चलेगा। सभी पूर्ण असहाय होकर ताकते रह जाएँगे।

महर्षि अरविन्द ने इसे स्पष्टदेख लिया था। अतः उन्होंने उस शक्ति के अवतरण की स्पष्ट घोषणा कर दी थी। मैं स्पष्ट महसूस कर रहा हूँ कि जब मैं प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात करता हूँ तो संसार के लोग अविश्वास के साथ प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरी तरफ देखने लगते हैं। उन्हें मेरी बात का बिलकुल विश्वास नहीं होता। जब मैं 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की बात करता हूँ तो उनको बिलकुल ही विश्वास नहीं होता। प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात हमारे सभी ऋषि कह गए हैं, जिसे पिछली सदी में स्वामी विवेकानन्द जी ने संसार के सामने दोहराया है। 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' के बारे में स्पष्टरूप से संत गुरु नानकदेव जी तथा कबीर साहब खुलासा कर गए हैं परन्तु तामसिक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण, इस युग का मानव इसे समझने में असमर्थ है। इसमें इस युग का मानव दोषी नहीं है, यह तो इस युग का गुणधर्म है।

अगर संसार की ऐसी स्थिति नहीं होती तो उस परमसत्ता का अवतरण सम्भव नहीं होता। जब मैं सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर तथा आत्मा की बात करता हूँ और उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार को सम्भव बताता हूँ तो इस युग के लोग हतप्रभ होकर, मेरी तरफ ताकने लगते हैं। इस प्रकार मैं देखता हूँ कि अगर मैंने माया के लोकों के परे के सत्लोक, अलखलोक और अगमलोक की बात करनी प्रारम्भ कर दी तो इस युग का मानव पूर्णरूप से विद्रोह कर देगा। जब माया के क्षेत्र में रहते हुए होने वाली अनुभूतियों का, इस युग के मानव को ज्ञान होना असम्भव लगता है तो मायातीत लोकों की तो बात पूर्ण रूप से काल्पनिक और असत्य मानेगा। मुझे उपर्युक्त आध्यात्मिक जगत् के विभिन्न लोकों की जानकारी और प्रत्यक्षानुभूति काफी समय से हो रही है।

इस प्रकार की सभी अनुभूतियाँ भौतिक जगत् में भी सत्यापित होती रही हैं परन्तु मैं दूसरों को यह अनुभूति करवाने की स्थिति में नहीं था। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद, जब मेरे से सम्बन्धित लोगों को ये सभी अनुभूतियाँ होने लगी तो मुझे बहुत आश्चर्य होने लगा। क्योंकि मैं

हिन्दू धर्म के दार्शनिक पक्ष से, पहले से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ था, इसलिए मैं इसे बिलकुल नहीं समझ सका। दर्शनशास्त्र के कई लोगों से सम्पर्क करने पर पता लगा कि जब सच्चा आध्यात्मिक संत अपने अन्तिम समय के निकट पहुँच जाता है तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाने के कारण, वह त्रिकालदर्शी हो जाता है। इस प्रकार शक्तिपात द्वारा सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ, किस व्यक्ति को सौंपकर जाना है, इसका पूर्ण ज्ञान उसको हो जाता है। अतः वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर उसे अपने पास बुलाकर समर्पण करवाता है, और इस प्रकार समर्पण के समय शक्तिपात के सिद्धान्त द्वारा अपनी सारी शक्तियाँ, उस व्यक्ति में प्रविष्ट कर देता है।

परन्तु जब तक वह संत भौतिक रूप से इस संसार में मौजूद रहता है, सारी शक्तियाँ मूल रूप से उसी के अधीन कार्य करती हैं। ज्यों ही वह शरीर त्याग करता है, सारी शक्तियाँ उस व्यक्ति में पूर्णरूप से प्रविष्टकर जाती हैं, जिसमें उस संत ने शक्तिपात किया था। इस प्रकार उस व्यक्ति के द्वारा, उन शक्तियों का चमत्कार भौतिक रूप से जब प्रकट होने लगता है तो धीरे-धीरे सारी स्थिति उसके समझ में आती जाती है। इस प्रकार मेरे गुरुदेव ने अनायास ही कृपा करके विरासत में मुझे इतना अपार 'आध्यात्मिक धन' दे दिया है, जिसका पूर्ण ज्ञान मुझे आज की स्थिति में तो नहीं है।

श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है, संसार का कोई भी कार्य कमोवेश अध्यात्म शक्ति से परिपूर्ण है। इस युग के तथाकथित अध्यात्मवादियों ने भौतिक जगत् और आध्यात्मिक जगत् को दो भागों में विभक्त करके, बीच में जो कृत्रिम लक्ष्मण रेखा खींच दी है, वही आध्यात्मिक ज्ञान के लोप होने का मुख्य कारण है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है, "जब भौतिक सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता की अधीनता स्वीकार करके उसके आदेशों का पालन प्रारम्भ कर देगी, उसी दिन धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।"

एक साल के कारावास के काल में श्री अरविन्द को जो अनुभूतियाँ हुई, उनका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि भगवान् ने उन्हें स्पष्ट बता दिया है कि "जो लोग आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उनमें मेरी शक्ति काम कर रही है और जो लोग विरोध कर रहे हैं, वे भी मेरी शक्ति के आदेश से ही कार्यरत हैं। इस प्रकार सारा संसार मेरी ही शक्ति के कारण क्रियाशील है। मेरी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता।" इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार के सभी प्राणी कठपुतली मात्र हैं। जैसे-जैसे परमसत्ता नचाती है, नाचना पड़ता है। इस प्रकार मुझे अच्छी तरह समझा दिया गया है कि जो कुछ होना है, वह पूर्व नियोजित है। उन्हीं

अनुभूतियों के आधार पर, मैं हर क्षेत्र में भौतिक साधन की कुछ भी परवाह किये बिना निकल पड़ता हूँ।

आज तक की प्रत्यक्षानुभूतियों ने मुझे पूर्ण रूप से आश्वस्त कर दिया है कि भौतिक साधनों के अभाव में कोई भी कार्य नहीं रुक सकता। प्रारम्भ से लेकर आज तक की मेरी वस्तु स्थिति पर, जब मैं एक साथ नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मेरे माध्यम से जो सत्ता अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही है, उसमें मेरी बुद्धि और मेरी किसी भी शक्ति के सहयोग का रत्ति भर भी योगदान नहीं रहा है। मेरे न चाहते हुए भी वह परमसत्ता, मुझे अपनी मर्जी से नचा रही है। इसी कारण जो कुछ भी मेरे माध्यम से करवाया जा रहा है, उसके लिए मेरे अन्दर कर्ता भाव बिलकुल नहीं है। इस सम्बन्ध में, मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ। मुझे किसी प्रकार का वहम (भ्रम) नहीं है।

मैंने गुरुदेव-ईश्वर से स्पष्ट शब्दों में प्रार्थना कर रखी है कि मैं हर प्रकार से नाचने को तैयार हूँ, परन्तु उसमें घाटा-नफा आपका ही होगा। मैं तो मात्र मजदूरी का ही अधिकारी हूँ। मुझसे सम्बन्धित लोग श्रद्धा वश जब मुझे किसी कार्य का श्रेय देते हैं तो मैं उन्हें स्पष्ट रूप से कह देता हूँ कि भाई! जो कुछ हो रहा है, वह ईश्वर के आदेश और गुरु कृपा के कारण हो रहा है। मैं तो मात्र आप लोगों की तरह, साधारण प्राणी हूँ। जो कुछ हो रहा है, उसका श्रेय लेने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। मेरी महत्त्वाकांक्षाएँ तो मुझे कुछ और ही करने को प्रेरित करती हैं, परन्तु परिस्थितियों वश मुझे करना कुछ और ही पड़ रहा है। अतः मैं यह झूठा श्रेय लेने को बिलकुल तैयार नहीं हूँ।

३.

मुझे परमसत्ता ने संसार के सामने पूर्णरूप से प्रकट होने को मजबूर कर दिया है।

(१७ जून १९८८)

मैं संकोचवश, संसार के सामने प्रकट होने में कुछ झिझक रहा था परन्तु उस परमसत्ता ने, भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से, मुझे अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए मजबूर कर दिया। सारे रास्ते बन्द करके एक ही रास्ता खुला रखा, जिस पर मुझे चलाना चाहती है। मैंने प्रार्थना की, "हे प्रभु! संसार के लोग स्वांग रचे बिना मानने वाले नहीं हैं। मैं गृहस्थ जीवन से अभी निवृत्त भी नहीं हो सका हूँ, अतः संन्यास धारण करने की हालत में नहीं हूँ और इस युग के लोग स्वांग के बिना मुझे स्वीकार नहीं करेंगे।"

इस पर मुझे स्पष्ट दिखाया गया कि, "देख! मैंने तेरा तन और मन सारा रंग दिया है, बनावटी स्वांग की तुझे जरूरत नहीं है। कर्ता तो मैं हूँ, परन्तु माध्यम तो तुझे ही बनना पड़ेगा। मैंने तुझे प्रारम्भ से अन्त तक सब कुछ सिखा और दिखा दिया है, फिर झिझक कैसी?" मुझे स्पष्ट आदेश है कि, "जो कुछ होना है, सभी पूर्व निश्चित है। सारे माध्यम तुझे स्वयं निश्चित समय पर निरन्तर मिलते जाऐंगे।" इस प्रकार मुझे भौतिक संसार के सामने स्वयं प्रकट होना ही पड़ेगा।

मुझे स्पष्ट बताया गया कि आदिकाल से जितनी भी शक्तियाँ भौतिक संसार में अवतरित हुई हैं, सभी ने अपनी शक्ति का स्वयं ही परिचय दिया है। संसार का मानव इस स्थिति में कभी नहीं रहा है कि उसने अपने आप उस शक्ति का पता लगाया हो। इसके विपरीत संसार की तामसिक शक्ति कभी नहीं चाहेगी कि सात्त्विक शक्ति का उदय, भौतिक जगत् में हो, अतः उनका विरोध करना जरूरी है। विरोध जितना प्रबल होगा, प्रकाश भी उतनी ही तेज गति से फैलेगा।

रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि सूर्योदय हो, परन्तु आदिकाल से दिन और रात का क्रम चल रहा है। प्रकाश और अन्धेरा दोनों ही उस परमसत्ता की देन हैं। अन्धेरे के बिना प्रकाश का ज्ञान नहीं होता और प्रकाश के बिना अन्धेरे का। दोनों एक दूसरे के विरोधी दिखते हुए भी, एक दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं। संसार चक्र आदिकाल से अबाध गति से चलता आया है। यह किसी से प्रभावित नहीं होता। अतः अनादिकाल से सतयुग, त्रेता, द्वापर और

कलियुग का क्रम चलता आया है और अनादि काल तक चलता रहेगा।

हर युग का एक निश्चित समय होता है। इस क्रमिक परिवर्तन में कोई शक्ति रुकावट नहीं डाल सकती है, ये सब बातें मुझे बहुत अच्छी प्रकार बता दी गई और समझा दी गई हैं। मुझे जीवन के प्रारम्भकाल से ही ये बातें दिखाई और समझाई जाती रही हैं, परन्तु मैं आज तक इसे मानवीय कल्पना या मन का खेल समझता रहा। इनमें भी सच्चाई है, मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ। परन्तु ये सारी बातें जब भौतिक रूप से सत्य होने लगी तो मैं बहुत आश्चर्यचकित हुआ। अनेक घटनाओं को भौतिक रूप से सत्यापित करके मुझे समझा दिया गया है कि जो कुछ बताया गया है, पूर्ण सत्य है और भौतिक रूप से घटेगा।

भारत में ही कार्य करने की मेरी कल्पना पर, स्वामी विवेकानन्द जी के पत्र पढ़ाकर, पानी फेर दिया। स्वामी जी ने संस्था के लोगों को अमेरिका और पेरिस से जो पत्र लिखे, उनसे मेरा मोह भंग हो गया। स्वामी जी ने लिखा था-

"भारत में तो मुझे रोटी के एक टुकड़े के साथ, डलिया भर गालियाँ मिलती हैं। मैं कहीं भी जाऊँ प्रभु मेरे लिए काम करनेवालों के, दल के दल भेज देते हैं। वे लोग भारतीय शिष्यों की तरह नहीं हैं। अपने गुरु के लिए प्राणों तक की बाजी लगाने को प्रस्तुत हैं। पाश्चात्य देशों में प्रभु क्या करना चाहते हैं, यह तुम हिन्दुओं को कुछ ही वर्षों में देखने को मिलेगा।

तुम लोग प्राचीनकाल के यहूदियों जैसे हो और तुम्हारी स्थिति नांद में लेटे हुए कुत्ते की तरह है, जो न खुद खाए और न दूसरों को ही खाने देना चाहता है। तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है। रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हँडिया बर्तन ही तुम्हारा शास्त्र। अपनी तरह ही असंख्य सन्तानोत्पादन में ही तुम्हारी शक्ति का परिचय मिलता है।"

दूसरे पत्र में इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हुए स्वामी जी ने अन्त में कह डाला "क्या तुम यह कहना चाहते हो कि ऐसे जाति भेद, जर्जरित, कुसंस्कार युक्त, दया रहित, कपटी, नास्तिक, कायरों में से जो केवल शिक्षित हिन्दुओं में ही पाये जा सकते हैं, एक बनकर जीने-मरने के लिए, मैं पैदा हुआ हूँ? मैं कायरता को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। कायर तथा राजनीतिक मूर्खतापूर्ण बकवासों के साथ, मैं अपना सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। मुझे किसी प्रकार की राजनीति में विश्वास नहीं है। ईश्वर तथा सत्य ही जगत् में एकमात्र राजनीति है। बाकी सब कूड़ा करकट है।"

स्वामी जी के उपर्युक्त पत्र दिखाकर मेरा मोह भंग कर दिया गया। मनुष्य शरीर ही

सर्वोत्तम मंदिर है। मुझे प्रकाशप्रद शब्द के द्वारा सब कुछ मेरे अन्दर ही मिला। मुझे बताया गया कि यीशु भी शरीर को ही सर्वोत्तम मंदिर मानता था। यीशु ने कहा था- "मैं मनुष्यों की प्रशंसा नहीं चाहता। मैं यह जानता हूँ कि तुममें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। मैं अपने पिता का अधिकार लेकर आया, पर तुमने मुझे ग्रहण नहीं किया। दूसरा कोई अपने ही अधिकार से आए तो तुम उसे ग्रहण करोगे। एक ही परमेश्वर है। तुम उस परमेश्वर से प्रशंसा प्राप्त करने की कोशिश नहीं करते, पर एक दूसरे की प्रशंसा ग्रहण करते हो। तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? यह न सोचो कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊँगा। तुम पर दोष लगाने वाला 'मूसा' है, जिस पर तुमने आशा रखी है। यदि तुमने मूसा पर विश्वास किया होता तो तुम मेरा भी विश्वास करते क्योंकि मूसा ने मेरे विषय में लिखा है। मूसा ने जो लिखा है, उस पर जब तुम विश्वास नहीं करते तो मेरे संदेश पर क्यों विश्वास करोगे?"

मरने से पहले यीशु ने जिस सहायक की बात कही है- "पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो क्योंकि तुम्हारे साथ रहता है, वह तुममें होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूँगा। मैं तुम्हारे पास आता हूँ। थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूँ। और तुम भी जीवित रहोगे।" भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में जिस अमर जीवात्मा की बात कही है, यीशु का इशारा उसी तरफ है। परन्तु कालचक्र के प्रभाव से धीरे धीरे सारा ज्ञान लुप्त हो गया है। पैगम्बर और अवतार में यही अन्तर होता है।

पैगम्बर संदेश लेकर आता है, वह केवल संत पुरुषों को प्रभावित करता है तथा उनकी आस्था ईश्वर के प्रति दृढ़ करता है, जिससे कुछ काल के लिए शान्ति स्थापित होती है परन्तु राक्षसवृत्ति के लोग पैगम्बर की बात नहीं मानते। यीशु और मूसा के साथ यही हुआ। परन्तु अवतार का होना युग परिवर्तन का संकेत है। सत्युग, त्रेता, द्वापर इसके प्रमाण हैं। कलियुग की समाप्ति भी उस परमसत्ता के पृथ्वी पर अवतरण के बाद होगी। 'सत्लोक' और 'अलखलोक' की शक्तियाँ त्रेता और द्वापर में अवतरित हो चुकी हैं। कलियुग की समाप्ति के लिए अब 'अगम लोक' की सर्वोच्च शक्ति को अवतार लेना होगा।

महर्षि अरविन्द के अनुसार वह शक्ति २४ नवम्बर १९२६ को इस पृथ्वी पर, मानव रूप में अवतरित हो चुकी है। अपने क्रमिक विकास के साथ वह शक्ति १९९४ के प्रारम्भ में संसार के सामने प्रकट हो जायेगी। इस प्रकार इस सदी के अन्त तक पूरे संसार के मानव, उस शक्ति

के आकर्षण में आ जाएंगे। इस प्रकार २१ वीं सदी के प्रारम्भ में, भारत विश्व का धर्म गुरु बन जाएगा। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १८वें अध्याय के ६६वें श्लोक में जो उपदेश दिया है, संसार पूर्णरूप से उसका पालन प्रारम्भ कर देगा। भगवान् ने कहा है -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। १८:६६

इस प्रकार कलियुग का अंत होकर सतयुग प्रारम्भ हो जाएगा। इस प्रकार श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी सत्य होगी- "एशिया जगत्-हृदय की शान्ति का रखवाला है, यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को 'अध्यात्म शक्ति' के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

उपर्युक्त भविष्यवाणी सत्य तभी होगी, जब भारत पश्चिमी जगत् को अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा पूर्ण रूप से आकर्षित कर लेगा।

४.
शर्म, संकोच और हठधर्मिता की आखिर नहीं चल सकी।

(१५ जून १९८८)

मैं प्रारम्भ में ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि मैंने कभी किसी धार्मिक ग्रन्थ का अध्ययन नहीं किया। मुझे जो कुछ भी प्राप्त हुआ, उसमें किसी प्रकार का मानवीय प्रयास या बुद्धि का लेशमात्र भी सहयोग नहीं रहा। अनायास सब कुछ मिलता ही गया। इस युग का मानव अचम्भा करता है कि बिना प्रयास और बिना इच्छा के ऐसा कैसे सम्भव है? परन्तु यह एक सच्चाई है। विभिन प्रकार की शक्तियाँ और सिद्धियाँ आती गईं, परन्तु मुझे किसी अदृश्य शक्ति ने तनिक भी उनकी तरफ आकर्षित नहीं होने दिया।

इसी दौरान त्रिगुणमयी माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) से साक्षात्कार हुआ। प्रथम व्यक्ति आगे सीधा चल रहा था, वह अप्रभावित सीधा चलता हुआ मेरे सामने से गुजर गया। उसके बारे में मुझे विश्वकर्मा की अनुभूति करवाई गई। दूसरे नम्बर पर चलने वाला व्यक्ति बहुत चंचल था। उसका हर अंग निरन्तर गतिमान था। क्षण भर में वह सब दिशाओं में देख लेता था। उसके बारे में मुझे नारायण की अनुभूति करवाई गई। इतने में तीसरा व्यक्ति यह कहता हुआ भागता आया कि 'सब को मार आया।' उस समय वे तीनों ठीक मेरे सामने से गुजर रहे थे। बीच वाले व्यक्ति ने कहा, "उसे मार सकते हो क्या?" उसने कहा, हाँ। इस पर उसने मेरी तरफ इशारा कर दिया। वे तीनों दक्षिण से उत्तर की तरफ जा रहे थे और मैं बांई तरफ, पूर्व की ओर मुँह किये रास्ते के किनारे, थोड़ी दूरी पर खड़ा था। तीसरा व्यक्ति, बिना देखे ही मेरी तरफ चल दिया। दो-चार कदम आगे बढ़कर ज्यों ही उसने मेरी तरफ देखा, संकोचवश, शर्मिन्दा होकर ठिठक कर, खड़ा हो गया और दूसरे नम्बर वाले व्यक्ति से बोला, "इनकी तो मैं बहुत इज्जत करता हूँ, इन्हें कैसे मार सकता हूँ?" उसने जो कुछ कहा, उसका ऐसा ही कुछ भाव था। इस पर दूसरे व्यक्ति ने उसे, मजाक के रूप में शर्मिन्दा किया और तीनों चले गए। इस प्रकार 'अगम लोक' तक की सभी शक्तियों से साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूतियाँ निरन्तर होती ही चली गईं।

एक संत मत को मानने वाला बुढ्ढा व्यक्ति, जहाँ मैं काम करता था, मेरी सीट के पास आकर बैठ जाता और इस प्रकार की अनुभूतियाँ बड़ी दिलचस्पी से पूछता रहता था। एक बार

आराधना के दौरान किसी व्यक्ति ने कह दिया कि गीता का हर श्लोक स्वयं सिद्ध मंत्र है, उसे सिद्ध करने की जरूरत नहीं, उसका जप तत्काल चमत्कार दिखाता है। इस पर मैंने गीता के ११वें अध्याय का ३८,३९,४० वें श्लोकों (तीनों का) जप प्रारम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में एक हृष्ट-पुष्ट नौजवान मेरे सामने प्रातः ५ बजे, जब मैं अर्द्ध जाग्रत अवस्था में, आँख बन्द किये लेटा हुआ था तो हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। मैं उसे जानता नहीं था इसलिए पूछा तुम कौन हो? उसने कहा 'सोऽहम्', मुझे सुनाई दिया- 'सोहन' क्योंकि मैं समझा इसका नाम सोहन है, अतः अपना नाम बताया है। मैंने कहा, "भाई, मैं तो तुम्हें नहीं जानता, क्यों आये हो?" उसने कहा-आपने बुलाया है। मैंने उससे कहा, "तुम्हें किसी ने गलत कह दिया है, मैं तुम्हें जानता ही नहीं, मेरा तुमसे क्या काम हो सकता है? तुम चले जाओ।" इस पर वह चला गया।

आगे चलकर मुझे 'सोऽहम' के बारे में बताया गया तो मैं समझा कि वह कोई सोहन नहीं था, इस सम्बन्ध में उस संत मत के बुजुर्ग व्यक्ति से, मैंने जब पूरी जानकारी ली तो मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। मैं गहरे विचार में कई दिन डूबा रहा कि शिव प्राणी मात्र का संहार करता है, फिर मुझको क्यों नहीं मार सकता है? आखिर मैं क्या हूँ, कौन हूँ?

एक बार मैं कई दिनों के लिए गाँव गया हुआ था। यह विचार उस समय बहुत गहराई तक पहुँच गया। एक दिन मेरा छोटा पुत्र 'यूहन्ना' नामक छोटी पुस्तक कहीं से उठा लाया। कोई काम न होने से, उसे पढ़ने लग गया। उस ईसाइयों की पुस्तक में बहुत आनन्द आया। मैं नहीं समझ सका इसमें ऐसी क्या बात है, जो मुझे इतना प्रभावित कर रही है परन्तु मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया। पुस्तक का वह अंश जो मेरा उत्तर था उसके नीचे मैंने लाइनें खींच दी। मैं इस उत्तर से भारी अचम्भे में पड़ गया। शर्म और संकोच के कारण, मैंने आज तक इस बात को किसी से नहीं कहा।

इसके पहले भी मुझे विदेशी लोगों से सम्पर्क के दृश्य दिखाये जाते थे और वह क्रम आज भी जारी है। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी को लिखा पत्र इसी का कारण है, परन्तु उस पत्र में भी, मैंने वस्तुस्थिति का वर्णन मात्र करने का प्रयास किया है, संकोचवश इस संदर्भ में एक शब्द भी नहीं लिखा। यूहन्ना नामक उस छोटी पुस्तक का वह अंश, जो मेरे प्रश्न का उत्तर था इस प्रकार है- "पिता की ओर से, मैं तुम्हारे पास एक सहायक भेजूँगा, सत्य का आत्मा, जिसका उद्‌गम पिता से है। जब वह सहायक आ जाएगा, तब वह मेरे विषय में गवाही देगा और तुम भी मेरे विषय में गवाही दोगे क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ हो।"

मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ- "यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ। यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा, पर यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। जब वह आ जाएगा तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा। पाप के विषय में इसलिए कि इस संसार के लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया। धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याय के विषय में इसलिए कि इस संसार का शासक दोषी ठहराया गया है। मुझे तुमसे और भी बहुत बातें कहनी हैं, पर अभी तुम उन्हें सहन नहीं कर सकोगे। जब वह सत्य का आत्मा आएगा, तब वह सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। जो बातें वह सुनेगा, वही कहेगा। वह होने वाली घटनाओं के विषय में तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा। जो पिता का है वह मेरा है, इसलिए मैंने कहा कि आत्मा मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा।"

इस बात को संकोचवश मैं आज तक नहीं कह सका और यहीं अध्यात्म जगत् में कार्य करना आरम्भ कर दिया। परन्तु मुझे बताया गया था कि मुझे यहाँ सफलता नहीं मिलेगी। उसी छोटी पुस्तक यूहन्ना में इस संदर्भ में यीशु ने स्वयं एक बात कही थी, उसकी तरफ इंगित करके मुझे समझाया गया। यीशु ने स्वयं यह साक्षी दी थी कि एक नबी का आदर उसकी मातृभूमि में नहीं होता, परन्तु मैंने हठधर्मिता से यहीं काम प्रारम्भ कर दिया। पूरे प्रयास के बावजूद, मैं सफल नहीं हो सका। मुझे असफलता की आशंका पहले से थी और इस संदर्भ में बता भी दिया गया था, परन्तु संकोचवश मैं इसे किसी के सामने प्रकट नहीं कर सका।

समय बहुत थोड़ा है और कार्यभार बहुत अधिक सौंपा गया है। यह सार्वभौम कार्य है। मानव मात्र का इससे सम्बन्ध है। केवल भारत ही इसका अधिकारी नहीं है। मेरा सोचना गलत था, असफलता मिलना गलत नहीं है। मैं तथा मुझसे आध्यात्मिक दृष्टि से जुड़े लोग जिस आनन्द की अनुभूति करते हैं, उसके बारे में यीशु के शिष्य यूहन्ना ने कहा है-"यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता जाता नहीं है, उसका आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय।"

उपर्युक्त तथ्य मुझे बहुत प्रभावित कर रहे हैं। भौतिक जगत् में इस एक रास्ते के अलावा सभी रास्ते बन्द कर दिए गए हैं। अतः अब मैंने संकोच और शर्म को छोड़कर, संसार के सामने

स्पष्ट रूप से प्रकट होने का फैसला कर लिया है। वह परमसत्ता अगर मुझ जैसे तुच्छ प्राणी के माध्यम से यह सारा खेल खेलना चाहती है तो मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ? मेरी हठधर्मी चलेगी नहीं, अतः मैं पूर्ण रूप से समर्पित होकर, हर आदेश का पालन करने को तैयार हो गया हूँ। अब यथाशीघ्र पश्चिमी जगत् के देशों से सम्पर्क करने के प्रयास करूँगा।

मुझे समझाया जा रहा है कि संसार के लोग बड़ी ही उत्सुकता से इन्तजार कर रहे हैं। मात्र संदेश पहुँचने की देर है। इसका आभास तो लोगों को बहुत पहले से होने लगा था। संसार के कई संत इस संदर्भ में भविष्यवाणी कर चुके हैं। संसार के साथ-साथ, मैं चाहता हूँ कि इसका प्रचार-प्रसार भारत में भी हो क्योंकि मेरा शरीर इसी पवित्र मिट्टी से बना है। मुझे महर्षि श्रीअरविन्द की यह भविष्यवाणी बहुत अधिक प्रभावित कर रही है-"क्रम विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाएगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना शुरू किया था। इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्रफल सार्वभौम होगा तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही करेगा।"

इसके अतिरिक्त श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी बिलकुल सत्य है-'२४ नवम्बर १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके, विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।'

गीता के अक्षय आनन्द को संतों ने 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की संज्ञा दी है। मेरे गुरुदेव ने उस 'अक्षय आनन्द' को पृथ्वी पर लाकर संसार के प्राणियों में बाँटने का कार्य मुझे सौंपा है। उसको अब मैंने निसंकोच विश्वभर में बाँटने का फैसला कर लिया है। भारत के निर्धन लोग रोटी-कपड़े के चक्कर से निकलें तो इस तरफ ध्यान जाए! लम्बी गुलामी ने भी लोगों को भारी गुमराह कर दिया है। इस प्रकाश के संसार में फैलते ही विश्व, भारत की तरफ आकर्षित होगा और क्रमिक विकास की गति से शीघ्र उन्नति के शिखर पर पहुँच जाएगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में संसार की सारी शक्तियाँ उत्थान में पूर्ण सहयोग देने लगेंगी।

५.

मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता।

(०३ मार्च १९८८)

हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ बारम्बार कहते हैं, अपने आपको पहचानो। मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, यह जाने बिना प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव है। हमारे धर्म का मूल मंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है। एकमात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति संभव है।

इसी संदर्भ में महर्षि अरविन्द ने भी कहा है, "हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है। उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। मैंने उन सबका पालन करना आरम्भ कर दिया है, एक मास के अन्दर ही अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है, जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सबकी उपलब्धि कर रहा हूँ।"

हमारे धर्म के पतंजलि आदि सभी ऋषियों ने कहा है, अगम लोक तक सारा ब्रह्माण्ड हमारे अन्दर है। अन्तर्मुखी आराधना के बिना, उस परमसत्ता का साक्षात्कार असम्भव है। परन्तु उस पथ पर चलने के लिए 'चेतन पुरुष' का पथ प्रदर्शन और सहारा नितान्त आवश्यक है। इसके अभाव में यह यात्रा पूर्णरूप से असम्भव है। केवल उपदेश, कर्मकाण्ड, शब्दजाल, प्रदर्शन, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास तो अन्धेरे में भटकाने में सहयोगी हैं। किसी भी सत्य की खोज में, यह बहिर्मुखी आराधना पूर्ण रूप से असफल है। यही कारण है, आज संसार के आम लोगों का विश्वास धर्म से उठ गया है। धार्मिक ढोंग से अधिक परेशान होकर लोगों ने विद्रोही रूप तक धारण कर लिया है।

उस परमसत्ता का प्रकाश प्रथम व्यक्ति में होना बहुत कठिन है। एक दीपक के जलने के बाद तो उससे संसार भर में असंख्य दीपक जलाकर उस परमसत्ता के प्रकाश से पूरे संसार को जगमगाया जा सकता है। वह प्रथम थर्मल पॉवर-हाऊस ही चालू करना कठिन है। मैं इस कार्य को केवल मात्र मानवीय प्रयास से सम्भव नहीं मानता। इस कार्य को सम्पन्न होने में जन्म-जन्मान्तरों के कर्मफल, सीधी ईश्वर कृपा और चेतन संत सद्गुरु का आशीर्वाद जरूरी है। दूसरे शब्दों में यह कार्य ईश्वर की, स्वयं की शक्ति से ही संभव है और किसी भी प्रकार, यह

कार्य संभव नहीं।

हर युग में उसी परमसत्ता ने स्वयं अवतरित होकर संसार से अन्धकार को भगाया है। महर्षि अरविन्द को भी अलीपुर जेल में सीधा आदेश देकर पथ-प्रदर्शन किया था। श्री अरविन्द ने उस परमसत्ता के साक्षात्कार के सम्बन्ध में लिखा है- "मैं अपने निज के लिए कुछ भी नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे अपने लिये न मोक्ष की आवश्यकता है, न अतिमानसिक सिद्धि की। यहाँ मैं इस सिद्धि के लिये जो यत्न कर रहा हूँ, वह केवल इसलिए कि पार्थिव चेतना में, इस काम का होना आवश्यक है और यदि यह पहले मेरे अन्दर न हुआ तो औरों में भी न हो सकेगा।"

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट होता है कि प्रथम चेतना ही कठिन है। उस परमसत्ता की चेतना का सीधा अर्थ होता है, उस परमशक्ति का अवतरण। मैं पहले ही स्पष्ट कह चुका हूँ कि मेरे अन्दर जो परिवर्तन आया और आज मेरे माध्यम से, जो कुछ करवाया जा रहा है, उसमें मेरा स्वयं का, रत्ती भर भी प्रयास नहीं रहा है। इस प्रकार मैं देख रहा हूँ, मेरी तनिक भी इच्छा नहीं थी, फिर भी उस परमसत्ता ने मुझे माध्यम बनाकर अपनी मर्जी से चलाना प्रारम्भ कर दिया। जो थोड़ी कमी थी, वह कार्य मेरे संत सद्गुरु जो कि उस परमसत्ता के अवतार थे, के आशीर्वाद ने पूर्ण कर दिया। इस प्रकार मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, वह ईश्वर कृपा और मेरे संत सद्गुरुदेव के आशीर्वाद का फल है। शुद्ध ज्ञान के क्षेत्र ब्रह्मलोक और सहस्त्रदलकंवल तक का आरोहण, मेरे अनेक जन्मों की आराधना का फल है, परन्तु सत् लोक, अलख लोक और अगम लोक का आरोहण गुरु कृपा के बिना असम्भव था।

'नाम अमल' या 'नाम खुमारी' का आनन्द अगम लोक से आता है। अतः मेरे माध्यम से जो सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द, जिसे संतों ने 'नाम खुमारी' या 'नाम अमल' की संज्ञा दी है, लोगों को प्राप्त हो रहा है, वह मात्र ईश्वर कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद से ही सम्भव हो सका। यह कार्य मानवीय प्रयास से सम्भव नहीं था। मुझे मूलाधार से सहस्त्रदल कंवल तक की यात्रा में कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ और आगे का असम्भव आरोहण गुरु कृपा से अनायास ही हो गया। इस प्रकार मैं देखता हूँ कि मैंने इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर, इस जन्म में कुछ नहीं किया। अतः जो कुछ मैं बाँटने निकला हूँ, उसमें मेरा कुछ भी नहीं है।

मेरे गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से जो सात्विक धन मिला है, वही संसार में बाँटने निकल पड़ा हूँ। इस समय मुझे दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है। मेरे परिवार के प्रति

अभी काफी जिम्मेदारियाँ हैं। परमार्थ के कार्य के साथ इन जिम्मेदारियों को निभाने का भी स्पष्ट आदेश है। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि जब तक परिवार का कर्ज पूरा न चुका सकूँ, उनसे विमुख होने का अर्थ होगा, योगभ्रष्ट होना। हमारे वेदों में वर्णित, उस प्रकाशप्रद शब्द से ही यह पूर्ण आरोहण सम्भव हो सका। मैं देख रहा हूँ कि श्री अरविन्द ने जिस चेतना की बात कही है, उसकी सफलता मुझे वेदों में वर्णित 'प्रकाशप्रद शब्द' से ही प्राप्त हुई है।

मैं देख रहा हूँ कि मुझसे जुड़ने वाले सभी लोगों को प्रत्येक के कर्मफल के अनुसार मूलाधार से लेकर उस परमसत्ता तक सभी शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो रहा है। इस युग में जबकि संसार के आम लोगों का धर्म पर से विश्वास प्रायः उठ चुका है, मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के माध्यम से ऐसा होना एक आश्चर्य है।

प्रारम्भ में मुझे खुद को इस पर विश्वास नहीं हुआ, परन्तु उस परमसत्ता के पग-पग पर, पथ प्रदर्शन से मुझे समझने और विश्वास करने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। सत्युग को छोड़कर बाकी युगों में धर्म निरन्तर ह्रासोन्मुख ही रहा। अब अचानक यह परिवर्तन होना स्पष्ट रूप से युग परिवर्तन का संकेत है। संसार में सात्विक सत्ता के पूर्ण लोप के साथ-साथ तामसिक शक्तियों के मरणासन्न पहुँचने की मुझे जो प्रत्यक्षानुभूति करवाई गई, वह भी इस बात का स्पष्ट संकेत है। पुनः उस परमसत्ता के उदय होने पर संसार में बची-खुची शक्तियाँ समाप्त होने में कोई समय नहीं लगेगा।

मुझे संसार में होने वाले इन परिवर्तनों का काफी पहले संकेत मिल चुका था, परन्तु मैं उसे समझ नहीं सका। परन्तु उस परमसत्ता ने जब अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया तो धीरे-धीरे, मेरे सामने सारी स्थिति स्पष्ट होती चली गई। घटनाक्रम जिस प्रकार करवट ले रहा है, मैं देख रहा हूँ, मुझे अधिक समय तक भारत में नहीं रहने दिया जाएगा।

जीवन कम है और कार्य अधिक। यही कारण है छह वर्ष पहले सेवानिवृत्त होने को मजबूर कर दिया। संसार के आम मानव को यह सब सुनकर विश्वास नहीं हो सकता, परन्तु यह एक सच्चाई है। मैं कुछ दिन इस क्षेत्र में प्रवेश करते हुए भी भागता रहा, परन्तु मुझे जबरदस्ती धकेल दिया गया। धीरे-धीरे झिझक खत्म हो रही है, जब मैंने देख लिया कि जो कुछ करना निश्चित है, उसे तो करना ही पड़ेगा। जो पथ पहले ही दिखा दिया गया था, उस पर चलने में अधिक कठिनाई नहीं हो रही है।

पहले कुछ असम्भव सा लग रहा था, परन्तु पूर्व निर्दिष्ट घटनाएँ आश्वस्त कर रही हैं कि गलत नहीं चल रहा हूँ। मेरे अलावा, मेरे से सम्बन्धित लोगों का उन्हीं घटनाओं का

पुनरावलोकन, इस बात को और सत्यापित कर रहा है। मैं जब विदेशी लोगों से सम्पर्क की बातों पर विचार करता था तो मुझे सब असम्भव और काल्पनिक लगती थीं। परन्तु घटनाक्रम के परिवर्तनों ने ऐसी सभी अनुभूतियों को सही होने का स्पष्ट संकेत दे दिया है। संसार के लोग महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी को, जब उनकी कल्पना कहते हैं तो मुझे बड़ा अजीब सा लगता है।

उन्हें जो स्पष्ट बताया जाता था, वह बात श्री अरविन्द कहते थे। भविष्य के बारे में उन्होंने स्पष्ट कहा है- "अगर सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो जाए तो भी मैं उस विनाश के परे, नये सृजन की राह देखूँगा। आज संसार में जो कुछ हो रहा है, उससे मैं जरा भी नहीं घबराया हुआ हूँ। मैं जानता था कि घटनाएँ, ऐसा रूप लेंगी। रही बात बौद्धिक आदर्शवादियों की, मैंने उनकी आशाओं को नहीं स्वीकारा, इसलिए मैं निराश भी नहीं होता।"

मुझे जब स्पष्ट आदेश मिलते थे तो बड़ा अचम्भा होता था। कुछ असम्भव और अजीब सा लगता था परन्तु जब से श्री अरविन्द को पढ़ा, मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मैं गलत नहीं हूँ। श्री अरविन्द की इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया- "भगवान् की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय-ही-विजय होगी।"

भौतिक विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि अगर पूरी शक्ति को सृजन में लगा दिया जाए तो संसार में किसी वस्तु का अभाव नहीं रहेगा। पूरा संसार जब उस सात्विक चेतना से प्रभावित हो जाएगा तो फिर द्वेष, हिंसा, घृणा और वैरभाव का संसार से अन्त हो जाएगा। इस प्रकार प्रेम, दया, सद्भाव का वातावरण पूरे संसार में हो जाएगा। जो कुछ मुझे बताया जा रहा है, जब वह परिणाम संसार के लोगों को आध्यात्मिक आराधना से प्रत्यक्ष मिलने लगेगा तो पूरा संसार उस परमसत्ता के चुम्बकीय आकर्षण में अनायास ही आ जाएगा। उस समय भगवान् श्रीकृष्ण की वह बात सत्य प्रमाणित हो जायेगी, भगवान् ने कहा था- "सब धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूँगा।"

६.

जीवन का रहस्य

(२ जुलाई २००३, बीकानेर)

मैं चेतना के सर्वोच्च शिखर से, अर्थात् असीम ऊँचाई से नीचे की तरफ छिटका। एक आठ-नौ माह के बालक के रूप में, ऊपर की तरफ मुँह किए हुए, बहुत लम्बे समय तक नीचे की तरफ चलता रहा। निरन्तर एक भय लग रहा था कि जमीन पर गिरते ही हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाएगी। इसलिए दोनों हाथ-पैरों को सिकोड़कर दम साधे मौत के क्षण का इंतजार करता रहा। अचानक पाया कि मैं गुलाबी फूलों के ऊपर जा गिरा। ऐसा लगा कि असीम वेग के साथ नीचे आते-आते वेग धीरे-धीरे शांत हो गया और मैं ऊपर की तरफ मुँह किए हुए ही गुलाबी फूलों पर अधर से लेट गया। तब शरीर को ढीला छोड़कर चैन की सांस ली।

अभी-अभी थोड़े समय से अनुभव कर रहा हूँ कि मैं इस पार्थिव चेतना में बिलकुल नया और अजीब प्राणी हूँ। मैंने भी अरविन्द के दिव्य रूपान्तरण को पढ़ा तो समझ में आया कि रहस्य क्या है ? श्री अरविन्द ने इस संबंध में कहा है:-

God Spirit Meets God Matter.

Divine transformation: No more stomach, no more heart, no more blood circulation, no more lungs, all this will disappear and be replaced by a play of vibrations representing these organs of the centers of energy. They are not the essential reality. They simply give it a form or support in certain given circumstances.

(ईश्वरीय आत्मा का ईश्वरीय पदार्थ से मिलन।

दिव्य रूपांतरण- न पेट, न हृदय, न रक्त संचार, न फेफड़े, यह सब गायब हो जाएँगे और इनकी जगह, इन अंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले ऊर्जा केंद्रों के कंपन ले लेंगे। वे आवश्यक वास्तविकता नहीं हैं, वे बस कुछ विशेष परिस्थितियों में इसे एक रूप या समर्थन देते हैं।)

सन् १९६८-६९ में मैंने सवा लाख गायत्री मंत्रों का अनुष्ठान कर, हर मंत्र के साथ स्वाहा के साथ हवन कुंड में आहूतियाँ देकर किया था। इसके बाद मुझे ध्यान के दौरान, मेरे शरीर में दूधिया रंग का सफेद दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। इस प्रकाश में मुझे असीम शांति का

अनुभव हुआ। उस समय मुझे भी विचार आया था कि मेरे अन्दर यह प्रकाश कैसा? लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट(हृदय) आदि कोई भी अंग दिखाई नहीं दे रहा है। जब मैंने इन अंगों को देखने का प्रयास किया तो उस प्रकाश में मुझे भँवरे के गुँजन की ध्वनि सुनाई दी। जब मैं आवाज के केन्द्र बिन्दु तक पहुँचा तो पाया कि वह तो गायत्री मंत्र की ध्वनि थी, जो मेरी नाभि के अन्तर में से निरन्तर निकल रही थी।

७.
वीर जननी का आशीर्वाद
(०३ फरवरी १९८८)

०३ जनवरी १९८८ को मैं भौतिक रूप से अनाथ हो गया। तीन वर्ष की उम्र में पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के कारण, मेरी जननी ने दोहरा भार वहन करते हुए, मुझे कभी भी पिताजी का अभाव महसूस नहीं होने दिया। अपना पूरा जीवन उसने रणभूमि में जूझते हुए बिताया। पूरे जीवन में उसके अन्दर मैंने कभी निराशा के भाव नहीं देखे। एक वक्त रूखा-सूखा खाकर भी उसने रणभूमि में हार नहीं मानी। यहाँ तक कि आखिरी समय में भी मृत्यु का वरण करने के लिये बहादुरी से आगे बढ़कर उसका स्वागत किया।

मृत्यु भय से संसार में न डरने वाले चन्द लोग ही जन्मे हैं। मैंने अनायास या यूं समझो कि किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से उसकी हर आज्ञा का पालन किया। भारत भर के सभी धार्मिक तीर्थ स्थानों पर दो-दो, तीन-तीन बार उसे ले गया। उस समय मुझे ईश्वर की सत्ता तक में विश्वास नहीं था, परन्तु फिर भी उसके हर आदेश का पालन करते हुए, मैंने उसे तीर्थों का भ्रमण करवाया। उसके रहते, मैं नहीं समझा परन्तु अब समझ रहा हूँ कि मेरी आध्यात्मिक उन्नति का कारण, मेरी जननी का आशीर्वाद मात्र है।

उसका अदम्य साहस और वीरता का गुण ही मेरे खून में मौजूद होने के कारण, मैं आज इस स्थिति में पहुँच सका हूँ। उसकी मृत्यु ने मुझे पूर्ण रूप से अपने ध्येय तक पहुँचने की हिम्मत बँधाई। ऐसी विजयी और साहसी जननी के खून से मेरी उत्पत्ति हुई। अब मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि संसार की कोई शक्ति मेरा रास्ता नहीं रोक सकती है। मैं अबाध गति से अपने पथ पर बढ़ता हुआ, अपने गन्तव्य तक पहुँचूँगा ही। इसका पूर्ण श्रेय केवल मेरी वीर जननी को ही है।

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संस्थापक एवं संरक्षक- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
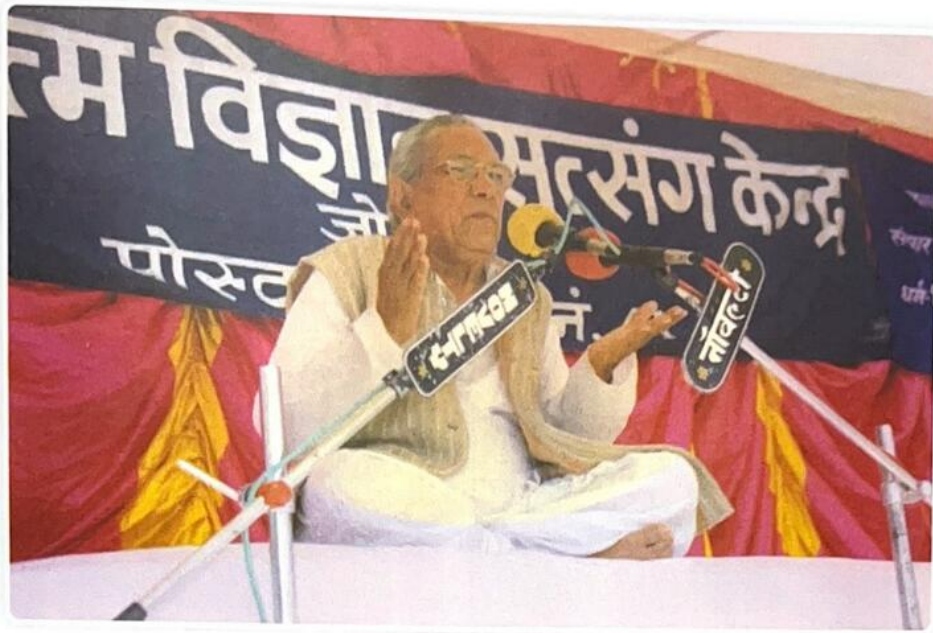
१४ फरवरी २०००, बायतु, बाड़मेर, राजस्थान
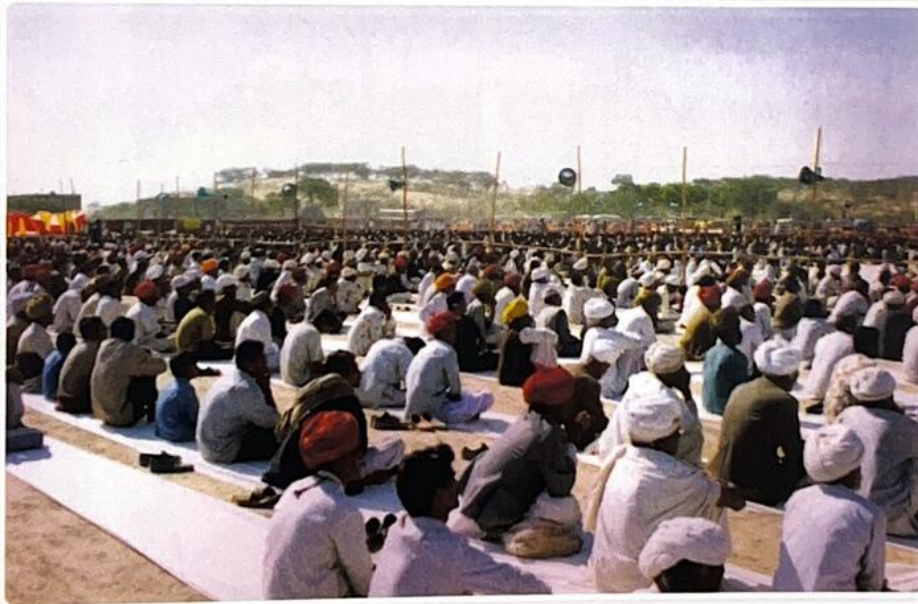
१५ फरवरी २०००, बायतु, बाड़मेर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२४ जुलाई २००२, जोधपुर, राजस्थान- गुरुपूर्णिमा पर्व।
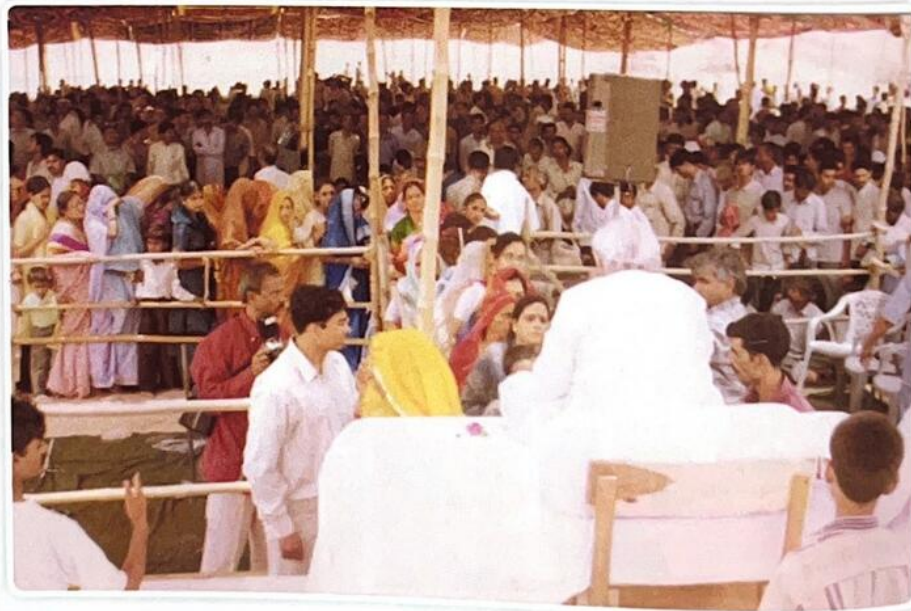
२४ जुलाई २००२, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान गुरुपूर्णिमा पर्व पर शिष्यों को आशीर्वाद देते गुरुदेव।

२४ नवम्बर २००२, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
अवतरण दिवस समारोह।
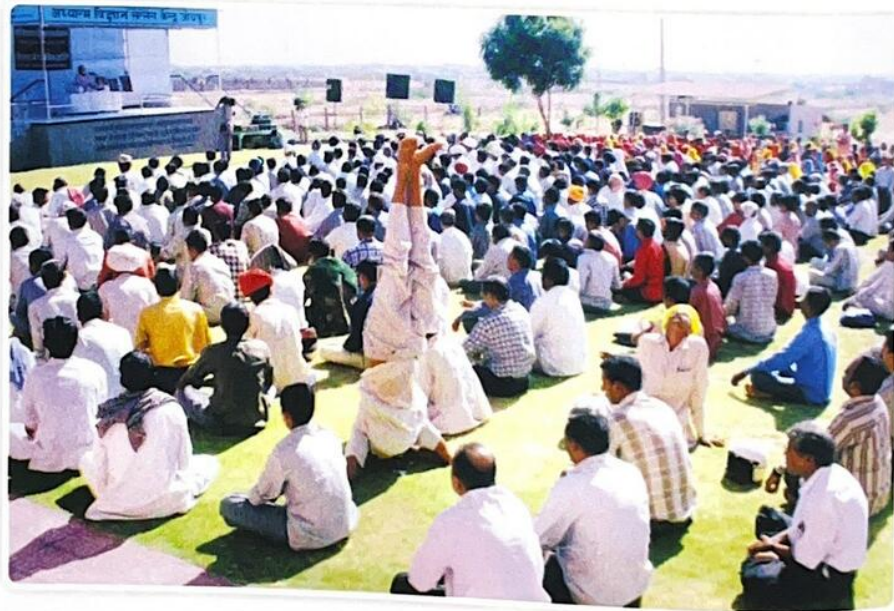
०६ नवम्बर २००३, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम

८.

गुरु क्या है?

(०५ फरवरी १९८८)

गुरु

८.

गुरु क्या है?

(०५ फरवरी १९८८)

हमारे धर्मशास्त्रों में 'गुरु' की बहुत महिमा गाई गई है। गुरु का पद ईश्वर से भी बड़ा माना गया है। इसलिए वेदान्त धर्म को मानने वाले, आजकल संसार के लोग जिन्हें हिन्दू कहकर संबोधित करते हैं, गुरु शिष्य-परम्परा को बहुत महत्त्व देते हैं। हमारी इसी मान्यता के कारण कुछ चतुर लोगों ने इस पद पर एकाधिकार कर लिया है। एक वर्ग विशेष के घर में जन्मा बच्चा, जन्म से ही गुरु पैदा होता है। धर्म और गुरुपद का जितना दुरुपयोग इस युग में हो रहा है, आज तक कभी नहीं हुआ। गुरुओं की एक प्रकार से बाढ़ आ गई है। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध, इस युग में पूर्ण रूप से आर्थिक आधार पर टिका हुआ है।

आज का गुरु, पूरे परिवार का स्वतः गुरु बन जाता है। यह सम्बन्ध आर्थिक शोषण पनपा रहा है, अतः हमें इस सम्बन्ध में गहराई से चिन्तन करने की आवश्यकता है। हमारे शास्त्रों में गुरुपद की जो महिमा की गई है, वह गलत नहीं हो सकती, फिर इस पद की दुर्गति क्यों हो रही है? हमें इस बात की असलियत का पता लगाना चाहिए कि आखिर गुरु बला क्या है? क्या ऐसे ही गुरुओं का, हमारे शास्त्रों में गुणगान किया गया है? हमारे संतों ने गुरु के बारे में जो कुछ कहा है, उन्हीं गुण-धर्म का प्राणी गुरु कहने योग्य है। संत कबीर ने गुरु की महिमा करते हुए कहा है कि -

कबीरा धारा अगम की, सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िए सदा, स्वामी संग लगाय।।

इसके अलावा सभी संतों ने गुरु की महिमा एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर गाई है।

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो मिलाय।।

उपर्युक्त बातों से यही नतीजा निकलता है कि जिसमें गोविन्द से मिलाने की शक्ति है, मात्र वही गुरु कहलाने का अधिकारी है, गुरु पद का अधिकारी है। यह काम जो नहीं कर सकता, उसे कम से कम गुरु कहलाने का तो अधिकार नहीं है, बाकी वह कुछ भी बन सकता है। गुरु एक पद है। इस पर पहुँचने के लिए कई बातों की आवश्यकता है। जैसे भौतिक जगत् के पदों के लिए निर्धारित भौतिक ज्ञान की जरूरत है, उसी प्रकार इस पद पर पहुँचने के लिए

आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है, क्योंकि यह पद आध्यात्मिक है।

जिस प्रकार लोहे में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में से गुजरने के बाद चुम्बकीय आकर्षण पैदा होता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य गहन आध्यात्मिक आराधनाओं से गुजरता हुआ, अपने संत सद्गुरु की शरण में जाता है। गुरु अगर पात्र समझता है तो अपनी शक्तिपात उस शिष्य में कर देता है, जोकि पूर्णरूप से समर्पित हो चुका होता है। इस प्रकार की शक्तिपात से मनुष्य 'द्विज' बन जाता है। इस प्रकार वह गुरु पद का अधिकारी तो हो जाता है, परन्तु उसे वह पद तब तक प्राप्त नहीं होता, जब तक उसका गुरु, पंच भौतिक शरीर में रहता है। ज्योंहि गुरु का शरीर शान्त होता है, वे सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ, उस शिष्य के शरीर में प्रविष्ट हो जाती हैं। इस सभी क्रियाओं का ज्ञान केवल गुरु को ही होता है।

जिस शिष्य में शक्तिपात किया जाता है, वह गुरु के रहते हुए अनभिज्ञ ही रहता है। ज्यों ही गुरु का शरीर शान्त होने पर सारी शक्तियाँ उसमें प्रविष्ट होकर, भौतिक जगत् में अपना प्रभाव दिखाने लगती हैं तो धीरे-धीरे उसे आभास होने लगता है। इस प्रकार जिसे अनेक जन्मों के कर्म फल के प्रभाव से ईश्वर कृपा और गुरु के आशीर्वाद से गुरु पद प्राप्त होता है, वही सच्चा आध्यात्मिक गुरु होता है। जिस प्रकार कर्मफल के अनुसार विशेष योग्यता पाने के बाद भौतिक पद की प्राप्ति होती है, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक गुरु का पद प्राप्त होता है। भौतिक पद का समय निर्धारित है परन्तु आध्यात्मिक जगत् का गुरुपद जीवन भर के लिए प्राप्त होता है।

ऐसा गुरु भौतिक जगत् में अपना कार्य पूर्ण करके, जब अपने अन्तिम समय के पास पहुँच जाता है तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है। वह त्रिकालदर्शी बन जाता है। अपनी इस विचित्र स्थिति के कारण, वह उस उपयुक्त पात्र को एक आसन पर बैठा ही खोज लेता है जिसे वह गुरु पद सौंपकर, इस भौतिक संसार से विदा लेना चाहता है। अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल से उसे अपने पास बुलाकर समर्पण करवाता है और फिर आश्वस्त होकर प्रभु के ध्यान में लीन हो जाता है। इस प्रकार जिस व्यक्ति को गुरु पद प्राप्त किया हुआ होता है, वही सच्चा गुरु होता है। यह खेल मनुष्य के जन्म से पहिले ही निश्चित किया हुआ होता है, इसमें मनुष्य का प्रयास अधिक सहायक नहीं होता।

सच्चा गुरु वही होता है जो पूर्ण रूप से चेतन हो चुका होता है, उसका सीधा सम्बन्ध ईश्वर से होता है। इसलिए जो प्राणी ऐसे गुरु से जुड़ जाता है, उसे तत्काल आध्यात्मिक अनुभूतियाँ होने लगती हैं। आध्यात्मिक शक्तियाँ उसका भौतिक जगत् में पथ प्रदर्शन करने

लगती हैं। इस प्रकार वह प्राणी भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से बहुत ऊपर उठ जाता है। तामसिकता उससे कोसों दूर भागती है। इस प्रकार शान्त, स्थिर और निर्भय, वह प्राणी अपना ही नहीं, संसार के अनेक जीवों का कल्याण करता हुआ, अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। यह होता है आध्यात्मिक संत सद्गुरुदेव की कृपा का प्रभाव। ऐसा संत पुरुष, जो मनुष्यों को द्विज बनाने की स्थिति में पहुँच जाता है, गुरु कहलाने का अधिकारी होता है।

गुरु पद कोई खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है। यह पद न किसी जाति विशेष में जन्म लेने से प्राप्त होता है, न कपड़े रंगकर स्वांग रचने से, न किसी शास्त्र के अध्ययन से। यह तो मन रंगने की बात है। ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी अधिक ऊर्जा का पुँज है, ऐसी परमसत्ता से जुड़ने के कारण, गुरु पारस बन जाता है। अतः जो मनुष्य इस पारस के सम्पर्क में आता है, सोना बन जाता है। ऐसे गुण-धर्म के बिना जितने भी गुरु संसार में विचरण कर रहे हैं, सभी ने अपने पेट के लिए विभिन्न स्वांग रच रखे हैं। संसार के भोले प्राणियों को भरमाकर अपना स्वार्थसिद्ध कर रहे हैं। आध्यात्मिक जगत् में धन की मुख्य भूमिका नहीं होती। यह तो श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, दया, और समर्पण का जगत् है, धन की भूमिका इस जगत् में गौण है। सच्चा संत सद्गुरु भाग्य से ही मिलता है, इसमें मानवीय प्रयास अधिक सहायक नहीं होते हैं।

९.

आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है?

(०६ फरवरी १९८८)

जब प्राणी संसार में जन्म लेता है तो वह सांसारिक ज्ञान से, पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है। वह सर्वप्रथम अपने माता पिता से भौतिक जगत् का ज्ञान प्राप्त करता है, उसके प्रथम गुरु, उसके माता पिता होते हैं। इसके बाद विद्यालय में जाकर, भौतिक विद्या का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके बाद वह भौतिक जगत् का ज्ञान, विद्या-गुरु से विद्यालय में प्राप्त करता है। इसके बाद ज्यों ज्यों उसका ज्ञान बढ़ता जाता है, उसे आध्यात्मिक जगत्, अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है। वह धीरे धीरे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार उसे जैसा आध्यात्मिक गुरु मिलता है, उसी स्तर का ज्ञान प्राप्त करके, उस पथ पर चलने लगता है।

देवयोग से, अगर रास्ता सही मिल जाता है तो कुछ हद तक अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है। अगर सीधा रास्ता नहीं मिलता है तो परिणामों के अभाव में मनुष्य की आस्था धर्म पर से हट जाती है, वह इसे वर्ग विशेष की जीविका चलाने का व्यापार मात्र मानकर, इस पथ से विमुख हो जाता है। इस प्रकार संसार में ऐसे भ्रमित लोगों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। इस प्रकार इस व्यवसाय में लगे धर्मगुरु, तुच्छ दान माँगकर किसी प्रकार अपना जीवन चलाने को विवश हो जाते हैं।

इस प्रकार के आध्यात्मिक गुरुओं की दशा देखकर, संसार के लोगों के दिल में धर्म के प्रति ग्लानि पैदा हो जाती है। जब संसार में यह स्थिति चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब भगवान् को अवतार लेना पड़ता है। यह वही स्थिति होती है, जिसका वर्णन भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में, इन शब्दों में किया है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्॥ ४:७

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥ ४:८

इस समय संसार में धर्म वैसी स्थिति में पहुँच चुका है, अतः ईश्वर के अवतरित होने का यह उपयुक्त समय है। संसार भर के प्रायः सभी संतों ने उस शक्ति के प्रकट होने के संकेत दे दिये हैं। महर्षि अरविन्द ने तो भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार लेने की निश्चित तिथि की घोषणा

कर दी थी। श्री अरविन्द के अनुसार वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ सन् १९९३-९४ तक संसार के सामने प्रकट होकर अपने तेज से पूरे जगत् को प्रभावित करने लगेगी। इस प्रकार २१ वीं सदी में, पूरे संसार में एक मात्र सनातन धर्म की ध्वजा फहरायेगी।

जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे ही चेतन व्यक्ति के माध्यम से, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है। इस प्रकार के संत सद्‌गुरु के प्रकट होने पर संसार का अन्धकार दूर होने में कोई समय नहीं लगता। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है। ईश्वर के धाम का रास्ता मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है। हमारे सभी संत कह गए हैं कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड (शरीर) में है। अतः अन्तर्मुखी हुए बिना, उस परमसत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार असम्भव है।

श्री अरविन्द ने भी कहा है- "हिन्दू धर्म के शास्त्रों में बताई गई विधि से, मैंने अपने अन्दर ही उस पावन पथ पर चलना प्रारम्भ कर दिया है, जिस पर चलकर उस परमसत्ता से साक्षात्कार संभव है। एक माह के थोड़े समय में ही शास्त्रों में वर्णित, उन सभी आध्यात्मिक शक्तियों से साक्षात्कार होने लगा है, जो उस परमसत्ता तक पहुँचाने में सक्षम सहयोगी हैं। इस प्रकार मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि मैं अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकूँगा।" ठीक इसी प्रकार इसी रास्ते से चलकर पूर्ण सत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार किया हुआ, चेतन व्यक्ति ही गुरु पद का अधिकारी होता है। ऐसा चेतन संत सद्‌गुरु ही संसार का कल्याण कर सकता है। उससे जुड़ने वाले व्यक्ति को उस पथ पर चलकर, अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कठिनाई नहीं होती है। वह पूर्ण शुद्ध चेतन आध्यात्मिक शक्तियों के संरक्षण में अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न पूरी करके, अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होते हैं।

हमारे शास्त्रों के अनुसार मनुष्य शरीर में छह चक्र होते हैं। बिना चेतन गुरु के संरक्षण के, कोई व्यक्ति आध्यात्मिक आराधना प्रारम्भ करता है तो सफलता संदिग्ध होती है, उसे अपनी आराधना मूलाधार से प्रारम्भ करनी होती है। उस स्थान से चलकर छठे चक्र तक पहुँचने में, उसे कई मायावी सिद्धियों से सम्पर्क करना होता है। ये शक्तियाँ इतनी प्रबल होती हैं कि जीव को अपनी सीमा से बाहर नहीं जाने देती हैं। अगर किसी प्रकार जीव उठता-पड़ता नाभि चक्र में प्रवेश कर भी जाता है तो उससे पार निकलना असम्भव है। इस समय सारा

संसार इसी चक्र की शक्ति के इशारे पर नाच रहा है। इस क्षेत्र में पतन के सभी साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इस शक्ति के भंवरजाल में फँसकर जीव अन्त समय में, भारी पश्चाताप करता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी से, पत्रकारों ने अन्त समय में केवल एक ही प्रश्न पूछा था। "आप भारत में, सर्वोच्च राजनीति के शिखर तक पहुँचे हुए पहले व्यक्ति हैं। आप एकमात्र भारतीय हैं, जो वॉयसराय लॉर्ड के पद पर आसीन हुए। अब संसार से विदा होते समय आपको कैसा लग रहा है?" राजाजी ने उतर दिया - "मेरे इस अन्तिम समय में, जब मैं, मेरे पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो मुझे भारी पश्चाताप होता है। मैं देख रहा हूँ, मेरे जीवन की कमाई का एक गन्दा राजनीति का घोंघा, मेरे हाथ में है। मुझे इस गंदे घोंघे को लेकर आगे की यात्रा पर जाना पड़ेगा, यह देखकर मुझे भारी वेदना हो रही है। मैंने अमूल्य मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गवां दिया, इसका मुझे भारी पश्चाताप हो रहा है।" राजाजी जैसे व्यक्ति की अनुभूति से भी किसी ने सबक नहीं लिया। संसार भर के सभी धर्माचार्य और तथाकथित अध्यात्मवादी राजनीति की धुरी के, याचक बनकर चक्कर लगा रहे हैं। राजाजी के अनुसार, उसी गन्दे घोंघे से मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना कर रहे हैं। वह गन्दा घोंघा, किस स्थान पर रहता है और उसके क्या गुण धर्म हैं- सर्वविदित है। कहने की आवश्यकता ही नहीं कि ये आध्यात्मिक गुरु, संसार को किस दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार, "जिस समय राज्य सत्ता, अध्यात्म सत्ता के अधीन होकर, उसके निर्देशानुसार कार्य करने लगेगी, धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।" हम देख रहे हैं, इस समय उल्टी गंगा बह रही है। ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण असम्भव है। चेतन संत सद्गुरु जोकि सभी मायावी शक्तियों को पराजित करके, 'अगम लोक' की सत्ता से जुड़ चुका होता है, संसार का कल्याण करने में सक्षम होता है। छठे चक्र यानि आज्ञाचक्र तक सारा क्षेत्र माया का क्षेत्र है, इस क्षेत्र को बिना संत सद्गुरु की कृपा के, पार करना असम्भव है। संत सद्गुरु क्योंकि मायातीत परमसत्ता से सीधा सम्पर्क रखते हैं, इसलिए मायावी शक्तियाँ, उनके आगे करबद्ध खड़ी रहती हैं। इस प्रकार जो जीव ऐसे चेतन संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, अनायास स्वतःही मायावी क्षेत्र को पार कर लेता है। इस प्रकार उसकी परम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा सीधा आज्ञाचक्र को भेदकर प्रारम्भ होती है। गुरु कृपा से ज्यों ही आज्ञाचक्र को भेदकर जीव मायावी शक्तियों से निकल जाता है, उसके पतन के सारे रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं। केवल एक रास्ता, परम धाम का खुला रह जाता है, जिस पर चलकर

परमसत्ता में लीन होने पर आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

इस प्रकार सनातन धर्म में गुरु पद की जो महिमा गाई गई है, पूर्ण सत्य है। बिना गुरु के आराधना करने पर माया के क्षेत्र की, भौतिक जगत् की सारी सुख सुविधाएँ मिलना सम्भव है, परन्तु मोक्ष सम्भव नहीं है। मोक्ष तो मात्र संत सद्गुरु की शरण में जाने से मिलता है। एक बार मायावी शक्तियों के चक्कर में आ जाने के बाद उसका पतन अवश्यंभावी है। इस प्रकार असंख्य जन्मों तक ऊपर उठ-उठकर, गिरता रहता है और फिर मूलाधार से चढ़ाई प्रारम्भ करनी पड़ती है। इस प्रकार उठावा-पटकी का अन्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक जीव संत सद्गुरु की शरण में नहीं चला जाता है। ऐसे कृपालु संत सद्गुरु का पद, अगर भक्त ईश्वर से बड़ा मानें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

१०.

गुरु का पद ईश्वर से भी महान्

(१९ सितम्बर १९९७, जोधपुर)

वैदिक धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म में 'गुरु का पद', ईश्वर से भी महान् माना गया है। इस संबंध में गुरु गीता में कहा है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

मैं नाथमत का अनुयाई हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी आईपंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी महाराज माने गए हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत् में ज्ञान क्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।

भारत, इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्वप्रथम 'रजोगुण' के विकास की आवश्यकता है। व्यावहारिक भाषा में, भारतीयों की प्रथम आवश्यकता 'रोटी' की है, 'राम' का स्थान द्वितीय स्थान पर है।

पश्चिमी जगत्, भौतिक सुविधाएँ भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशांत पश्चिमी जगत् है, उतना अशांत संसार का कोई देश नहीं। आज उन्हें मात्र शांति की ही भूख बाकी बची है। और शांति केवल 'राम' अर्थात् ईश्वर तत्त्व ही दे सकता है। क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार, जीवन जीने से ही संभव है। अतः मुझे कलियुग के आदिगुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से, पश्चिमी जगत् को चेतन करने का है। उसी आदेश के कारण, अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत् में कार्य करना चाहता हूँ।

२१वीं सदी, मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है, अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

११.
शक्ति के अवतरण के खतरों से गुरु रक्षा करता है।

(०२ अक्टूबर २०००, मुम्बई)

श्री अरविन्द द्वारा मार्च, १९२८ में लिखा गया लेख-

"ऊपर से होने वाले अवतरण तथा उसे क्रियान्वित करने की इस प्रक्रिया में सबसे प्रधान बात है, स्वयं अपने ऊपर पूर्णरूप से निर्भर न करना, बल्कि पथप्रदर्शक पर निर्भर करना और जो कुछ घटित हो उस पर विचार करने, मत देने और निर्णय करने के लिए उन्हें बतलाना (यह कार्य गुरु के साथ आंतरिक पथ प्रदर्शन से किया जा सकता है) क्योंकि प्रायः ऐसा ही होता है कि अवतरण के कारण निम्नतर प्रकृति की शक्तियाँ जाग्रत और उत्तेजित हो जाती हैं (क्योंकि उन्हें उनका अधिकार क्षेत्र छिनता नजर आता है) और उसके साथ मिल जाना तथा उसे अपने लिए उपयोगी बनाना चाहती हैं।

प्रायः ही ऐसा होता है कि स्वभावतः अदिव्य कोई शक्ति या कई शक्तियाँ 'परमेश्वर' या 'भगवती माता' के रूप में सामने प्रकट होती है और हमारी सत्ता से सेवा और समर्पण की माँग करती है। अगर इन्हें स्वीकार किया जाए तो इसका अत्यन्त सर्वनाशी परिणाम होगा। अवश्य ही, यदि साधक केवल 'भागवत' क्रिया की अवस्था तक ऊपर उठा हुआ हो और उसी पथ प्रदर्शक के प्रति उसने 'आत्मदान' और 'समर्पण' किया हो तो सब कार्य आसानी से चल सकता है।

साधक का यह आरोहण तथा समस्त 'अहंकारपूर्ण शक्तियों' या 'अहंकार को अच्छी लगने वाली शक्तियों' का त्याग पूरी साधना के भीतर हमारी रक्षा करता है। परन्तु प्रकृति के रास्ते जालों से भरे हैं, 'अहंकार' के छद्मवेष असंख्य हैं, अन्धकार की शक्तियों की माया- 'राक्षसी माया' असाधारण चातुरी से भरी है, हमारी बुद्धि अयोग्य पथ प्रदर्शक है और प्रायः ही विश्वासघात करती है, प्राणगत कामना सदा हमारे साथ रहकर, हमें किसी आकर्षक पुकार का अनुसरण करने का लोभ देती रहती है।"

१२.

आराधना का जवाब क्यों नहीं मिलता?

(०४ अप्रेल १९८८)

संसार में हर कार्य का फल मिलता है। हम कोई भी कार्य करें, उसका परिणाम अवश्य होगा। परिणाम हमारी इच्छा के अनुसार मिलना कोई जरूरी नहीं, परन्तु कोई भी कार्य निरर्थक नहीं होता। हम जो कुछ भी करते हैं, दूसरी तरफ से प्रत्युत्तर अवश्य मिलता है, वह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, परन्तु निरुत्तर नहीं रहता। परन्तु हम देखते हैं, आध्यात्मिक आराधना का हमें कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। हम काल्पनिक विश्वास से चाहे अपने आप कुछ भी मान लें, परन्तु प्रत्युत्तर जैसी बात नहीं होती।

भौतिक जगत् में हम किसी की सेवा करते हैं तो उसके बदले हमें कुछ न कुछ मिलता है। जो कुछ मिलता है उसकी प्रत्यक्षानुभूति होती है और देने वाले को भी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होता है। जो कुछ भी हम खाते पीते हैं, उस वस्तु के गुण धर्म के अनुसार हमें स्वाद और आनन्द मिलता है और वह वस्तु अपना प्रत्यक्ष प्रभाव भी दिखाती है। परन्तु आध्यात्मिक जगत् में यह सिद्धान्त पूर्ण रूप से असफल क्यों हो रहा है? इस इकतरफा कार्य को करते-करते संसार के लोग निराश हो चुके हैं।

धर्मगुरु, अशिक्षित और भोले-भाले लोगों को तर्क के आधार पर निरुत्तर करके, अन्धविश्वास के सहारे चलने को मजबूर कर देते हैं। परन्तु बुद्धिजीवी और युवावर्ग बिना परिणाम के, उनके आदेश को मानने को तैयार नहीं है। हमें इस पर निष्पक्ष होकर विचार करना ही पड़ेगा। यह मानव समाज में एक ऐसी भयंकर बीमारी फैल चुकी है, जिसने संसार के लोगों से सुख-शान्ति छीन ली है। इस समय संसार में प्रकट शक्ति को अगर पूर्ण रूप से सृजन में लगा दिया जाए तो पृथ्वी पर स्वर्ग उतर सकता है। हम देखते हैं, संसार की पूर्ण व्यक्त शक्ति का करीब ७५ प्रतिशत भाग संहार और विध्वंस के लिए खर्च किया जा रहा है। हर व्यक्ति चालाकी और होशियारी के द्वारा औरों का शोषण और दमन करके, सुखी बनने के प्रयास के बावजूद निरन्तर दुःखी और अशान्त होता जा रहा है।

यही स्थिति संसार के सभी राष्ट्रों की है। सारे संसार में आज जितना अन्धकार व्याप्त हुआ है, पहले कभी नहीं था। हम देख रहे हैं कि इस समय तो धर्म की आड़ में भी संसार के मानव का भारी शोषण होने लगा है। पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक का भय दिखाकर जितना शोषण

संसार के सभी धर्मों में इस समय हो रहा है, पहले कभी नहीं हुआ। संसार में इस समय जितनी भी आराधना पद्धतियाँ प्रचलित हैं, वे प्रायः सभी बहिर्मुखी हैं। इसके अलावा निर्जीव वस्तुओं के माध्यम से सभी धर्मगुरु आराधना करवा रहे हैं।

कोई भी भौतिक निर्जीव वस्तु स्वयं मनुष्य का भला बुरा करने की स्थिति में नहीं होती। ऐसी स्थिति में प्रत्युत्तर मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता। हमारे सभी ऋषि कह गए हैं, उस परमसत्ता का निवास अपने शरीर के भीतर ही है। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ भी यही बात कहते हैं। अतः अन्तर्मुखी आराधना के बिना काम बन नहीं सकता। यह आराधना भी कोई आसान कार्य नहीं है। वह परमसत्ता ऐसे भयंकर चक्रव्यूह को पार करने पर मिलती है, जिसे पार करना अकेले जीव के लिए बहुत कठिन है। इस रास्ते पर चलने के लिए किसी भेदी संत सद्गुरु की आवश्यकता होती है। भगवान् राम और कृष्ण को भी गुरु धारण करना पड़ा था। इसके अलावा सभी संत, गुरु की महिमा का गुणगान कर गए हैं। अगम लोक का भेद और रास्ता, केवल गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है और कोई रास्ता ही नहीं।

संत कबीर ने कहा है-

कबीरा धारा अगम की, सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय।। (राधाकृष्ण)

कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागूँ पांव।
बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दियो मिलाय।।

संतों ने उस परमसत्ता का स्थान स्पष्ट करते हुए कहा है-

ज्यों नैनन में पूतली, त्यों खालिक घट माहिं।
मूरख लोग न जानहीं, बाहर ढूंढन जाहिं।।
ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में, जाग सके तो जाग।।
पुष्प मध्य ज्यों वास है, व्याप रहा सब माहिं।
संतों माहीं पाइये, और कहूँ कुछ नाहिं।।

चेतन गुरु की वाणी में जो प्रभाव और शक्ति होती है, वह छिपी नहीं रह सकती। वही

बात एक कथावाचक या उपदेशक बहुत ही अच्छे ढंग से कह सकता है, वह बहुत कर्णप्रिय लगेगी, परन्तु उपदेश समाप्त होने के बाद उसका कुछ भी प्रभाव आप पर नहीं बचेगा। उस बात से, आप में कोई परिवर्तन नहीं आएगा। परन्तु वही बात 'चेतन गुरु' द्वारा कही जाने पर इतनी प्रभावशाली और गहरी पैठ कर जाती है कि आप जीवन भर उसे भूल नहीं सकते । वह आपके जीवन में जबरदस्त परिवर्तन कर देगी।

एक बार जिज्ञासु बनकर ऐसे सत्संग में चले गए तो फिर बार-बार जाने की इच्छा होगी, जिसे आप रोक नहीं सकेंगे। इस प्रकार आपका जीवन परिवर्तित हो जाएगा, आप द्विज बन जाऐंगे। अगर साधारण व्यक्ति जो अच्छा कथावाचक या उपदेशक हो, उसका उपदेश जीवन भर असंख्य बार आप सुनें तो भी आपके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आएगा। इस सम्बन्ध में कनाडा के टोरन्टो चर्च के पादरी डा. ओ. जे.स्मिथ ने एक जगह लिखा है- "जब मनुष्य पवित्र आत्मा की शक्ति में से होकर आया हुआ वचन सुनता है तो वातावरण में एक विचित्र रहस्यपूर्ण शक्ति, उपस्थित लोगों को प्रभावित करती है। और जब मनुष्य शारीरिक और दिमागी शक्ति द्वारा दिया हुआ वचन सुनता है तो वह रहस्यपूर्ण विचित्र वातावरण तथा प्रभाव अनुपस्थित रहता है। यदि आप वास्तव में आत्मिक जन हैं तो इन दोनों के अन्तर को पहचान सकते हैं।" धीरे-धीरे, ज्यों-ज्यों आराधना गहरी होती जायेगी, प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार स्पष्ट होते जाऐंगे। इस प्रकार जीव का विश्वास निरन्तर अपनी ही अनुभूतियों के कारण पक्का होता चला जाएगा। ऐसी स्थिति में मनुष्य को प्रार्थना का सही उत्तर मिलना प्रारम्भ हो जाएगा। ज्यों-ज्यों रास्ता कटता जाएगा, आराधना में आनन्द बढ़ता जाएगा। इस प्रकार जीव एक ही जन्म में परमानन्द की स्थिति में पहुँच जाता है। क्योंकि तामसिक वृत्तियाँ ऐसे जीव के पास से ही नहीं गुजर सकती हैं, अतः ऐसे जीव से सम्पर्क करने वाले लोगों में भी उस सात्विक शक्ति की लहर दौड़ने लगेगी।

इस प्रकार प्रथम आत्म जागृति ही कठिन है। जिस प्रकार एक दीपक के प्रज्वलित होने पर दीपों से दीप जलाने में कोई देर नहीं लगती, इसी प्रकार एक जलता दीपक, असंख्य दीपक जलाकर संसार का अन्धेरा खत्म कर सकता है। एक चेतन गुरु ही संसार के लिए पर्याप्त है।

१३.
सानिध्य और सामिप्य

(०४ मई २००३, मुम्बई)

गुरु-शिष्य परम्परा में, गुरु के सानिध्य में बैठकर ध्यान करने से 'सहस्त्र गुणा' लाभ प्राप्त होता है।

सानिध्य और सामिप्य में थोड़ा भेद है। सानिध्य से मात्र आध्यात्मिक लाभ ही मिलता है।

भौतिक स्तर पर साधना की परिपूर्णता के लिए भौतिक सामिप्य अनिवार्य है। परन्तु उद्देश्य प्राप्ति के लिए दोनों का एक दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण भी अनिवार्य है। इसके बिना कार्य सिद्धि नहीं होगी।

सामिप्य के अन्तरंग क्षणों में दोनों पक्ष एक दूसरे में इस प्रकार लय हो जाने चाहिए, कि भौतिक और आध्यात्मिक अलग रहते हुए भी, एक हो जाएँ। भौतिक रूप से ही उनके शरीर अलग-अलग दिखाई देंगे। इस प्रकार दोनों के सामिप्य के बिना, उस दिव्य ऊर्जा का भौतिक जगत में लाभ नहीं लिया जा सकता।

२४ नवम्बर २००३, जोधपुर, राजस्थान- अवतरण दिवस समारोह।

०८ मई २००४, बोरीवली, मुम्बई, महाराष्ट्र - पत्रकार को इंटरव्यू देते हुए गुरुदेव।

१३ जनवरी २००५, बीकानेर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१३ जनवरी २००५, बीकानेर, राजस्थान- एड्स रैली।

२० दिसम्बर २००५, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा-वसई (मुम्बई) का उद्‌घाटन करते हुए समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग।

२४ नवम्बर २००६, बीकानेर, राजस्थान- अवतरण दिवस समारोह।
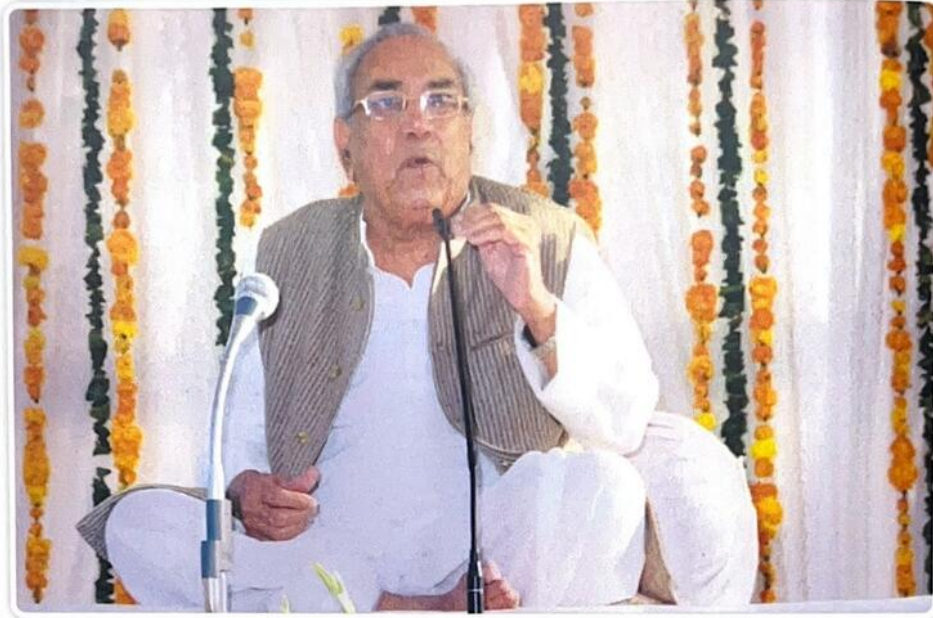
०४ फरवरी २००७, एम.बी. कॉलेज ग्राउण्ड, उदयपुर, राजस्थान
ध्यान योग कार्यक्रम।

दीक्षा और मंत्र

१४.
दीक्षा

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का एक विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में 'शक्तिपात-दीक्षा' सर्वोत्तम होती है। इसमें गुरु अपनी इच्छा से चार प्रकार से शिष्य की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करके सक्रिय करता है -(१) स्पर्श से (२) दृष्टि मात्र से (३) शब्द (मंत्र) से (४) संकल्प मात्र से भी।

दीक्षा के बाद साधक को तत्काल उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति होती है, उस दीक्षा को 'शाम्भवी दीक्षा' कहते हैं। यह महान् दीक्षा है। बहुत ही थोड़े साधकों को ऐसी दीक्षा की शक्ति के प्रभाव को सहने की सामर्थ्य होती है। ऐसे साधकों को पतंजलि योगदर्शन में 'भवप्रत्यय योगी' की संज्ञा दी है। इस सम्बन्ध में समाधिपाद के ११ वें सूत्र में कहा है-

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्। (१९-१)

"विदेह और प्रकृतिलय योगियों का (उपर्युक्त योग) भवप्रत्यय कहलाता है।"

(१) स्पर्श दीक्षा-इसमें गुरु अपनी शक्ति, शिष्य में तीन स्थानों-भ्रूमध्य में अर्थात् आज्ञा-चक्र में, दूसरा हृदय, तीसरा मेरूदण्ड के नीचे मूलाधार पर स्पर्श करके प्रवाहित करता है।

(२) मंत्र दीक्षा- गुरु की शक्ति, शिष्य में मंत्र के द्वारा प्रवाहित होती है। 'गुरु' जिस मंत्र की दीक्षा देता है, उसे उसने लम्बे समय तक जपा हुआ होता है; मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। उस मंत्र में और गुरु में कोई अन्तर नहीं रहता; गुरु का सम्पूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है। ऐसे चेतन मंत्र की, जब गुरु दीक्षा देता है, वही मुक्ति देता है।

(३) दृष्टि (हक्-दीक्षा)- अर्थात् मात्र दृष्टि द्वारा दी जाने वाली दीक्षा। ऐसी दीक्षा देने वाले गुरु की दृष्टि, 'अन्तर-लक्षी' होती है। यह दीक्षा वही गुरु दे सकता है, जिसने सद्गुरु से दीक्षा ली हुई हो और जो स्वयं भी अन्तर लक्षी हो, अन्यथा यह दीक्षा देना पूर्णरूप से असम्भव है।

ऐसे महात्माओं की आँखें खुली होती हैं, परन्तु वास्तव में उनका ध्यान निरन्तर अन्तरात्मा की ओर ही लक्षित रहता है। ऐसे संतों की तस्वीर देखने से सही स्थिति का पता लग जाता है। ऐसे संतो में-संत सद्गुरुदेव श्री नानक देवजी महाराज, संत श्री कबीर दासजी,

श्री रामकृष्ण परमहंस इत्यादि अनेक संत हमारी पवित्र भूमि में प्रकट हो चुके हैं।

मेरे परमपूज्य, मोक्षदाता संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) भी उपर्युक्त संतों की स्थिति में पहुँचे हुए परम सिद्धयोगी थे। यह सच्चाई सद्गुरुदेव का चित्र देखते ही प्रकट होती है। ऐसे परम दयालु सर्वशक्तिमान, मुक्तिदाता सद्गुरुदेव की अहेतु की कृपा के कारण ही मेरे जैसे साधारण व्यक्ति में भी वह शक्ति प्रकट हो गई।

(४) मानस (संकल्प-दीक्षा) जिसमें गुरु से दीक्षा लेने का मानस बनाने मात्र से ही दीक्षा मिल जाती है। ऐसे कई उदाहरण, मुझे मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखने को मिले हैं। मेरे अनेक शिष्य हैं, जिनमें कुछ तो अत्यधिक चेतन हैं। उनसे बातें करने से तथा मेरी व गुरुदेव की तस्वीर देखने मात्र से कई लोगों का ध्यान लगने लगता है तथा यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगती हैं, परन्तु ऐसे शिष्य बहुत कम ही हैं। इस तथ्य से एकलव्य की प्रतीक-साधना सत्य प्रमाणित होती है।

हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती, तब तक मोक्ष नहीं होता। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही मोक्ष है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। सिद्धयोग अर्थात् महायोग में शक्तिपात-दीक्षा द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है। गुरु की व्याख्या करते हुए कहा गया है- "वह शिष्यों को उनके अन्तर में प्रभावी किन्तु सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जाग्रत करता है और साधक को उस परमसत्य से साक्षात्कार योग्य बनाता है।"

कुण्डलिनी जागरण के सम्बन्ध में कहा है -

यावत्सा निद्रिता देहे तावत जीवः पशुर्यथा।
ज्ञानम् न जायते तावत कोटियोग-विधैरपि।।

स्वामी विष्णु तीर्थ-शक्तिपात।।

(जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहेगा। और वह उस दिव्य परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।)

गुरु कृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है इस सम्बन्ध में कहा है -

सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जागृति कुण्डली।

तदा सर्वानी पद्मानि भिदयन्ति ग्रन्थयोऽपि च॥

-स्वात्माराम, हठयोग प्रदीपिका-३,२

(जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का (ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रुद्रग्रन्थि) भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं। शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियन्त्रित और अनुशासित करता है।)

कुण्डलिनी को हमारे शास्त्रों में 'जगत् जननी' कहा है। वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, जो सर्वज्ञ है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान है। अतः जिस साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, उसे अनिश्चितकाल तक के भूत-भविष्य एवं वर्तमान काल की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार होने लगता है।

भौतिक विज्ञान मानता है कि जो शब्द बोला जा चुका है, वह कभी नष्ट नहीं होता। अगर मानव के पास उपयुक्त यन्त्र हो तो उसे पुनः सुना जाना सम्भव है। हमारा योगदर्शन कहता है कि केवल सुना ही नहीं जा सकता है, बोलने वाले को बोलते हुए देखा-सुना जाना भी सम्भव है। जो फिल्म बन चुकी है, उसको देखने-सुनने में क्या कठिनाई है?

हमारा योग-दर्शन तो स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जो घटना नहीं घटी है, उसको भी देखा व सुना जाना संभव है। मेरे अनेक शिष्य इसको प्रमाणित करने में सक्षम हैं। हमारा पतंजलि योगदर्शन उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाणित करता है। इसी शक्तिपात-दीक्षा के कारण ही पश्चिम को दिव्य आनन्द और अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होगा, बाइबिल की भविष्यवाणियों का मात्र यही अर्थ है।

प्रेरितों के कार्य के २:१४ से १८ में स्पष्ट शब्दों में कहा है- "पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियों, हे यरुशलम के सब रहने वालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में हैं , ऐसा नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है कि परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों

पर उड़ेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए (वृद्ध) स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उड़ेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।"

इसी संदर्भ में, जिस सहायक के भेजने की भविष्यवाणी यीशु ने की है, उसी की शक्तिपात-दीक्षा के कारण यह दिव्य-आनन्द और ज्ञान प्राप्त होगा। इस सम्बन्ध में प्रेरितों के कार्य २:३३ में कहा है- "इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उँड़ेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो।"

इस शक्तिपात-दीक्षा का वर्णन अनेक दार्शनिक ग्रन्थों में मिलता है। जैसा कि स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है, "यह ज्ञान मात्र हमारे दर्शन की ही देन है।" परन्तु कलियुग के गुणधर्म के कारण, यह दिव्य विज्ञान इस समय हमारी धरती पर से लोप प्रायः हो चुका है। शक्तिपात-दीक्षा के बाद, मेरे साधकों की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। इससे उन्हें विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः होने लगते हैं। वह शक्ति (कुण्डलिनी) साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत (अधीन) कर लेती है। इस प्रकार साधक को जो विभिन्न प्रकार के आसन्न, बन्ध, मुद्राएँ और प्राणायाम होते हैं, उनमें साधक का स्वयं का प्रयास कुछ भी नहीं रहता है। न तो वह उन्हें करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को इस दिव्य विज्ञान के कारण, अनेक समस्याओं का समाधान करने में भारी सफलता मिलेगी। कुण्डलिनी (चित्ति) उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है। अतः उसमें ज्ञान की 'पराकाष्ठा' है। वह अजर-अमर है तथा सर्वज्ञ एवं सर्वत्र है। अतः उसके जाग्रत होने पर साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान की पूर्ण जानकारी होने में कोई आश्चर्य नहीं है।

ईश्वर को सच्चिदानन्द घन (सत्+चित्+आनन्द) कहते हैं, अतः कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर साधक को इन्द्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की निरन्तर प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। इस दिव्य आनन्द के सामने सभी प्रकार के नशों से घृणा हो जाती है और बिना किसी प्रकार के कष्ट के, उनसे सहज रूप में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। मेरे साधकों में बहुत लोग ऐसे हैं जो शराब, अफीम, भांग, गांजा आदि के नशों से बुरी तरह ग्रसित थे। इस दिव्य आनन्द के कारण सभी साधक उन सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट या

मानसिक कष्टके पूर्ण रूप से मुक्त हो चुके हैं।

यही नहीं इस दिव्य आनन्द के कारण मानसिक तनाव पूर्णरूप से शान्त हो जाता है तथा उससे सम्बन्धित सभी रोग जैसे उन्माद, रक्तचाप, अनिद्रा आदि बिना दवा के स्वतः पूर्ण रूप से खत्म हो जाते हैं। विद्युत उपचार से ठीक न होने वाले कई रोगी पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो चुके हैं। दो ऐसे रोगी आये जो इन्सुलीन चिकित्सा से भी ठीक नहीं हो सके थे, इस शक्तिपात-दीक्षा से मिलने वाली आनन्द रूपी शान्ति के कारण पूर्ण रूप से स्वस्थ हो चुके हैं।

हमारे दर्शन में, योगदर्शन के अतिरिक्त भी इस दिव्य आनन्द का वर्णन मिलता है। गीता के ५ वें अध्याय के २१ वें तथा ६ वें अध्याय के १५ वें २१वें २७ वें तथा २८ वें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस बारीकी से इस दिव्य आनन्द की व्याख्या की है, अन्यत्र कहीं नहीं मिलती।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।। ५:२१

(बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष, अन्तःकरण में जो भगवत्-ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है (और) वह पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।)

युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानं योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।। ६:१५

(इस प्रकार आत्मा को निरन्तर (परमेश्वर के स्वरूप में) लगाता हुआ स्वाधीन मनवाला योगी मेरे में स्थित रूप परमानन्द पराकाष्ठ वाली शान्ति को प्राप्त होता है।)

सुखमात्यन्तिकं यत्तद् बुद्धि ग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।। ६:२१

(इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी, भगवत स्वरूप से चलायमान नहीं होता है।)

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।। ६:२७

(क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है (और) जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दनघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।)

युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानं योगी विगतकल्मषः।

सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ।। ६:२८

(पापरहित योगी इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ, सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है।)

वैदिक मनोवैज्ञानिक (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य का शरीर सात प्रकार के कोशों (शैलों) से संघटित है, जिनके खोलों (कोशों) में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं- (१) अन्नमय कोश (२) प्राणमय कोश (३) मनोमय कोश (४) विज्ञानमय कोश (५)आनन्दमय कोश (६) चित्मय कोश (७) सत्मय कोश। हमारे विकास की वर्तमान अवस्था में साधारण मानव ने अपने नित्य व्यवहार के लिए पहले तीन कोशों का ही विकास किया है।

कुछ मनुष्य सामर्थ्यपूर्वक विज्ञानमय कोश का प्रयोग करने में भी सक्षम हैं। क्योंकि इस समय विज्ञान अपने निज धाम से संचालित न होकर, बुद्धिप्रधान मन में स्थित होकर कार्य करता है यही कारण है, विज्ञान सृजन के स्थान पर विध्वंश का कार्य अधिक कर रहा है। योगी इससे भी परे साक्षात् विज्ञान (विज्ञानमय कोश के निजधाम) तक जा पहुँचता है। जब विज्ञान अपने निजधाम से संचालित होकर कार्य करेगा, तब इसका सम्पूर्ण उपयोग मात्र सृजन में ही होगा। इसीलिए महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है- "भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।"

याज्ञवल्क्य जैसे महानतम् ऋषि तो साक्षात् आनन्द तक पहुँच चुके हैं, परन्तु अन्तिम दो कोश अभी तक चेतन नहीं हो सके हैं। सिद्धयोग अर्थात् महायोग, जो गुरु कृपारूपी शक्तिपात दीक्षा से सिद्ध होता है, उसके साधक सातों कोशों का ज्ञान प्राप्त करने में सफल हुए हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। पतंजलि योग दर्शन तो केवल १९५ सूत्रों में कैवल्य पद पर पहुँचने की क्रियात्मक विधि बताता है।

मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। सभी का मत है कि मानव का सृजन उसके सृजनहार की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है। अतः मनुष्य अपना क्रमिक विकास करते हुए अपने

सृजनहार के 'तद्रूप' बन सकता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य की व्याख्या करते हुए गीता के १३ वें अध्याय के २३ वें श्लोक में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।

परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२३

(पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी पर (त्रिगुणातीत) है। (केवल) साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीव रूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से 'परमात्मा' ऐसा कहा गया है।)

इस इन्द्रियातीत आनन्द को संतों ने 'हरि नाम की खुमारी' की संज्ञा दी है। संत सद्गुरु श्री नानकदेव जी ने कहा है-

भांग धतुरा नानका, उतर जाय प्रभात।

'नामखुमारी' नानका चढ़ी रहे दिन रात।।

संत कबीर दास जी ने कहा है-

नाम-अमल उतरै न भाई।

और अमल छिन्न-छिन्न चढ़ि उतरै।

नाम-अमल दिन बढ़ै सवायो।।

बाइबिल भी स्पष्ट कहती है-"यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान आता-जाता नहीं है। प्रभु का आनन्द पूर्ण है। वह हमारे हृदय के कटोरों को तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़ कर दूसरों तक बह सकता है।"

यह आनन्द ही शान्ति स्थापित करेगा।

१५.

मंत्र का रहस्य

मंत्र विद्या हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत पर ही हमारे ऋषियों ने मन्त्रों की रचना की है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का, हमारे दर्शन का सिद्धांत पूर्ण रूप से सत्य है। यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ।

बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र 'सिद्ध' हो ही नहीं सकता। मेरे माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, मात्र 'मंत्र शक्ति' का ही प्रभाव है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के ही सिद्धान्त को, मैं पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहा हूँ। लोग कहते हैं, विज्ञान के इस युग में मंत्र की बात केवल अन्धविश्वासी लोग ही मानते हैं।

मैं चुनौती के साथ कहता हूँ कि मैं तो विज्ञान के शोधकर्त्ताओं से मिलने ही संसार में निकला हूँ। क्योंकि इस समय संसार में पूर्ण रूप से तामसिक वृत्तियों का साम्राज्य है, इसलिए इन वृत्तियों के साधक ही संसार में नजर आ रहें हैं। ऐसे नाटक दिखाकर लोगों को आकर्षित करते हैं,आज की भाषा में उन्हें जादूगर कहते हैं। ये लोग मात्र प्रेतपूजक होते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने इस संबंध में गीता में कहा है-

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।। ९:२५

(देवताओं को पूजने वाले, देवताओं को प्राप्त होते हैं। पितरों को पूजने वाले, पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले, भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त, मेरे को ही प्राप्त होते हैं।)

जब शब्द से सर्वभूतों की उत्पत्ति मानते हो, फिर शब्द से ही देव और दानव सभी की उत्पत्ति हुई है। आज संसार में उन्हीं शब्दों (मंत्रों) के ज्ञाता सर्वाधिक हैं, जिनसे भूतों (प्रेतों) की उत्पत्ति हुई है। यही कारण है कि 'परा-मनोविज्ञान' पर शोध करने वाले पश्चिम के शोधकर्त्ताओं को ऊर्ध्व गति से अधोगति की तरफ ढकेलने वाली शक्तियों का बिलकुल ही ज्ञान नहीं है, जबकि इनमें रात-दिन का अन्तर है। क्योंकि आज उनके पास Baptized with the ghost के ज्ञाता ही पहुँचे हैं।

जब उनके पास Baptized with the Holy ghost के ज्ञाता पहुँच जाएँगे,

तभी वे लोग अपने कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। क्योंकि भौतिक विज्ञान, ऊर्ध्व गमन कर रहा है, अतः ऊर्ध्व गमन कराने वाली शक्तियाँ ही भौतिक विज्ञान का सही पथ प्रदर्शन कर सकती हैं। आज ऊर्ध्व गति वाली शक्तियों का ह्रास होने के कारण ही हम हमारे दर्शन को प्रमाणित करने की स्थिति में नहीं हैं। हमारा दर्शन मानव का विकास, गीता में वर्णित १३वें अध्याय के २२वें श्लोक एवं पतंजलि योगदर्शन के कैवल्यपाद के ३४ वें श्लोक में वर्णित स्थिति तक कर देता है। यही बात प्रमाणित करने, मैं विश्व में निकला हूँ।

हमारे ऋषियों ने गहन शोध के बाद इस सिद्धान्त को स्वीकार किया कि जो ब्रह्माण्ड में हैं, वही सब पिण्ड में है। इस प्रकार मूलाधार चक्र से आज्ञाचक्र तक का जगत् माया का और आज्ञाचक्र से लेकर सहस्त्रार तक का जगत् परब्रह्म का है, यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया। वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) इसे स्वीकार करते हुए, अपनी भाषा में मूलाधार से आज्ञाचक्र के जगत् को अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश और विज्ञानमय कोश की संज्ञा देता है। यह जगत्, सत्ता का निम्नतर भाग है, जहाँ विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है। आज्ञाचक्र से सहस्त्रार तक को आनंदमयकोश, चित्मयकोश और सत्मयकोश की (सत्+ चित्+आनंद=सच्चिदानंद) संज्ञा देता है। यह सत्ता का उच्चतर अर्द्ध है, जिसमें अविद्या पर विद्या का प्रभुत्व है। इस जगत् में अज्ञान, पीड़ा या सीमा का नाम नहीं है।

'गुरु-शिष्य' परम्परा में मंत्र दीक्षा का विधान है। शब्द की धारा के सहारे ही सहस्त्रार में पहुँचना संभव है, अन्यथा नहीं। इस संबंध में कबीरदास जी ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा है-

कबीरा धारा अगम की, सद्‌गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती हुई, मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुंडलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में जाग्रत करके, अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही मोक्ष है। परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्त्व (कृष्ण) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है, अन्य कोई नहीं।

गुरु महिमा का हमारे शास्त्रों में बहुत बखान है, उसी को ध्यान में रखकर असंख्य गुरु प्रकट हो गए। ऐसा सुन्दर व्यवसाय संसार में कोई है ही नहीं। बिना पूँजी लगाए, आमदनी होती

है। ऐसे ही गुरुओं के कारण गुरुपद जैसा गौरवमय पद बदनाम हो गया।

गुरु की सर्वोत्तम व्याख्या है- 'जो गोविन्द से मिलाए' इसीलिए ईश्वर की स्थिति और प्राप्ति के संबंध में कहा गया है- 'जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त, हृदय में प्रतिक्षण पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी, जो श्रीगुरुकृपाहीन को गोचर न होकर, गुप्तवास कर रहा है, वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानंद है।'

मंत्र का रहस्य जब तक समझ में नहीं आता, तब तक साधक उससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। मंत्र का रहस्य कैसे जाना जा सकता है, इस संबंध में मालिनी-विजयतंत्र में कहा गया है-

शिष्येणापि तदा ग्राह्या यदा सन्तोषितो गुरुः।

शरीर द्रव्य विज्ञान शुद्धि कर्म गुणादिभिः।।

बोधिता तु यदा तेन गुरुणा दृष्ट चेतसा।

तदा सिद्धिप्रदा ज्ञेया नान्यथा वीरबन्दिते।। ३:४९,४८

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु शिष्य के सद्गुणों से संतुष्टहो जाते हैं। हे देवी! जब गुरु हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं और मंत्र मुक्ति देता है। गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।

शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धान्त, विश्व के सभी धर्म मानते हैं। इसी सार्वभौम सिद्धान्त के आधार पर हमारे ऋषियों ने मंत्र शास्त्र की रचना की है। सृष्टि के संबंध में ज्ञान संकलिनी तन्त्र में कहा है-

आकाशज्जायते वायुर्वायोत्पद्यते रविः।
रवेरुत्पद्यते तोयं तोयादुत्पधते मही।। २५

आकाश से हवा, हवा से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई है और संसार के सभी प्राणी पृथ्वी से उत्पन्न हुए। हमारे शास्त्र भी इन्हीं पाँच तत्त्वों से मनुष्य शरीर की रचना मानते हैं। पाँचों तत्त्वों की सूक्ष्मावस्था को 'तन्मात्रा' भी कहते हैं। जैसे पृथ्वी की तन्मात्रा गन्ध, जल की तन्मात्रा रस, अग्नि की तन्मात्रा रूप, वायु की तन्मात्रा स्पर्श और आकाश की तन्मात्रा शब्द। क्योंकि सृष्टि का जनक 'शब्द' तन्मात्रा है, इसलिए जिस प्रकार अधोगमन के कारण मनुष्यों की उत्पत्ति हुई, उसी प्रकार शब्द (मंत्र) के सहारे ऊर्ध्व गमन करता हुआ

मनुष्य छह चक्रों और तीन ग्रन्थियों का वेधन करता हुआ, अपने जनक आकाश तत्त्व (सहस्त्रार) में लय हो सकता है। इसी का नाम मोक्ष है।

१६.

मंत्र शक्ति पर इस युग के मानव का विश्वास क्यों खत्म हुआ?

(०८ मार्च १९८८)

शब्द की उत्पति मात्र उस परमसत्ता की देन है। हर अक्षर किसी न किसी शक्ति का स्वरूप है। सारी शक्तियाँ मनुष्य के शरीर में स्थित हैं। हर शक्ति का उपयुक्त स्थान है। अतः उपयुक्त मंत्र का जप उसके स्थान विशेष पर ध्यान केन्द्रित करके, करने पर, निश्चित समय में, वह शक्ति अवश्य चेतन हो जायेगी। हमारे धर्म की गुरु-शिष्य परम्परा, इस पर विस्तार से प्रकाश डालती है।

चेतन गुरु से जो मंत्र प्राप्त किया जाता है, उस मंत्र को सिद्ध करने की शिष्य को कोई आवश्यकता नहीं होती। चन्द दिनों में वह शक्ति, अपनी प्रत्यक्षानुभूति कराने लगती है। जिस व्यक्ति ने चेतन गुरु से दीक्षा ली है, और शक्तिपात के द्वारा गुरु अपनी ताकत उसे देकर गया है, केवल वही मंत्र दीक्षा देने का अधिकारी है। ऐसा व्यक्ति जब मंत्र दीक्षा देता है तो वह शक्ति मानव के कल्याण हेतु कार्य करती है। परन्तु अगर मंत्र दीक्षा देने वाला गुरु चेतन नहीं है तो उस मंत्र की शक्ति कभी भी प्रकट नहीं होगी। अगर अधिक कष्टों के कारण एकाग्रता अधिक हुई तो लाभ के स्थान पर हानि होने की अधिक सम्भावना है, क्योंकि जब वह शक्ति चेतन होगी तो सक्षम गुरु के आशीर्वाद के अभाव में मनुष्य उसकी ताकत को सहन नहीं कर सकेगा और अनेक प्रकार की मानसिक व दिमागी बीमारियाँ लगने की ही सम्भावना अधिक रहेगी।

अक्षर चेतन गुरु ने मंत्र दीक्षा दी है तो वह शक्ति कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकती है। आजकल लोग पुस्तकों से मंत्र का ज्ञान प्राप्त करके, उसका जप करते हैं। वह निर्जीव मंत्र न हानि पहुँचा सकता है और न ही लाभ। इस प्रकार लम्बे समय तक जब कोई उत्तर नहीं मिलता तो लोग यह मान लेते हैं कि मंत्र-तंत्र की बात झूठी और काल्पनिक है। इससे मानव का भला-बुरा कुछ भी होना सम्भव नहीं है। क्योंकि सात्त्विक जगत् के गुरुओं का नितान्त अभाव है, अतः यह शक्ति लोप हो चली है। थोड़े-बहुत तुच्छ वाममार्गी उपासक कहीं-कहीं अपनी तामसिक शक्तियों का हल्का-फुल्का चमत्कार दिखाकर, संसार के अनभिज्ञ लोगों को ठग रहे हैं। क्योंकि सात्त्विक शक्तियाँ मानव का बुरा करने की शक्ति नहीं रखतीं, उसे तो ईश्वर ने मात्र भलाई करने की शक्ति प्रदान की है, ये वाममार्गी तामसिक शक्तियों के उपासक किसी

प्रचलित सात्त्विक शक्ति के नाम से अपना धन्धा चला रहे हैं। इस प्रकार मंत्र, तंत्र, जादू-टोना, ताबीज, गंडा आदि नामों के माध्यम से लोगों को ठग रहे हैं। क्योंकि इस युग में इन्हीं लोगों का बोल-बाला है, अतः नाम खुमारी की बात पर लोगों को विश्वास ही नहीं होता, क्या करें?

१७.

शब्द से सर्वभूतों की उत्पत्ति

(०२ मई १९८८)

संसार भर के प्रायः सभी धर्म इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं कि शब्द से ही सर्वभूतों की उत्पत्ति हुई है। हिन्दू दर्शन के अनुसार 'ॐ' से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में इस सम्बन्ध में ८वें अध्याय के १३वें श्लोक तथा १७ वें अध्याय के २३वें तथा २४वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।

यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।। ८:१३

(जो पुरुष 'ॐ' ऐसे (इस) एक अक्षररूप बह्म का उच्चारण करता हुआ (और उसके अर्थस्वरूप) मेरे को चिन्तन करता हुआ, शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।)

तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।

ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।। १७:२३

('ॐ' तत् सत् ऐसे तीन प्रकार का सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का नाम कहा है। उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गए हैं।)

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।

प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्।। १७:२४

(इसलिए वेद का कथन करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की शास्त्रविधि से नियत की हुई यज्ञ, दान और तप रूप क्रियाएँ सदा 'ॐ' ऐसे (इस परमात्मा के नाम को) उच्चारण करके (ही) आरम्भ होती हैं।)

ईसाई धर्म में भी संसार की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं। इस सम्बन्ध में बाइबिल स्पष्ट कहती है- "आदि में वचन (शब्द) था। और वचन (शब्द) परमेश्वर के साथ था। और वचन (शब्द) परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। और ज्योति अन्धकार में चमकती है, और

अन्धकार ने उसे ग्रहण नहीं किया।" इसी प्रकार यहूदी मत भी संसार की उत्पत्ति शब्द से मानते हैं।

यहूदियों के सृष्टि उत्पत्ति प्रकरण में कहा गया है- "समुद्र के ऊपरी तल पर अन्धकार था और ईश्वर की आत्मा जलों पर विचरण कर रही थी। शब्द के द्वारा उसने समुद्र को अंतरिक्ष से विभक्त किया, जिसके परिणाम स्वरूप अब यहाँ दो समुद्र हैं। एक पार्थिव जो अंतरिक्ष के नीचे है, दूसरा द्युलोकीय जो अंतरिक्ष के ऊपर है।"

इस सम्बन्ध में वेदों के रहस्य को स्पष्ट करते हुए महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है- "इस सार्वभौम विश्वास को या इस वैश्व रूपक को गुह्यवादियों ने पकड़ा और उसमें अपने समृद्ध मनोवैज्ञानिक मूल्यों को भर दिया। एक अंतरिक्ष की जगह उन्होंने दो को देखा, एक पार्थिव और दूसरा दिव्य। दो सागरों के स्थान पर उनकी अनावृत दृष्टि के सामने तीन सागर प्रसारित हो उठे। जो कुछ उन्होंने देखा, वह एक ऐसी वस्तु थी, जिसे मानव कभी आगे चलकर देखेगा, जब प्रकृति और जगत् को देखने की उसकी भौतिक दृष्टि, आंतरात्मिक दृष्टि में बदल जायेगी। उनके नीचे उन्होंने देखी अगाध रात्रि और तरंगित होता हुआ तमस्, अन्धकार में छिपा अंधकार, निश्चेतन समुद्र जिससे 'एकमेव' के शक्तिशाली तमस् के द्वारा उनकी सत्ता उद्भूत हुई थी। उनके ऊपर उन्होंने देखा प्रकाश और मधुरता का दूरवर्ती समुद्र जो उच्चतम व्योम है, आनन्द स्वरूप विष्णु का परमपद है, जिसकी ओर उनकी आकर्षित सत्ता को आरोहण करना है। उनमें से एक था, अन्धकारपूर्ण आकाश, आकारहीन, जड़, निश्चेतन असत्; दूसरा था, ज्योतिर्मय व्योम सदृश सर्वचेतन एवं निश्चेतन सत्। ये दोनों 'एकमेव' के ही विस्तार थे।

एक अन्धकारमय, दूसरा प्रकाशमय। इन दो अज्ञान अनन्तताओं के अर्थात् अनन्त संभाव्य शून्य और अनन्त परिपूर्ण 'क्ष' के बीच उन्होंने अपने चारों ओर अपनी आँखों के सामने, नीचे ऊपर नित्य विकसनशील चेतन सत्ता का तीसरा समुद्र देखा। एक प्रकार की असीम तरंग देखी, जिसका उन्होंने एक साहसपूर्ण रूपक के द्वारा इस प्रकार वर्णन किया कि वह द्युलोक से परे परमोच्च समुद्रों तक आरोहण करती या उनकी ओर प्रवाहित होती है। यह है वह भयानक समुद्र जो हमें पोत द्वारा पार करना है।"

मेरे साथ निरन्तर आध्यात्मिक सत्संग करने वाले, उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार, आंतरात्मिक दृष्टि से सब कुछ देख रहे हैं यानि प्रत्यक्षानुभूति कर रहे हैं। लगता है वेदों की सच्चाई, हम संसार के सामने शीघ्र प्रमाणित कर सकेंगे।

१८.

नाम खुमारी एक सच्चाई है, यह कोई काल्पनिक आनन्द नहीं।

(०१ मार्च १९८८)

मैं देख रहा हूँ, इस युग के मानव जब कबीर और नानक की 'नाम अमल' और 'नाम खुमारी' की बात सुनते हैं या पढ़ते हैं तो उन्हें इस बात पर बिलकुल ही विश्वास नहीं होता। अपने ज्ञान के अनुसार, वे इस बात को ईश्वर के लिए श्रद्धा से काम में लिए हुए, अतिशयोक्ति अलंकार के अतिरिक्त कुछ भी मानने को तैयार नहीं। मैं लोगों की इस मान्यता के लिए उन्हें दोष नहीं दे सकता हूँ क्योंकि आध्यात्मिक जगत् में, सात्त्विक शक्तियों के, ह्रास के कारण ही संसार के मानव की यह स्थिति है।

मनुष्य, ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। उस परमसत्ता की अभिव्यक्ति मात्र इसी योनि से सम्भव है। मानव शरीर में ही वह असीम सत्ता अपने पूर्ण विकसित स्वरूप में स्थित है। इसीलिए सभी संतों ने इस योनि को दुर्लभ बताया है। परन्तु युग के गुण-धर्म के कारण, असहाय मानव इसका स्वाद नहीं चख पाने के कारण, इसको मात्र काल्पनिक या अतिशयोक्ति समझ रहा है। मैंने करीब तीन हजार पर्चे 'प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार' तथा 'नाम खुमारी' के बँटवाये। पर्चे के अन्त में यह बात स्पष्ट रूप से छापी गई थी कि "जो भी भाई-बहिन प्रत्यक्षानुभूति और नाम खुमारी के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा शान्त करना चाहें, स्वयं सत्संग में सम्मिलित होकर देखें।" मुझे यह देखकर अचम्भा हुआ कि स्वामी रामसुख दास जी के प्रवचन सुनने वालों को भी इसका विश्वास नहीं हुआ। मात्र एक जिज्ञासु ही मेरे पास आ सका। परन्तु जो एक जिज्ञासु आया, मैं उससे पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। वह इस पथ का राही होना, इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मात्र भारत में ही उस परमसत्ता की आखिरी चिन्गारी बची हुई है, जिसको प्रज्वलित करके संसार भर में वह सात्त्विक प्रकाश फैलाया जा सकता है।

मुझे जो स्पष्ट इशारा था, वह सही निकला कि यह प्रकाश सर्वोच्च लोक से आ रहा है, अतः पहले उन्हीं लोगों को चेतन करेगा। इस प्रकार संसार के शक्ति सम्पन्न बुद्धिजीवी लोग, जब इस प्रकाश से चेतन होंगे तो नीचे इसका प्रकाश सहज ही फैल जाएगा। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियाँ और उस परमसत्ता का आदेश ठीक मेल खा रहा है। देश में जो तमस् व्याप्त है, उसके बारे में श्री अरविन्द ने लिखा है-

'यह कई कारणों से है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृत्तियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तमस् ठोस बनकर, यहाँ जम गया। कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास और विवेकानन्द, इनमें से कोई साधारण आदमी न थे, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।'

महर्षि श्री अरविन्द की उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि अन्धकार इतना ठोस बनकर जम गया है कि उस अधिमानसिक देव के अवतरण के अलावा, अब इसका कोई इलाज नहीं बचा है। मेरे विचार से भी इस प्रकाश का सबसे पहले भारत में फैलना जरूरी है। श्री अरविन्द को भगवान् ने अलीपुर जेल से छूटने से पहले जो आदेश दिया था, उसका भी यही अर्थ निकलता है। भगवान् का आदेश था कि- "तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों को कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो। तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार की भलाई के लिए उठाया जा रहा है। जब कहा जाता है कि भारत वर्ष महान् है तो उसका मतलब है कि सनातन धर्म महान् है।"

इससे स्पष्ट है कि संसार को आकर्षित करने के लिए, पहले भारत का उठना, चेतन होना जरूरी है, इसके बिना संसार को चेतन करना बहुत कठिन काम है। हम देखते हैं कि हमारे आम देशवासियों की एक प्रवृत्ति बन गई है कि वे पश्चिमी जगत् की आँख बन्द करके, नकल करने में लगे हैं। दूसरी तरफ पश्चिमी जगत् के लोग भारत की गलियों की खाक छानते हुए शान्ति की खोज कर रहे हैं। बहुत ही विचित्र स्थिति है। जिस अपार सात्त्विक धन के हम मालिक हैं, उन्हें तो इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, और समुद्रों पार से आकर विदेशी उसकी खोज कर रहे हैं, बहुत ही अजीब स्थिति है।

मुझे अच्छी तरह याद है, ऋषिकेश में 'मुनि की रेति' में गंगा के किनारे मैं खड़ा था। इतने में कुछ विदेशी भगवा वस्त्र पहने, वहाँ आकर खड़े हो गए। थोड़ी ही देर में कोट-पेंट धारी कुछ सज्जन सपरिवार वहाँ आ गए। उनमें से एक सज्जन ने अंग्रेजी भाषा में, उन विदेशियों से बात शुरू कर दी। क्योंकि मैं भी पास ही खड़ा था, इसलिए मैं भी सुनने लग गया।

हिन्दुस्तानी सज्जन ने कहा कि "आप लोग बहुत समझदार और सभ्य लोग हैं, आप इन ठगों के चक्कर में कैसे फँस गए? ये लोग केवल आप लोगों से धन ठगने के लिए विभिन्न प्रकार के स्वांग रच रहे हैं। इनके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जिसके लिए आप ठगाये जा रहे हो।" इस पर एक विदेशी बोला "आप क्या कह रहे हो, मुझे समझ नहीं आ रहा है। ऐसा लगता है

आप पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। क्या आपने इन संन्यासियों के पास आकर कभी जानने का प्रयास किया कि ये क्या कर रहे हैं? मैं देख रहा हूँ, हमारा दैनिक जीवन में जो खर्च होना चाहिए, उससे एक पैसा भी अधिक नहीं लिया जा रहा है।"

मैं जब हमारे देशवासियों की यह हालत देखता हूँ तो बहुत हैरानी होती है। हमारे देश के सभ्य और साधन सम्पन्न लोग पूर्ण रूप से धर्म से विमुख हो चुके हैं। जब तक उन्हें प्रत्यक्षानुभूति, साक्षात्कार और नाम खुमारी की अनुभूति नहीं करवाई जाती, चेतना असम्भव है।

शरीर के जिस अंग में बीमारी होती है, डॉक्टर, चीर-फाड़ द्वारा उसी अंग का इलाज करते हैं, तभी पूरा शरीर स्वस्थ होता है। अतः हमें पहले इन्हीं बीमार लोगों का इलाज करना है, तभी चेतना सम्भव है। हम देख रहे हैं, हमारे देश के प्रायः सभी राजनेता, वाममार्गी तामसिक तांत्रिकों के चक्कर में पड़े हुए हैं। ऐसे अनेक तामसिक तांत्रिक राजसत्ता का भयंकर दुरुपयोग करके, अपनी काली शिक्षा का प्रचार-प्रसार करके देश में अन्धकार फैला रहे हैं। इस प्रकार समाज का जो वर्ग, इन तामसिक लोगों के चक्कर में है तथा जो इन ढोंगियों से तंग आकर धर्म से विमुख हो चुका है, सर्वप्रथम उनका इलाज किये बिना देश में चेतना असम्भव है। पश्चिमी जगत् के लोग सच्चाई को परखने और स्वीकार करने में कभी नहीं झिझकते। सबसे कठिन काम तो पूर्वाग्रह से ग्रस्त तथाकथित सभ्य और सम्पन्न लोगों का इलाज करना है। इनका इलाज होने पर पूरा शरीर स्वस्थ हो जाएगा। सत्ताधारी और इन सम्पन्न और सभ्य लोगों की कोई अधिक संख्या नहीं है।

जब वह परमसत्ता सक्रिय रूप से संसार के सामने प्रकट होकर, अपना कार्य शुरू कर देगी तो अन्धकार के दूर होने में कोई देर नहीं लगेगी। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि हर परिवर्तन का समय सुनिश्चित है। समय आने पर सारी परिस्थितियाँ अनुकूल होकर, थोड़े प्रयास से सारे कार्य सम्पूर्ण हो जाएंगे।

१९.

नाम खुमारी के सम्बन्ध में गीता क्या कहती है?

(२८ अप्रेल १९८८)

हमारे कई संतों ने ईश्वर के नाम की महिमा की है। अपनी-अपनी अनुभूति के अनुसार सभी ने उस परमसत्ता के नाम की महिमा का गुणगान किया है।

संत सद्गुरु नानक देव जी ने इस सम्बन्ध में कहा है -

भांग धतूरा नानका, उतर जाय परभात।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।

संत कबीरदास जी ने भी नाम की महिमा करते हुए कहा है-

नाम अमल उतरै न भाई।

और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,

नाम अमल दिन बढ़े सवायो।

इस सम्बन्ध में यीशु के परम-शिष्य यूहन्ना ने भी स्पष्ट कहा है-

"यह एक आंतरिक आनंद है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय।"

बचपन में जिन चीजों से सुख की अनुभूति होती है, किशोरावस्था में आते ही सुख के आधार बदल जाते हैं। जवानी में उस स्थिति में और आधारभूत परिवर्तन हो जाता है और बुढ़ापा आते ही, बचपन, किशोरावस्था और जवानी में जिन भिन्न-भिन्न कारणों से सुख की अनुभूति होती थी, उससे बिलकुल भिन्न स्थिति हो जाती है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता के ५वें अध्याय के २१ वें श्लोक में इस 'अक्षय आनन्द' के बारे में कहा है-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।। ५:२१

(बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष, अन्तःकरण में जो भगवत्

ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है। वह पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा रूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।)

परन्तु इस युग का मानव इसे असम्भव मानता है। युग के गुणधर्म ने संसार में इतना घोर अन्धकार व्याप्त कर रखा है कि सबकी बुद्धि भ्रमित हो रही है। अपने ही धर्म के संतों की बात पर लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है। मैं जब नाम खुमारी की बात कहता हूँ तो लोगों को विश्वास नहीं होता है। मैं देख रहा हूँ कि मेरे साथ आध्यात्मिक सत्संग करने वाले लोगों को इस अक्षय आनन्द की अनुभूति चन्द दिनों में ही होने लगती है। सांसारिक सभी नशों का आनन्द, इसके सामने तुच्छ है। अतः सभी प्रकार के नशों से हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा मिल रहा है। यह एक प्रत्यक्ष सत्य है।
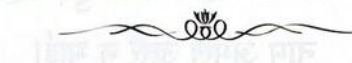
२४ मई २००७, मारवाड़ जंक्शन, पाली, राजस्थान- काजलवास में नौ नाथों की जीवित समाधियों पर अर्चना करते गुरुदेव।

२४ मई २००७, मारवाड़ जंक्शन, पाली, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२००७, जोधपुर, राजस्थान में रैली द्वारा सिद्धयोग दर्शन का प्रचार-प्रसार।

१२ जुलाई २००७, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर से विदेश यात्रा के लिए हवाई अड्डे की ओर प्रस्थान करते हुए गुरुदेव।

१२ जुलाई २००७, विदेश यात्रा हेतु गुरुदेव को हवाई अड्डे तक विदाई देती साधकों की रैली।
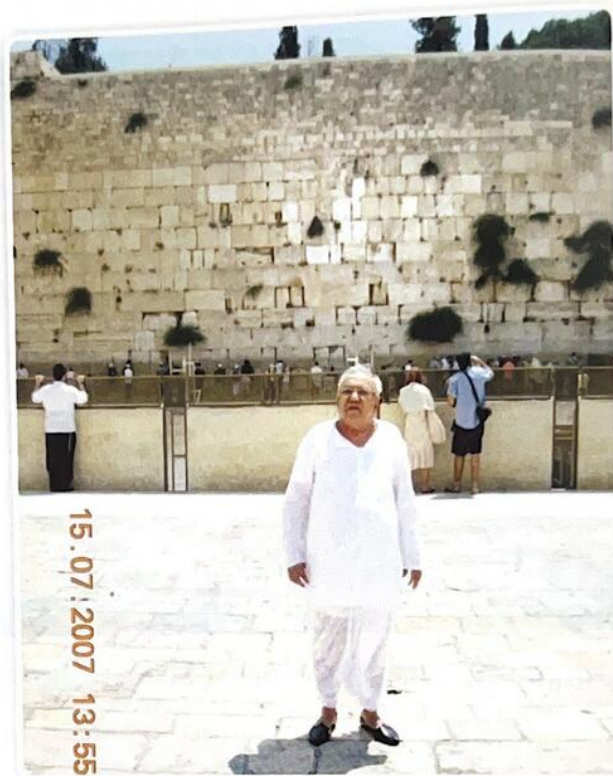
१५ जुलाई २००७, वेस्टर्न वॉल (पश्चिमी दीवार), यरुशलम, इजराइल।

१५ जुलाई २००७, इजराइल यात्रा के दौरान यरुशलम में गुरुदेव।

कुण्डलिनी और योग

२०.
कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में, अन्तर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। जब ऋषियों ने और गहन खोज की तो पाया कि इस जगत् का रचयिता 'सहस्त्रार' में स्थित है और उसकी शक्ति 'मूलाधार' में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना की गई। उस परमपुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई। इसके चेतन होकर ऊर्ध्वगमन करते हुए, सहस्त्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है।

गुरु-शिष्य परम्परा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्त्रार में स्थित परमसत्ता की 'पराशक्ति' है, अतः यह मात्र उसी का आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्त्रार में स्थित उस परमतत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। अतः संसार में, एक समय में यह कार्य मात्र एक ही व्यक्ति द्वारा संपन्न हो सकता है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, जोगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं, वही परम चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढ़े तीन फेरे लगाकर सुषुप्त अवस्था में रहती है, जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्गुरु की करुणा से ही वह आदिशक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

सिद्धयोग में सद्गुरु अनुग्रहरूपी शक्तिपात दीक्षा से, शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत करते हैं। कुण्डलिनी के जाग्रत होकर सहस्त्रार में पहुँचने का नाम ही मोक्ष है। हमारे शास्त्र कहते हैं- 'जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत रहेगा और वह उस दिव्य परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।'

जब गुरुकृपा रूपी शक्तिपात दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो वह साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत्त (अधीन) कर लेती है, अतः शक्तिपात दीक्षा के बाद साधक को अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्तर पर अनुभव होने लगते हैं जैसे कि यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम), विचार परिवर्तन और आध्यात्मिक विषय की सूक्ष्म समझ होने लगती है। मनुष्य सच्चे अर्थों में द्विज बन जाता है।

शक्तिपात दीक्षा के बाद साधकों को अपने-अपने प्रारब्ध कर्मों के अनुसार अलग-अलग अनुभूतियाँ होती हैं। शास्त्रों में इन्हें क्रियावती, कलावती, वर्णमयी, वेधमयी, ज्ञानमयी इत्यादि प्रकार की दीक्षा कहा है। शक्तिपात होते ही क्रियावती दीक्षा में साधक को विभिन्न यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम अपने आप होने लगते हैं। इन सभी यौगिक क्रियाओं में साधक का सहयोग या असहयोग कुछ भी कार्य नहीं करता है। साधक तो आज्ञाचक्र पर ध्यान करते हुए गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र (प्रणव) का जप करता रहता है। सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ, वह जाग्रत शक्ति (कुण्डलिनी) सीधा अपने नियन्त्रण में स्वयं करवाती है। भौतिक विज्ञान को यह खुली चुनौती है।

सभी प्रकार की यौगिक क्रियाओं से कुण्डलिनी ऊर्ध्व गमन करती है। इस प्रकार वह शक्ति तीनों ग्रंथियों- ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि तथा रुद्रग्रंथि व छह चक्रों- मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहद, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र का भेदन करती हुई साधक को समाधि स्थिति, जो कि समत्व बोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। इस प्रकार साधक, पतंजलि योगदर्शन में वर्णित कैवल्य अर्थात् वेदान्त के अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानन्द को प्राप्त कर लेता है, संत जिसे मोक्ष की संज्ञा देते हैं।

२१.
उस अनन्त में लय हो जाओ।

(०५ मई २००३, मुम्बई)

हमारे ही नहीं, विश्व के सभी ईश्वरवादी धर्मों के धर्माचार्य एक ही स्वर से यही कह रहे हैं - "अपने को उस अनन्त में लय करने का प्रयत्न करें, जहाँ कभी दुःख का लेश नहीं।" परन्तु शैव सिद्धान्त कहता है, "वह अनंत आपके अंदर ही स्थित है। उसमें लय होने और कहीं जाने की जरूरत नहीं है।" मनुष्य भौतिक शरीर में, इस मृत्यु लोक में रहते हुए भी, सभी क्लेशों का अन्त करके पूर्ण शांति प्राप्त कर सकता है, अर्थात् जीवन मुक्त हो सकता है।

हमारे शैव दर्शन का यह संदेश, मानवता में मूर्त रूप लेने लग गया है। मात्र वैदिक दर्शन का यही क्रियात्मक योग, सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित कर सकता है और यह कार्य करना उसने प्रारम्भ कर दिया है। नतीजा सम्पूर्ण विश्व के सामने शीघ्र आना चाहता है।

२२.

निष्काम कर्मयोगी संसार के सम्पूर्ण कर्मों को करता हुआ नहीं बँधता है।

(०७ अप्रेल १९८८)

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १८वें अध्याय में स्पष्टकहा है-

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्।। १८:५६

(मेरे परायण हुआ निष्काम कर्मयोगी सम्पूर्ण कर्मों को सदा करता हुआ भी, मेरी कृपा से सनातन अविनाशी परमपद को प्राप्त हो जाता है।)

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः।

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।। १८:५७

(सब कर्मों को मन से मेरे में अर्पण करके, मेरे परायण हुआ, समत्वबुद्धि रूप निष्काम कर्मयोग को अवलम्बन करके निरन्तर मेरे में चित्तवाला हो।)

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।

अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।। १८:५८

(तू मेरे में निरन्तर मनवाला हुआ, मेरी कृपा से जन्म-मृत्यु आदि सब संकटों से तर जाएगा और यदि अहंकार के कारण नहीं सुनेगा (तो) नष्ट हो जाएगा।)

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।

मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।। १८:५९

(जो (तू) अहंकार को अवलम्बन करके ऐसे मानता है (कि) मैं युद्ध नहीं करूँगा (तो) यह तेरा निश्चय मिथ्या है क्योंकि क्षत्रियपन का स्वभाव तेरे को जबरदस्ती युद्ध में लगा देगा।)

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।

कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।। १८:६०

(हे अर्जुन! जिस कर्म को (तू) मोह से नहीं करना चाहता है, उसको भी अपने

स्वाभाविक कर्म से बँधा हुआ, परवश हो कर करेगा।)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए, संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। १८:६२

(हे भारत! सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण को प्राप्त हो, उस परमात्मा की कृपा से परम शान्ति को (और) सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।)

भगवान् ने उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर सर्वभूत प्राणियों के शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ होकर, सब को भरमाता हुआ, अपनी इच्छा से चला रहा है। इस पर भी जीव, माया के वशीभूत हुआ, अपने आपको कर्ता मानकर व्यर्थ में जन्म-मरण के चक्कर में फँसकर दुःख भोग रहा है।

संसार का कोई भी मनुष्य माया से भ्रमित हुआ, अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है। वह अपनी बुद्धि की चतुराई से बहुत कुछ प्राप्त करने की चेष्ठा निरन्तर करता रहता है परन्तु जीव,जीवन भर की चेष्ठाओं के बाद भी, सन्तुष्ट नहीं हो पाता है और उसका मन अन्त समय में भी सांसारिक लोकों की तरफ आकर्षित रहता है। इस प्रकार जीव निरन्तर जन्म-मरण के चक्कर में फँसकर, भारी कष्टों में फँसा हुआ है।

इस युग में माया इतनी प्रबल हो चली है कि संसार में पूर्ण अन्धकार छाया हुआ है। जब तक जीव में सात्विक चेतना न आ जाए, उसका कर्ता भाव खत्म ही नहीं हो सकता। जब तक प्राणी इस झूठे अहम्, कर्तापन के भाव से मुक्त नहीं हो जाता, उसको निष्काम कर्मयोग की बात समझ में ही नहीं आ सकती। ऐसी स्थिति में इस माया से छुटकारा पाना बहुत ही कठिन है। एक मात्र हिन्दू धर्म ही है, जिसके संत मत में इस माया से छुटकारा पाने का उपाय बताया गया है। सभी संतों ने एक मत से यही कहा है कि उस परमसत्ता से मिलने का रास्ता केवल संत सद्गुरु ही बता सकते हैं। इस सम्बन्ध में संत कबीरदास जी ने कहा है-

"कबीरा धारा अगम की, सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय।।"

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।"

इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा है कि "आध्यात्मिक जगत् में गुरु के बिना सफलता असम्भव है, परन्तु इस युग में सच्चा संत सद्गुरु मिलना कठिन है।"

२३.
सिद्धियाँ

शास्त्रीय महर्षियों ने मोटे तौर से तीन प्रकार की सिद्धियाँ बताई हैं। हम उन तीनों को तमोगुण-सिद्धि, रजोगुण-सिद्धि एवं सतोगुण-सिद्धि के नाम से समझ सकते हैं।

१. मैली-सिद्धि(तमोगुणी) वह है, जो अशुचि व्रत, मंत्र या द्रव्य द्वारा प्राप्त की जाती है। इस मैली-सिद्धि जानने वालों को यदि स्नान करवा के शुचि और पवित्र बना दिया जाए तो वह अपनी सिद्धि नहीं कर सकता। जब वह हाथ या पैर मैला करता है, तभी सिद्धि का प्रदर्शन कर सकता है। यह सिद्धि दूसरों का अनिष्ट करती है, किसी का मंगल नहीं कर सकती।

२. मंत्र-सिद्धि वह है, जो देश और काल की अपेक्षा रखकर, किसी एक देवता को लक्ष्य करके, मंत्र जप से प्राप्त की जाती है। यह सिद्धि जिसको प्राप्त हो, वह देवता का स्मरण या मंत्र जप करके हाथ में फल, मिठाई एवं सोने-चाँदी के आभूषण इत्यादि लाता है या कोई वस्तु एक स्थल से दूसरे स्थल पर संक्रमित करता है तथा और भी कई प्रकार के चमत्कार दिखा सकता है। इस प्रकार की सिद्धियाँ दिखाने से लोग आकर्षित होते हैं। ऐसी कृत्रिम रीति से मिली हुई क्षुद्र सिद्धियाँ ज्यादा समय तक नहीं टिकतीं।

३. अष्टांगयोग करने से जो संयमसिद्धि प्राप्त होती है, वह योग सिद्धि है। यह सत्य और शास्त्रीय सिद्धि है।

४. चौथी सिद्धि, त्रिगुणातीत उस परमसत्ता की है, जिसे महासिद्धि या त्रिगुणातीत सिद्धि कहते हैं। यह वह सिद्धि है, जो हमेशा ईश्वर के आदेश से ही कार्य करती है। उस परम सिद्धि के अधीन आठ प्रकार की शक्तियाँ होती हैं, जिनका वर्णन पतंजलि योगदर्शन के विभूतिपाद के ४५ वें सूत्र में निम्न प्रकार से किया है-

ततोणिमादिप्रादुर्भावःकायसम्पत्तद्धर्मानभिघातष्च।। ३:४५

उससे (भूतजय)अणिमादि आठ सिद्धियों का प्रकट होना, कार्यसम्पन्न की प्राप्ति, और उन भूतों के धर्मों से बाधा न होना-ये तीनों होते हैं।

१. अणिमा- अणु के समान सूक्ष्म रूप धारण कर लेना।

२. लधिमा- शरीर को हल्का (भारहीन) कर लेना।

३. महिमा- शरीर को बड़ा (विशालकाय) कर लेना।

४. गरिमा- शरीर को भारी कर लेना।

५. प्राप्ति- जिस किसी इच्छित भौतिक पदार्थ को संकल्प मात्र से ही प्राप्त कर लेना।

६. प्राकाम्य- बिना रुकावट भौतिक पदार्थ संबंधी इच्छा की पूर्ति अनायास हो जाना।

७. वशित्व- पाँचों भूतों का और तज्जन्य पदार्थों का वश में होना।

८. ईशित्व- उन भूत और भौतिक पदार्थों का नाना रूपों में उत्पन्न करने और उन पर शासन करने की सामर्थ्य प्राप्त करना।

२४.

संन्यास और निष्काम कर्मयोग में कौन श्रेष्ठ है?

(०९ अप्रेल १९८८)

गीता के ५ वें अध्याय में अर्जुन ने भगवान् से पूछा -

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।। ५:१

(हे कृष्ण! कर्मों से संन्यास की ओर फिर निष्काम कर्मयोग की प्रशंसा करते हो, इन दोनों में एक जो निश्चय किया हुआ कल्याणकारक (होवे), उसको मेरे लिए कहिए।)

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।

तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।। ५:२

(हे अर्जुन! कर्मों का संन्यास और निष्काम कर्मयोग, यह दोनों ही परम कल्याण करने वाले हैं, परन्तु उन दोनों में, कर्मों के संन्यास से निष्काम कर्मयोग श्रेष्ठ है।)

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।

निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।। ५:३

(हे अर्जुन! जो पुरुष न (किसी से) द्वेष करता है, न आकांक्षा करता है, वह समझने योग्य है क्योंकि राग द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित हुआ पुरुष सुखपूर्वक संसार रूप बन्धन से मुक्त हो जाता है।)

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।

एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।। ५:४

(संन्यास और निष्काम कर्मयोग को मूर्ख लोग अलग-अलग कहते हैं, न कि पण्डितजन। एक में भी अच्छी प्रकार स्थिर हुआ दोनों के फलरूप परमात्मा को प्राप्त होता है।)

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।

एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।। ५:५

(ज्ञानयोगियों द्वारा जो परमधाम प्राप्त किया जाता है, निष्काम कर्म योगियों द्वारा भी वही प्राप्त किया जाता है। जो पुरुष ज्ञानयोग और निष्काम कर्मयोग को एक देखता है, वही

(यथार्थ) देखता है।)

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।। ५:६

(परन्तु हे अर्जुन! निष्काम कर्मयोग के बिना संन्यास प्राप्त होना कठिन है। भगवत् स्वरूप का मनन करने वाला निष्काम कर्मयोगी, परब्रह्म परमात्मा को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।)

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।। ५:७

(वश में किया हुआ है शरीर जिसके, ऐसा जितेन्द्रिय विशुद्ध अन्तःकरण वाला, सम्पूर्ण प्राणियों के आत्मरूप परमात्मा में एकीभाव हुआ, निष्काम कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिपायमान नहीं होता।)

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यन् श्रृणवन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपन् श्वसन्।। ५:८
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन।। ५:९

(तत्त्व को जानने वाला सांख्य योगी तो देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, भोजन करता हुआ, गमन करता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, त्यागता हुआ, ग्रहण करता हुआ, आँखों को खोलता-मींचता हुआ भी, सब इन्द्रियाँ अपने-अपने अर्थों में बर्त रही हैं, इस प्रकार समझता हुआ, ऐसे माने कि (मैं) कुछ भी नहीं करता हूँ।)

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संग त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।। ५:१०

(जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण करके, आसक्ति को त्यागकर, कर्म करता है, वह पुरुष जल में कमल के पत्ते की सदृश पाप से लिपायमान नहीं होता।)

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।। ५:१२

(निष्काम कर्मयोगी कर्मों के फल को, परमेश्वर को अर्पण करके, भगवत् प्राप्तिरूप शान्ति को प्राप्त होता है। सकामी पुरुष फल में आसक्त हुआ, कामना के द्वारा बँधता है।)

भगवान् ने स्पष्ट कर दिया कि कर्त्ता भाव के चक्कर में फँसकर ही जीव, माया के अधीन हुआ जन्म-मरण के चक्कर में फँसकर, दुःख भोग रहा है। गीता का उपदेश सुनने के बाद भी लोगों का भ्रम दूर नहीं हो रहा है। इसका एक ही कारण है कि उपदेशक का भी भ्रम दूर नहीं हुआ है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में संत सत्गुरु की शरण में जाने का बारम्बार आदेश दिया जाता है। चेतन गुरु की वाणी में प्रभाव होता है, क्षणभर में अंधकार दूर हो जाता है।
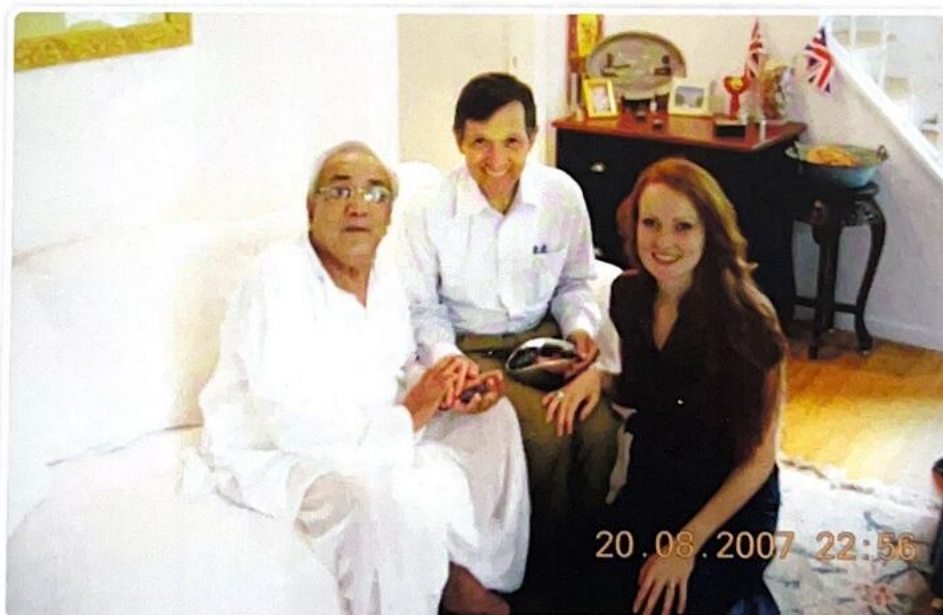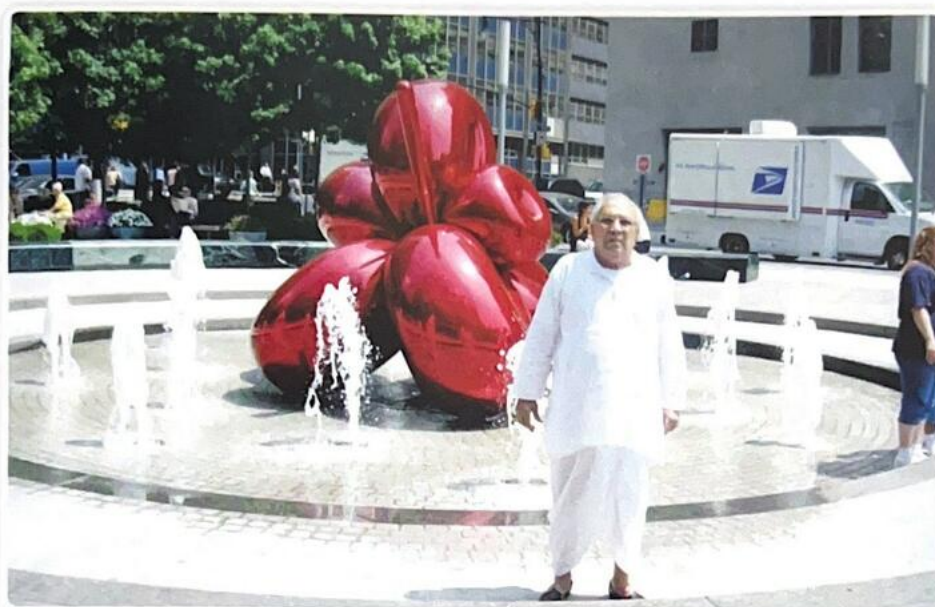
२० अगस्त २००७, अमेरिका की यात्रा के दौरान डेनिस कुचिनिकी व एलिजाबेथ (हार्पर) कुचिनिकी के साथ समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग।

२८ अगस्त २००७ - इजरायल व अमेरिका की यात्रा से आगमन पर जोधपुर आश्रम में साधकों को सम्बोधित करते गुरुदेव।
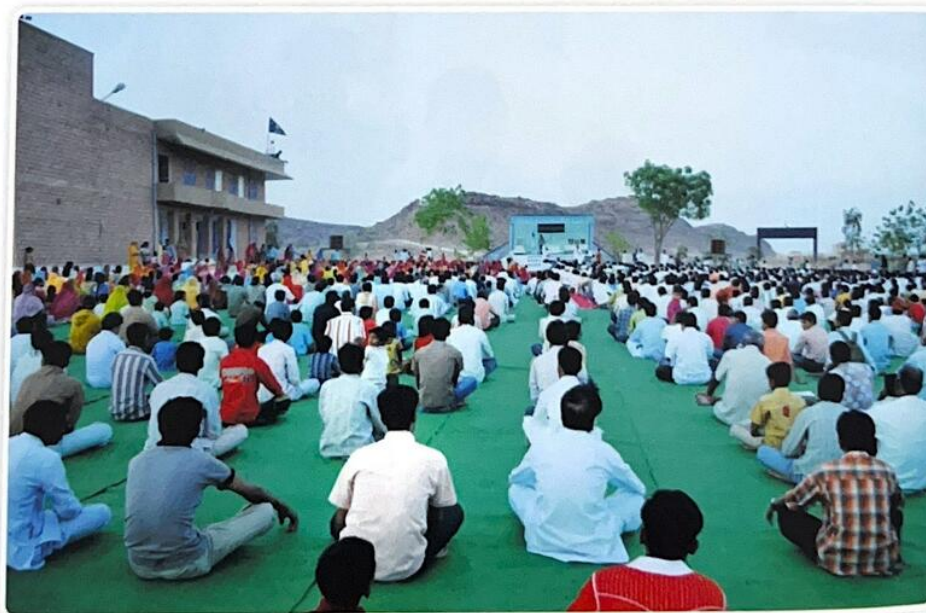
०५ जून २००८, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२३ अक्टूबर २००८, मारवाड़ जंक्शन, पाली, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२४ नवम्बर २००८ बीकानेर, राजस्थान -अवतरण दिवस समारोह।

धर्म और जीवन

२५.

धर्म क्या है?

(०४ फरवरी १९८८)

इस समय संसार भर के सभी धर्मों के धर्माचार्य केवल प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्कशास्त्र और अन्ध विश्वास के सहारे लोगों को अध्यात्मवाद सिखा रहे हैं। शब्दजाल और तर्कशास्त्र के सहारे धर्म की व्याख्या इस प्रकार तोड़-मरोड़ करके कर रहे हैं कि धर्म एक प्राणहीन, मुर्दा (शव) मात्र रह गया है। निष्प्राण धर्म, किस प्रकार कल्याण कर सकता है?

सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने धर्म को एक व्यवसाय मात्र बना लिया है। धर्म के सहारे आर्थिक तथा राजनैतिक लाभ उठाया जा रहा है। ऐसा लग रहा है, मानो संसार के सभी धर्माचार्यों को पक्का विश्वास हो गया है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति संसार में है ही नहीं। यह केवल काल्पनिक धारणा लोगों में फैलाई हुई है। इस झूठी धारणा के सहारे जितना चाहो प्राणियों का शोषण कर सकते हो। ऐसा लगता है, कुएँ में ही भाँग पड़ गई है। सभी धर्म एक ही रास्ते पर चलने लगे हैं।

सभी धर्माचार्य अगले जन्म में मिलने का झूठा झाँसा देकर संसार को लूट रहे हैं। धन के आधार पर पाप माफी का प्रमाण-पत्र तक देने लगे हैं। इससे अधिक घोर अपराध क्या होगा? अगर ऐसी विषम स्थिति में भी भगवान् अवतार नहीं लेते हैं तो समझ लेना चाहिए कि प्रलय का समय बहुत सन्निकट है। आज संसार में धर्म के नाम पर लूट, अन्याय और अत्याचार जितना पनप रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। हमारा इतिहास बताता है कि जब-जब ही ऐसी स्थिति पैदा हुई है, भगवान् ने अवतार लिया है।

धर्म की व्याख्या करते समय हमारे ऋषियों ने स्पष्ट कहा है कि धर्म प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्क-शास्त्र और अन्धविश्वास से इसका दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। पिछली सदी में स्वामी विवेकानन्द जी संसार में, एक आध्यात्मिक संत के रूप में प्रकट हुए। अमेरिका में उन्होंने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा था, "विभिन्न मत मतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का नाम हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूल मंत्र तो 'मैं आत्मा हूँ'-यह विश्वास होना और 'तद्रूप' बन जाना है।"

इसी संदर्भ में स्वामी जी ने एक कदम और आगे बढ़कर कह डाला कि- "अनुभूति-

अनुभूति की यह महती शक्तिमयी वाणी, भारत के ही आध्यात्मिक गगन-मण्डल से आविर्भूत हुई है। एकमात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति संभव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता।"

स्वामी जी ने कहा है- "धर्म में प्रत्यक्षानुभूति न हो तो वह वास्तव में धर्म कहलाने योग्य है ही नहीं।" क्या इस समय संसार के किसी भी धर्म का धर्माचार्य उपर्युक्त बात दोहराने की स्थिति में है? इस समय तो ईश्वर और धर्म की, अपनी-अपनी तर्क बुद्धि के अनुसार अजीब-अजीब व्याख्या करके धर्माचार्य संसार के लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार की बात करने तक का साहस किसी में दिखाई नहीं देता।

इस समय संसार में मनुष्य जाति में एक ऐसा विशेष वर्ग पैदा हो गया है जो ईश्वर तथा धर्म का, एक मात्र ठेकेदार अपने आप को घोषित कर बैठा है। अगर आपको आध्यात्मिक जगत् में प्रवेश करना है तो उसके प्रमाण-पत्र के बिना काम नहीं चलेगा। अपने प्रमाण-पत्र की वह भरपूर कीमत लेकर आपको जिस रास्ते पर चलने का आदेश देगा, उसी पर आपको चलना होगा। जो मान्यताएँ, उस वर्ग विशेष ने बना रखी हैं, वही धर्म सम्मत हैं, बाकी सब रास्ते नरक में ले जाने वाले अधर्म के हैं।

इस समय संसार में धर्म के नाम पर भीख से लेकर हत्या तक की छूट है। कैसा भयंकर रूप बना डाला इस युग के मानव ने, धर्म का? इस युग का मानव धन के लिए, धर्म की ओट में, घृणित से घृणित कार्य करने से भी नहीं झिझकता। ऐसी स्थिति में संसार में शान्ति, प्रेम, दया और सद्भाव कैसे संभव है?

२६.

हिन्दू धर्म क्या है?

(१९ फरवरी १९८८)

वास्तव में आज संसार के लोग जिनको हिन्दू कहकर सम्बोधित करते हैं, वे लोग वास्तव में वेदान्ति हैं। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार, हिन्दू कोई धर्म नहीं है; यह सिन्धु का मात्र अपभ्रंश है। वास्तव में वेदों को मानने वाले वेदान्ति लोगों को ही आज संसार में 'हिन्दू' कहकर सम्बोधित करते हैं। वेदों की व्यवस्था के अनुसार जो लोग चलते हैं, वही 'वेदान्ति' हैं। वेदान्त धर्म ही सनातन, आदि धर्म है। वेदों की भाषा संस्कृत है। यह भाषा आज की संस्कृत भाषा की व्याकरण से नहीं बन्धती है, ऐसा सभी विद्वानों का मत है। यही कारण है, वेदों को समझ न पाने के कारण अर्थ का अनर्थ हो रहा है।

संस्कृत भाषा देव भाषा है या वह मूल भाषा है, जिसे वर्तमान मन्वन्तर के आरम्भ में उत्तर मेरु के निवासी बोलते थे, पर अपने विशुद्ध रूप में यह द्वापर या कलियुग की संस्कृत नहीं है; यह सत्‌युग की भाषा है, जो वाक् और अर्थ के सच्चे और पूर्व सम्बन्ध पर प्रतिष्ठित है। इसके प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन में एक विशेष एवं अविच्छेद्य शक्ति है, जो वस्तुओं की निज प्रकृति के कारण ही अपना अस्तित्व रखती है, न कि विकास या मानवीय चुनाव के कारण। ये मूलभूत ध्वनियाँ हैं, जो तान्त्रिक बीज मंत्रों का आधार हैं और स्वयं मंत्र का प्रभाव निर्मित करती हैं- वेदों की भाषा के सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द जैसे संत की यह मान्यता है। अतः वेदों को आधार मानकर, जो कर्मकाण्ड और धार्मिक विधियाँ इस युग में प्रचलित हैं, वे सभी आधारहीन और सच्चाई से बहुत दूर हैं। अतः अगर हमें वेदों की कुछ सच्ची झलक देखनी हो तो हमें पुराणों का अध्ययन करने से, अधिक लाभ होने की सम्भावना है। पुराणों की रचना व्यास जी ने की थी। पुराणों की रचना क्योंकि सत्‌युग में नहीं हुई, अतः पूर्ण सच्चाई का ज्ञान तो सम्भव नहीं है, परन्तु फिर भी पुराण, अन्य ग्रन्थों से वेदों के अधिक निकट है।

सत्‌युग में प्रत्येक मानव का उस परमसत्ता से सीधा सम्पर्क था। युग-युग में यह अन्तर बढ़ता ही गया। दूरी के हिसाब से, आज का मानव सभी सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए, चरम सीमा तक पहुँच रहा है। हमारा विज्ञान भी कहता है कि ऐसी स्थिति में पहुँचने पर, हर वस्तु का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है। इस सम्बन्ध में विष्णु पुराण हमें स्पष्ट बताता है। विष्णु पुराण हमें बताता है कि सत्‌युग में विष्णु यज्ञ के रूप में अवतरित होते हैं, त्रेता में विजेता और

राजा तथा द्वापर में व्यास, संकलनकार, संहिताकार और शास्त्रकार के रूप में। इसका अर्थ यह नहीं कि वे याज्ञिक कर्म के रूप में अवतरित होते हैं।

सत्युग मानव-पूर्णता का युग है, जिसमें सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था स्थापित होती है, पूर्ण या चतुष्पाद धर्म का युग है जिसका पालन योग की पूर्ण और सार्वभौम उपलब्धि पर या परमेश्वर के साथ सीधे सम्बन्ध पर निर्भर है। चतुष्पाद धर्म है-ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्वत्व और शुद्रत्व-इन चारों धर्मों का पूर्ण सामंजस्य। इसी कारण सत्युग में पृथक वर्ण अस्तित्व नहीं रखते।

त्रेता में ब्राह्मणत्व का ह्रास होने लगता है, पर वह क्षत्रियत्व की सहायता करने के लिए एक गौण शक्ति के रूप में बना ही रहता है। उस समय क्षत्रियत्व ही मानव जाति पर शासन करता है। मनुष्य जाति तब पहले की तरह अन्तर्निष्ठब्रह्मज्ञान से सहजता धारित वीर्य या तपस् के द्वारा रक्षित नहीं होती, बल्कि वह एक ऐसे वीर्य या तपस् द्वारा रक्षित होती है, जो कुछ कठिनाई से ही ब्रह्मज्ञान को पोषित करता है और उसे ध्वस्त होने से बचाता है। तब विष्णु क्षत्रिय अर्थात् वीर्य और तपस् के विग्रहधारी केन्द्र के रूप में अवतीर्ण होते हैं।

द्वापर में ब्राह्मणत्व और अधिक ह्रास को प्राप्त होकर, कोरे ज्ञान या बौद्धिकता में परिणित हो जाता है। क्षत्रियत्व, वैश्यत्व को आश्रय देने वाली एक अधीनस्थ शक्ति बन जाता है और वैश्यत्व को अपने प्रभुत्व का अवसर प्राप्त होता है। वैश्य के मुख्य गुण हैं- कौशल, व्यवस्था व प्रणाली और इसीलिए द्वापर संहिता-निर्माण, कर्मकाण्ड और शास्त्र का युग है, जो ह्रासोन्मुख आन्तरिक आध्यात्मिकता को बनाए रखने के लिए बाह्य उपकरण हैं। दान, अतिथि-सेवा, तर्पण, यज्ञ और दक्षिणा अन्य धर्मों को निगलने लगते हैं- यह यज्ञिय युग है, यज्ञ का युग। भोग और इसलिए वेद का उपयोग, इहलोक और परलोक में भोग सम्पादन के लिए किया जाता है। इसमें विष्णु बुद्धि और अभ्यास की अर्थात् बौद्धिक ज्ञान पर आधारित नित्य अनुष्ठान की सहायता से धर्म के ज्ञान और आचरण को सुरक्षित रखने के लिए स्मृतिकार, कर्मकाण्डी और शास्त्रकार के रूप में अवतरित होते हैं।

कलियुग में शुद्र के धर्म प्रेम और सेवा के सिवाय सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जाता है। इस शुद्र-धर्म द्वारा ही मानवता का धारण एवं रक्षण और समय-समय पर पवित्रिकरण भी होता है, क्योंकि ज्ञान छिन्न-भिन्न हो जाता है, और उसका स्थान सांसारिक व्यावहारिक बुद्धि ले लेती है, वीर्य छिन्न-भिन्न हो जाता है और उसका स्थान ले लेते हैं, ऐसे आलस्य पूर्ण यॉंत्रिक साधन जिनसे सब कार्य निर्जीव ढंग से कम से कम कष्ट के साथ कराये जा सकें, दान, यज्ञ और

शास्त्र छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और उनके स्थान पर नपी-तुली उदारता, कोरा कर्मकाण्ड और तामसिक सामाजिक रूढ़ियाँ एवं शिष्टाचार प्रतिष्ठित हो जाते हैं। इन निर्जीव रूपों को छिन्न-भिन्न करने के लिए अवतार प्रेम को उतार लाते हैं, जिससे जगत् को नवजीवन प्रदान किया जा सके और एक नई व्यवस्था एवं नया सत्युग जन्म ले सके, जबकि परमेश्वर पुनः यज्ञ के रूप में अर्थात ज्ञान, बल सुखोपभोग और प्रेम रूपी चतुष्पाद् धर्म की पूर्ण अभिव्यक्ति से सम्पन्न परम-विष्णु के रूप में अवतीर्ण होंगे।

विष्णु पुराण का उपर्युक्त वर्णन स्पष्ट बताता है कि कलियुग में पूर्ण निर्जीव सत्ता का विस्तार है। तामसिकता अपनी चरम सीमा को छू रही है। अतः यही समय, उस परमसत्ता के अवतरण का उपयुक्त समय है। काल के गुण धर्म के कारण, संसार के सभी धर्म केवल कोरे कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, शब्दजाल और तर्क शास्त्र के सहारे अध्यात्म की आड़ में अन्याय, अत्याचार और शोषण करने में लगे हुए हैं।

धर्म, मात्र प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। विष्णु पुराण में पुनः सत्युग की जो बात कहकर उसके गुण धर्म बताये गये हैं, वे सभी महर्षि अरविन्द की इस भविष्यवाणी से पूर्णरूप से मेल खाते हैं- "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके, विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

इसी प्रकार की भविष्यवाणियाँ, संसार के कई संत कर चुके हैं। सभी ने उस परमसत्ता के अवतरण की बात भारत भूमि पर की है। ऐसा लगता है उस परमसत्ता का सात्विक प्रकाश संसार के सभी संतों को यदाकदा दिख जाता है। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार भी वह परम आध्यात्मिक सत्ता, इस युग के भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को प्रमाण सहित ऐसे चमत्कार दिखायेगी कि सभी उसके सामने नत्मस्तक होकर, उस परमसत्ता के अधीन होकर कार्य करने लगेंगे। इस प्रकार हमारे वेदों में वर्णित बात सत्य होगी और कलियुग का अन्त होकर, पुनः सत्युग की स्थापना होगी। संसार की सारी घटनाओं पर ध्यान दें तो ऐसे लगता है, वह समय अब अधिक दूर नहीं।

२७.

धर्म गुरुओं के अथक परिश्रम के बावजूद मानव धर्म से विमुख क्यों?

(२७ फरवरी १९८८)

संसार भर के सभी धर्मों का प्रचार इस समय जितना हो रहा है, और किसी युग में नहीं हुआ। इसके विपरीत और युगों में लोगों की आस्था धर्म और ईश्वर में बनी रहती थी, परन्तु इस युग के सभी धर्मों के लोगों का धर्म और ईश्वर से विश्वास समाप्त प्रायः हो चला है। ऐसा क्यों हो रहा है? इस पर गहराई से कोई विचार ही नहीं करना चाहता।

बच्चा स्कूल जाकर शिक्षा प्राप्त करता है। इस प्रकार भौतिक ज्ञान प्राप्त करके वह इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, शिक्षक आदि विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक बनाता है। सभी प्रकार के भौतिक ज्ञान, जीवन को सार्थक बनाने में सहयोगी सिद्ध हो रहे हैं। केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही ऐसा क्यों बन गया कि इसका प्रत्यक्ष लाभ मानव को नहीं मिल रहा है। वह परमसत्ता जिसकी देन है यह भौतिक विज्ञान; जब उसकी देन मानव जाति के लिए इतनी उपयोगी सिद्ध हो रही है तो उस परमसत्ता की शक्ति का क्या कोई अन्दाज लगा सकता है? ऐसी शक्ति से इस युग का मानव उदासीन और विमुख है, इसका दोष किसको है? उसका पता लगाए बिना, संसार में शांति सम्भव नहीं।

प्रचार की दृष्टि से प्रातः चार बजे से ही भजन, कीर्तन, कथावाचन और उपदेश प्रारम्भ हो जाते हैं। इस प्रकार रात्रि में जब तक मनुष्य सोने को विवश नहीं हो जाता, वह क्रम बन्द नहीं होता। निरन्तर इस युग के प्रतिष्ठित संत, कथावाचक और उपदेशक उपदेश देते रहते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में लाखों रूपये पण्डाल सजाने और लोगों को इकट्ठा करने के लिए प्रचार में लग जाते हैं। महीनों लगातार यह कार्यक्रम चलते रहते हैं। इस प्रकार लाखों व्यक्ति प्रतिदिन अपना अमूल्य समय, इन कार्यक्रमों के लिए खर्च करते हैं। जब तक प्रवचन या उपदेश चलता है, मनुष्य सब कुछ भूलकर उसे सुनता है। इस प्रकार लोगों को क्षणिक जोश आता है, जिस प्रकार श्मशान में लोगों को वैराग्य उठता है, और ज्यों ही स्नान करके घर की तरफ रवाना हुए कि वही तामसिक वृत्तियाँ घेर लेती हैं। ठीक वैसी ही स्थिति, इन कथा और उपदेश सुनने वालों की होती है। ज्यों ही कार्यक्रम समाप्त हुआ, सारा जोश दूध में उफान की तरह शान्त हो जाता है। मनुष्य पूरी तरह उसी स्थिति में चला जाता है, जैसा पहले था।

ऐसा क्यों होता है, इस बात का पता लगाते ही बीमारी दूर भाग जाएगी। मैं कई लोगों से पूछता हूँ कि अमुक संत ने करोड़ों लोगों को उपदेश दे दिया है, बताइये कितने प्रतिशत लोग परिवर्तित हुए? मुझे हमेशा एक ही उत्तर मिलता है कि कलियुग का मानव पूर्णरूप से भ्रष्ट हो चुका है, इसमें स्वामी जी या पण्डित जी का क्या दोष है? मैं लोगों को हमेशा यही कहता हूँ कि आपने लाखों लोगों को क्षण भर में दोषी घोषित कर दिया, सभी बेचारे अपना अमूल्य समय और धन खर्च करके, अध्यात्म लाभ के लिए आते हैं। कभी उस उपदेशक पर भी प्रश्नवाचक चिह्न लगाकर तो सोचें कि कहीं जड़ में ही तो दोष नहीं है। अगर तार कटा-फटा और नकली होगा तो उससे कभी प्रकाश मिलने की सम्भावना नहीं होगी। जिस प्रकार राजनीतिज्ञ प्रचार करते हैं, ठीक वैसे ही इस समय धर्म का प्रचार हो रहा है। प्रचार का असर तो क्षणिक ही होता है, फिर यथास्थिति हो जाती है। आध्यात्मिक जगत् कभी प्रचार से प्रभावित नहीं किया जा सकता। यह कार्य तो मात्र आत्म जागृति से ही सम्भव है। प्रचार के माध्यम से आप सालों में जो नहीं प्राप्त कर सकते, चेतन व्यक्ति की उपस्थिति मात्र से क्षणभर में प्राप्त कर सकते हैं। उससे निकलने वाली सात्विक किरणें असंख्य लोगों को क्षणभर में भेद जाती हैं। इस प्रकार ऐसा चेतन व्यक्ति, असंख्य लोगों को क्षण भर में चेतन करने की क्षमता रखता है।

इस प्रकार चेतन हुए लोग, दूसरे लोगों को चेतन करने में सक्षम होते हैं। प्रथम आत्म जागृति ही कठिन है, उसके बाद तो संसार भर में उस ज्योति के फैलने में कोई देर नहीं लगती। इस प्रकार की जागृति में मनुष्य के प्रयास और प्रचार की कोई आवश्यकता नहीं होती। धर्म का प्रचार हर मनुष्य कर सकता है। यह एक मानवीय प्रयास मात्र है। इसका सम्बन्ध आत्म जागृति से बिलकुल नहीं है। आत्म जागृति के लिए परमेश्वर विशेष प्रकार का मनुष्य संसार में पैदा करता है। उस व्यक्ति को भी प्रयास की अधिक आवश्यकता नहीं होती। वह परमसत्ता अपना कार्य स्वयं करती है, वह मनुष्य तो मात्र माध्यम ही होता है। वह तो मात्र प्रतीक ही होता है। वह परमसत्ता स्वयं अपना प्रचार करती है, वह तो कठपुतली की तरह से संसार में विचरण मात्र करता है।

आत्म जागृति ईश्वर की शक्ति की अभिव्यक्ति है। उसमें प्रत्यक्ष रूप में ईश्वर की शक्ति कार्य करती है। ऐसे व्यक्ति की सभा में जितने लोग भी उपस्थित होंगे, प्रायः सभी परिवर्तित होने लगेंगे। इस प्रकार वह बीज सभी के अन्दर अंकुरित होकर निश्चित रूप से फल देने लगेगा। जो भी उन फलों का स्वाद चखेगा, चेतन होने लगेगा। इस प्रकार वह प्रकाश अपनी शक्ति से सारे संसार में फैल जाएगा। इस प्रकार की प्रक्रिया जब प्रारम्भ हो जाती है तो उसमें मानवीय

प्रयास की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। आत्म जागृति केवल ईश्वर की शक्ति की अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में ईश्वर स्वयं घटना स्थल पर उपस्थित होकर सभी बातों से पृथक, अपना कार्य स्वयं करता है। तब वास्तव में कुछ होता है, इसमें मानवीय प्रयास तो गौण होते हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्यों को मानवीय प्रयास द्वारा प्रोत्साहन करने की कोई जरूरत नहीं होती। लोग स्वयं खिंचे चले आते हैं।

प्रचार से जो क्षणिक चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया जाता है, कार्यक्रम के समाप्त होते ही वह भूतकाल का विषय बन जाता है। परन्तु आत्म जागृति निरन्तर तेज गति से चलती हुई संसार भर में फैल जाती है। चेतन व्यक्ति संसार से चला जाता है, परन्तु आत्म चेतना निरन्तर चलती ही रहती है। ऐसी सच्ची आत्म जागृति उपदेशों पर निर्भर नहीं करती। चेतन पुरुष के चन्द शब्द, वह कार्य और प्रभाव दिखाते हैं जो मानवीय प्रयास से सदियों में भी असम्भव है। ऐसे चेतन व्यक्ति के सानिध्य में बैठकर अगर व्यक्ति, वैरभाव, छलकपट, ईर्ष्या, द्वेष को भूलने की प्रार्थना, ईश्वर से करता है तो तत्काल मनुष्य परिवर्तित हो जाता है।

चेतन व्यक्ति से जुड़े बिना यह सब कुछ सम्भव नहीं है। क्योंकि ईश्वर कृपा और संत सद्गुरु के आशीर्वाद से उस चेतन व्यक्ति का सम्पर्क उस परमसत्ता से निरन्तर बना ही रहता है, अतः जितने लोग उससे जुडेंगे, सभी में वह प्रकाश तत्काल प्रकट होकर तामसिक शक्तियों को दूर भगा देगा। इस प्रकार चेतन हुए लोगों से जुड़ने वालों को भी कुछ चेतनता आनी प्रारम्भ हो जाती है, परन्तु पूर्ण जागृति तो उस चेतन व्यक्ति से जुड़ने पर ही सम्भव है। जिस मनुष्य में ऐसा प्रकाश एक बार प्रकट हो गया तो मोक्ष तक वह चलेगा। निरन्तर इस पथ पर चलता हुआ, वह व्यक्ति अनायास ही जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है।

२८.

धर्म सम्पूर्ण विश्व से लोप प्रायः हो चुका है।

(०६ मई २००३, मुम्बई)

इस समय 'धर्म', सम्पूर्ण विश्व से लोप हो चुका है। विश्व के सभी धर्मों के धर्माचार्य चीख-चीखकर, कह रहे हैं- हमारे धर्म में हिंसा का कोई स्थान नहीं है, फिर विश्व में जो नरसंहार हो रहा है, उसका संचालन कहाँ से, क्यों और कैसे तथा किसके लिए हो रहा है? आज सम्पूर्ण विश्व में जातियाँ जिन्दा है, धर्म जिन्दा नहीं है।

हमारे धर्म प्रधान कहे जाने वाले देश में भी जातियाँ अलग-अलग संगठित होकर 'लट्ठम् शरणम् गच्छामि' हो रही हैं, क्यों? एक ही नारा दिया जाता है- 'धर्म रक्षा हेतु', तो हर जाति अलग-अगल अस्त्रों का प्रयोग एक दूसरे के खिलाफ क्यों कर रही है? जबकि वे सभी जातियाँ एक ही धर्म के अनुयाई होने का दम्भ भर रही हैं। सभी एक धर्म के अनुयाई होने की डींग हांक रहे हैं और यही नहीं, सभी जातियाँ एक साथ एक ही नारा लगा रही हैं- 'अहिंसापरमोधर्मः', फिर लट्ठम् शरणम् क्यों?

गिरिजाघर और मस्जिद में एक ही ईश्वर की आराधना की जा रही है। असंख्य अलग-अलग गिरिजाघर हैं-एक ही धर्म के अनुयाइयों के। सभी एक दूसरे के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के घातक ही नहीं संहारक अस्त्रों का प्रयोग भी कर रहे हैं। कमोवेश ऐसी ही स्थिति विभिन्न मस्जिदों में, एक ही खुदा की इबादत करने वालों की है। फिर आणविक, रासायनिक एवं जैविक अस्त्रों का एक दूसरे के विरुद्ध प्रयोग किस 'ईश्वर' के आदेश एवं आशीर्वाद से कर रहे हैं? ईश्वर तो सबका एक ही है।

आज सम्पूर्ण विश्व में भौतिक विज्ञान की भाषा में कई प्रकार के भयानक प्राणघातक वायरस सक्रिय हो गए हैं। मध्यपूर्व के वायरस ने ११ सितम्बर २००१ को अमेरिका पर जो भीषण प्राणघातक प्रहार किया, उससे विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अपना संतुलन खो बैठा। अचानक आघात इतना गहरा लगा कि सम्पूर्ण अमेरिका, मृत्यु भय से काँप उठा। मानव की इस स्थिति को भौतिक विज्ञान ने 'फोबिया' रोग की संज्ञा दी है। अभी तक भौतिक विज्ञान के पास इसका कोई उपचार नहीं है।

अभी-अभी हूणों ने एक ऐसे वायरस का आविष्कार किया है, जो मनुष्यों को दम घोटकर मार देता है, अभी तक उसका भी कोई इलाज नहीं ढूँढ़ा जा सका है। यह वायरस

अपने जन्म स्थान से पश्चिमोत्तर की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। यह वायरस हवा के रुख के साथ फैलता है। अत: इसका फैलाव और विस्तार मनुष्य के हाथ में न होकर, ईश्वर के हाथ में है। ये सभी प्रकार के वायरस भारत को भी भयंकर कष्ट दे रहे हैं।

यह बात अभी तक ज्ञात नहीं हो सकी है कि भारत ने किस प्रकार के वायरस का आविष्कार किया है। क्योंकि भारत 'अहिंसापरमोधर्म:' के सिद्धान्त में विश्वास करता है, अत: उसका वायरस अशान्ति नहीं, शांति फैलावेगा। अब हिंसा और अहिंसा का युद्ध होना आरम्भ होने वाला है। परिणाम तो अभी तक भविष्य के गर्भ मे छिपा है।

२९.

इस युग के धर्माचार्य क्या हैं-
धर्मगुरु, इतिहास-व्याख्याता या चारणभाट?

(०८ मई १९८८)

इस समय संसार भर के सभी धर्मों के धर्माचार्यों की एक जैसी ही स्थिति है। सभी लोग पहले के अवतारों, पैगम्बरों और संतों का गुणगान करते हैं। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का शोध करते हैं। उनकी अलग-अलग व्याख्या, तर्क बुद्धि और शब्दजाल के सहारे करते हैं। कुछ उन ग्रंथों को नित्य पाठ करने का उपदेश देते हैं। कईयों ने इन्हें कथा के रूप में अपनाकर, जीविका चलाने का सहारा बना लिया है।

अधिक चतुर लोगों ने प्रतीक के रूप में विभिन्न प्रकार की अनेक मूर्तियाँ बनाकर मंदिरों में स्थापित कर ली हैं और उसको अपनी आजीविका का साधन बना लिया है। प्रायः सभी पैगम्बरों, अवतारों और संतों का मात्र गुणगान करके, अध्यात्म की शिक्षा दे रहे हैं; जिस प्रकार विभिन्न युगों में अनेक संतों ने उस परमसत्ता का साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति की है, वह रास्ता कोई नहीं बता रहा है। केवल गुणगान से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है।

अक्षर हम किसी अच्छे खाद्य पदार्थ का केवल गुणगान वर्षों तक करते रहें तो हमें कुछ भी लाभ नहीं होगा। अगर हम बिना गुणगान किए, उसे खाना प्रारम्भ कर दें तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव, हम अपने स्वास्थ्य पर महसूस करने लगेंगे। यही सिद्धान्त जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है, इससे भिन्न सभी रास्ते काल्पनिक, भ्रम पैदा करने वाले और भटकाने वाले हैं। दुःख की बात तो यह है कि इस समय संसार के सभी धर्मों में ऐसे लोगों का बोलबाला है। वे सच्चाई की बात सुनने तक को तैयार नहीं हैं। उन्हें भारी भय है कि अगर कहीं ऐसी सच्चाई प्रकट हो गई तो हमारी सत्ता का अन्त हो जाएगा। यही कारण है कि संसार के अधिकतर बुद्धिजीवी लोग, परिणाम के अभाव में, उनसे विमुख ही नहीं हो गए, उनके खिलाफ विद्रोह तक करने लगे हैं। परन्तु फिर भी वे अपना काम, धन के बल पर, अबाधगति से चलाते जा रहे हैं। वे रुककर अपने अनुयाइयों को दूसरों की बात सुनने का अवसर तक नहीं देना चाहते हैं, परन्तु उनका यह भ्रम है। ये यथास्थितिवादी लोग नहीं समझते कि कालचक्र निरन्तर चलता रहता है। उसकी गति में कभी भी व्यवधान नहीं आ सकता।

युग परिवर्तन अनादि काल से होता आया है। कालचक्र न आजतक कभी प्रभावित

हुआ है और न कभी होगा। आदिकाल से हिरण्यकश्यप, रावण और कंस होते आये हैं परन्तु सभी का जो अन्त हुआ, वह सर्वविदित है। झूठ और ढोंग का हमेशा ऐसा ही अन्त होता है। देव और दानव का युद्ध अनादि काल से निरन्तर चलता आ रहा है। दानव अपनी शक्ति का ऐसा प्रदर्शन करते हैं कि ऐसा लगने लगता है, जीत उन्हीं की होगी परन्तु इतिहास साक्षी है, अन्तिम विजय सत्य की ही हुई है। उजाला प्रकट होने पर अन्धेरा तत्काल भाग जाता है। घोर अन्धेरी रात भी सूर्योदय के प्रकाश से जगमगा उठती है।

अन्धकार की शक्तियाँ नहीं चाहतीं कि प्रकाश हो, परन्तु सूर्य अबाध गति से उदय हो रहा है, इसी क्रम से युग परिवर्तन होगा। यह पूर्व निश्चित व्यवस्था है। यह परिवर्तन संसार का कोई भी प्राणी रोकने में असमर्थ है। हम देखते हैं, अंग्रेजों के राज्य में कभी सूर्य अस्त ही नहीं होता था, आज उनके राज्य में सूर्य बहुत कम समय तक दिखाई देता है। यह परिवर्तन इसी सदी की देन है। संसार में जो देश उठ रहे हैं, उनकी प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। यह ईश्वरीय व्यवस्था है। इसके सम्बन्ध में भारत के ही नहीं, संसार के अनेक संत भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं।

इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है- "भारत ही संसार को आध्यात्मिक दान देगा। इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही करेगा।" इसका समय भी १९९३-९४ बताया है।

३०.

जाति पाति पूछे ना कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।

(३१ मार्च १९८८)

इस समय संसार के सभी धर्मों में एक वर्ग विशेष अपने आपको धर्म का ठेकेदार घोषित कर बैठा है। सभी धर्मों में ऐसी व्यवस्था बना रखी है कि उनकी आज्ञा के बिना ईश्वर से मिलना असम्भव है। सभी धार्मिक ग्रन्थ इस मानवीय व्यवस्था का खुला विरोध करते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के नवें अध्याय में स्पष्ट कहा है-

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।। ९:३०

(यदि अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरे को भजता है, वह साधु ही मानने योग्य है, यथार्थ निश्चय वाला है।)

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।। ९:३१

(वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है। (और) सदा रहने वाली परमशान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन! निश्चयपूर्वक सत्य जान, मेरा भक्त नष्ट नहीं होता है।)

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। ९:३२

(क्योंकि हे अर्जुन! स्त्री, वैश्य, (और) शुद्रादिक तथा पाप योनिवाले भी जो कोई होवे, वे भी मेरे शरणागत होकर परमगति को प्राप्त होते हैं।)

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।। ९:३३

(फिर पुण्यशील ब्राह्मणजन तथा राजर्षि भक्तजन का क्या कहना, जो परमगति को प्राप्त होते हैं। इसलिए सुख रहित क्षण भंगुर, इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर, मेरा ही भजन कर।)

गीता के उपर्युक्त श्लोक स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर का कोई भी ठेकेदार नहीं है। हर प्राणी के लिए प्रभु के द्वार खुले हैं। परन्तु फिर भी युग के गुणधर्म के कारण संसार में इतना अन्धकार फैल गया है कि किसी को सही रास्ता नजर ही नहीं आता। इस युग में लोग भ्रमित करने वाले व झूठा स्वांग रचकर प्रदर्शन करने वाले ढोंगी लोगों की तरफ अधिक आकर्षित होते हैं। अपने विवेक से कोई चलने की स्थिति में नहीं है। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है-

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।। ९:२९

(मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न मेरा (कोई) अप्रिय है, न प्रिय है, परन्तु जो मेरे को प्रेम से भजते हैं, वे मेरे में और मैं भी उनमें (हूँ)।)

इतना होने पर भी इस समय के धर्मगुरु स्वार्थवश, इसी पवित्र ग्रन्थ की व्याख्या तोड़-मरोड़कर करते हैं कि लोग भ्रमित हो जाते हैं। पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, त्याग-तपस्या, दान-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि लोग भयभीत होकर, अपनी सहज बुद्धि भी खो बैठते हैं। इस प्रकार संसार के भोले-भाले लोगों को धर्म की आड़ में ठगने का व्यापार सर्वत्र फैला हुआ है। इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने इन तथाकथित धर्मगुरुओं को फटकारते हुए कहा था - "तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है, रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हँडिया-बर्तन तुम्हारे शास्त्र।" स्वामी जी ने संसार के धर्मगुरुओं का सही चित्र प्रस्तुत किया है। इस समय संसार भर के सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने धर्म को पेट से जोड़ रखा है। पेट के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं।

ज्यों-ज्यों इनका विरोध बढ़ता गया, इन्होंने भी अपने संगठन बनाकर अपनी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध कर लिया। एक प्रकार से दूसरा समाज बराबर संगठित करके, हर मुकाबले की तैयारी कर ली। इस समय धर्म- भय, लालच, प्रलोभन और धोखे से सिखाया जाता है। प्रेम, सद्भाव, श्रद्धा, विश्वास नाम की कोई वस्तु इस समय नहीं मिलेगी। केवल भ्रमित और भयभीत करके त्याग-तपस्या, दान-पुण्य, स्वर्ग-नर्क आदि की काल्पनिक व्याख्या करके जितना अधिक ठगा जा सके, निरन्तर यही प्रयास चल रहा है। यह स्थिति अब चरम सीमा पर पहुँच चुकी है।

अब संसार के लोग, आगे ठगे जाने के लिए तैयार नहीं हैं। यही कारण है कि सभी धर्म के मठाधीश इस समय अन्तिम संघर्ष में लगे हुए हैं। परन्तु परिवर्तन संसार का नियम है। इससे

संसार की कोई वस्तु बच नहीं सकती। अतः इस धार्मिक व्यवस्था का भी अन्त अधिक दूर नहीं है।

३१.

युग के गुण-धर्म से संसार के सभी प्राणी प्रभावित होते हैं।

(०७ अक्टूबर १९८८)

विष्णु पुराण स्पष्ट कहता है कि कलियुग में ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व तथा वैश्यत्व का पूर्णरूप से पतन हो जाता है। एक मात्र शूद्रत्व का साम्राज्य रह जाता है। यह तत्त्व अपने गुण-धर्म से संसार के सभी जीवों का संचालन कर रहा है। यही कारण है, संसार में पूर्ण रूप से तामसिक सत्ता का साम्राज्य है।

ईश्वर के नाम की आड़ में सभी लोग तामसिक शक्तियों का उपयोग कर रहे हैं। आम व्यक्ति भी इसी युग के गुणधर्म से प्रभावित होने के कारण कुछ भी नहीं समझ पा रहा है। ऐसे धर्म गुरुओं की संसार के सभी धर्मों में बाढ़ सी आ गई है। इस सम्बन्ध में समर्थ गुरु रामदास जी महाराज ने बहुत ही स्पष्ट व्याख्या की है।

तिन्ही लोक जेथून निर्माण झाले।
तया देवरायासि कोणी न बोले।।
जगी थोरला देव तो चोरलासे।
गुरुवीण तो सर्वथाही न दीसे।। १७९

तीनों लोक-भूलोक, द्युलोक, पाताललोक जहाँ से उत्पन्न हुए, उस सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म देवाधिदेव श्रीराम को कोई नहीं कहता। जग में, सर्वोत्तम देवता चुराया गया है। उसके चोरी चले जाने के पश्चात् वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्व देवाधिदेव की चोरी की तो गयी है, किन्तु सद्गुरु रूपी गुप्तचर की सहायता के बिना, वह नहीं दीख सकेगा।

(अब समर्थ सद्गुरुदेव, सद्गुरु की परीक्षा कैसे करनी चाहिए, यह समझाते हैं)

गुरु पाहतां पाहतां लक्ष कोटी।
बहुसाल मंत्रावली शक्ति मोठी।।
मनीं कामना चेटकें धातमाता।
जनीं व्यर्थ रे तो नव्हे मुक्ति दाता।। १८०

गुरुओं को देखते-देखते लाखों करोड़ों गुरु मिलेंगे। वे बहुत वर्षों तक मंत्र द्वारा चतुराई से अपने भीतर जादूगरी की बड़ी शक्ति द्वारा कामना पूर्ति कर लोगों को अपने चंगुल में चिन्तामणि सदृश, अपनी मंत्र शक्ति के प्रभाव से ही फँसाते फिरते हैं। ऐसे लोग व्यर्थ होते हैं। वे मोक्षदाता सद्गुरु-पद पाने के अधिकारी नहीं होते हैं।

नव्हे चेटकी चालकू द्रव्यभोंदू।

नव्हे निंदकू मत्सरू भक्ति मंदू।।

नव्हे उन्मतू वेसनी संगबाधू।

जगी ज्ञानिया तोचि साधू अगाधू।। १८१

जो जादू करने वाला होता है, लोगों के सम्मुख दीनता दिखाकर आह्लाद उत्पन्न करने वाला या मिथ्या प्रशंसा करने वाला होता है तथा अपने साधुत्व का प्रदर्शन कर लोगों से पैसा लूटने वाला द्रव्य लोभी होता है, वह सद्गुरु-पद का अधिकारी नहीं होता।

वह किसी की निन्दा नहीं करता, किसी से मात्सर्य नहीं रखता, उन्मत्त नहीं होता, व्यसनी नहीं होता तथा बुरी संगति में नहीं रहता। जो बुरी संगति में बाधा डालनेवाला, ज्ञान सम्पन्न होता है, वही अगाध ज्ञानी व्यक्ति साधु है। ऐसा जानना चाहिए।

नव्हे वाउगी चाहुटी काम पोटीं।

क्रियेवीण वाचालता तेचि मोठी।।

मुखें बोलिल्यासारिखें चालता है।

मना सद्गुरु तोचि शोधूनि पाहे।। १८२

वह व्यक्ति चुगलखोर नहीं होता। उसके अन्तरंग में काम भावना नहीं होती। उसमें क्रिया के बिना वाचालता नहीं होती। वह मुख से बोले गए शब्दों का वैसा ही आचरण करने में समर्थ होता है। हे मन! इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति को ही सद्गुरु समझना चाहिए।

जनीं भक्त ज्ञानी विवेकी विरागी।

कृपालू मनस्वी क्षमावंत योगी।।

प्रभू दक्ष व्युत्पन्न चातुर्य जाणे।

नयाचेनि योगे समाधान बाणे।। १८३

वह सद्गुरु पद का अधिकारी भक्त होता है और विवेक-वैराग्य सम्पन्न कृपालु,

मनस्वी, क्षमाशील, योगी, समर्थ, अत्यन्त सावधान, व्युत्पन्न (प्रत्युत्पन्न मतिवाला), चातुर्य सम्पन्न तथा संगति करने पर समाधान की प्राप्ति कराकर समाधानी बनाने वाला होता है।

नव्हे तेंचि जालें नसे तेंचि आलें।
कळों लागलें सज्जनाचेनि बोलें।।
अनिर्वाच्य तें वाच्य वाचें वदावें।
मना संत आनंत शोधीत जावे।। १८४

जो पहले नहीं था, वह हो गया, जो नहीं आता था, वह आ गया। सज्जन की वाणी के कारण आकलन होने लगा। जो अनिर्वाच्य था, वह वाच्य हो गया। उसे वाणी से बोलना चाहिए। संत-संगति से अनन्त ब्रह्म की खोज करनी चाहिए।

इसी प्रकार संत सद्‌गुरु की महिमा में संत कबीर तो यहाँ तक कह गए-

गुरु-गोविन्द दोऊं खड़े, किसके लागुँ पायं।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो मिलाय।।

कबीरा धारा अगम की, सद्‌गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय।।

ढोंगी गुरुओं के सम्बन्ध में यीशु ने भी कहा है-

With respect to the fake Gurus, Jesus also said the following in St. Mark 12:38 to 40 -

38. And he said unto them in his doctrine, because of the scribes, which love to go in long clothing, and love salutations in the market places.

39. And the Chief seats in the synagogues, and the uppermost rooms at feasts.

40. which devour widows' houses, and for a pretence make long prayers, these shall receive greater damnation.

उपर्युक्त का हिन्दी अनुवाद-

धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी- सेंट मार्क १२:३८ से ४०

३८. अपने उपदेश में उसने कहा, धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे अपने लम्बे चोंगे पहने हुए इधर उधर घूमना पसंद करते हैं। बाजारों में अपने को नमस्कार करवाना, उन्हें भाता है।

३९. और आराधनालयों में वे महत्त्वपूर्ण आसनों पर बैठना चाहते हैं। वे जेवनारों में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की इच्छा रखते हैं।

४०. वे विधवाओं की सम्पति हड़प जाते हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं बोलते हैं। इन लोगों को कड़े से कड़ा दण्ड मिलेगा।

यीशु ने तो यहाँ तक कह डाला- "Can a blind lead the blind? Shall they not both fall into the ditch?" (क्या अन्धा अन्धे को राह दिखा सकता है? क्या वे दोनों ही गढ्ढे में नहीं गिरेंगे?)

आगे होने वाले आध्यात्मिक गुरुओं के बारे में यीशु ने अपने अनुयाइयों को सचेत करते हुए, स्पष्टरूप से भविष्यवाणी की है- St. Matthew 24:24 & 25

24. For there shall arise false Christs, and false prophets, and shall shew great signs and wonders; in so much that, if it were possible, they shall deceive the very elect.

25. Behold, I have told you before.

उपर्युक्त का हिन्दी अनुवाद-

२४:२४ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।

२४:२५ देखो! मैंने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि इस समय संसार में कैसे धर्म गुरु प्रकट हो रखे हैं, यही कारण है कि इस समय संसार में भारी अन्धकार व्याप्त है, क्योंकि इस समय कोई भी आराधना प्रत्यक्ष परिणाम नहीं दे रही है, अतः लोगों का विश्वास ही खत्म नहीं हुआ, लोगों ने धर्मगुरुओं के विरुद्ध विद्रोह तक कर दिया है। ऐसी भयंकर स्थिति जब भी संसार में हुई है, तब उस परमसत्ता का अवतरण संसार में हुआ है। इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा है "संसार में मानव चेतना में अतिमानस योनि का आगमन अवश्यम्भावी है।" संसार के सभी संतों की भविष्यवाणियों के अनुसार युग परिवर्तन का समय अब दूर नहीं है। भौतिक सत्ता के

परिवर्तन में भी खून-खराबा होता है, यह तो अन्धकार पर प्रकाश की विजय का समय है।

३२.

शरीर को कष्ट देना आसुरी वृत्ति का कार्य है।

(१६ अप्रेल १९८८)

भगवान् ने गीता के १७वें अध्याय में तीन प्रकार के लोगों की व्याख्या करते हुए कहा है-

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः।। १७:४

(हे अर्जुन! सात्विक पुरुष देवों को पूजते हैं, राजसी पुरुष यक्ष और राक्षसों को (तथा) अन्य तामस मनुष्य प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं।)

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।। १७:५
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्।। १७:६

(जो मनुष्य शास्त्रीय विधि से रहित केवल मनोकल्पित घोर तप को तपते हैं, (तथा) दम्भ और अहंकार से युक्त, कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त हैं, शरीर रूप से स्थित भूतसमुदाय को और अन्तः करण में स्थित मुझ अन्तर्यामी को भी कृश करने वाले हैं, उन अज्ञानियों को (तू) आसुरी स्वभाव वाले जान।)

उपर्युक्त व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए, अगर हम आधुनिक आराधना पद्धतियों को ध्यान से देखें तो हम पायेंगे कि प्रायः सभी आराधनाएँ तामसिक वृत्तियों से प्रेरित हैं। तीनों प्रकार की वृत्तियों को स्पष्टकरते हुए भगवान् ने कहा है-

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।। १७:८

(आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख (और) प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने, स्थिर रहने वाले, स्वभाव से ही मन को प्रिय आहार, सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।)

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।

आहारा राजसस्येष्ठ दुःखशोकामयप्रदाः।। १७:९

(कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, अतिगर्म, तीक्ष्ण, रूखे, दाहकारक, दुःख, चिन्ता और रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार, राजस पुरुष को प्रिय होते हैं।)

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।। १७:१०

(जो भोजन अधपका, रस रहित और दुर्गन्धयुक्त, बासी, उच्छिष्टहै तथा अपवित्र भी है, वह (भोजन) तामस पुरुष को प्रिय होता है।)

आधुनिक आराधनाओं में शरीर को कष्ट देना, आराधना का मुख्य अंग बन गया है। मनुष्य शरीर को कष्टप्रद तरीकों से दुःख पहुँचाना ही आराधना माना जाता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने एक बार कहा था कि "इस समय संसार के लोग दुबले-पतले कृश शरीर वाले व्यक्ति को ही उत्तम आराधक मानते हैं। आराधना का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। कमजोर पुरुष के अगर आध्यात्मिक शक्ति पास से गुजर जायेगी तो वह उसको सहन नहीं कर सकेगा। अतः आराधक का शरीर, मन, और बुद्धि पूर्ण रूप से स्वस्थ होना अनिवार्य है। इसके अभाव में मनुष्य सात्त्विक आराधना कर ही नहीं सकता।"

इससे स्पष्ट होता है कि सात्त्विक आराधक को सर्वप्रथम खान-पान और स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। हम देखते हैं कि इस समय अध्यात्म जगत् के लोग विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के आदि हो जाते हैं। इस प्रकार के सभी नशे मनुष्य को आलसी, अकर्मण्य और सुस्त बना देते हैं। ऐसी स्थिति में कोई पुरुष कैसे आराधना कर सकता है? अपनी इस कमजोरी पर पर्दा डालने के लिए, इन सभी नशों का करना आराधना के लिए नितान्त आवश्यक है, ऐसी गलत धारणा समाज में फैला रखी है। इस प्रकार समाज को भ्रमित करके, ऐसे असंख्य लोगों के झुण्ड के झुण्ड संसार के हर हिस्से में धर्म की आड़ में, मौज उड़ा रहे हैं। यही कारण है कि मानव समाज की ईश्वर और धर्म से आस्था निरन्तर घट रही है। इस समय तो यह ढोंग अपनी चरम सीमा को लांघ चुका है।

अतः अब अध्यात्म जगत् में परिवर्तन अवश्यम्भावी हो गया है। संसार के लोग अब परिणाम रहित किसी धार्मिक प्रक्रिया को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। यही कारण है कि अध्यात्म जगत् में भारी खलबली मची हुई है। इस क्षेत्र में भी क्रान्ति की लहर चलने लगी है। अब वह

समय अधिक दूर नहीं है, जब अध्यात्म जगत् सात्विक प्रकाश से जगमगा उठेगा।

३३.

मानव शरीर स्थित जीवात्मा को कष्ट देना पाप है।

(१९ अप्रेल १९८८)

इस समय जितनी भी आराधना की विधियाँ प्रचलित हैं, प्रायः सभी में शरीर को कष्ट देने की प्रक्रिया सम्मिलित है। भयंकर गर्मी में और भयंकर सर्दी में शरीर को कष्ट देना, इसके अलावा अनेक ऐसी आराधनाएँ प्रचलित हैं, जिनके द्वारा जीवात्मा को भारी कष्ट दिया जाता है। ये सभी आराधनाएँ न होकर केवल प्रदर्शन हैं, जिनके द्वारा अधिक से अधिक लोगों का ध्यान आकृष्ट करके आर्थिक लाभ लिया जा सके। भगवान् कृष्ण ने गीता के छठे अध्याय में कहा है-

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥६:१६

(हे अर्जुन, यह योग न तो बहुत खाने वाले का सिद्ध होता है, और न, बिलकुल न खाने वालों का तथा न अति शयन करने के स्वभाव वाले का और न अत्यन्त जागने वाले का ही।)

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥६:१७

(दुःखों का नाश करने वाला योग (तो) यथायोग्य आहार और विहार करने वाले का (तथा) कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का (और) यथायोग्य शयन करने तथा जागने वाले का (ही) (सिद्ध) होता है।)

भगवान् ने स्पष्ट कहा है कि योग सब तरह के दुःखों का नाश करने वाला है, फिर शरीर को कष्ट देकर उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति कैसे सम्भव है? परन्तु सभी अनभिज्ञ लोगों ने संसार के सभी प्राणियों को भ्रमित तो कर ही रखा है, स्वयं भी भ्रमित हो रहे हैं। ऐसा लगता है, कुएँ में ही भांग गिर चुकी है। सर्वत्र एक ही लहर चल रही है।

इस युग में अध्यात्म जगत् में जितना अन्धकार व्याप्त है, पहले कभी देखने में नहीं आया। किसी न किसी प्रकार से हर धर्म के धर्मगुरुओं ने, इस पथ को अर्थोपार्जन का साधन बना रखा है। गरीब और सीधे-साधे लोगों को, धर्म और ईश्वर के नाम पर ठग रहे हैं। हर जगह इसी प्रकार की लूट मची हुई है। सभी उपदेशक भगवान् के नाम जप की बात करते हैं। भगवान्

श्री कृष्ण ने भी गीता में स्पष्टकहा है कि सब प्रकार के यज्ञों में 'मैं जप यज्ञ हूँ।', फिर इस युग में, इस जप यज्ञ से लोगों में चेतना क्यों नहीं प्रकट होती है?

मैं देखता हूँ, जब तक कथा-प्रवचन आदि का कार्यक्रम चलता है, लोगों में कुछ उत्साह देखने में आता है, पर ज्यों ही कार्यक्रम समाप्त हुआ, लोग सब कुछ भूल जाते हैं। उन पर कुछ भी असर दिखाई नहीं देता है। ईश्वर, प्रकृति और जीवात्मा एक सच्चाई है। प्रकृति ने जीवात्मा को, इस कदर आच्छादित कर रखा है कि उसे परमात्मा की झलक ही नहीं मिलने देती। परन्तु अगर जीव देवयोग से सच्चे संत सद्गुरु के सम्पर्क में आ जाता है तो माया का फैलाया हुआ अन्धकार, उसके अन्दर से क्षणभर में भाग जाता है और उसका स्थान सात्विक प्रकाश ले लेता है। इस प्रकार एक बार चेतन हुआ व्यक्ति निरन्तर चेतना के जगत् में आगे बढ़ता हुआ, निश्चित रूप से जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा जाता है। गुरु वह पारस होता है, जिसके सम्पर्क में आने पर हर जीव सात्विक प्रकाश से जगमगा उठता है।

आज संसार में असंख्य धर्मगुरुओं के रहते हुए भी घोर अन्धकार छाया हुआ है। सारे विश्व का अन्धकार भगाने के लिए एक ही संत सद्गुरु काफी है। एक ही जलता दीपक असंख्य दीप प्रज्वलित करके संसार का अन्धकार भगाने में सक्षम होता है। पहला दीपक ही जलना कठिन है। जिस प्रकार एक जलते दीपक से जले हुए दीपक, दूसरे दीपकों को जलाने की शक्ति रखते हैं, ठीक उसी प्रकार संत सद्गुरु से चेतन हुए जीवात्मा असंख्य जीवात्मा को चेतन करने की क्षमता रखते हैं। जिस प्रकार जनरेटर से जुड़े हुए तार से बिजली के असंख्य बल्ब एक साथ जल सकते हैं, ठीक उसी प्रकार एक ही संत सद्गुरु पूरे विश्व का अन्धकार भगाने में सक्षम है। मैं इस सिद्धान्त को भौतिक जगत् में सत्यापित होते हुए, स्वयं देख रहा हूँ। श्री अरविन्द की यह बात पूर्णरूप से सत्य है कि- "यहाँ मैं इस सिद्धि के लिए जो यत्न कर रहा हूँ, वह केवल इसलिए कि पार्थिव चेतना में इस काम का होना आवश्यक है और अगर यह पहले मेरे अन्दर न हुआ तो औरों में भी न हो सकेगा।" गुरु अधिमानसिक देव का (चेतन) स्वरूप होता है।

३४.

काम, क्रोध तथा लोभ नरक के द्वार हैं।

(२६ अप्रेल १९८८)

श्री कृष्ण ने उपर्युक्त तीनों वृत्तियों को नरक का द्वार कहा है। भगवान् ने ऐसी आसुरी प्रकृति वाले मनुष्यों की व्याख्या करते हुए कहा है-

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।

मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।। १६:१८

अहंकार, बल, घमंड, कामना, और क्रोधादि के परायण हुए, दूसरों की निन्दा करने वाले पुरुष, अपने और दूसरों के शरीर में (स्थित) मुझ अन्तर्यामी से द्वेष करने वाले हैं।

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।

क्षिपाम्यजस्त्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।। १६:१९

उन द्वेष करने वाले पापाचारी (और) क्रूरकर्मी नराधमों को, मैं संसार में बारम्बार आसुरी योनियों में ही गिराता हूँ। हे अर्जुन, वे मूढ़ पुरुष जन्म-जन्म में आसुरी योनि को प्राप्त हुए, मेरे को न प्राप्त होकर, उससे ही अति नीच गति को प्राप्त होते हैं।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।। १६:२१

काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकार के द्वार आत्मा का नाश करने वाले हैं, इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए। हे अर्जुन! इन तीनों नरक के द्वारों से मुक्त हुआ पुरुष अपने कल्याण का वरण करता है, इससे (वह) परम गति को जाता है।

इसके बावजूद इस समय युग के गुण धर्म के कारण प्रायः संसार के मनुष्य आसुरी वृत्तियों से ग्रस्त हैं। अपना खून ही स्वयं को काटने को तैयार है। एक ही पिता के पुत्र, एक दूसरे के प्राणों के प्यासे हैं। ऐसा घोर अन्धकार जब भी संसार में हुआ है तो उस परमसत्ता को अवतरित होना ही पड़ा है।

इस सम्बन्ध में संसार के बहुत से संत पुरुष भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं।

३५.

सत्संग का प्रभाव

(२५ अप्रेल १९८८)

इस युग में सत्संग को मानव समझ ही नहीं पा रहा है। कई लोग रात भर जागते रहकर भजन-कीर्तन करने को सत्संग कहते हैं, कई कथा, उपदेश आदि में सम्मिलित होने को सत्संग कहते हैं। परन्तु सत्संग का सही अर्थ और प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में लोगों को अभी मिल ही नहीं रहा है।

सत् और असत्, प्रकाश और अन्धेरा दो विपरीत शक्तियाँ (भाव) हैं। दोनों कभी साथ रह ही नहीं सकते। उजाला होते ही अन्धेरा भाग जाएगा। जहाँ सत् प्रकट हो जाएगा, वहाँ असत् टिक ही नहीं सकता। इसका स्पष्ट मतलब है कि इस समय संसार के मानव जिसको सत्संग की संज्ञा दे रहे हैं, वह सत्य से बहुत दूर है। मैं आम लोगों से प्रायःसुनता रहता हूँ कि आज अमुक महात्मा का सत्संग है, उपदेश है। मैं कभी-कभी पूछ लेता हूँ कि अमुक महात्मा, पिछले कई सालों से आज तक लाखों लोगों को उपदेश दे चुके होंगे, बताइये कितने प्रतिशत लोग परिवर्तित हुए? प्रायः एक ही उत्तर मिलता है कि इसमें महाराज का क्या दोष है, कलियुग के मानव ही भ्रष्ट हैं। इस प्रकार लाखों लोगों को क्षण भर में दोषी कह दिया जाता है। बेचारे अपना समय और धन नष्ट करके दूर-दूर से आते हैं, और इनकी कैसी दुर्गति होती है! कभी किसी ने महात्मा जी पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाकर जानने का प्रयास ही नहीं किया कि कहीं जड़ में तो दोष नहीं है।

मुझे इस सम्बन्ध में किसी संन्यासी ने एक किस्सा सुनाया था। सर्दी का मौसम था। एक चौधरी अपने १०-११ साल के पुत्र को लेकर अपने ही गाँव के एक महात्मा के पास गया और बोला, "महाराज! यह लड़का गुड़ बहुत खाता है। बहुत मना करने पर भी मानता नहीं है। कृपया आप इसे कुछ उपदेश दें तो शायद मान जाए।"

उस महात्मा ने कहा, उसे १५ दिन बाद मेरे पास लाना। १५ दिन बाद वह चौधरी फिर लड़के को ले गया तो महाराज ने अधिक गुड़ खाने की हानि बताकर गुड़ खाने से मना कर दिया। लड़के ने उस दिन से गुड़ खाना छोड़ दिया। कुछ दिन बाद चौधरी उस महात्मा के पास गया और बोला, "महाराज इतनी सी बात कहनी थी तो पहले ही कह देते, मेरा १५ दिन गुड़ और क्यों बर्बाद होने दिया?"

महाराज ने कहा, "भाई उस दिन तक मैं भी गुड़ खाया करता था। अतः मेरी बात का उस लड़के पर कुछ भी असर नहीं होता। आप के प्रथम बार आने के बाद, मैंने गुड़ खाना बिलकुल बन्द कर दिया। इसलिए १५ दिन बाद मेरी बात का उस लड़के पर असर हुआ और उसने गुड़ खाना छोड़ दिया।"

मैंने महाराज से यही प्रश्न किया था कि आज के युग के धर्मगुरुओं का प्रभाव क्यों नहीं हो रहा है? इस पर महाराज ने उपर्युक्त उदाहरण देकर कहा इसमें हम ही दोषी हैं। संसार के लोगों का दोष नहीं। वह महात्मा जसनाथी (सिद्ध समुदाय का) था। मेरी मुलाकात पलाना रेलवे स्टेशन पर ट्रेन का इन्तजार करते समय हुई थी। वह साधु बरसिंगसर में रहता है। श्री सागरनाथ जी के साथ बीकानेर स्टेशन पर आया था। मुझे पहला व्यक्ति मिला जिसने सच्ची बात कही।

मैं देखता हूँ, गुरुदेव (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) के पास जाने वाले सभी व्यक्ति शराब और मांस का स्वतः ही त्याग कर देते थे। उनके स्वर्गवास के बाद मुझसे जुड़ने वाले लोग भी शराब, मांस आदि तामसिक वस्तुओं का स्वतः ही त्याग कर रहे हैं, और जो ऐसा नहीं कर सकते, वे दो-चार बार आकर आना बन्द कर देते हैं। फिर मेरे पास आने की हिम्मत ही नहीं होती। सच्चाई का असर इतना स्थाई और गहरा होता है कि एक बार जिज्ञासु बनकर आने वाला जीवन भर उस अनुभूति को नहीं भूल सकता।

सत्संग का मतलब सच्चाई का संग करने से है। जिस प्रकार आग के पास जाने से गर्मी महसूस हुए बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार से सत्संग का असर होता है। सच्चा गुरु उस परम चेतन सत्ता से सीधा सम्पर्क रखता है। अतः ज्यों ही आपके हृदय के तार उनसे जुड़े कि आपमें वह सात्विक प्रकाश प्रकट होने लगेगा। ज्यों-ज्यों उनका सानिध्य और प्रेम बढ़ता जाएगा, प्रकाश स्पष्ट और तेज होता जाएगा। इस प्रकार जीव ज्यों-ज्यों उस परमसत्ता के करीब जाता जाएगा, आकर्षण और गति निरन्तर तेज होती जायेगी। यह होता है सत्संग का प्रभाव। इससे भिन्न सब धोखा है।

३६.

आदान-प्रदान

(०७ मई २००३, मुम्बई)

जगत् का नियम है-आदान-प्रदान। इस वाक्य से 'आ' और 'प्र' हटा दें तो पीछे मात्र 'दान' शब्द ही शेष रहता है। हमारे दर्शन के अनुसार कलियुग में दान ही धर्म है। स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने दान की व्याख्या करते हुए कहा है-सबसे उत्तम दान है, 'अध्यात्म-ज्ञान' का दान, फिर विद्या दान, फिर प्राण दान। रोटी-कपड़ा दान नहीं है, वह तो मानवीय कर्तव्य है, दान नहीं है।

आदान-प्रदान के सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है- "जगत् का नियम है-आदान-प्रदान। इस नियम को जो लोग, जो जाति, जो देश नहीं मानेगा, उसका कल्याण नहीं होगा। हम लोगों को भी 'उस' नियम का पालन करना चाहिए। इसलिए मैं अमेरिका गया था। उन लोगों के भीतर इस समय अधिक मात्रा में धर्म पिपासा है कि मेरे जैसे लोग यदि हजारों की संख्या में भी वहाँ जायें तो भी उन्हें स्थान मिलेगा। वे लोग तुम्हें बहुत दिनों से धन-रत्न दे रहे हैं, तुम लोग अब उन्हें अमूल्य रत्न दो। तुम देखोगे, घृणा के स्थान में श्रद्धा-भक्ति मिलेगी और तुम्हारे देश का वे 'स्वयं' ही उपकार करेंगे। वे 'वीर जाति' हैं, उपकार नहीं भूलती।"

स्वामी जी की उपर्युक्त बात को सत्य मानकर ही मैं अमेरिका जाना चाहता हूँ। आज देश की स्थिति यह है कि अमूल्य धन का मालिक देश, संसार से भीख माँग रहा है। अगर यह सत्य नहीं है तो देश के कर्णधारों ने उस खैरात को स्वीकार क्यों किया जो अमेरिका के तथाकथित सेठ बिल गेट्स साहब देकर गये हैं? बड़े दुःख की बात है, हम असीम धन के मालिक सम्पूर्ण विश्व को दीवालिए नजर आ रहे हैं।

मैं पिछले लगभग १५ सालों से इस देश में अध्यात्म के क्षेत्र में कार्य कर रहा हूँ परन्तु आशातीत सफलता नहीं मिल पाई। मैंने हताश होकर सद्‌गुरुदेव से प्रार्थना की, यह क्या हो रहा है? प्रत्युत्तर मिला- "किसको दान दे रहा है, यह देश तो इसका दाता है। जिन्हें इसकी जरूरत है, उन्हें दान कर।"

अतः भविष्य में सम्पूर्ण विश्व को इस दिव्य ज्ञान का प्रसाद बाँटने यथा शीघ्र देश से बाहर जाने का प्रयास करूँगा। यह मेरे असंख्य नाथ गुरुओं की कमाई है। मैं उन्हीं के आदेश से इस दिव्य ज्ञान का प्रसाद सम्पूर्ण विश्व को बाटूँगा।

३७.

पुनर्जन्म को प्रमाणित करना अति आवश्यक है।

(०५ जुलाई १९८८)

सनातन धर्म के सर्वोत्तम ग्रंथ गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने पुनर्जन्म की स्पष्टव्याख्या करते हुए कहा है-

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।। १५:८

(वायु, गन्ध के स्थान से, जैसे गन्ध ग्रहण करके ले जाता है, वैसे ही देहादिकों का स्वामी जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे मन सहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है।)

जब तक हम गीता में वर्णित उपर्युक्त सच्चाई को संसार के सामने प्रमाणित नहीं कर सकेंगे, कोई भी व्यक्ति हमारी बात को क्यों मानेगा? उपर्युक्त सच्चाई को संसार के समाने प्रमाणित करना अतिआवश्यक कार्य है। थोथी नीति के विषय में उपदेश से अब काम नहीं चलेगा। भगवान् की उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार जब तक मनुष्य अन्तर्मुखी होकर जीवात्मा से सम्पर्क करने की स्थिति में नहीं पहुँचता है, इसका समाधान असम्भव है। इस पथ में पहले स्थूल शरीर में स्थित, सूक्ष्म शरीर से साक्षात्कार करना पड़ेगा। इसके बाद सूक्ष्म शरीर को भेदकर कारण शरीर से साक्षात्कार करना होगा। फिर ज्यों ही कारण शरीर का भेदन हुआ कि आत्मा से साक्षात्कार हो जायेगा।

आत्मा प्रारम्भ से लेकर सभी जन्मों का ज्ञान करवाने में सक्षम है। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध को अनेक जन्मों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह तो हुआ बीते समय का ज्ञान। परन्तु जीवात्मा परमात्मा का ही अंश है। वह अमर है, उसमें और भगवान् में कोई अन्तर नहीं है। अतः संसार में आगे होने वाली बातों का भी ज्ञान होना सम्भव है। हमें वह शक्ति प्राप्त करनी है। अब वह समय दूर नहीं है।

३८.

पुनर्जन्म और जीवात्मा

(१७ अप्रेल १९८८)

संसार आवागमन का चक्कर है। इस सम्बन्ध में भगवान् ने गीता के १५वें अध्याय में स्पष्टकरते हुए कहा है-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठनीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।। १५:७

(हे अर्जुन! इस देह में यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है। (और) त्रिगुणमयी माया (प्रकृति) में स्थित हुई मन सहित पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है।)

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।। १५:८

(वायु गंध के स्थान से गन्ध को जैसे ग्रहण करके ले जाता है, देहादिकों का स्वामी, जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे मन सहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है।)

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।। १५:९

(यह जीवात्मा श्रोत्र, चक्षु और त्वचा को तथा रसना, घ्राण और मन को आश्रय करके ही विषयों का सेवन करता है।)

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।। १५:१०

(शरीर छोड़कर जाते हुए को अथवा शरीर में स्थिर हुए को (और) विषयों को भोगते हुए को तथा तीनों गुणों से युक्त हुए को भी अज्ञानी जन नहीं जानते हैं। ज्ञानरूप नेत्रों वाले (ज्ञानीजन ही) तत्त्व से जानते हैं।)

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।। १५:११

(योगी जन अपने हृदय में स्थित हुए, इस आत्मा को यत्न करते हुए ही तत्त्व से जानते हैं और जिन्होंने अपने अन्तःकरण को शुद्ध नहीं किया हैं (ऐसे) अज्ञानीजन यत्न करते हुए भी इस आत्मा को नहीं जानते हैं।)

इससे स्पष्ट होता है कि वेदान्त धर्म का पुनर्जन्म का सिद्धान्त पूर्ण सत्य है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने इसकी स्पष्टव्याख्या की है। क्योंकि कलियुग मात्र शूद्र तत्त्व पर आधारित युग है, इसलिए इस युग में केवल सेवा को ही धर्म माना जाता है। शूद्र का काम वर्ण व्यवस्था अनुसार सेवा का कार्य है। क्योंकि इस युग में एक ही इस तत्त्व का साम्राज्य है, अतः यह तो अपने कर्म को ही धर्म की संज्ञा देगा। यह युग का गुणधर्म है, इसमें किसी का दोष नहीं है। यह तो ईश्वर कृत व्यवस्था है। यथा राजा तथा प्रजा, इसमें कोई दोषी नहीं है।

युग परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह कालचक्र निरन्तर चलता आया है, क्योंकि एक चरण का धर्म पृथ्वी का भार अधिक समय तक वहन करने की स्थिति में नहीं होता है, अतः इसका समय और युगों से क्रम निश्चित किया गया है। हमारे धार्मिक सिद्धान्त के अनुसार सत्युग से कलियुग तक हर युग के समय में ह्रास निरन्तर बताया गया है। ज्यों-ज्यों सात्त्विक तत्त्व कमजोर होता चला गया, मनुष्य की उम्र कम होती चली गई, और इसी प्रकार हर युग का समय भी निरन्तर घटता गया। युग परिवर्तन का मतलब है, उस परमसत्ता का पार्थिव जगत् में अवतरण। इसके बिना युग परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

पुनर्जन्म के सम्बन्ध में, मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार ज्ञान होना सम्भव है। चेतन गुरु से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित करने पर, हर मनुष्य को यह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। गुरु द्वारा प्राप्त प्रकाशप्रद 'चेतन शब्द' से जीव अपने स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर को भेदकर आत्मा से साक्षात्कार कर सकता है। क्योंकि आत्मा उस परमसत्ता का ही अंश है, अतः पूर्वजन्म ही क्या, आगे होने वाले जन्मों का भी ज्ञान सम्भव है। इस युग का मानव इसे सम्भव नहीं मानता है। इसमें उनका दोष नहीं है। यह तो युग का गुण धर्म है। वह समय दूर नहीं, जब यह सब बातें संसार के सामने भौतिक रूप से प्रमाणित होने लगेंगी।

ज्यों ही आध्यात्मिक सत्ता ने भौतिक सत्ता को अपने अधीन करके उसका संचालन प्रारम्भ किया कि सब कुछ परिवर्तित हो जाएगा। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने स्पष्ट इशारा करते हुए कहा है- "वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से लौटकर आ रहा है, उसे सारे संसार को देना होगा।" इस सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा था- "इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है, यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही

करेगा।" इस देश में वह सनातन धर्म पुनः प्रकट होने वाला है, जिसकी व्याख्या करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है- "यदि धर्म में प्रत्यक्षानुभूति न हो तो वह वास्तव में धर्म कहलाने योग्य है ही नहीं।"

३९.

पुनर्जन्म और पूर्वाभास का सत्यापन सम्भव है।

(०३ दिसम्बर १९८८)

अगर मनुष्य सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी है तो उसका सीधा सम्पर्क अपने ही शरीर स्थित आत्मा और परमात्मा तत्त्व से है। यह तत्त्व ही संसार के सर्वभूतों का कारण है। अतः भूत-भविष्य का सच्चा ज्ञान सम्भव है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १५ वें अध्याय के ७ व ८ वें श्लोक में कहा है-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।। १५:७

(इस देह में यह जीवात्मा मेरा सनातन अंश है, त्रिगुणमयी माया में स्थित हुई मन सहित पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है।)

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।। १५:८

(वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को जैसे-ग्रहण करके ले जाता है वैसे ही देहादिकों का स्वामी जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे इन मन सहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है।)

उपर्युक्त से यह स्पष्ट होता है कि जीवात्मा का साक्षात्कार होने का अर्थ है परमात्मा का साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति हो गई। क्योंकि जीवात्मा परमात्मा का ही सनातन अंश है, अतः वह अमर है। उसने जितने भी शरीरों में वास किया है और आगे जितने शरीरों में वास करता हुआ संसार क्रम को निरन्तर गतिशील रखेगा, उसका ज्ञान सम्भव है। भगवान् ने सातवें अध्याय के २६वें श्लोक में कहा है-

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन।। ७:२६

(हे अर्जुन! पूर्व में व्यतीत हुए और वर्तमान में स्थित तथा आगे होने वाले सभी भूतों को, मैं जानता हूँ, परन्तु मुझको कोई भी नहीं जानता है।)

इससे यह बात स्पष्टहोती है कि ईश्वर तत्त्व को जानने वाला ही भूत और भविष्य को जान

सकता है। इस युग के सभी धर्माचार्यों ने युग के गुणधर्म के कारण, अध्यात्म को केवल व्यवसाय के रूप में अपना रखा है। धार्मिक ग्रन्थ कुछ बोलते हैं और वे अपनी चालाकी और तर्कबुद्धि के बल से लोगों को और ही कुछ समझा रहे हैं। क्योंकि इस समय का तथाकथित ज्ञान मनुष्य को कुछ परिणाम नहीं देता है, अतः संसार के लोगों का विश्वास धर्मगुरुओं से उठता जा रहा है। क्योंकि धर्मगुरुओं ने इसे पेट से जोड़ लिया है, अतः इसे चलाते रहना ही उनकी मजबूरी है। इस प्रकार की हठधर्मी वृत्तियों के कारण, धर्म के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ हो गए। भौतिक विज्ञान की उन्नति ने अध्यात्म गुरुओं की स्थिति और खराब कर दी। इसलिए अध्यात्म और भौतिक के रूप में एक ही तत्त्व विभाजित हो गया। दोनों दलों में भयंकर टकराव और दुर्भाव निरन्तर बढ़ता ही गया। क्योंकि भौतिक विज्ञान एक सचाई है और सत्य, सत्य को आकर्षित करता है, इसलिए संसार के लोगों ने अध्यात्म को छोड़, भौतिक विज्ञान के सहारे सुख-शान्ति की खोज प्रारम्भ कर दी।

मनुष्य शरीर को सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ भौतिक विज्ञान ने उपलब्ध करा दीं, परन्तु संसार के मानव को सुख और शान्ति फिर भी नहीं मिल सकी। ज्यों-ज्यों विज्ञान उन्नति करता गया, अशान्ति बढ़ती ही गई। आज जो वस्तुस्थिति संसार की है, उसने विज्ञानवेत्ताओं को गहराई से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। आज वैज्ञानिक दबी जुबान से यह स्वीकार करने लगे हैं कि ज्ञान प्राप्त करने के, उसके भौतिक साधनों के अतिरिक्त, अन्य साधन भी हैं।

यह एक शुभ संकेत है। 'सचाई पसन्द' और 'सचाई परख' लोग ही इस दिशा में तरक्की करके संसार को कुछ दे सकेंगे। बाकी जिन आध्यात्मिक गुरुओं से संसार के लोग उम्मीद लगाए बैठे थे, उनसे लोग निराश हो चुके हैं। थोथा उपदेश, कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, स्वांग, शब्दजाल, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास से लोग पूर्ण रूप से निरुत्साहित हो चुके हैं। इसके विपरीत जिन-जिन देशों ने वैज्ञानिक उन्नति की है, वहाँ अशान्ति और अहिंसा के ताण्डव नृत्य ने लोगों को भयभीत कर दिया है, अतः उनको भी इस पथ के अलावा शान्ति प्राप्त करने का दूसरा रास्ता खोजना पड़ रहा है।

अमेरिका में प्रवचन देते हुए श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था - "विभिन्न मतमतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का धर्म, हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूलमंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है।" आज हमारे धर्म से प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात पूर्णरूप से विदा हो चुकी है। यही धर्म का प्राण थी।

अतः इसके अभाव में प्राणहीन धर्म मानव को कोई लाभ पहुँचाने की स्थिति में नहीं है।

परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। कोई भी शक्ति इसे प्रभावित नहीं कर सकती है। यह क्रम, अनादि काल से चलता आया है, अतः निराशा का कोई कारण नहीं। अंधेरे और प्रकाश का संघर्ष हमारे अन्दर अनादि काल से चला आ रहा है। रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि प्रकाश हो परन्तु फिर भी रात और दिन का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। हमें खुले दिल से हमारी कमजोरी को स्वीकार करके आध्यात्मिक जगत् में शोध कार्य प्रारम्भ करने चाहिए। जिस प्रकार भौतिक विज्ञान तत्काल परिणाम देना प्रारम्भ कर देता है, उसी प्रकार उसका जनक अध्यात्म विज्ञान भी परिणाम देता है।

इस जगत् के सभी सौदे नगद के हैं। यहाँ उधार का काम ही नहीं। परिणाम के अभाव में ही लोग इससे विमुख हुए हैं। आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान का जनक है। आज तक का सारा प्रकट संसार, उसी परमसत्ता की देन है। पिता पुत्र में द्वेष कैसा? इस कृत्रिम द्वेष भाव ने ही संसार को आज की अशान्त स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। इसके बारे में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा हैः- "एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिए हर कार्य आवश्यक है।" अर्थात् जीवन का हर कार्य कमोवेश अध्यात्म से ओत-प्रोत है। वैदिक काल के बाद मनुष्य निरन्तर उस परमसत्ता से अलग हटता गया।

आज का मानव उस क्रमिक अलगाव की प्रक्रिया के कारण, उस परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी पर आकर खड़ा हो गया है। कृत्रिम पतन के साथ हम लोगों ने 'इहलोक' के स्थान पर केवल 'परलोक' की तरफ ताकना प्रारम्भ कर दिया। समाज के आधे अंग-स्त्रियों को पंगु बनाकर रख दिया। उसे अध्यात्म क्षेत्र में बहुत कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जगत् जननी के साथ, इस अन्याय के कारण ही संसार आज इतना दुःखी है। स्त्री जाति का माँ का स्वरूप, बहिन का स्वरूप, दादी का स्वरूप आदि सभी स्वरूप भूलकर उसको केवल भोग की वस्तु ही माना जा रहा है। संसार के मानव ने जगत् जननी की ऐसी दुर्गति कर दी कि उसे रसालत में पहुँचा दिया है। हमारे प्रायः सभी धर्मगुरुओं ने कंचन और कामिनी का जो स्वरूप बना डाला है, वही दुःखों का कारण है। इसके अतिरिक्त आराधनाओं का ऐसा स्वरूप बना कर रख दिया कि जिसे स्त्रियाँ अपनी प्राकृतिक संरचना के कारण, (आराधना) करने में असमर्थ हैं। जब तक धर्म का असली स्वरूप प्रकट नहीं हो जाता, इस क्षेत्र में प्रगति और शान्ति असम्भव है।

श्री अरविन्द ने मृणालिनी देवी को पत्र लिखा था-"ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को

अनुभव करने का, उनका साक्षात्कार प्राप्त करने का, कोई न कोई पथ होगा। वह पथ चाहे कितना भी दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही, वह पथ है। उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है। एक माह के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सबकी उपलब्धि कर रहा हूँ।"

महर्षि अरविन्द के अनुसार, उस पथ पर चलकर हर प्राणी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। इस पथ पर चलने के अधिकारी स्त्री-पुरुष दोनों बराबर के हकदार हैं। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार भी एक मात्र यही रास्ता है जिस पर चलने से ही, उस परमधाम तक की यात्रा सम्भव है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार की उत्पत्ति 'शब्द' से मानते हैं। इस सम्बन्ध में वेद स्पष्ट कहता है- "आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वरलोक की है, उस ज्योति में, जिसे कोई खण्ड-खण्ड नहीं कर सकता।" वेद स्पष्टकहता है कि जिस ज्ञान को (आनन्द को) तामसिक वृत्तियों ने कैद कर रखा है, उसकी मुक्ति केवल 'प्रकाशप्रद शब्द' से ही सम्भव है। वेद बारम्बार उस प्रकाशप्रद शब्द से जो दिव्य प्रकाश निकलता है, उससे मिलने वाले दिव्य आनन्द की प्रार्थना करता है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने वेद रहस्य में लिखा है- वैदिक द्रष्टाओं ने प्रेम पर ऊर्ध्व से अर्थात् इसके स्रोत और मूल स्थान से दृष्टिपात किया और उन्होंने अपनी मानवता में उसे दिव्य आनन्द के प्रवाह के रूप में देखा और ग्रहण किया। मित्र देव के इस आध्यात्मिक वैश्व आनन्द को वैदान्तिक आनन्द अर्थात् वैदिक मयस् की व्याख्या करती हुई तैत्तिरीय उपनिषद् इसके विषय में कहता है कि 'प्रेम इसके शीर्ष स्थान पर है।' परन्तु प्रेम के लिए वह जिस शब्द 'प्रियम्' को पसंद करती है, उसका ठीक अर्थ है आत्मा के आंतरिक सुख और संतोष के विषयों की आनन्ददायकता। वैदिक गायकों ने इसी मनोवैज्ञानिक तत्त्व का उपयोग किया है। उन्होंने मयस् और प्रयस् का जोड़ा बनाया है।

मयस् है सब विषयों से स्वतंत्र आन्तरिक आनन्द तत्त्व और प्रयस् है पदार्थ और प्राणियों में आत्मा को मिलनेवाले हर्ष और सुख के रूप में उस आनन्द का बहि-प्रवाह। वैदिक सुख है यही दिव्य आनन्द जो अपने साथ पवित्र उपलब्धि का और सब पदार्थों में निष्कलंक सुख के अनुभव का वरदान लाता है। आज संसार से वह प्रकाशप्रद शब्द जिसके दिव्य प्रकाश से दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है, कहाँ चला गया?

जब तक हम संसार में इसकी भौतिक रूप से प्रत्यक्षानुभूति नहीं करवा देते, काम चल ही नहीं सकता है। इस दिव्य आनन्द और शब्द के बारे में भगवान् ने गीता में स्पष्ट कहा है। शब्द से सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में भगवान् ने १७वें अध्याय के २३वें श्लोक में कहा है-

'ॐ' तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।। १७:२३

(हे अर्जुन! ॐ तत् सत् ऐसे (यह) तीन प्रकार का सच्चिदानन्द घन ब्रह्म का नाम कहा है। उसी से सृष्टिके आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गए हैं।)

इससे स्पष्ट होता है कि संसार की उत्त्पति उसी प्रकाशप्रद शब्द (ईश्वर) से हुई है। उस शब्द से जो दिव्य आनन्द आता है, उस संबंध में भगवान् ने गीता के ५वें अध्याय के २१वें श्लोक तथा छठे अध्याय के २२वें, २७वें तथा २८वें श्लोक में कहा है-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।। ५:२१

(बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष, अन्तः करण में जो भगवत ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है। वह पुरुष सच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।)

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।। ६:२१

(इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ, यह योगी भगवत्स्वरूप से नहीं चलायमान होता है।)

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।। ६:२७

(क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है और जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।)

युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते।। ६:२८

(पाप रहित योगी इस प्रकार निरंतर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ, सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्तिरूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है।)

आज वह आनन्द कहाँ चला गया? गीता के उपदेशक और व्याख्याता त्याग, तपस्या, दान, पुण्य, स्वर्ग, नरक का उपदेश दे रहे हैं। इस मूल तत्त्व की अनुभूति क्यों नहीं करवा रहे हैं? गीता के उपदेश को अर्जुन से अधिक कोई नहीं समझ सकता है। उसने उपदेश सुनने के बाद जो कुछ किया, गीता हमें वही दर्शाती है। अर्जुन ने कौन सा दान-पुण्य, त्याग, तपस्या, गीता का उपदेश सुनने के बाद किया?

वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य शरीर सात तत्त्वों से संघटित है, जिसके कोशों में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं- १. अन्नमयकोश २. प्राणमयकोश ३. मनोमयकोश ४. विज्ञानमय कोश ५. आनन्दमयकोश ६. चित्मय कोश और ७. सत्मयकोश। अन्न से लेकर विज्ञान तक चार तत्त्व भौतिक सत्ता से सम्बन्धित हैं और आनन्द से सत् तक तीनों उस परमसत्ता (सत्+ चित्+ आनन्द) सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा से सम्बन्धित हैं। हिन्दू दर्शन के अुनसार मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है यानि अन्नमय कोश से विज्ञानयकोश तक माया का क्षेत्र है। इसके ऊपर के तीन लोक सत्य लोक, अलख लोक और अगम लोक उस परमसत्ता (सत्+ चित्+ आनन्द) के लोक हैं।

आज्ञाचक्र को भेदकर ऊपर उठते ही जीवात्मा माया के क्षेत्र से निकलकर, आनन्दमय कोश में प्रवेश कर जाता है। इसके साथ ही गीता और वेद में वर्णित अक्षय आन्तरिक दिव्य आनन्द की अनुभूति मनुष्य को होने लगती है। मेरे संत सद्गुरुदेव ने उस आनन्द को धरा पर अवतरित कर दिया है। उन्हीं की कृपा से, मैं उसकी प्रत्यक्ष रूप में अनुभूति कर रहा हूँ। आध्यात्मिक दृष्टि से मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी इसकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं, जो कि भौतिक जगत् में सत्यापित हो रही हैं।

इस सम्बन्ध में ईसाइयों का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल भी वही कहता है, जो हमारे ग्रंथ कहते हैं। संसार की उत्पत्ति के बारे में बाइबिल के संत जॉन १: १ से ४ में कहा है:- "आदि में शब्द था, और शब्द परमेश्वर के साथ था, और शब्द परमेश्वर था, यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी

वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।"

वेद और गीता में वर्णित अक्षय दिव्य आन्तरिक आनन्द के बारे में बाइबिल में भजन संहिता २३ : ५ में कहा है- "यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है। सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका आनन्द पूर्ण है। वह हमारे हृदय के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़कर दूसरों तक बह सकता है।"

आज संसार से वह दिव्य आनन्द और दिव्य प्रकाश कहाँ चला गया? सभी धर्म जिस शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं, उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव क्यों हो गया है? संसार यथा स्थिति चल रहा है। चारों कोश तो उपलब्ध हैं परन्तु तीन कोश (सत्+ चित्+ आनन्द) गुम हो चुके हैं। जब तक उनकी उपलब्धि आम मानव के लिए सुलभ नहीं हो जाती है, विद्या पर अविद्या का अधिकार रहेगा। भौतिक विज्ञान तामसिक वृत्तियों के अधीन रहकर उनके आदेश का पालन करेगा। जिस दिन भौतिक विज्ञान अपने जनक अध्यात्म विज्ञान के आदेश पर चलने लगेगा, महर्षि अरविन्द के शब्दों में 'धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।'

हमारे सभी संतों ने हरिनाम की महिमा गाई है। भगवान् ने भी गीता में अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए १० वें अध्याय के २५वें श्लोक में जपयज्ञ (नामजप) को सर्वोत्तम यज्ञ बताते हुए, अपनी विभूति बताया है। बंगाल में जन्मे महान् आत्मा चैतन्य महाप्रभु, प्रभु जगतबन्धु, रामकृष्ण परमहंस तथा संत सद्गुरु नानक देव जी तथा संत कबीर आदि सभी संतों ने हरि नाम को ही मोक्ष का साधन बताया है। संत सद्गुरुदेव नानक देव जी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा है-

"भांग-धतूरा नानका, उतर जाय परभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।"

संत कबीरदास जी ने एक कदम और आगे बढ़कर हरिनाम की महिमा गाते हुए कहा है-

"नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़े सवायो।"

जिस मयस् (दिव्य आनन्द) की बात वेद करता है, जिसका गुणगान बाइबिल में है, जिस अक्षय आनन्द की बात भगवान् ने गीता में की है, जिस नाम खुमारी और नाम अमल की बात सभी संतों ने की है, उसको प्राप्त करना ही आध्यात्मिक आराधना का उद्देश्य है। इसके अलावा सब आराधनाएँ त्रिगुणमयी माया के प्रभाव क्षेत्र की हैं।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने एक कदम और आगे बढ़कर कह डाला- "अनुभूति-अनुभूति की यह महती शक्तिमयी वाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन मण्डल से आविर्भूत हुई है। एकमात्र हमारा वैदिक धर्म ही है जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति सम्भव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता है।" स्वामी जी ने यह बात अनायास ही नहीं कही है। वे भविष्य दृष्टा थे। उन्हें बहुत अच्छी प्रकार ज्ञान था कि भारत आगे चलकर संसार में इन तथ्यों को सत्यापित करेगा। संतों की वाणी निरर्थक नहीं होती है। युग के गुणधर्म के कारण तामसिक वृत्तियों की प्रधानता होने से उस समय लोग उसे समझ नहीं पाते हैं। महर्षि अरविन्द ने इस सम्बन्ध में जो घोषणा की है, वह पहले के संतों की बातों को प्रमाणित करती है।

महर्षि अरविन्द ने उस परमतत्त्व को धरा पर अवतरित कराने के लिए, अपने अमूल्य जीवन की आहुति दे डाली। वे अपने जीवन में ही सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गए थे। उस परमतत्त्व के धरा पर अवतरित होने के बारे में उन्होंने घोषणा की है -

'२४ नवम्बर १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है, अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध (Inspire) करके विकास के मार्ग का समर्थन और संचालन करते हैं।'

उपर्युक्त भविष्यवाणी नहीं है, एक सच्चाई के अवतरित होने की घोषणा है। श्री अरविन्द के अनुसार वह परमसत्ता अपने क्रमिक विकास के साथ १९९३ तक सारे संसार को आकर्षित करने लगेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार वह सत्ता १९८२ के प्रारम्भ से प्रकट होना प्रारम्भ कर देगी। १९९२ तक वह भारत में काफी फैल जायेगी और आगे के तीन वर्षों में पूरे संसार में फैल जावेगी।

क्योंकि अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है, इसमें उपदेश या ग्रन्थ अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। मुझे जो कुछ भी मिला उसमें उपदेश या ग्रन्थ का

एक प्रतिशत भी सहयोग नहीं रहा है। संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म के साकार स्वरूप होते हैं। उनकी कृपा के बिना इस जगत् (अध्यात्म जगत्) में प्रवेश असम्भव है।

मुझे सन् १९६७ से १९८२ तक विभिन्न प्रकार की आराधनाएँ मजबूरी में फँसकर करनी पड़ी। आज तक जितनी आराधनाएँ मैंने की और जो अब कर रहा हूँ, वह सब परिस्थितियों वश करनी पड़ रही हैं। प्रत्येक का नया परिणाम मिल रहा है। ईश्वर कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद के कारण पग-पग पर दिशा निर्देश और पथ प्रदर्शन मिल रहा है।

मैं एक साधारण गृहस्थी प्राणी हूँ। मेरे जैसे नाचीज के माध्यम से, यह सब होना अपने आपमें एक आश्चर्य और विचित्र बात है। मैं भी रजोगुण से अत्यधिक प्रभावित प्राणी हूँ। आज भी वह वृत्ति मुझे रह रह कर अपनी तरफ आकर्षित करती है। परन्तु मैं अनुभव कर रहा हूँ कि कोई अदृश्य शक्ति, मुझे एक कदम भी उस वृत्ति की तरफ नहीं बढ़ने दे रही है।

अतः मेरे माध्यम से जो शक्ति प्रकट हो रही है, उसमें मेरी बुद्धि से किया हुआ कुछ भी प्रयास नहीं है। इस सम्बन्ध में मुझे किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। जो कुछ हो रहा है, वह मेरे असंख्य गुरुओं की आराधना का फल है। मुझे मेरे परमदयालु संत सद्गुरुदेव की अहेतु की कृपा के कारण, यह सब अनायास ही प्राप्त हो गया। मैं तो मात्र गुरु कृपा का प्रसाद बाँटने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि मैं कर्त्ता नहीं हूँ इसलिए मुझे किसी प्रकार की निराशा भी नहीं होती। घाटे-नफे का अधिकारी तो वही जगत् सेठ है, मैं तो मात्र अपनी मजदूरी का अधिकारी हूँ।

४०.

दुःख-सुख की अनुभूति ही जीवन है।

(२४ मार्च १९८८)

संसार का हर परिवर्तन पूर्व निर्धारित है, इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी का जन्म से मृत्यु पर्यन्त सारा जीवन, पूर्व निर्धारित व्यवस्था द्वारा संचालित होता है। वह परमसत्ता जीव को भरमाती हुई, अपनी इच्छा से चलाती है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में इस सन्दर्भ में स्पष्ट कहा है -

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

इस सम्बन्ध में भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में स्पष्ट रूप से संसार की व्याख्या करते हुए कहा है-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।

ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।११:३२

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।

मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।।११:३३

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथाऽन्यानपि योधवीरान्।

मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।११:३४

गीता के उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्टहो जाता है कि उस परमसत्ता की इच्छा के बिना संसार में पत्ता भी नहीं हिल सकता है। मुझे आराधना के दौरान ऐसी असंख्य घटनाओं का पूर्वाभास हुआ और सभी भौतिक रूप से सत्यापित हुई। बहुत सी ऐसी घटनाएँ जो अभी तक मेरे जीवन में घटी नहीं, मेरा ध्यान अधिक आकर्षित किया। मुझे किसी भी घटना के घटने का निश्चित समय नहीं बताया जाता था। केवल आगे घटने वाली घटना का सही दृश्य टेलीविजन की तरह दिखा दिया जाता है। ऐसी घटनाएँ, पूर्व जन्म तथा इस जन्म, दोनों से सम्बन्धित होती थीं।

जिज्ञासावश मैंने उन घटनाओं का समय जानने के लिए ध्यान को केन्द्रित करके आराधना प्रारम्भ कर दी। चन्द दिनों में उत्तर मिला कि जो होना है, पूर्व निश्चित है उसके लिए समय और शक्ति का दुरुपयोग क्यों कर रहे हो? सुख-दुख की अनुभूति ही तो जीवन है।

जीवन में होने वाली सभी बातें स्पष्ट मालूम होने पर सुख-दुःख की अनुभूति खत्म हो जायेगी। इस प्रकार जीवन पूर्ण रूप से नीरस हो जाएगा। इस प्रकार उस गुलाबी पर्दे की स्थिति (हटने की) हो जायेगी(इस वाक्य का संदर्भ समझने के लिए लेख- 'मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ' पढ़े।)। अतः यह निरर्थक प्रयास क्यों कर रहे हो? अतः मैंने निश्चित समय मालूम करने का प्रयास बन्द कर दिया। संसार एक स्वप्न है। दुःख-सुख की अनुभूतियाँ मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल हैं। इस संसार में विचरण करते हुए, कोई भी जीव इसके प्रभाव से वंचित नहीं रह सकता।

ईश्वर की इस माया से कोई भी प्राणी बच नहीं सकता। परन्तु जो जीव संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, उसके बन्धन धीरे-धीरे कटने लगते हैं। माया की पकड़ से वह जीव एक ही जन्म में छुटकारा पाकर, आज्ञाचक्र को भेदकर सत्लोक में अनायास ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह के जीव को संसार के दुःख-सुख अधिक प्रभावित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह जीव माया के क्षेत्र को लांघ जाता है। इसलिए माया भी उसकी चेरी बनकर उसको रोकने के स्थान पर, ऊपर की तरफ आरोहण करने में मदद करती है। संत सद्गुरु द्वारा प्राप्त किए हुए, प्रकाशप्रद शब्द के सहारे वह जीव निर्विघ्न, निरन्तर उस परमसत्ता के नजदीक जाता रहता है। इस प्रकार से संसार के असंख्य जीव, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पा जाते हैं।

श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है-"एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन में, हर वस्तु के लिए अवकाश होता है।" अतः इस युग के धर्मगुरुओं द्वारा खींची गई काल्पनिक लक्ष्मण रेखा एक भ्रम है; स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, सही-गलत की व्याख्या संसार के जीवों को भ्रमित कर रही है।

गीता का सही अर्थ अर्जुन से बढ़कर किसी को मालूम नहीं हो सका। भगवान् श्री कृष्ण ने अपने मुख से पूर्ण भेद बताते हुए, अपनी दिव्य दृष्टि देकर अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराते हुए, संसार का पूर्ण और सच्चा ज्ञान अर्जुन को बता दिया था। गीता का उपदेश समाप्त होने पर अर्जुन ने जो कुछ किया, वही गीता का सही अर्थ है। उसमें त्याग, तपस्या, दान, धर्म, पाप-पुण्य, आदि आधुनिक गुरुओं का कौनसा उपदेश सम्मिलित है? अर्जुन ने जो कुछ किया, संसार के धर्मगुरु इस समय गीता से ठीक उल्टा कार्य करवा रहे हैं।

इस प्रकार गीता रूपी ज्ञान देने के बाद भगवान् ने अर्जुन से पूछा-

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय।। १८:७२

इस प्रकार पूछे जाने पर अर्जुन ने स्पष्ट कहा-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।। १८:७३

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीतारूपी ज्ञान भी इस युग के प्रभाव से नहीं बच सका। इस युग के धर्मगुरु गीता की व्याख्या इस प्रकार तोड़-मरोड़कर कर रहे हैं कि उसका स्वरूप ठीक उल्टा बना दिया। इसमें हम किसी को दोषी नहीं बना सकते, क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि मैं संसार के जीवों को भरमाता हुआ, अपनी इच्छा के अनुसार चला रहा हूँ। अन्धेरे के बिना उजाले की कीमत मालूम नहीं हो सकती। दुःख के बिना सुख के आनन्द का आभास नहीं हो सकता। इस समय संसार में फैला घोर अन्धकार स्पष्ट बता रहा है कि उस परमसत्ता का प्रकाश संसार में प्रकट होने ही वाला है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट कहा है- "वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे हमें सारे संसार को देना होगा।" इस प्रकार भारत को संसार में शान्ति स्थापित करने और सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु अवश्य खड़ा होना पड़ेगा।

मेरी स्वयं की प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार इस सदी के अन्त तक, सारा संसार भारत को धर्मगुरु स्वीकार कर लेगा।

४१.
आनन्द और सुख
(०५ मार्च १९८८)

इस समय संसार में केवल भौतिक सुख को ही संसार का मानव, आनन्द की संज्ञा दे रहा है। आनन्द और भौतिक सुख में दिन और रात का अन्तर है। आनन्द निरन्तर, जीवन भर एक ही स्थिति में रहता है, परन्तु सुख की स्थिति निरन्तर बदलती रहती है। बचपन में जिन चीजों से सुख की अनुभूति होती है, किशोरावस्था में आते ही सुख के आधार बदल जाते हैं। जवानी में उस स्थिति में और आधारभूत परिवर्तन हो जाता है और बुढ़ापा आते ही, बचपन, किशोरावस्था और जवानी में जिन, भिन्न-भिन्न कारणों से सुख की अनुभूति होती थी, उससे बिलकुल भिन्न स्थिति हो जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं, संसार का मानव जिसे आनन्द की संज्ञा दे रहा है, वह मात्र भौतिक सुख ही है।

आनन्द चिरस्थाई होता है, उसका स्वरूप और कारण उम्र के साथ-साथ परिवर्तनशील नहीं है। क्योंकि इस युग के मानव ने आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है, इसलिए वह आनन्द और सुख में कोई अन्तर नहीं समझता है। सुख-दुःख की स्थिति परिवर्तनशील है, परन्तु आनन्द चिरस्थाई रहता है। आनन्द अनुभूति का नाम नहीं है। वह तो चिरस्थाई स्थिति का नाम है, जो जीवन भर सुख-शान्ति के साथ-साथ, मानव को मग्न और प्रसन्न चित्त रखती है। उम्र और परिस्थितियाँ उसमें कोई अन्तर पैदा नहीं कर सकती। परन्तु ऐसी स्थिति का अनुमान, इस युग का मानव लगा ही नहीं सकता। इसमें उसका दोष नहीं है, क्योंकि आनन्द प्रदान करने वाली शक्तियाँ संसार से लुप्त प्रायः हो चुकी हैं।

मेरे से सम्बन्धित लोग, जब निरन्तर आनन्द की अनुभूति करते हैं तो उन्हें सुख और आनन्द के अन्तर का पता लगता है। आनन्द को हमारे सभी संतों ने 'नाम अमल' और 'नाम खुमारी' की संज्ञा दी है। क्योंकि इस नाम खुमारी की बात, इस युग का मानव काल्पनिक और झूठ समझता है, अतः उसकी समझ के बाहर की वस्तु है। यही कारण है, बेचारे इस युग के मानव, सुख और आनन्द में कोई भेद नहीं कर पा रहे हैं। भौतिक साधनों से आनन्द मिलता तो पश्चिमी जगत् के लोग शान्ति के लिए भारत में भटकते नजर नहीं आते।

४२.
जैन धर्म में तप का महत्त्व
(०५ अक्टूबर १९९७, बीकानेर)

जैनी इच्छाओं का निरोध 'बहिर्मुखी कर्मकाण्ड' से करना चाहते हैं, जो कि असंभव कार्य है। यह कार्य आंतरिक शक्ति के चेतन होने से ही संभव है। आंतरिक शक्ति के चेतन करने की क्रियात्मक विधि केवल वेदान्ती अर्थात् हिन्दू ही जानते हैं। संसार का कोई धर्म और दर्शन मानव के पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि नहीं जानता।

जैन धर्म के तीर्थंकर श्री महावीर के अनुसार अहिंसा, संयम और तप यह धर्म की त्रिवेणी हैं, त्रिपथगा हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार हम जैन धर्म का अध्ययन करें तो हमें ऐसा लगेगा कि इस धर्म को मानने वाले लोगों का विकास अभी तक द्वैतभाव तक ही हुआ है। अभी उन्हें अद्वैत में पहुँचना है।

वैदिक धर्म अर्थात् हिन्दू धर्म ही अद्वैतवाद का जनक है। अंहिसा अर्थात् 'ब्रह्म', संयम का अर्थ 'विष्णु', तप का अर्थ 'रुद्र'। इन तीनों के जनक 'परमतत्त्व' की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात केवल हिन्दू धर्म ही कहता है। मैं, मेरे व्यावहारिक जीवन में देख रहा हूँ कि जिन युवा जैनों ने मुझसे दीक्षा ली है, उनका विकास जितना तेजी से हुआ है, उतना तेजी से और धर्म के लोगों का नहीं हुआ।

मैं किसी धर्म के व्यक्ति को धर्म परिवर्तन की सलाह नहीं देता हूँ। मेरे सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य किसी भी धर्म में रहते हुए, अपने उच्चतम विकास को प्राप्त कर सकता है। मेरे लाखों शिष्य हैं, उनमें सभी धर्म के लोग हैं और सभी में एक ही विधि से परिवर्तन आ रहा है।

मैं, मेरे व्यावहारिक जीवन में अनुभव कर रहा हूँ कि आज सभी धर्म मानव विकास की बात तो करते हैं, परन्तु क्रियात्मक विधि नहीं बताते और अगर कोई क्रियात्मक विधि बताना चाहता है तो उस पर विश्वास नहीं करते। 'धर्म' में ऐसा अविश्वास पहले कभी नहीं हुआ।

मेरे शिष्यों में युवा लड़के-लड़कियों की संख्या सबसे अधिक है। विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त इंजीनियर, डॉक्टर और अन्य वैज्ञानिकों की संख्या हजारों में हैं। इनमें सभी जाति और धर्म के युवा सम्मिलित हैं। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि उन सभी के उच्चतम धर्माचार्य कुछ बेचैनी अनुभव कर रहे हैं। उन युवाओं में जो विकास हो रहा है, उनके रास्ते में रोड़ा अटकाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

अब मैंने फैसला कर लिया है कि मैं भविष्य में धर्म प्रचार का कार्य पश्चिमी जगत् में करूँगा। "भारत को आज रोटी की जरूरत है, राम की नहीं।"

४३. विश्व शांति

संसार में धार्मिक ग्रन्थों की संख्या अन्य ग्रन्थों से अधिक है और उनका पठन-पाठन भी सबसे अधिक होता है, परन्तु फिर भी सम्पूर्ण विश्व में अशांति का एक छत्र साम्राज्य है। दूसरी तरफ, शांति के लिए जितने प्रयास किए जाने चाहिए, भौतिक-विज्ञान के आचार्य कर चुके तथा पूरी तरह से असफल भी हो चुके हैं। जिन विध्वंसक हथियारों के बनाने में वे असीम धन खर्च कर चुके हैं, प्रायः उतना ही धन अब उनको नष्ट करने में भी लगेगा। क्या घातक हथियार नष्ट किए भी जाएँगे या नहीं? यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है! इनको नष्ट करने में जितना समय और धन लगने का हिसाब लगाया गया है, उससे तो यह ही तथ्य प्रकट होता है कि ये हथियार जिस कार्य के लिए बनाए गए हैं, उसी में प्रयोग होंगे। घातक हथियारों द्वारा स्थापित भय मिश्रित-शांति, सर्वनाश का कारण ही सिद्ध होगी।

धर्म के बारे में एक व्याख्या मुझे पूर्ण सत्य लगती है, वह है-'धर्म का प्रमाण किसी ग्रंथ पर नहीं, मनुष्य की रचना की सत्यता पर निर्भर है। ग्रंथ तो मनुष्य की रचना के बहिर्गमन हैं, परिणाम हैं; मनुष्य ही इन ग्रंथों का प्रणेता है।' इससे एक बात स्पष्टहोती है कि जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होता, शांति पूर्ण रूप से असम्भव है।

हम देख रहे हैं, संसार में बौद्धिक प्रयासों द्वारा शांति स्थापित करने के सभी प्रयास असफल हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने जो हथियार मानव की सुरक्षा और शांति के लिए बनाये थे, उन्हीं से मानव अब अधिक भयभीत है। सभी उन्हें अतिशीघ्र नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु विश्व में परिवर्तन का जो तूफान आरम्भ हो गया है, क्या वह उन्हें ऐसा करने देगा? संसार में धर्म और जाति के नाम पर जो नया ध्रुवीकरण प्रारंभ हो गया है, उसकी गति तेज होती ही जावेगी। यह भी संभव है कि यह संकीर्ण ध्रुवीकरण ही विश्व के महाविनाश का मुख्य कारण बन जाए।

संसार भर के सभी धर्म, जब तक 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के वैदिक सिद्धांत को पूर्ण सत्य मानकर, उसके अनुसार आचरण प्रारम्भ नहीं करेंगे, तब तक शांति केवल कल्पना का ही विषय रहेगी। सभी धर्मों के धर्माचार्यों की कथनी और करनी में भारी अंतर है। सभी मूलभूत

सिद्धातों को मानने का मात्र झूठा स्वांग रच रहे हैं। संसार में मोटे तौर से तीन बल-धनबल, जनबल और मनबल माने गये हैं। इस समय संसार पूर्णरूप से, पहले दो बलों (शक्तियों) का ही उपयोग कर रहा है।

हम स्पष्ट देख रहे हैं, 'धनबल' अपनी सुरक्षा के लिए 'जनबल' का उपयोग ढाल (कवच) के रूप में कर रहा है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि 'धन' (माया) का संसार पर एक छत्र साम्राज्य है। इस संबंध में, मुझे मेरे एक मित्र की राजस्थानी भाषा की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ गई। कविता का शीर्षक था 'लिछमी'।

हद हुकम हेकड़ी आ लिछमी मिनखां ने नाच नचावे है,
कोई भूख मरे, कोई मोज करे, कोई नर माटी बण जावे है,
आ-लिछमी बड़ी बावळी-गेली मिनख जीवता खावे है।

आध्यामिक जगत् के लोग, धर्म के नाम पर केवल अतीत के गुणगान मात्र करके इतिश्री कर रहे हैं। जबकि हमारे दर्शन के अनुसार 'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। 'मनबल', जो कि हमारे दर्शन के अनुसार सर्वोत्तम-बल है, संसार से लोपप्रायः हो चुका है।

भारत मनबल के सहारे ही अनादिकाल से विश्व द्वारा पूजा जाता रहा है और पुनः उसी के सहारे ही अपने स्वर्णयुग में प्रवेश करेगा। महर्षि श्री अरविन्द ने इस संबंध में कहा है- "पश्चिम के लोग, भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं। अब एक ऐसी चीज की जरूरत है, जिसे देना उनके वश की बात नहीं है क्योंकि यह कार्य आत्मा और अंतःचेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा और इसका प्रारंभ भारत ही करेगा।" इसके साथ ही महर्षि ने भारत के भविष्य के बारे में स्पष्ट शब्दों में कहा है- "भारत, जीवन के सामने, 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह 'योग' के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और 'योग' के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।"

मनुष्य को उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तो अपने शरीर-रूपी ग्रन्थ को ही पढ़ना पड़ेगा, क्योंकि उसका निवास हमारे शरीर में ही है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १८ वें अध्याय के ६१ वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

हे अर्जुन! शरीर रूपी यंत्र में आरूढ़ हुए संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।

ईसाइयों के पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबिल में भी इस संबंध में २ कुरिन्थियों के ६:१६ में स्पष्ट कहा है- "और मूरतों के साथ परमेश्वर का क्या संबंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला-फिरा करूँगा; मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।"

यीशु मसीह सहित संसार के प्रायः सभी भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर में यही कहा है कि २० वीं सदी का आखिरी दशक संसार में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन लावेगा। सभी ने एक स्वर में भविष्यवाणी की है कि २१ वीं सदी में भारत अपने स्वर्णयुग में पुनः प्रवेश कर जावेगा, और धर्म और कर्म के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करने लगेगा।

पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबिल २० वीं सदी के अंत से पहले होने वाले विश्व-व्यापी भीषण नरसंहार की जो घोषणा करता है, विश्व के अविश्वासी नास्तिक उसकी तरफ ध्यान दें या न दें, उसमें कोई अन्तर नहीं आने वाला है। क्या मृत्यु ने कभी किसी को माफ किया है? कालचक्र अनादिकाल से सबको निगलता आया है और निगलता रहेगा। उस निर्दोष पवित्रात्मा यीशु मसीह ने प्राण रक्षा के लिए कैसी करुण पुकार की थी, परन्तु फिर भी क्या वह अपने प्राण बचा सका?

'तब उसने कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरे प्राण निकलना चाहते हैं, तुम ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर, मुँह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि 'हे मेरे पिता! यदि हो सके तो यह(मृत्यु का) कटोरा मुझसे टल जाए तो भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।'

बाइबिल अपनी भविष्यवाणियों के संबंध में स्पष्ट कहती है कि "प्रभु का दिन चोर की नाई आवेगा।" उन दिनों में कितना भयंकर संकट होगा, उस संबंध में कहा है- "क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे। और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया है।" उन दिनों में मानव को कितना भयंकर कष्ट होगा, उसका अन्दाजा बाइबिल की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है- "उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँढेंगे, और न पाएँगे, और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उनसे (दूर) भागेगी।"

बाइबिल का उपर्युक्त वर्णन कितना दिल दहलाने वाला है, कहने की आवश्यकता नहीं। परन्तु इस पवित्र ग्रंथ को मानने वालों की वस्तु-स्थिति को ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि अब प्रलय का समय अधिक दूर नहीं है।

धार्मिक स्थानों में जो कुछ भी होता है, उस पर कितने सुंदर ढंग से पर्दा डाला गया है- "परमेश्वर का परिवार, पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में, पूर्ण या लगभग-पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।" यह कलियुग के गुणधर्म के कारण है। प्रायः सम्पूर्ण विश्व की एक जैसी ही स्थिति है। मैं तो इस संबंध में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रभु विश्व भर के सकारात्मक विचारों वाले मनुष्यों को शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करें क्योंकि नकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति न कभी सुधरे हैं, और न कभी सुधरेंगे। रावण, कंस, दुर्योधन आदि अनेक उदाहरण हर युग में मिलेंगे।

४४.
विश्व में धार्मिक क्रान्ति

प्रश्नः- पश्चिमी जगत् के भविष्यदृष्टाओं के अनुसार सम्पूर्ण जगत् में २० वीं सदी के आखिरी दशक में जो धार्मिक क्रान्ति होनी है, क्या उससे ईसाई जगत् भी प्रभावित होगा? क्या इस सम्बन्ध में ईसाइयों का धार्मिक ग्रन्थ भी कुछ कहता है?

उत्तरः- सम्पूर्ण जगत् में धार्मिक क्रान्ति हो और संसार का सबसे बड़ा ईसाई धर्म इससे प्रभावित न हो तो उसे विश्व क्रान्ति कहना ही गलत होगा। पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल, एक भविष्यवाणियों का ग्रंथ है। इसमें यहोवा अर्थात् ईश्वर, यीशु मसीह और विभिन्न संतों और भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ हैं। इन भविष्यवाणियों में वैदिक दर्शन की तरह मानव के पूर्ण विकास तक की भविष्यवाणियाँ हैं। आराधना विधि भी वैदिक दर्शन की तरह ही बताई गई है। जैसे वैदिक दर्शन के अनुसार कलियुग में हरिनाम का जप ही मोक्ष देता है वैसे ही बाइबिल के रोमियो १०:१२ एवं १३ में कहा है- "यहूदियों और युनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सबका प्रभु है, और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उदार है क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"

वैदिक दर्शन ऊर्ध्व गमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने को ही मोक्ष की संज्ञा देता है। ठीक उसी प्रकार बाइबिल भी कहती है-नीतिवचन १५:२४ "बुद्धिमान के लिए जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है। इस रीति से वह अधोलोक में पड़ने से बच जाता है।"

वैदिक दर्शन का सिद्धान्त मानव के क्रियात्मक विकास की बात कहता है। मानवता में होने वाले क्रियात्मक विकास का सम्बन्ध वेदान्त ईश्वरवाद के साथ जोड़ता है। श्री अरविन्द के शब्दों में- "यदि क्रमविकास के साथ अवतारवाद का कोई सम्बन्ध न हो तो अवतारवाद का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है।"

हिन्दू दशावतारों की श्रृंखला अपने आप में मानो क्रमविकास का रूपक है- १. सर्वप्रथम 'मत्स्यावतार' हुआ है, जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ है। २. फिर पृथ्वी व जल के स्थल-जलचर 'कच्छप' का अवतरण हुआ। ३.तृतीय अवतार 'वराह' के साथ पृथ्वी पर पशुओं की सृष्टि हुई। ४. 'नृसिंह' अवतार पशुओं और मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है। फिर 'मनु', 'वामन', 'परशुराम', 'राम', 'कृष्ण' आदि

अवतरित हुए, जो निरन्तर प्राणमय-राजसिक से सात्विक-मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने। इस प्रकार मानवजाति क्रमिक विकास के साथ, अपने असली स्वरूप अर्थात् दिव्य रूप में रूपान्तरित हो जाएगी।

मानवता में आज तक वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार सात कोशों - १. अन्न २. प्राण ३. मन ४. विज्ञान ५. आनन्द ६. चित् ७. सत् में से प्रथम चार अच्छी प्रकार चेतन हो चुके हैं। सातों में से जब चार चेतन हो सकते हैं, तब बाकी तीनों के चेतन होने की विधि अवश्य है।

मानव का वह अन्तिम विकास दसवें अवतार के अवतरण के साथ ही पूर्ण होने लगेगा अर्थात् मानव के आखिरी तीनों कोश सत्, चित्, आनन्द (सत्+चित्+आनन्द-सच्चिदानन्द) क्रमिक विकास के साथ चेतन होने लगेंगे और मानव जाति अपने असली स्वरूप अर्थात् दिव्य रूप में रूपान्तरित हो जाएगी। मानवता में इसी विकास को देखकर महर्षि श्री अरविन्द ने घोषणा की है- "आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।" इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-"मनुष्य जब अतिमानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर हो जावेगा। इसी का नाम है- 'पार्थिव-अमरत्व' (Terrestrial Immoratality)।"

भारत तथा विश्वभर के अनेक भविष्यदृष्टाओं की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत की पुण्य भूमि पर दसवाँ अवतार अवतरित हो चुका है। इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द की भविष्यवाणी सर्वाधिक चौंकाने वाली है- "मैंने मानवता के लिए परात्पर से उतना बड़ा वरदान प्राप्त किया है, जितना यह पृथ्वी माँग सकती थी।" भगवान् श्री कृष्ण से महर्षि श्री अरविन्द को वचन मिला कि - "शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व लोक से एक भागवत शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित मृत्यु और असत्य के राज्य को समाप्त कर, यहाँ भी भगवान् के राज्य की स्थापना करेगी।" और अपने वचन के अनुसार वह परमसत्ता भारत की पुण्य भूमि पर अवतरित हो गई। इस अवतरण की घोषणा करते हुए महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है-

'२४ नवम्बर, १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।'

प्रश्नः- क्या बाइबिल भी मानव के दिव्य रूप में रूपान्तरित होने के सम्बन्ध में कुछ कहती है?

उत्तरः- निश्चित तौर पर बाइबिल भी वही कहती है, जो बात वेदान्ती दसवें अवतार के अवतरण होने से मानवता में होने वाले दिव्य रूप में रूपान्तरित होने की कहते हैं। इस सम्बन्ध में बाइबिल के २ कुरन्थियो ३:१८ में कहा है- "परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।"

१. कुरन्थियों १५:४० "स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी है, परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और।" १५:४४ "स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है; जब कि स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह भी है।" नीतिवचन ४:१८- "परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिकाधिक बढ़ता रहता है।"

प्रश्नः- मानवता में यह दिव्य रूपान्तरण कब होगा, कौन करेगा, क्या इस सम्बन्ध में भी बाइबिल कोई भविष्यवाणी करती है?

उत्तरः- बाइबिल भविष्यवाणी के अनुसार जिस सहायक को भेजने की भविष्यवाणी यीशु मसीह ने जॉन के १५:२६ एवं १६:७ में की है, जब वह प्रकट होकर पवित्रता से बपतिस्मा देने लगेगा, तब मानव द्विज बन जाएगा, और उसी से मानवता में दिव्य रूपान्तरण प्रारम्भ हो जावेगा।।

उस सहायक को भेजने के सम्बन्ध में कहा है-जॉन १५:२६- "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा।" जॉन १६:७- "तो भी मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।" और अपने कहने के अनुसार वह चला गया। इस प्रकार बाइबिल की भविष्यवाणियों के अनुसार २०वीं सदी के अन्त से पहले-पहले वह सहायक संसार के सामने प्रकट हो जावेगा।

वह सहायक किस दिशा से आवेगा, इस सम्बन्ध में मैंथ्यु २४:२७ में कहा है- "क्योंकि जैसे बिजली (प्रकाश) पूर्व से निकल कर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही

मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।" इस सम्बन्ध में यवोहा अर्थात् परमात्मा ने भी यशायाह के ४६:१० एवं ११ में भविष्यवाणी की है- "मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ, जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा। मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से, अपनी मुक्ति को पूरा करने वाले पुरुष को बुलाता हूँ। मैंने ही यह बात कही है और उसे पूरा भी करूँगा, मैंने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी बनाऊँगा।" इस प्रकार उस सहायक का २०वीं सदी के अन्त से पहले-पहले प्रकट होना, ईश्वरीय इच्छा है।

अब प्रश्न एक ही बाकी है कि उस सहायक की क्या पहचान होगी, जिसके कारण सम्पूर्ण ईसाई जगत् उसे स्वीकार करेगा। इस सम्बन्ध में केवल एक बात ऐसी है, जिसे मानवता में परीक्षण द्वारा जो व्यक्ति सत्य प्रमाणित कर देगा, उसी को ईसाई जगत् सहायक (comforter) के रूप में स्वीकार कर लेगा जिसे यीशु ने जॉन के १६:१३ एवं १४ में कहा है। यीशु ने कहा है- "वह आने वाली बातें तुम्हें दिखाएगा। (He will shew you things to come)। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें दिखाएगा।" (He shall glorify me for he shall receive of mine, and shall shew it into you.) इस प्रकार जिस व्यक्ति में अनिश्चितकाल तक के भूत-भविष्य को दिखाने-सुनाने की सामर्थ्य होगी, उसे ही ईसाई जगत् स्वीकार करेगा। इस प्रकार इसी एक बात से उस सहायक का फैसला होगा। इस सम्बन्ध में यहोवा (ईश्वर) ने इसी एक बात पर अपना मुकदमा लड़ने के आदेश यशायाह के ४१:२१ से २३ में दिये हैं।

यहोवा कहता है, अपना मुकदमा लड़ो, याकूब का राजा कहता है, अपने प्रमाण दो। वे उन्हें देकर हमें दिखाएँ कि भविष्य में क्या होगा? पूर्वकाल की घटनाएँ दिखाओ कि आदि में क्या हुआ, जिससे हम उन्हें सोचकर जान सकें, कि भविष्य में जो कुछ घटेगा वह दिखाओ, तब हम मानेंगे कि तुम ईश्वर हो; भला या बुरा कुछ तो करो कि हम देखकर चकित हो जाएँ।

इसे और स्पष्ट करते हुए यशायाह के ४३:८ एवं ९ में कहा है- "आँख रखते हुए अन्धों को और कान रखते हुए बहरों को निकाल ले आओ। जाति-जाति के लोग इकट्ठे किये जाएँ और राज्य-राज्य के लोग एकत्रित हों। उनमें से कौन यह बात बता सकता है, वो बीती हुई बातें हमें दिखा सकता है। वे अपने साक्षी ले आएँ, जिससे वे सच्चे ठहरें, वे सुनलें और कहें, यह सत्य है।"

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों कालों को जो व्यक्ति दिखा-सुना देगा वही व्यक्ति ईसाइयों को

मान्य होगा। अभी तक जो पूर्ण सत्य भविष्य के गर्भ में छिपा है, परन्तु २०वीं सदी के अन्त से पहले-पहले पूर्ण सत्य प्रकट हो जावेगा। ईसाई जगत् अपनी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार के आधार पर जिसे सहायक घोषित करेगा, वही पूर्ण सत्य होगा। परन्तु यशायाह के ४१:२३ में ईश्वर के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है जो कि चौंकाने वाली बात है। ईश्वर के लिए कभी कहीं भी बहुवचन का प्रयोग नहीं होता, क्योंकि वह एक ही है अनेक नहीं।

४१:२३ में कहा है- "Shew the things that are to come here after, that we may know that ye are Gods."

ईश्वर के लिए क्यों बहुवचन का प्रयोग हुआ है, इसकी जानकारी तो ईसाई जगत् के विद्वान लोगों को ही है, या इसका सही ज्ञान तभी प्राप्त होगा जब अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को दिखाने-सुनाने वाला सहायक प्रकट हो जाएगा, और ईसाई जगत् उसे स्वीकार कर लेगा।

४५.
विश्व में धार्मिकता

आज विश्व के धार्मिक जगत् में जितना अंधकार है, पहले कभी देखने में नहीं आया। मुस्लिम और ईसाई धर्म के प्रभाव के कारण भारत में भी घोर अंधकार है।

संसार भर के सभी धर्म, जो अहिंसा में विश्वास रखते हैं, बहुत ही दयनीय स्थिति में हैं। लगभग सम्पूर्ण विश्व में हिंसा में विश्वास रखने वाले धर्मों का एक छत्र साम्राज्य है। 'अहिंसापरमोधर्मः' के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला भारत, धार्मिक दृष्टि से लगभग प्रभावहीन हो चुका है। जब तक भारतीय धर्म अर्थात् 'हिन्दू दर्शन' का पुनरोत्थान नहीं होगा, विश्व शांति मात्र मृगमरिचिका ही रहेगा। आणविक अस्त्रों का भय दिखाकर कभी शांति स्थापित नहीं हो सकेगी। भय मिश्रित शांति का अन्त बहुत ही बुरा होगा।

४६.

अवतारवाद

(२३ जनवरी १९९८)

हिन्दू दर्शन के अनुसार दसवें अवतार के अन्तर्ध्यान होने के साथ ही एक नया सत्य युग प्रारम्भ हो जावेगा, जो कलियुग की देन होगा। इस प्रकार २५ दिसम्बर १९९७ को नवें अवतार ने दसवें अवतार को सत्ता का पूर्ण हस्तान्तरण कर दिया था। अगर हिन्दू दर्शन का अवतारवाद का सिद्धांत सत्य है तो भारत निकट भविष्य में धार्मिक क्षेत्र में विश्वगुरु का पद प्राप्त कर लेगा।

अवतारवाद के सिद्धांत को ध्यान में रखकर आज तक अनेक लोग स्वयं को दसवाँ अवतार घोषित कर चुके हैं। उनमें से कई इस विश्व से अन्तर्ध्यान भी हो चुके हैं, परन्तु युग परिवर्तन जैसी स्थिति तो अभी तक अनुभव में नहीं आई है।

पूर्ण सत्य अभी तक भविष्य के गर्भ में छिपा है। परन्तु लगता ऐसा है कि कोई आश्चर्यजनक घटना घटने वाली है। वह कैसे घटेगी और कब घटेगी, इसका सही-सही अन्दाज अभी तक नहीं लग सका है।

मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार भी सन् २००० के अन्त से पहले-पहले भारतीय दर्शन का प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हो जावेगा। क्योंकि वेदान्ती 'अहिंसापरमोधर्मः' के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं, अतः इस दर्शन का विस्तार भी सम्पूर्ण विश्व में, अहिंसक विधि से ही होगा।

२४ नवम्बर २००८ बीकानेर, राजस्थान- अवतरण दिवस पर वर्ष-२००९ के कैलेण्डर का गुरुदेव द्वारा विमोचन।

२४ नवम्बर २००८, अवतरण दिवस पर गुरुदेव के बीकानेर में आगमन पर साधकों द्वारा निकाली गई रैली।
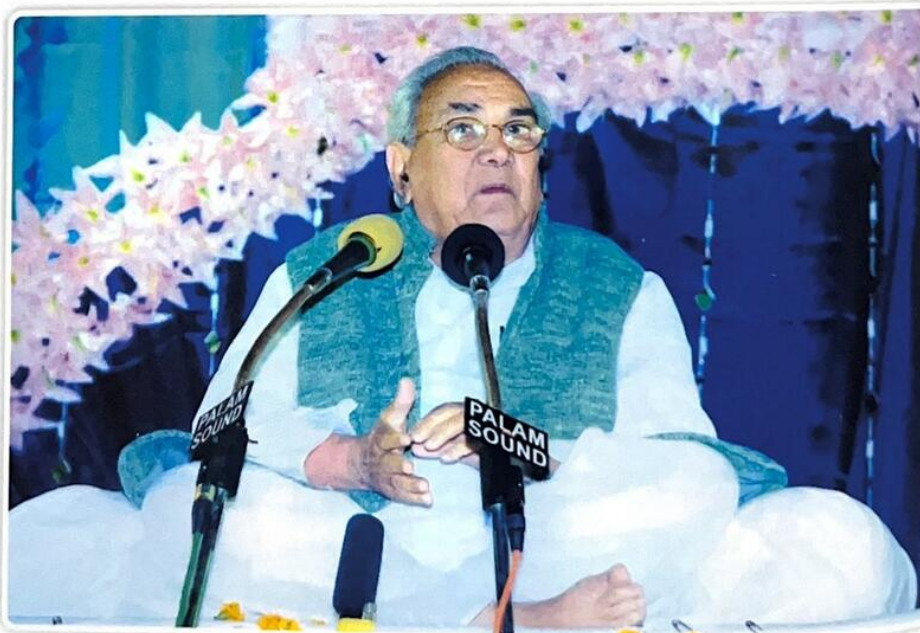
०१ जनवरी २००९, जयपुर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

०८ जनवरी २००९, कोटा, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
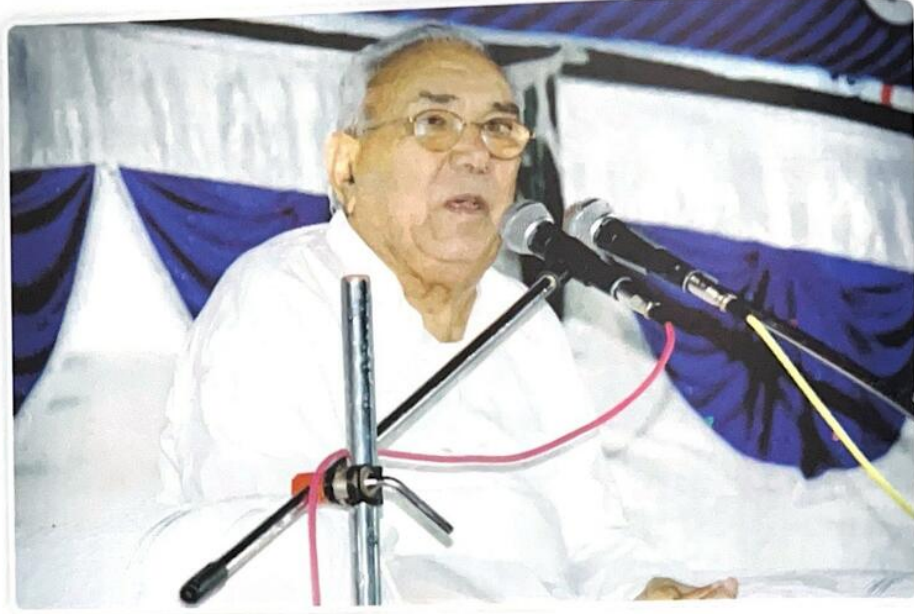
०५ फरवरी २००९, सूरत, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१२ फरवरी २००९, सूरत, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

अध्यात्म विज्ञान

४७.
आध्यात्मिक जीवन का मतलब भौतिक संसार से विरक्ति नहीं।

(२५ फरवरी१९८८)

इस युग में आध्यात्मिक जीवन की व्याख्या बड़े विचित्र ढंग से की गई है। इन मन घड़न्त और कृत्रिम जीवन मान्यताओं के कारण ही इस युग का मानव अध्यात्मवाद को निरर्थक और कोरा ढोंग मानता है। यही कारण है कि इस युग में धर्म का अधिक ह्रास हुआ है। किसी भी कार्य के करने से उसका ठोस परिणाम निकलना चाहिए। परन्तु इस युग में आराधना का जो निर्जीव स्वरूप बचा है, वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी रूप में कोई परिणाम नहीं देता है। हमें केवल काल्पनिक रूप से कोरा विश्वास करने की आज्ञा दी जाती है।

हमारे सभी संतों ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि 'धर्म' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। केवल विश्वास का नाम धर्म नहीं है। जीवन के हर कार्य में ईश्वरीय शक्ति काम करती है। ऐसा कोई कार्य नहीं है, जिसमें ईश्वरीय शक्ति काम न करती हो। धर्म का संबंध बाहरी प्रदर्शनों से बिलकुल नहीं है। कोरे कर्मकाण्ड, शब्दजाल और तर्क शास्त्र से उस परमसत्ता से कभी भी साक्षात्कार संभव नहीं। इस युग में निर्जीव वस्तुओं से सजीव प्राणी को उस परम चेतन सत्ता से जोड़ने का निरर्थक प्रयास करवाया जा रहा है। त्याग, वैराग्य, तप, दान, धर्म, ज्ञान, पाप, पुण्य आदि के काल्पनिक चित्र दिखाकर मानव को गुमराह और भ्रमित करने के अलावा, आज कुछ भी नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में मानव का धर्म से विद्रोही होना न्याय संगत है। इस युग का मानव, अब अंधेरे में भटकने को तैयार नहीं है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में जो उपदेश दिया और उससे अर्जुन को जो ज्ञान मिला, वही सच्चा ज्ञान है। अर्जुन ने उपदेश के बाद जो कार्य किया, जो रास्ता अपनाया, वही सही मार्ग है। भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक शक्ति की देन है। अतः विज्ञान और अध्यात्म में भेद करना भूल है। जिस समय आध्यात्मिक शक्ति का सही ज्ञान भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को हो जाएगा, तत्काल समस्या का समाधान हो जाएगा। जब वैज्ञानिकों को उस परमसत्ता की शक्ति का ज्ञान हो जाएगा तो उनका भ्रम खत्म हो जाएगा। जब इस प्रकार भौतिक विज्ञान, अध्यात्म विज्ञान के अधीन कार्य करने लगेगा, पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आएगा।

४८.

आध्यात्मिक आराधना का समय और आवश्यकता।

(०७ फरवरी १९८८)

आध्यात्मिक आराधना का समय, मनुष्य के जीवन में, युवा अवस्था से प्रारम्भ होता है। विद्यार्थी के विद्याध्ययन तक के आखिरी दो-तीन सालों में शिक्षा के साथ-साथ, इस क्षेत्र का ज्ञान भी प्राप्त करना अति आवश्यक है। इस उम्र में विद्यार्थी अपने भौतिक जीवन में प्रवेश करने की तैयारी में होता है। भौतिक ज्ञान उसके जीविकोपार्जन में निश्चित रूप से सहयोगी होता है, परन्तु अध्यात्म ज्ञान के बिना किसी भी मनुष्य का जीवन पूर्ण सार्थक और सफल नहीं हो सकता। आध्यात्मिक ज्ञान के बिना मनुष्य का जीवन सरल, शान्त और आनन्दमय नहीं बन सकता।

भौतिक विज्ञान एक निर्जीव और अचेतन शक्ति है। अध्यात्म विज्ञान का सीधा सम्बन्ध उस परम चेतन सत्ता से है। यह बात पूर्ण सत्य है कि 'अध्यात्म विज्ञान', भौतिक विज्ञान का जनक है। मनुष्य के अन्दर बैठी 'चेतन शक्ति' ही धीरे-धीरे क्रमिक विकास के साथ, भौतिक विज्ञान को प्रकट कर रही है। यह ज्ञान उसी चेतन सत्ता की देन है। आध्यात्मिक सत्ता के अधीन अगर भौतिक सत्ता का उपयोग संसार में किया जाए तो यह संसार स्वर्ग बन सकता है। आध्यात्मिक चेतना के बिना भौतिक ज्ञान, बन्दर के हाथ में उस्तरा देने के समान है। यही कारण है कि पश्चिमी जगत् के लोग, भौतिक ज्ञान की चरम सीमा पर पहुँचकर भी भयंकर अशान्त जीवन बिता रहे हैं। मनुष्य जीवन में सुख-सुविधा प्रदान करने वाले सभी भौतिक साधन उनको उपलब्ध हैं, परन्तु फिर भी उनके जीवन में घोर अशान्ति और द्वन्द्व चल रहा है। अमेरिका इस दृष्टि से सबसे उन्नत और धन्य देश कहलाता है, परन्तु वहाँ अशान्ति और द्वन्द्व की यह स्थिति है कि प्रति दस व्यक्तियों के पीछे एक व्यक्ति खूनी है। हमारे देश में भयंकर तामसिकता के रहते हुए भी प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे भी यह स्थिति नहीं है। यह बात सही है कि ज्यों-ज्यों भौतिक विज्ञान उन्नति कर रहा है, हमारे देश में भी हिंसा और क्रूरता बढ़ती जा रही है।

हमारे वेद स्पष्ट बताते हैं कि 'एक मात्र भारत ही ऐसा भूखण्ड है जिसके वायु मण्डल में आध्यात्मिक चेतन शक्तियाँ निरन्तर भ्रमण करती हैं।' यह बात सत्य है कि संसार से

अध्यात्म चेतना प्रायः समाप्त हो चुकी है, केवल दिखावा मात्र बाकी बचा है, परन्तु उस चेतना का अन्तिम बीज, आज भी भारत की भूमि में ही छिपा हुआ है। यह सत्य है कि संसार के साथ-साथ हमारे देश में भी इस चेतना का भारी ह्रास हुआ है, परन्तु एक चिंगारी आज भी मौजूद है, जिसको प्रज्वलित करके सारे संसार को प्रकाशमय किया जा सकता है। संसार भर के कई संतों ने इस सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार से भविष्यवाणियाँ कर रखी हैं।

महर्षि श्री अरविन्द ने तो स्पष्ट घोषणा कर रखी है कि उस अधिमानसिक देव का अवतरण २४ नवम्बर १९२६ को भारत की पुण्य भूमि पर हो चुका है। उस मिशन के विद्वानों ने इस तिथि को श्री अरविन्द के सिद्धि प्राप्त करने की संज्ञा दी है, परन्तु श्री अरविन्द ने स्पष्ट लिखा है कि इस दिन उस परमसत्ता ने संसार के कल्याण हेतु, भारत भूमि पर अवतार ले लिया है। सिद्धि प्राप्त करने की झलक, तनिक भी उनकी भाषा में दिखाई नहीं पड़ती।

हमारे देश में इस समय आध्यात्मिक आराधना का स्वरूप बड़ा ही विकृत बना रखा है। भौतिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन के बीच में, एक ऐसी काल्पनिक लक्ष्मण-रेखा खींच रखी है, जिसका अतिक्रमण करना धर्म का पतन माना जाता है। आध्यात्मिक लोगों और भौतिक क्षेत्र में विचरण करने वालों को व्यावहारिक रूप से दो भागों में विभक्त कर रखा है। आध्यात्मिक लोगों का जीवन पूर्ण रूप से निष्क्रिय और अकर्मण्य बना रखा है।

ये तथाकथित अध्यात्मवादी लोग विभिन्न प्रकार के नशों के आदि हो जाने के कारण, इनका जीवन पूर्ण रूप से आलस्य और अकर्मण्यता से परिपूर्ण हो चुका है। समाज के लिए इनकी उपयोगिता पूर्ण रूप से समाप्त हो चुकी है। ये समाज के लिए पूर्ण रूप से बोझ बन चुके हैं। इस सम्बन्ध में समाज में ज्यों-ज्यों चेतना और समझ बढ़ने लगी है, त्यों-त्यों इन तथाकथित अध्यात्मवादियों का जीवन संकट में पड़ रहा है, इनकी आजीविका चलनी कठिन होती जा रही है, क्योंकि आज समाज इनको निरर्थक भार समझने लगा है।

इस समय ऐसी स्थिति उत्पन्न हो चुकी है कि प्रायः इस क्षेत्र के लोगों को अपना जीवन भिक्षावृत्ति के सहारे बिताना पड़ रहा है। इस कमजोरी को छिपाने के लिए, उन्होंने भिक्षा को अपने लिए धार्मिक प्रतीक की संज्ञा देकर, इसे अपने लिए अनिवार्य घोषित कर दिया है। इस प्रकार इन लोगों का जीवन पूर्ण रूप से भिक्षावृत्ति पर चलना, धर्म का ही एक अंग माना जाने लगा है, परन्तु आज का चेतन समाज इसको भी नकार चुका है। ऐसी स्थिति में इन अकर्मण्य लोगों के झुण्डों का जीवन दूभर होता जा रहा है। अब केवल चोरी और डाकेजनी करना बाकी रह गया है। ऐसी स्थिति के आते ही, इस व्यवस्था का अंत हो जाएगा। इस प्रकार अतिक्रमण

होने के कारण जो अतिमानसिक चेतना का स्वरूप प्रकट होगा, उसी से संसार का कल्याण होगा। श्री अरविन्द को इस स्थिति का पूर्वाभास हो चुका था, इसीलिए उन्होंने कहा था- 'परिस्थितियाँ ऐसी करवट लेंगी, इसका मुझे पहले ही ज्ञान हो चुका था। परन्तु अगर सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाए तो भी इस विनाश के परे, मुझे सृजन का स्पष्ट स्वरूप नजर आ रहा है।'

सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक और भौतिक जीवन, एक दूसरे से भिन्न और विरोधी है ही नहीं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। आध्यात्मिक चेतना की ही देन है-भौतिक विज्ञान। इस प्रकार जब भौतिक चेतना अपनी जननी आध्यात्मिक चेतना के आदेश पर चलने लगेगी, उस समय धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा। ऐसी स्थिति में हमारे आदि सनातन धर्म का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सपना साकार होगा।

इस प्रकार जब तक यह भौतिक और आध्यात्मिक जीवों के बीच में खिंची, कृत्रिम लक्ष्मण रेखा का अन्त नहीं होगा, संसार में नई चेतना आनी असम्भव है। जिस प्रकार अग्नि से धूँए को अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार आध्यात्मिक चेतना से भौतिक चेतना को अलग नहीं किया जा सकता। जब मानव समाज एक ही सत्ता के दोनों स्वरूपों को भिन्न मानकर चलने लगता है तो उसका जीवन नारकीय बन जाता है। सुख, शान्ति, प्रेम, दया और सहृदयता का स्थान हिंसा, घृणा, द्वेष, प्रतिशोध आदि तामसिक शक्तियाँ ले लेती हैं। जब यह स्थिति अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है तो यह तामसिकता आपस में टकरा कर समाप्त हो जाती है। इस प्रकार नये युग का श्री गणेश होता है।

स्त्री और पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। आज मानव समाज में एक पक्षीय व्यवस्था है। विकृति के कारणों में, यह भी एक मुख्य कारण है। क्या स्त्री को 'मोक्ष' की आवश्यकता नहीं? आज की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कई धार्मिक आराधनाएँ ऐसी हैं, जिनको करने की स्त्री जाति पर रोक लगा रखी है। कुछ आराधनाएँ ऐसी बना रखी हैं कि प्राकृतिक ढंग से स्त्री उसे करने में सक्षम नहीं है। इस प्रकार धार्मिक क्षेत्र से नारी को एक प्रकार से बहिष्कृत कर रखा है।

इस प्रकार जीवन की गाड़ी एक चक्के से चलनी संभव नहीं। मनुष्य जीवन में १५-२० वर्ष तक का समय उषाकाल का है। इस समय मानव बचपन से निकलकर यौवन अवस्था में प्रवेश करता है। शरीर के सारे अंग पूर्ण स्वस्थ और खून में पूरा जोश होता है। ऐसी स्थिति में मानव कुछ कर गुजरने की स्थिति में होता है। अतः यही उपयुक्त विद्या अध्ययन का समय है। भौतिक विद्या के साथ-साथ आध्यात्मिक जगत् का ज्ञान भी प्राप्त करने का यही उपयुक्त

(सही) समय होता है। आध्यात्मिक ज्ञान, कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जो भौतिक जीवन में रुकावट डाले। इस समय की गलत मान्यताओं ने उसका विकृत स्वरूप बना रखा है।

अक्षर ईश्वर नाम की शक्ति, हमारे भौतिक जीवन में प्रत्यक्ष सहयोग न कर सके तो फिर उसको मानने की आवश्यकता क्या है? उसके बिना क्या काम चल नहीं सकता? परन्तु सच्चाई यह है कि वह शक्ति मनुष्य के भौतिक जीवन के हर क्षेत्र में पग-पग पर प्रत्यक्ष रूप में उसका पथ प्रदर्शन करती है। मैं व्यावहारिक जीवन में इसका परीक्षण करके देख चुका हूँ। इसके अतिरिक्त गुरुदेव (बाबा श्री गंगाई नाथ जी योगी) के स्वर्गवास के बाद मुझसे जुड़ने वाले लोगों का भी आध्यात्मिक शक्तियाँ, भौतिक जगत् में पग-पग पर पथ प्रदर्शन कर रही हैं।

परीक्षण के तौर पर मैंने पाया कि युवा लोग इस शक्ति को बरदाश्त करने में अधिक सक्षम होते हैं। अधिक उम्र के मनुष्यों की हर शक्ति का ह्रास हो जाने के कारण, वे इस शक्ति को बरदाश्त नहीं कर पाते हैं, और भयभीत होकर मुझसे दूर भागने का प्रयास करते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने एक स्थान पर कहा है कि "आध्यात्मिक आराधना करने वाले लोगों को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होना जरूरी है। शारीरिक और मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति इसमें अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। आध्यात्मिक शक्तियाँ इतनी शक्तिशाली होती हैं कि स्पर्श मात्र से वह भयभीत हो जाता है।"

आजकल के आध्यात्मिक गुरुओं ने आराधना का समय बुढ़ापे का निश्चित कर रखा है। बुढ़ापे में हर प्रकार की शक्तियों का ह्रास हो जाने के कारण, कई प्रकार की बीमारियाँ मनुष्य को घेर लेती हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य इन कष्टों से जूझने में ही अपनी बची-खुची शक्ति लगाए रखता है। आराधना के लिए न उसके पास समय रहता है और न शक्ति।

इस युग में आराधना का स्वरूप पूर्ण रूप से बहिर्मुखी है। अतः कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्कशास्त्र और अंधविश्वास के सहारे अध्यात्म की शिक्षा देते हैं। यह रास्ता पूर्ण रूप से अध्यात्म जगत् से विपरीत दिशा में ले जाता है। अतः परिणाम देने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। युवाशक्ति नये-नये ज्ञान को ग्रहण करने की जिज्ञासा रखती है। जो ज्ञान कोई परिणाम नहीं देता, युवाशक्ति उसे मानने को कभी तैयार नहीं होती। हमारे सभी ऋषि कह गए हैं कि अन्तर्मुखी हुए बिना आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पर्क और उसकी प्रत्यक्षानुभूति असंभव है। जिस व्यक्ति के अन्दर वह शक्ति चेतन हो चुकी होती है, मात्र वही औरों को चेतन करने की स्थिति में होता है।

निर्जीव और अचेतन से मानव का कुछ भी भला नहीं हो सकता। श्री अरविन्द ने कहा था कि अगर वह शक्ति मेरे अन्दर चेतन नहीं होगी तो फिर औरों में भी नहीं होगी। प्रथम मनुष्य की जागृति ही कठिन है, उसके बाद तो दीपक से दीपक जलाना आसान काम है। इस प्रकार उस परमसत्ता के चेतन होने के बाद सारे संसार से अंधकार को दूर करना आसान काम है। अतः मानव शक्ति के उषाकाल में ही अगर यह ज्योति जल सके तो वह संसार का कल्याण करने में अधिक सहयोगी सिद्ध होगी। इसमें स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं होता। इस प्रकार गाड़ी के दोनों चक्कों के साथ-साथ चेतन होकर चलने से सम्पूर्ण चेतना शक्ति अपने वेग के साथ, संसार का तमस् भगाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकती है।

अक्षर दुःखों से जर्जरित, मृत्यु भय से भयभीत, बुढ़े व्यक्ति में यह चेतना जाग्रत हो जाए तो कुछ लाभ नहीं होगा। वह शक्तिहीन चंद दिनों का मेहमान संसार का क्या भला कर सकता है? युवा शक्ति में इस प्रकाश का जाग्रत होना, मानव का कल्याण कर सकता है।

४९.
अध्यात्म विज्ञान और भौतिक विज्ञान

उत्थान-पतन के प्रकृति के अटल सिद्धांत के कारण आज योग-दर्शन लोप प्रायः हो चुका है, जबकि सांख्य-दर्शन (भौतिक विज्ञान) ने बहुत अधिक तरक्की कर ली है। ज्यों-ज्यों भौतिक विज्ञान उन्नति करता गया, अध्यात्म विज्ञान स्थिर भी नहीं रह सका बल्कि अधोगमन करने लगा। भौतिक विज्ञान के आचार्यों ने जब अध्यात्म-विज्ञान के आचार्यों से पूछा कि भौतिक विज्ञान ने प्राणियों के लाभ और सुख के लिए अमुक-अमुक कार्य किये, आपके विज्ञान की क्या स्थिति है? क्योंकि अध्यात्म जगत् के लोग, उन सकारात्मक जगत् के लोगों को उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे, अतः उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए एक काल्पनिक लक्ष्मण रेखा से विश्व को दो भागों में विभक्त कर दिया। स्वयं को आस्तिक घोषित कर दिया, और भौतिक विज्ञान के सच्चे लोगों को नास्तिक की संज्ञा देकर अपनी झेंप मिटाने का असफल प्रयास करने लगे।

होना तो यह चाहिए था कि अपनी कमजोरी को खुले दिलदिमाग से स्वीकार करके शोध कार्य में लग जाते, परन्तु कलियुग के गुण-धर्म ने ऐसा नहीं करने दिया। उन्होंने परमात्मा को पेट में डाल लिया, तभी तो स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने अमेरिका से अपने एक पत्र में लिखा था- "तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है। रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हण्डिया-बर्तन हैं तुम्हारा धर्म शास्त्र, अपनी तरह की असंख्य सन्तानोत्पादन में तुम्हारी शक्ति का परिचय मिलता है।"

एक बार मनुष्य झूठ बोल देता है तो उसे छिपाने के लिए झूठ पर झूठ बोलता ही चला जाता है। इस प्रकार वह मात्र झूठ के अम्बार ही लगाता है। योगदर्शन मात्र वेदान्त दर्शन की देन है। करीब सौ साल पहले, स्वामी जी का लिखा पत्र हमारे धर्म का जो चित्र प्रस्तुत करता है वह बहुत ही निराशाजनक है। हमें इसे स्वीकार करना पड़ेगा कि कलियुग के गुणधर्म के कारण आज हम उस स्थिति से कुछ नीचे ही गिरे हैं। हम योग का जो ढोल पीट रहे हैं, उसका उस योग से कोई संबंध नहीं, जो वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है। हमारे योगियों ने जिस योग की महिमा की है, वह मानव के त्रिविध ताप-आधिदैहिक, आधिभौतिक और आधिदैविक का शमन (नाश) करने के साथ-साथ कैवल्यपद अर्थात् मोक्ष देता है। इस समय हम शारीरिक कसरत को ही योग कह रहे हैं।

पतंजलि योग दर्शन में जिस क्रियात्मक ढंग से त्रिविध तापों का शमन करते हुए, सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान की पूर्ण जानकारी प्राप्त करते हुए, कैवल्यपद प्राप्त करने का वर्णन है, वही वेद रूपी कल्पतरु का अमर फल अर्थात् सिद्धयोग (पूर्ण योग) है। महर्षि श्री अरविन्द ने इसी योग का वर्णन करते हुए कहा है- "भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।"

इसी संदर्भ में महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है- 'एशिया जगत् हृदय की शांति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक-विज्ञान, नियन्त्रित-राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को आध्यात्मिक सत्ता के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।'

आज धार्मिक दृष्टि से विश्व की वस्तुस्थिति यह है कि सम्पूर्ण युवा वर्ग का धर्म पर से विश्वास प्रायः समाप्त हो चुका है। क्योंकि विज्ञान एक सच्चाई है; वह प्रत्यक्ष परिणाम देता है, अतः सभी लोग उसको सत्य मान रहे हैं। दूसरी तरफ जब धर्माचार्यों ने हठधर्मी रुख अपनाया तो विश्व भर के युवा लोगों ने इनके खिलाफ खुला विद्रोह कर दिया। आज ईश्वर एक कल्पना का विषय है। पश्चिमी जगत् में सेवारत एक डॉक्टर ने बातचीत के दौरान मुझे बताया कि पश्चिम का युवा-वर्ग, ईश्वर में बिलकुल ही विश्वास नहीं रखता है। उन्होंने कहा कि मेरा छोटा पुत्र ऑक्सफॉर्ड में पढ़ा रहा है। उसकी मान्यता है कि कमजोर, डरपोक और बुजदिल लोग ही ईश्वर नाम की काल्पनिक शक्ति का सहारा लेने का असफल प्रयास करते हैं। ऐसी स्थिति में मात्र कब्र में पाँव लटके हुए लोग, धर्म की रक्षा कितने दिन और कैसे करेंगे? ऐसा लगता है कि संसार के लोग पाप-पुण्य और स्वर्ग-नरक का डर दिखाकर जो धर्म चला रहे हैं, वह आखिरी सांसे गिन रहा है। ईश्वर के नाम से तो भय दूर भागता है परन्तु आज स्वर्ग-नरक रूपी बन्धनों से बाँधकर, भय से भगवान् की प्रत्यक्षानुभूति करवाई जा रही है। बिलकुल उल्टी गंगा बहाई जा रही है। आज विश्व के सभी सकारात्मक लोगों को, पूर्वाग्रहों को त्यागकर, जाति, धर्म और देशों की संकीर्ण भावनाओं का त्याग करके, सोचने की जरूरत है कि मानव धर्म कैसे बचे? विश्व शांति का मात्र यही उपाय शेष बचा है।

महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार पश्चिम के लोग जो कुछ कर सकते थे, वे कर चुके हैं। इसके आगे का काम करने की उनमें सामर्थ्य है ही नहीं। जिन यंत्रों को, वह परमसत्ता संसार

को दे चुकी हैं, वह मानव के त्रिविध ताप-आधिदैहिक, आधिभौतिक और आधिदैविक का शमन (नाश) करने के साथ-साथ कैवल्यपद अर्थात् मोक्ष देता है। इस समय हम शारीरिक कसरत को ही योग कह रहे हैं, उनकी पकड़ में वे नहीं आऐंगे। वे लोग मानवीय बुद्धि से उन यंत्रों द्वारा जो परीक्षण कर रहे हैं, वह पूर्ण रूप से संदिग्ध हैं। यह कार्य तो हमारे ऋषियों द्वारा बताये हुए तरीके से ही होगा। मात्र सुषुम्ना के रास्ते से ही उस चक्रव्यूह का भेदन संभव है, जहाँ से वह परमसत्ता विश्व का संचालन कर रही है। कुछ माह पूर्व बी.बी.सी.ने लगातार तीन बुद्धवार को चेतन-अवचेतन पर वैज्ञानिक व्याख्या प्रसारित की थी। मैंने उसे सुना था। उसके अनुसार पतंजलि दर्शन में उस परमसत्ता का वर्णन करते हुए सहस्त्रार में उसके स्थित होने की बात कही गई है, उसे आज विज्ञान पूर्ण सत्य मानता है।

उस चक्रव्यूह के अन्दर घुसने की विधि तो मात्र हमारा योग दर्शन ही बताता है। इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए विश्व को, भारत को धर्म-गुरु स्वीकार करना ही पड़ेगा। भौतिक ज्ञान की कीमत भौतिक धन है। अध्यात्म ज्ञान को भौतिक धन से नहीं खरीदा जा सकता और न ही कभी बेचा जा सकेगा। उसके लिए तो आध्यात्मिक संत के सामने पूर्ण समर्पण करना पड़ेगा तथा तन, मन, धन से, निष्कपट भाव से उसकी सेवा करनी पड़ेगी।

उस परम आत्मा सद्गुरुदेव के दिल से प्रसन्न होने पर ही यह ज्ञान मिलता है अन्यथा नहीं। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के ३४वें श्लोक में कहा है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।। ४:३४

(इसलिए तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरूषों से भली प्रकार दण्डवत प्रणाम, सेवा (और) निष्कपट भाव से किये हुए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जानकर, वे मर्म को जाननेवाले ज्ञानी जन (तुझे उस) ज्ञान का उपदेश करेंगे।)

इस संबंध में कबीर जी ने कहा है-

गुरु मिलि ताके खुले कपाट, बहुरि न आवे योनी बाट।

मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। मनुष्य योनि में ईश्वर के तद्रूप बना जा सकता है। इस संबंध में श्री कृष्ण ने गीता के १३वें अध्याय के २३वें श्लोक में कहा है-

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।

परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२३

(वास्तव में तो यह पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी पर (त्रिगुणातीत) ही है। केवल साक्षी होने से उपद्रष्ट और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता (एवं) सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीवन रूप से भोक्ता (तथा) ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से परमात्मा ऐसा कहा गया है।)

पंतजलि योगदर्शन में साधनपाद के २१वें श्लोक में योग के आठ अंगों-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का वर्णन है। बौद्धिक प्रयास से इस युग में उनका पालन करना असम्भव है। इसीलिए इतने महत्त्वपूर्ण दर्शन के बारे में नगण्य लोगों को ही जानकारी है।

गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत करने का सिद्धान्त है। सिद्धगुरु, साधक की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करते हैं। वह जाग्रत कुण्डलिनी साधक को उपर्युक्त अष्टांगयोग की सभी साधना स्वयं अपने अधीन करवाती है। इस प्रकार जो योग होता है, उसे सिद्धयोग अर्थात महायोग कहते हैं। यह एक अखंड मार्ग है। जाग्रत कुण्डलिनी पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व होता है, जिससे वह उसके वेग को अनुशासित और नियंत्रित करते हैं। शक्तिपात दीक्षा के बाद साधक के प्रारब्ध कर्मों के अनुसार शक्ति का विविध रीति से प्रकटीकरण होता है।

किसी साधक को शक्तिपात होते ही विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम आदि स्वतः होने लगती हैं। किसी को ज्योति दर्शन, नाद, दिव्यगन्ध, रस-स्पर्श-रूप का अनुभव होता है। किसी साधक को सुषुम्ना नाड़ी में चक्रों और ग्रंथियों के वेधन का अनुभव होता है।

मेरे संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी की अहेतु की कृपा के कारण मुझे अनायास ही शक्तिपात की सामर्थ्य प्राप्त हो गई। मेरे शिष्यों में सैकड़ों (स्त्री-पुरुष) साधकों को उपर्युक्त सभी यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः होने लगती हैं। साधक न तो उसे रोकने की क्षमता रखता है और न करने की। वह तो मात्र गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र का मानसिक जप करता, आज्ञाचक्र पर गुरु के स्वरूप का ध्यान करते हुए, आँख बंद किये, सहज आसन में बैठा रहता है। सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ, वह चेतन शक्ति (कुण्डलिनी) सीधा अपने अधीन स्वयं करवाती है।

वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन एवं बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। साधक की आँखें बंद रहती है। परन्तु आंतरिक चक्षु खुल जाते हैं जिससे साधक को ७२ हजार नाड़ियों

सहित कुण्डलिनी, छह चक्र और तीनों ग्रंथियाँ स्पष्ट दिखती हैं। सभी अंगों की आंतरिक क्रियाएँ साधक को स्पष्ट दिखाई देती हैं। कौन से अंग में किस प्रकार क्रियाएँ हो रही हैं, ध्यान की अवस्था में उसे स्पष्ट दिखती हैं।

'सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पिण्ड में है।' योग दर्शन के इस सिद्धांत के अनुसार पूर्ण ज्ञान, इस साधना से होता है। यह योग संसार की असंख्य समस्याओं का सामाधान करने में भौतिक-विज्ञान को सक्षम बनाएगा। भारतीय योगदर्शन मनुष्य को विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने के साथ-साथ मोक्ष भी देता है। यह योग मनुष्य को सभी प्रकार के रोगों से पूर्ण रूप से मुक्त करता है। रोगों से मुक्त हुए बिना शांति नहीं, और पूर्ण शांति के बिना मोक्ष असम्भव है।

कुण्डलिनी के जाग्रत होते ही साधक को इन्द्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की निरन्तर प्रत्यक्षानुभूति होती है जिससे साधक का मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शांत हो जाता है तथा उसके कारण उत्पन्न कई असाध्य रोग जैसे उन्माद, पागलपन, रक्तचाप, अनिद्रा आदि अनेक बीमारियाँ बिना दवा के चन्द दिनों में स्वतः ही ठीक हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त सभी शारीरिक रोग, विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ करवाकर, वह जगत् जननी(कुण्डलिनी) पूर्ण रूप से ठीक कर देती है।

उस आंतरिक चेतना शक्ति के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। ज्ञान की तो उसमें 'पराकाष्ठ' है। अतः उसके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। दिव्य आनन्द के निरन्तर बने रहने के कारण, सभी प्रकार के नशों से पूर्ण रूप से मुक्ति मिल जाती है। मेरे कई साधक अफीम, शराब, भांग, गांजा आदि नशों से बुरी तरह से ग्रसित थे। दीक्षा के बाद चन्द दिनों में ही उन्हें बिना किसी प्रकार के कष्ट के, सभी नशों से पूर्ण मुक्ति मिल गई। ऐसे अनेक मनोरोगी शक्तिपात के कारण पूर्ण रूप से ठीक हो गए, जिन्हें विद्युत चिकित्सा और इन्सुलिन चिकित्सा से भी लाभ नहीं हुआ था। आज सभी बिना दवा खाये पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, और ईश्वर का भजन करके सात्विक जीवन जी रहे हैं। इस प्रकार सभी प्रकार के मनोरोगों, शारीरिक रोगों और सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार का कष्टपाये और बिना दवा के, पूर्ण रूप से मुक्ति पाने का, हमारे अध्यात्म विज्ञान में ठोस आधार है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है।

उपर्युक्त सभी लाभ किसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से नहीं, अध्यात्म विज्ञान के ठोस सिद्धांतों से मिलते हैं। पतंजलि योगदर्शन के कैवल्यपाद के दूसरे श्लोक में ऋषि ने जाति (वृत्ति) बदलने का विवरण देते हुए कहा है कि इसके बिना कार्य सिद्धि संभव नहीं है। वह किस प्रकार होता है, उस सम्बन्ध में ऋषि कहता है- 'जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात्' (यह) एक

जाति से दूसरी जाति में बदल जाना, रूप जात्यन्तर परिणाम (एक जाति से दूसरी जाति में बदल जाना) प्रकृति के पूर्ण होने से होता है। ऋषि के अनुसार मनुष्य मात्र तीन जाति के होते हैं- सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। औषधि, मंत्र दीक्षा, आदि निमित्त कारण प्रकृतियों (वृत्तियों) की पूर्णता कैसे कर देते हैं? क्या वे प्रकृतियों (वृत्तियों) के प्रयोजक (चलाने वाले) हैं? इस संबंध में ऋषि ने कहा है।

'निमित्तमप्रयोजकं प्रकृतीनां वरणभेदस्तु ततः क्षेत्रिकवत्' ॥ ४:३

(निमित्त प्रकृतियों (वृत्तियों) को चलाने वाले नहीं हैं, उससे तो (केवल) किसान की भांति, रुकावट का छेदन किया जाता है।) अतः संत सदगुरुदेव की शक्तिपात दीक्षा के कारण प्रथम तामसिक वृत्तियाँ दबकर कमजोर पड़ जाती हैं। बाकी दोनों वृत्तियाँ प्राकृतिक रूप से, स्वतंत्र होने के कारण, क्रमिक रूप से विकसित होती जाती हैं। चन्द दिनों में प्रकृति उन्हें इतनी शक्तिशाली बना देती है कि फिर वे तामसिक वृत्तियों की शरीर में प्रधानता कभी स्थापित नहीं होने देती हैं। इसी प्रकार फिर रजोगुणी वृत्ति दब जाती है। मनुष्य क्रमिक बदलाव की अर्थात् जाति बदलने की प्रक्रिया से, तमोगुणी से रजोगुणी और फिर रजोगुणी से सतोगुणी जाति में बदल जाता है।

शक्तिपात-दीक्षा में उपर्युक्त कार्य कुण्डलिनी शक्ति (जगत् जननी) स्वयं अपने नियन्त्रण में करवाती है, अतः साधक में परिवर्तन बहुत ही त्वरित गति से होता है। क्योंकि वह जगत् जननी (पृथ्वी तत्त्व) उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, 'सृष्ट्युत्पति' का आदि कारण है, इसलिए वह सर्वज्ञ, सर्वस्व, और सर्वत्र है, उसके लिए कोई कार्य कठिन नहीं है। ज्यों-ज्यों मनुष्य की जाति बदलती जाती है, उस वृत्ति के सभी गुणधर्म खत्म हो जाते हैं, जो दब चुकी है। अतः मनुष्य के खानपान, रहन-सहन, व्यवहार और आचरण आदि सभी बदल जाते हैं क्योंकि वृत्ति बदल जाती है, इसलिए उस वृत्ति के खानपान (सभी प्रकार के नशों से तथा पदार्थों) से मनुष्य को आंतरिक भाव से घृणा हो जाती है।

अतः किसी प्रकार के कष्टके बिना ही सभी प्रकार की बुरी आदतें स्वतः छूट जाती हैं। स्वामी श्री विवेकानन्द जी के शब्दों में 'मनुष्य उन वस्तुओं को नहीं छोड़ता है, वे वस्तुएँ उसे छोड़कर चली जाती हैं।' इस संबंध में स्वामी जी ने अमेरिका में कहा था। - "You need not give up the things, the things will give you up."

इस संबंध में भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के १४ वें अध्याय में कहा है-

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।। १४:५

(हे अर्जुन! सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ऐसे (यह) प्रकृति से उत्पन्न हुए तीनों गुण (इस) अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं।)

इसके बाद भगवान् तीनों गुणों की अलग-अलग व्याख्या करते हुए कहते हैं-

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।
सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ।। १४:६

(हे निष्पाप! उन तीनों गुणों में प्रकाश करने वाला निर्विकार सतगुण (तो) निर्मल होने के कारण सुख की आसक्ति से और ज्ञान की आसक्ति से बाँधता है।)

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसंगेन देहिनम्।। १४:७

(हे अर्जुन! रागरूप रजोगुण को कामना और आसक्ति से उत्पन्न हुआ जान, (इस) जीवात्मा को कर्मों की और उनके फल की आसक्ति से बाँधता है।)

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।। १४:८

(और हे अर्जुन! सर्व देहाभिमानियों के मोहने वाले तमोगुण को अज्ञान से उत्पन्न हुआ जान। वह इस जीवात्मा को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा बाँधता है।)

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत।। १४:९

(हे अर्जुन! सतोगुण सुख में लगाता है (और) रजोगुण कर्म में (तथा) तमोगुण तो ज्ञान का आच्छादन करके (ढक के) प्रमाद में भी लगाता है।)

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।। १४:१०

(और हे अर्जुन! रजोगुण (और) तमोगुण को दबाकर सतोगुण बढ़ता है, तथा रजोगुण

(और) सतोगुण को दबाकर तमोगुण बढ़ता है।)

उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट होता है कि समर्थ संत सद्गुरु, शक्तिपात दीक्षा द्वारा साधक की कुण्डलिनी जाग्रत करके, जात्यान्तरण करने में अर्थात् एक वृत्ति को दबाकर साधक को दूसरी वृत्ति में बदलने में सक्षम होते हैं। क्योंकि सभी शास्त्रों तथा संतों ने गुरु को निर्गुण निराकार का सगुण साकार स्वरूप माना है,(अर्थात् वह परमतत्त्व, जन्म-मरण से मुक्त गुरु के माध्यम से अपनी सम्पूर्ण शक्ति प्रकट करता है) तभी गुरु की व्याख्या करते हुए हमारे शास्त्र स्पष्ट शब्दों में कहते हैं-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ - गुरु गीता

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौदहवें अध्याय में कहा है-

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते॥ १४:१४

(जब यह जीवात्मा सतोगुण की वृद्धि में मृत्यु को प्राप्त होता है, तब तो उत्तम कर्म करने वालों के मलरहित लोकों को प्राप्त होता है।)

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसंगिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते॥ १४:१५

(रजोगुण के बढ़ने पर मृत्यु को प्राप्त होकर कर्मों की आसक्ति वाले मनुष्यों में उत्पन्न होता है, तथा तमोगुण के बढ़ने पर मरा हुआ पुरुष मुढ़योनियों में उत्पन्न होता है।)

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति॥ १४:१९

(हे अर्जुन! जिस काल में द्रष्टा तीनों गुणों के सिवाय, अन्य किसी को कर्ता नहीं देखता है और तीनों गुणों से परे सच्चिदानन्दघन स्वरूप, मुझ परमात्मा को तत्त्व से जानता है, उस काल में वह पुरुष मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है।)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि गुरु अपने शिष्य को अपनी जाति (चौथी-त्रिगुणातीत जाति) में बदलने में पूर्ण रूप से समर्थ होता है। क्योंकि वह निर्गुण-निराकार का सगुण-साकार स्वरूप होता है इसीलिए हमारे संतों ने स्पष्टकहा है-

गुरु करता गुरु करणैं जोगु। गुरु परमेसुर है भी होगु।।

कहु नानक प्रभि इहैं जनाई। बिन गुरु मुकति न पाइअै भाई ।।

महला ५, शब्द ३:७।।

तीन लोक नौ खंड में, गुरु तें बड़ा न कोइ।

करता करै न करि सकै, गुरु करै सो होइ।।

-संत कबीर

अतः गुरु, शिष्य को गीता के १३वें अध्याय के २२वें श्लोक में वर्णित स्वरूप के 'तद्रूप' बना देता है।

मैं उक्त तीनों जातियों में ही विश्वास करता हूँ। चौथी जाति गुरु की ही होती है। इन चार जातियों के सिवाय अन्य जाति विश्व में हो ही नहीं सकती। अतः मैं मानव कृत जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाओं का उल्लंघन करते हुए, मेरे असंख्य गुरुओं की कमाई का गुरु प्रसाद, जो कि मेरे परमदयालु गुरुदेव की अहेतु की कृपा के कारण अनायास ही मुझे प्राप्त हो गया है, विश्व में बाँटने निकला हूँ। मैं वैदिक दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सनातन सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि माँगने आया कोई भी व्यक्ति, खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

५०.

आध्यात्मिक चेतना कैसे फैलती है?

(०५ मार्च १९८८)

आध्यात्मिक चेतना, ईश्वरीय शक्ति के प्रयास से फैलती है। इसमें मानवीय बुद्धि द्वारा किया गया प्रयास सार्थक सिद्ध नहीं हो सकता। मानवीय प्रयास को अधिक से अधिक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित प्रचार से अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मनुष्य अपने पूर्ण ज्ञान और शक्ति के सहारे काफी लम्बे समय तक आध्यात्मिक प्रचार चला सकता है। भौतिक साधनों के द्वारा निरन्तर लाखों लोगों को इकट्ठा कर सकता है परन्तु इस प्रकार चलाया गया कोई भी अभियान समाप्त होने के बाद कोई भी असर पीछे नहीं छोड़ता। इस प्रकार के असंख्य अभियानों से जब लोगों को कुछ भी परिणाम नहीं मिला तो लोग विमुख हो गए। इस प्रकार विमुख हुए लोगों की संख्या, जब अधिक हो गई तो लोगों में विद्रोह की हिम्मत आ गई और धार्मिक गुरुओं का खुला विरोध होने लगा।

क्योंकि इस युग के गुरुओं के पास जो वस्तु बची हुई है, उसके अलावा वे कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं, ऐसी स्थिति में दिन-दिन बिगड़ती हुई हालात को काबू करने के लिए, इस युग के धर्मगुरुओं ने प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्क, बुद्धि और धन के सहारे विद्रोह को दबाने का प्रयास किया। ज्यों-ज्यों इस प्रक्रिया से धर्मगुरुओं ने अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास तेज किया, हालात काबू से बाहर हो गए। चन्द मरणासन्न स्त्री-पुरुषों के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं बचा। वे भी अपने जीवन भर के किये हुए कर्मों के भय से भयभीत होकर बचाव के लिए रह गए। अपनी ही तस्वीर से भयभीत, ये शक्तिहीन असहाय लोग कुछ भी करने की स्थिति में नहीं हैं। धर्मगुरु भी अच्छी प्रकार समझते हैं कि जीवन भर इन्होंने जो अन्याय और अत्याचार करके लूटा है, उसी का भय इनको बुरी तरह से खा रहा है। उनकी इस कमजोरी को अच्छी प्रकार समझते हुए धर्मगुरु इन्हें त्याग, तपस्या, दान-पुण्य, पाप, आदि की व्याख्या अपने हिसाब से बताकर किसी प्रकार अपना बचाव करने में लगे हुए हैं।

सृजन की शक्ति तो चढ़ते हुए सूर्य में होती है। इसीलिए संसार का मानव, उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार करता है, कोई भी अस्त होते हुए सूर्य को नमस्कार नहीं करता। इस युग के शक्तिहीन और असहाय धर्मगुरु अस्त होते हुए सूर्य के सहारे कितने दिन तक जिन्दा रह सकेंगे, यह स्पष्ट बात है। जिस प्रकार डूबता व्यक्ति तिनके के सहारे नहीं बच सकता, ठीक

५०.

आध्यात्मिक चेतना कैसे फैलती है?

(०५ मार्च १९८८)

आध्यात्मिक चेतना, ईश्वरीय शक्ति के प्रयास से फैलती है। इसमें मानवीय बुद्धि द्वारा किया गया प्रयास सार्थक सिद्ध नहीं हो सकता। मानवीय प्रयास को अधिक से अधिक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित प्रचार से अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मनुष्य अपने पूर्ण ज्ञान और शक्ति के सहारे काफी लम्बे समय तक आध्यात्मिक प्रचार चला सकता है। भौतिक साधनों के द्वारा निरन्तर लाखों लोगों को इकट्ठा कर सकता है परन्तु इस प्रकार चलाया गया कोई भी अभियान समाप्त होने के बाद कोई भी असर पीछे नहीं छोड़ता। इस प्रकार के असंख्य अभियानों से जब लोगों को कुछ भी परिणाम नहीं मिला तो लोग विमुख हो गए। इस प्रकार विमुख हुए लोगों की संख्या, जब अधिक हो गई तो लोगों में विद्रोह की हिम्मत आ गई और धार्मिक गुरुओं का खुला विरोध होने लगा।

क्योंकि इस युग के गुरुओं के पास जो वस्तु बची हुई है, उसके अलावा वे कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं, ऐसी स्थिति में दिन-दिन बिगड़ती हुई हालात को काबू करने के लिए, इस युग के धर्मगुरुओं ने प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्क, बुद्धि और धन के सहारे विद्रोह को दबाने का प्रयास किया। ज्यों-ज्यों इस प्रक्रिया से धर्मगुरुओं ने अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास तेज किया, हालात काबू से बाहर हो गए। चन्द मरणासन्न स्त्री-पुरुषों के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं बचा। वे भी अपने जीवन भर के किये हुए कर्मों के भय से भयभीत होकर बचाव के लिए रह गए। अपनी ही तस्वीर से भयभीत, ये शक्तिहीन असहाय लोग कुछ भी करने की स्थिति में नहीं हैं। धर्मगुरु भी अच्छी प्रकार समझते हैं कि जीवन भर इन्होंने जो अन्याय और अत्याचार करके लूटा है, उसी का भय इनको बुरी तरह से खा रहा है। उनकी इस कमजोरी को अच्छी प्रकार समझते हुए धर्मगुरु इन्हें त्याग, तपस्या, दान-पुण्य, पाप, आदि की व्याख्या अपने हिसाब से बताकर किसी प्रकार अपना बचाव करने में लगे हुए हैं।

सृजन की शक्ति तो चढ़ते हुए सूर्य में होती है। इसीलिए संसार का मानव, उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार करता है, कोई भी अस्त होते हुए सूर्य को नमस्कार नहीं करता। इस युग के शक्तिहीन और असहाय धर्मगुरु अस्त होते हुए सूर्य के सहारे कितने दिन तक जिन्दा रह सकेंगे, यह स्पष्ट बात है। जिस प्रकार डूबता व्यक्ति तिनके के सहारे नहीं बच सकता, ठीक

उसी प्रकार यह कागज की नाव तो डूबेगी। अब इसे बचाना असम्भव हो गया है। इतिहास साक्षी है, क्षीण होती हर सत्ता, नई शक्ति के उदय होने का संकेत है। इस युग का मानव ऐसी किसी व्यवस्था में विश्वास नहीं करता जो कोई परिणाम नहीं देती। ईश्वर अगर है तो उससे सम्पर्क करके प्रार्थना करने पर निश्चित रूप से परिणाम मिलने चाहिए। परिणाम के अभाव में हमारे दिमाग में दो प्रश्न पैदा होते हैं- या तो ईश्वर नाम की कोई शक्ति है ही नहीं, और अगर है तो हमारा संदेश उसके पास पहुँच ही नहीं रहा है क्योंकि हमारे सभी संत कह गए हैं कि ईश्वर परम दयालु है; ईश्वर कृपा के उदाहरणों से हमारे धार्मिक ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

हम देखते हैं, इस युग में प्रचलित आराधना पद्धति से की गई प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। इससे यही नतीजा निकलता है कि हमारे प्रार्थना पत्र पर पाने वाले का सही पता नहीं लिखा होता है। पता अगर ठीक होता तो उसका उत्तर निश्चित रूप से मिलता। अतः इस युग के मानव को अगर उस परमसत्ता की खोज करनी है तो उसका सही पता जानना आवश्यक है। भौतिक विज्ञान ने इस प्रकार की खोज से अपनी जो उच्चसत्ता और शक्ति प्राप्त कर ली है, ठीक उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान भी अपनी परमोच्च स्थिति पर पहुँच सकता है। अब समय आ गया है कि वह परमसत्ता स्वयं प्रकट होकर, अपने प्रकट किये हुए भौतिक विज्ञान को अधीन करके, संसार में स्वयं का सुख-शान्ति का राज्य स्थापित करे। जब तक वह परमसत्ता स्वयं प्रकट होकर अपनी प्रकट की हुई ताकत को अपने अधीन संचालित नहीं करेगी, संसार में सुख शान्ति असम्भव है।

इस समय सारे भौतिक विज्ञान की उपलब्धियाँ तामसिक शक्तियों के अधीन हैं। तामसिकता का गुणधर्म हिंसा, घृणा, द्वेष और विनाश है। इन शक्तियों से सृजन की उम्मीद के बल पर आज तक कई प्रयास किये, परन्तु सृजन के स्थान पर निरन्तर संहार ही प्रगति करता रहा। इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही अनेक राजनेताओं ने शान्ति लाने का प्रयास किया, परन्तु वे इसमें पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हुए। प्रथम विश्व महायुद्ध ने संसार में भयंकर नरसंहार और अशान्ति फैला दी। सारा संसार अशान्त और आतंकित हो गया। तब उन भौतिक सत्ता सम्पन्न राष्ट्रध्यक्षों ने संसार में शांति लाने हेतु राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) का निर्माण किया। यह प्रयास भी असफल रहा, और दूसरा विश्वयुद्ध पहले से भी भयंकर हुआ। तब शान्ति लाने का और प्रयास करते हुए उन्होंने 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (यू.एन.ओ) का निर्माण किया परन्तु हम देख रहे हैं कि यू. एन. ओ. भी शान्ति लाने में पूर्ण रूप से असफल हो चुका है।

संसार में इस समय एक भी ऐसा क्षण नहीं बीत रहा है, जिसमें भौतिक विज्ञान ने

नरसंहार बन्द किया हो। वर्षों से संसार के किसी न किसी हिस्से में नरसंहार और युद्ध निरन्तर जारी है। विश्व की सर्वोच्च शक्तियों के सभी प्रयास असफल हो रहे हैं। संसार में अब तो हर क्षेत्र में नरसंहार प्रारम्भ हो गया है। दोनों विश्व युद्धों से भी अधिक विनाश रात-दिन संसार में हो रहा है। सभी बहिर्मुखी बौद्धिक प्रयास असफल हो चुके हैं क्योंकि शान्ति अन्दर से आती है, शान्ति का सम्बन्ध दिल से है। अतः अन्तर्मुखी आराधना से उस परमसत्ता से जुड़े बिना शान्ति असम्भव है। मैं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर रहा हूँ कि जो विकास मेरे तथा मेरे गुरुदेव में हो चुका है, वह आध्यात्मिक और भौतिक जगत् में प्रत्यक्ष परिणाम दे रहा है। मुझसे जुड़ने वाले सभी लोगों को वह परम आनन्द और परम शान्ति मिल रही है जिसको कि विभिन्न संतों ने 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की संज्ञा दी है। मैं तथा मेरे गुरुदेव जितना आरोहण कर चुके हैं, उस पथ की यात्रा में मुझसे जुड़ने वाले लोगों को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो रही है।

उन्हें इस आरोहण में जिन विचित्र-विचित्र लोकों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं, उससे सभी आनन्द विभोर हो रहे हैं। मूलाधार से लेकर अगमलोक, जहाँ तक वे पहुँच सके हैं, हमारे ऋषियों द्वारा वर्णित सभी बातों की प्रत्यक्ष उपलब्धि हो रही है। इसके साथ-साथ सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर से सम्बन्धित अनेक प्रकार की घटनाएँ, आध्यात्मिक शक्तियाँ पहले बता रही हैं और सभी क्रमिक रूप से भौतिक जगत् में सत्यापित हो रहीं हैं। इससे इन दोनों शरीरों के अन्दर 'आत्मा' की बात हमारे संतों ने जिस प्रकार बताई है, उसके भी स्पष्ट चिह्न, जिन्हें मैं बहुत पहले देख चुका हूँ, मेरे अनुयाइयों को प्रत्यक्ष रूप से मिल रहे हैं।

भौतिक जगत् में जिन आध्यात्मिक बातों को आज तक मानव केवल मनघड़ंत और काल्पनिक मानता है, वे सभी असंख्य प्रमाणों सहित सत्य प्रमाणित हो रही हैं। मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक के माया के जगत् की सभी शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूति, त्रिगुणमयी माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सहित हो रही है। ये सभी शक्तियाँ भौतिक जगत् में भी सत्यापित हो रही हैं। आज्ञाचक्र से ऊपर के लोक पूर्ण रूप से सात्त्विक हैं तथा यहाँ शब्द का रूप बदलकर निरन्तर सूक्ष्म रूप धारण करता जाता है, अतः इनकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ पूर्ण रूप से मानवीय भाषा में व्यक्त नहीं की जा सकती। पूरे प्रयास के बावजूद सभी अन्त में यही कह देते हैं कि जो कुछ हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं, उसे हम भाषा द्वारा व्यक्त करने में अपने आपको असमर्थ महसूस कर रहे हैं। मुझे बहुत बार लोग पूछते हैं कि क्या इन रहस्यपूर्ण बातों को कभी मानवीय भाषा में बताना सम्भव होगा? मैं उन्हें हमेशा एक ही उत्तर देता हूँ कि मैंने तुम्हें प्रारम्भ में ही बता दिया था कि अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूतियों और

साक्षात्कार का विषय है। इसमें मानवीय बुद्धि और ज्ञान कुछ भी सहयोग देने की स्थिति में नहीं हैं। यही कारण है, मैंने आप लोगों को आज तक कोई उपदेश नहीं दिया, कोई कर्मकाण्ड या बहिर्मुखी आराधना की भी सलाह नहीं दी। मैंने हमेशा यही बात कही कि इस जगत् में प्रेम, सद्भाव, समर्पण, दया और सात्त्विक भाव से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है। संसार के भौतिक वैभव से यह प्राप्त होने वाला ज्ञान नहीं है।

भौतिक सत्ता तो अधीनस्थ बहुत ही छोटी शक्ति है। मैं देख रहा हूँ, तीनों शरीरों को भेदकर जिसने आत्मा का क्षणिक प्रकाश देख लिया, उसे पिछले जन्म का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार आत्मा से जितना प्रगाढ़ सम्बन्ध होगा, उसी के अनुसार उसे पिछले कई जन्मों का ज्ञान होना सम्भव है। इस प्रकार हमारे धर्म का पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी भौतिक रूप से सत्यापित किया जा सकता है। आज मेरे माध्यम से जो कुछ हो रहा है, वह ईश्वर की कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद का परिणाम है। प्रारम्भ से लेकर मेरे जीवन के अन्तिम क्षण तक के बारे में मुख्य-मुख्य सभी कार्यों का स्पष्ट आदेश, उस परमसत्ता ने दे दिया है। मैं सप्रमाण पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ। इसके अलावा वह परमसत्ता पग-पग पर पूर्ण रूप से मेरा पथ प्रदर्शन कर रही है। मुझसे जुड़ने वाले लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने वाले सभी जिज्ञासु लोगों में भी वह सात्विक करन्ट(प्रकाश) अनायास दौड़ने लगता है।

५१.

आध्यात्मिक सत्संग

(११ दिसम्बर १९८८)

इस युग में आध्यात्मिक सत्संग का सही अर्थ, प्रायः लुप्त हो चला है। भजन, कीर्तन, कथा, उपदेश आदि सत्संग के कई प्रकार, इस समय संसार में प्रचलित हैं। सत्संग का सीधा साधा अर्थ है, सत्य का साथ करना। केवल ईश्वर ही सत्य है, बाकी दृश्य जगत् सारा नाशवान है। अतः जिसके संग के कारण उस परमतत्त्व परब्रह्म परमात्मा, सच्चिदानन्दघन की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो जाय, वही सच्चा सत्संग है। इस समय संसार से ईश्वर तत्त्व प्रायः पूर्णरूप से लोप हो गया है। इस समय उस तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति मात्र कल्पना का विषय रह गया है।

उस परमतत्त्व के लोप होने के सम्बन्ध में समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज कहते हैं-

तिन्ही लोक जेथून निर्माण झाले।
तया देवरायासि कोणी न बोले।।
जगीं थोरलादेव तो चोरलासे।
गुरुवीण तो सर्वथाही न दीसे।।

(तीनों लोक-भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक जहाँ से उत्पन्न हुए, उस सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म देवाधिदेव श्रीराम को कोई नहीं कहता। जग में सर्वोत्तम देव चुराया गया है। उसके चोरी हो जाने के बाद, वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्व देवाधिदेव की चोरी की तो गई है किन्तु सद्गुरु रूपी गुप्तचर की सहायता के बिना वह नहीं दिख सकेगा।)

परन्तु इस युग में संत सद्गुरु मिलना बहुत ही कठिन है। इस सम्बन्ध में समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज कहते हैं -

गुरु पाहतां पाहतां लक्ष कोटी।
बहुसाल मंत्रावली शक्ति मोठी।।
मनीं कामना चेटकें धातमाता।
जनीं व्यर्थ रे तो नव्हे मुक्तिदाता।।

(गुरुओं को देखते-देखते तो लाखों-करोड़ो गुरु मिलेंगे। वे बहुत वर्षों तक मंत्र द्वारा चतुराई से अपने भीतर जादूगरी की बड़ी शक्ति द्वारा कामनापूर्ति कर, लोगों को अपने चंगुल में चिन्तामणि सदृश अपनी मन्त्र शक्ति के प्रभाव से ही फँसाते फिरते हैं। ऐसे लोग व्यर्थ होते हैं। वे मोक्षदाता-सद्गुरु पद पाने के अधिकारी नहीं होते।)

आगे, ऐसे गुरुओं के लिए समर्थ गुरु कहते हैं -

नव्हे चेटकी चालकू द्रव्यभोंदू।
नव्हे निंदकू मत्सरू भक्तिमंदु।।
नव्हे उन्मतू वेसनी संगबाधू।
जगीं ज्ञानियो तोचि साधु अगाधू।।

(जो जादू करने वाला होता है, लोगों के सम्मुख दीनता दिखाकर अह्लाद उत्पन्न करने वाला या मिथ्या प्रशंसा करने वाला होता है तथा अपने साधुत्व का प्रदर्शन कर लोगों से पैसा लूटने वाला द्रव्य लोभी होता है, वह सद्गुरु पद का अधिकारी नहीं होता। जो किसी की निन्दा नहीं करता, किसी से मत्सर्य नहीं रखता, उन्मत्त नहीं होता, व्यसनी नहीं होता तथा बुरी संगति में नहीं रहता, जो बुरी संगतियों में बाधा डालने वाला, ज्ञान सम्पन्न होता है, वही अगाध ज्ञानी व्यक्ति साधु है, ऐसा जानना चाहिए।)

नव्हे वाउगी चाहुटी काम पोटी।
क्रियेवीण वाचालता तेचि मोठी।।
मुखे बोलिल्यासारिखें चालताहे।
मना सद्गुरु तोचि शोधूनि पाहे।।

(वह व्यक्ति चुगलखोर नहीं होता। उसके अन्तरंग में काम भावना नहीं होती। वह मुख से बोले गए शब्दों का वैसा ही आचरण करने में सक्षम होता है। हे मन! इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति को ही सद्गुरु समझना चाहिए।)

जनीं भक्त ज्ञानी विवेकी विरागी।
कृपालू मनस्वी क्षमावंत योगी।।
प्रभूदक्ष व्युत्पन्न चातुर्य जाणे।
तयाचेनी योगे समाधान बाणे।।

(वह सद्गुरु पद का अधिकारी भक्त होता है और विवेक-वैराग्य सम्पन्न, कृपालु, मनस्वी क्षमाशील, योगी, समर्थ, अत्यन्त सावधान, व्युत्पन्न (प्रत्युत्पन्नमतिवाला), चातुर्य सम्पन्न तथा संगति करने पर समाधान की प्राप्ति कराकर समाधानी बनाने वाला होता है।)

नव्हें तेंचि जाले नसे तेंचि आलें।
कलों लागले सज्जनाचेनि बोलें।।
अनिर्वाच्य ते वाच्य वाचें वदावें।
मना संत आनंत शोधीत जावें।।

(जो पहले नहीं था, वह हो गया-स्वरूप का बोध पहले नहीं था, वह हो गया। जो नहीं आता था, वह समाधान आ गया। ब्रह्मज्ञान से पूर्ण स्वरूपानन्द का भोग करने से समाधान चित्त में वास करने लगता है। गहन वेदान्त वाक्यों का बोध जो स्वरूप का संकेत दिया करता था, वह पहले नहीं समझता था; वह बोध महावाक्य (तत्त्वमसि) आदि का अर्थ सद्गुरुदेव के कृपा वचनों से सहज ही आत्मसात् हो जाने से समझ में आने लगा। जो ब्रह्म, निर्गुण निराकार और वाणी से परे अनिर्वचनीय था, वही वाणी से कहने योग्य और वाच्य हो गया। यह सद्गुरुदेव की कृपा है कि वही ब्रह्म, अब मेरे कथन का विषय हो गया है। हे मन! नित्य अनन्त ब्रह्म को सत्संगति में रहकर खोजते रहो।)

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि ऐसे संत सद्गुरु की सत्संग को ही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक सत्संग कहा जा सकता है। अगर आध्यात्मिक सत्संग प्रत्यक्ष परिणाम न दे तो उसे सत्संग नहीं कहा जा सकता। केवल विश्वास से काम नहीं चल सकता। जिस प्रकार गुड़ खाते ही मुँह में मिठास पैदा हो जाती है, ठीक वैसा ही परिणाम सत्संग का होना चाहिए। इसके विपरीत सभी कर्मकाण्ड और प्रदर्शन हैं। समर्थ गुरु स्वामी रामदास जी महाराज ने जो संत सद्गुरुदेव की पहचान बताई है, वैसा ही गुरु, 'सत्संग' के योग्य होता है।

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार के सर्वभूतों (जड़ और चेतन) की उत्पत्ति 'शब्द' से मानते हैं। सभी धर्म कहते हैं कि वह शब्द 'प्रकाशप्रद' है। सर्वप्रथम शब्द और प्रकाश से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, फिर संपूर्ण ब्रह्माण्ड और त्रिगुणमयी माया की उत्पत्ति होती है। फिर त्रिगुणमयी माया अपने जनक 'शब्द' और 'प्रकाश' (प्रकाशप्रदशब्द) की प्रेरणा से संसार के सर्वभूतों की रचना करती है। संसार का यह सारा प्रपंच उसी प्रकाशप्रद शब्द की देन है। दूसरे शब्दों में यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार मात्र है। संत सद्गुरुदेव निराकार ब्रह्म

का सगुण साकार स्वरूप ही होता है।

अतः संत सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त प्रकाशप्रद शब्द की धार के सहारे, उस दिव्य प्रकाश के आनन्द और रोशनी में उस पथ पर चलना सम्भव है, जहाँ से आदि में वह प्रकाशप्रद शब्द प्रकट होता है। उसी को अलख लोक के ऊपर वाला, 'अगम लोक' कहकर संतों ने बारम्बार वर्णन किया है। उस लोक में जाते ही जीवात्मा अपने जनक, परमात्मा में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। इसी का नाम 'मोक्ष' है। प्रकाशप्रद शब्द के दिव्य प्रकाश से मनुष्य को अपने अन्दर उस दिव्य आनन्द की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। बिना उस आनन्द की प्राप्ति के, मनुष्य को मोक्ष का अर्थ ही समझ में नहीं आ सकता।

जब तक संत सद्गुरुदेव की कृपा से उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद मनुष्य चख नहीं लेता, उसे माया के प्रभाव से बाहरी भौतिक सुख ही प्रभावित करते रहते हैं। वह बारम्बार यही कहता है कि क्या जरूरत है मोक्ष की। संसार के इस आनन्द को छोड़कर, मोक्ष का प्रयास मूर्खता है। क्योंकि उसने उस दिव्य आन्तरिक आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है, इसलिए वह सांसारिक सुखों में और दिव्य आन्तरिक आनन्द में भेद समझ ही नहीं सकता है। यह सारा प्रपंच केवल उपदेश, प्रदर्शन, शब्दजाल और दर्शन शास्त्र के ग्रन्थों आदि से समझ में नहीं आ सकता।

ये सब मनुष्य को बुद्धि की कसरत मात्र करवाकर ज्ञानी बनने का भ्रम ही पैदा कर सकते हैं। इस समय संसार में यही भ्रम खुला बिक रहा है। अध्यात्म ज्ञान के नाम से, यह संसार में सर्वत्र उपलब्ध है। क्योंकि यह ज्ञान कोई प्रत्यक्ष परिणाम नहीं देता है, इसलिए संसार के युवा वर्ग का विश्वास इससे खत्म हो चुका है। मृत्यु के करीब पहुँचे हुए शक्तिहीन स्त्री-पुरुष ही, जीवन में किये हुए काम को याद करके, अपनी ही तस्वीर से भयभीत होकर, इसे पाने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि भय के कारण बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, अतः वे असन्तुलित प्राणी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।

अध्यात्म का पतन उस समय प्रारम्भ हुआ, जब धर्मगुरुओं ने इसका सम्बन्ध पेट से जोड़ लिया। आज सभी धर्मों के धर्मगुरुओं को जीवित रहने के लिए हठधर्मिता से अध्यात्म पर चलना पड़ रहा है। ऐसा करना उनकी मजबूरी है। इस हठधर्मी प्रवृत्ति ने संसार के लोगों को विद्रोही बना दिया। इस प्रकार अध्यात्म एक तमाशा बन चुका है। सर्वभूतों के जनक आदि कारण के प्रति ऐसा भाव परिवर्तन विशेष का द्योतक है। यह वैज्ञानिक सचाई है कि जब किसी बात की अति हो जाती है तो उसका अन्त हो जाता है। ऐसा होना अनिवार्य भी है क्योंकि

अनादि काल से उत्थान और पतन का यह क्रम चला आ रहा है।

संसार का अन्धकार, उस दिव्य ज्ञान ज्योति के उदय हुए बिना हटना असम्भव है। पहला दीपक जलना ही कठिन होता है, उसके बाद तो दीपक से दीपक जलने की प्रक्रिया के अनुसार, पूरे विश्व में प्रकाश फैलने में देर नहीं लगेगी। जब यह मधुर स्वर लहरी संसार के वायु मण्डल में तरंगित होने लगेगी तो आम प्राणी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार यह दिव्य प्रकाश, प्रकाश की गति से भी तेज, पूरे संसार में फैल जावेगा। प्रतिरोधक शक्तियाँ संभल भी नहीं पाएंगी। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे बिना विरोध के शान्त हो जाएंगी। उस परमसत्ता को संसार से उनका सफाया करना है, अतः उस विकृति के सफाये के लिए अन्धेरे और उजाले का संघर्ष अनिवार्य है। इसके बिना पूर्ण शान्ति असम्भव है। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। पाप का अन्त कुरुक्षेत्र में ही होता है।

महर्षि श्री अरविन्द की यह घोषणा है कि वह परमसत्ता भारत की भूमि पर २४ नवम्बर १९२६ को अवतरित हो चुकी है, गलत नहीं है। उसके अवतरित होने का स्पष्ट अर्थ है, अन्धकार का सफाया। ऐसा अनादि काल से होता आया है। हमें इतिहास को ध्यान में रखते हुए, ऐसे संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए क्योंकि ऐसा होना अनिवार्य है। ऐसा अनादि काल से होता आया है। संसार में अन्धकार से जो संहार और हाहाकार मचा हुआ है, वह पूर्ण शान्ति का उषाकाल है। जैसे दीपक बुझते समय तेज प्रकाश फैलाता है, वैसे ही अन्धकार, मिटने से पहले, भयंकर तबाही मचाता है; यह प्रकृति का अटल नियम है।

५२.

अध्यात्मवाद का सच्चा स्वरूप

(१७ मार्च १९८८)

इस समय संसार के सभी धर्मों में, धर्मगुरुओं ने अध्यात्म की बड़ी विचित्र स्थिति बना रखी है। हर धर्म में एक वर्ग विशेष ने इस पर अपना एकाधिकार जमा रखा है। उस वर्ग ने अपनी दिनचर्या, रहन-सहन, वेशभूषा और खानपान आदि सभी कुछ संसार के आम मानव से भिन्न बना रखा है ताकि देखते ही लोग उनको पहचान जाएँ और उन्हें उचित सम्मान मिल सके। मान, इज्जत, सम्मान आदि प्राप्त करने के लिए विशेष प्रकार की वेशभूषा और प्रदर्शनों का सहारा, हर धर्म में लिया जाता है। ऐसा वर्ग समाज के आम व्यक्ति से, अपने को अलग रखने का प्रयास करता है। इस प्रकार सभी धर्मों के अध्यात्मवादी लोगों का एक अलग संगठन बन गया है। अपने निहित स्वार्थों के कारण, ऐसे संगठन टूट-टूटकर कई भागों में विभक्त हो गए हैं।

ईश्वर एक है और संगठन अनेक। सब के सब एक दूसरे की आलोचना और निन्दा करने में निरन्तर प्रयासरत हैं; सभी एक ही प्रयास में लगे हैं कि वे ही एकमात्र ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि हैं। संसार भर के लोगों को भेड़ों के झुण्ड की तरह अलग-अलग बाँट रखा है। अपनी-अपनी भेड़ों की पहचान के लिए अलग-अलग वेशभूषा, प्रदर्शन और सिद्धांत बना रखे हैं। इस प्रकार अपने अनुयाइयों को पहचानने और प्रचार-प्रसार करने का निरन्तर प्रयास चल रहा है। धर्म तो प्रत्यक्षानूभूति और साक्षात्कार का विषय है, जोकि सभी धर्मों से लोप हो चुका है। धर्माचार्य केवल चारण और भाट की तरह अतीत के गुणगान पर जिन्दा रहने का अथक प्रयास कर रहे हैं, परन्तु फिर भी निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। संसार के सभी धर्मों पर से, आम आदमियों का विश्वास, बहुत तेज गति से खत्म हो रहा है।

आर्थिक शक्ति और संगठन के बल से अपने-अपने संगठनों को किसी प्रकार जिन्दा रख सकें, रात-दिन इसका प्रयास निरन्तर चल रहा है, परन्तु परिणाम सभी को उल्टे ही मिल रहे हैं। ऐसी विषम स्थिति में ये धर्मगुरु कितने दिन अपने-अपने संगठनों को जिन्दा रख सकेंगे? धर्म का असली स्वरूप ज्यों ही प्रकट होने लगा कि इनका अस्तित्व मिटते देर नहीं लगेगी। अध्यात्मवाद की व्याख्या करते हुए श्री अरविन्द ने कहा है "एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन में, हर वस्तु के लिए अवकाश होता है।" इसको और स्पष्ट करते हुए श्री अरविन्द ने कहा है:- "जीवन का हर कार्य कमोवेश अध्यात्म से ओतप्रोत होता है।" इससे

स्पष्ट है कि इस समय के सभी धर्मों में समय के साथ-साथ ऐसे दोष आ गए हैं, जिनके कारण आम मानव धर्म से विमुख हो चला है। अध्यात्मवाद किसी वर्ग विशेष के अधिकार की सम्पत्ति नहीं है; इस पर संसार के हर धर्म के प्रत्येक मानव का बराबर अधिकार है। जब तक सनातन धर्म की पताका संसार में नहीं फहरायेगी, तब तक संसार में सुख शान्ति असम्भव है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट कहा है "तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत नहीं है; तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं है। तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से लौटकर आ रहा है, उसे सारे संसार को देना है।"

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि संसार को अध्यात्म-दान देने में केवल भारत ही सक्षम है। इस सम्बन्ध में श्रीमां ने बहुत ही स्पष्ट कहा है- "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केंद्रित हो गई हैं और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जाएगा।" केवल निवृत्ति मार्ग ही एक मात्र रास्ता नहीं है। गीता हमें स्पष्ट बताती है कि प्रवृत्ति मार्ग बहुत ही आसान रास्ता है, जिस पर चलकर, निष्काम कर्म योग के सिद्धान्त पर जीव आसानी से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। ऐसे आसान रास्ते को छोड़कर इस समय निवृत्ति मार्ग का ही मात्र प्रचार किया जा रहा है क्योंकि संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का प्रभाव है; भारत में तो वह सबसे अधिक ठोस बनकर जम चुकी हैं। जब किसी काम की अति हो जाती है तो उसका अन्त सुनिश्चित होता है। भारत में अन्धकार का घनीभूत होना हमें स्पष्ट निर्देश दे रहा है कि इस भू-भाग पर वह प्रकाश प्रकट होने वाला है, जो संसार भर का अन्धकार भगाएगा।

५३.

इस युग का मानव अध्यात्म से विमुख क्यों?

(०६ फरवरी १९८८)

इस युग में संसार में अध्यात्मवाद की जितनी दुर्गति हो रही है, पहले शायद ही कभी हुई है। विचित्र-विचित्र प्रकार के प्रकृति विरोधी आचरणों पर चलना आज के अध्यात्मवादी, सफलता का प्रतीक मानते हैं। कंचन और कामिनी की जो दुर्दशा, इस युग के अध्यात्मवादी कर रहे हैं, वह बड़ी अजीब बात है।

जगत् जननी नारी का अध्यात्म विरोधी ऐसा भयंकर रूप प्रदर्शित किया जाता है, जिसे देखकर शर्म से सिर झुक जाता है। अगर नारी न होती तो वे तथाकथित धार्मिक गुरु कहाँ से पैदा होते? धार्मिक ग्रंथों को तर्क बुद्धि के द्वारा तोड़-मरोड़कर ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि वे पूर्ण रूप से निर्जीव और विकृत हो जाते हैं। दान, पुण्य, त्याग, तपस्या, पाप आदि की ऐसी परिभाषा की जाती है जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरण के तौर पर गीता को ही लीजिए। इस पर अनेक लोगों ने टीकाएँ लिखी हैं। महर्षि अरविन्द जैसे चन्द अध्यात्मवादियों को छोड़कर सभी ने गीता द्वारा त्याग, तपस्या, दान, पुण्य आदि की शिक्षा खींचतान कर दिलवाने का प्रयत्न किया है। गीता एक ऐसा ग्रंथ है, जो जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डालता है। जिस पक्ष का विवेचन किया गया है, उसकी पूर्ण गहराई तक पहुँचा है। इन बातों को तोड़-मरोड़कर, आध्यात्मिक व्यावसाइयों के दिशा-निर्देश पर, मनमाने ढंग से गीता की व्याख्या करके सीधे-साधे लोगों को भ्रमित करने का सुनियोजित ढंग से प्रयास किया है। गीता जैसे ग्रंथ का भी दुरुपयोग करने में, ये तथाकथित अध्यात्मवादी नहीं चूके!

गीता रूपी ग्रंथ का मंदिर बनने के बाद जब उसमें मूर्ति स्थापित हो चुकी तो अर्जुन ने जो कार्य किया, गीता का सही अर्थ वही था। अर्जुन ने जो कुछ किया, उसमें, त्याग, तपस्या, दान, पुण्य, पाप आदि जो उपदेश आधुनिक अध्यात्मवादी गीता से दिलवाते हैं, इससे कौनसी झलक मिलती है? अर्जुन ने तो यही कहा कि धर्म के बारे में जो भ्राँतियाँ मुझ में थी, वे सभी मिट चुकी हैं। अब मैं निर्भय होकर युद्ध करूँगा। इसी प्रकार सुनियोजित ढंग से सभी धार्मिक ग्रंथों का गलत अर्थ निकालकर, आज के आध्यात्मिक व्यवसायी और गुरु, भोली-भाली जनता का धर्म की आड़ में शोषण कर रहे हैं। कंचन और कामिनी को पापों की जड़ बताकर, स्वयं चोरी छिपे उसका अन्धाधुंध दुरुपयोग कर रहे हैं।

अध्यात्मवादियों की इन गलत हरकतों के कारण, आज के समाज में धर्म विरोधी लोगों की बाढ़ आ गई है। आधुनिक गुरुओं ने धर्म का सम्बन्ध पेट से जोड़ लिया है। येन-केन-प्रकरेण, धर्म की आड़ में आर्थिक शोषण के नये-नये तरीके अपनाकर लोगों को धर्म से विमुख कर रहे हैं। संसार भर के सभी धर्मों से लोगों की आस्था खत्म हुई है, उसमें मुख्य हाथ इन्हीं धर्म गुरुओं का है। काल चक्र अबाध गति से चल रहा है। इसी के अनुसार संसार की हर वस्तु गतिशील है, परन्तु आज के अध्यात्मवादी, 'यथास्थिति' बनाये रखना चाहते हैं। कालचक्र अपनी गति में कोई भी रुकावट बरदाश्त नहीं करता। इसकी गति में रुकावट डालने वाला आज तक कोई नहीं बचा है, फिर इन नकली लोगों की क्या औकात है? इस युग का बुद्धिजीवी और तर्कशील मनुष्य हर काम का परिणाम चाहता है।

अब इस युग का मानव केवल शब्दजाल और अन्धविश्वास से भ्रमित होने को तैयार नहीं है। वह परिणाम के बिना कुछ भी मानने को तैयार नहीं है। यही कारण है, इस युग के प्रवचनों और कथाओं में अधिकतर वे ही स्त्री-पुरुष नजर आते हैं, जो अपने जीवन के आखिरी हिस्से में पहुँच चुके हैं। मृत्यु उन्हें सामने खड़ी नजर आती है, ऐसी स्थिति में जीवन में जो बुरे काम किये हैं, वे सजीव होकर सामने प्रकट दिखाई देते हैं। अपनी ही इस भयानक आकृति से भयभीत, ये लोग क्या आराधना करेंगे?

ईश्वर के पास जाने से तो हर प्रकार का भय दूर भाग जाता है। अतः ये सभी स्त्री-पुरुष अपने पाप रूपी राक्षसों से भयभीत होकर, इन तथाकथित आध्यात्मिक गुरुओं की आड़ लेकर बचने के लिए उनके पास जाते हैं। ये चतुर धर्मगुरु भी इस स्थिति को अच्छी प्रकार समझते हैं। उनकी कमजोरी का लाभ उठाकर, वे उनका बहुत अच्छा शोषण करते हैं। इस युग में संसार भर के धर्म गुरुओं की मात्र यही खुराक बची है। ये इस स्थिति का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। परन्तु इस युग का युवा इन गुरुओं की यह चाल अधिक दिन, अब नहीं चलने देगा।

ऐसी स्थिति में अध्यात्म जगत् में जो स्थान रिक्त होगा, उसकी पूर्ति के लिए कोई ऐसी शक्ति अवश्य प्रकट होगी, जो इस खाली स्थान की पूर्ति करेगी। इस प्रकार इन यथास्थितिवादी नकली गुरुओं का अन्त होकर शुद्ध और सात्त्विक आध्यात्मिक शक्ति का उदय होगा। यह सब कुछ कालचक्र के प्रभाव से होगा, जिससे न आज तक कोई बचा है और न आगे बचेगा। श्री अरविन्द जैसे अनेक सात्त्विक संतों की भविष्यवाणी कभी गलत नहीं हो सकती। श्री अरविन्द के अनुसार "वह अतिमानसिक देव अवतार ले चुका है, अतः संसार में अन्धकार का अन्त बहुत निकट है।"

संसार में हर प्रकार की उन्नति में, युवा शक्ति का ही मुख्य योगदान रहता है। हर ज्ञान की शिक्षा का समय किशोर और युवा अवस्था होता है। अतः भौतिक विद्या के साथ-साथ आध्यात्मिक विद्या का भी अध्ययन इसी उम्र में होना चाहिए। हमारे शास्त्र बताते हैं, प्राचीन काल में ऐसा ही होता था। परन्तु इस युग में अध्यात्मवाद के लोप होने के कारण, इस पक्ष की शिक्षा बन्द हो गई। इस प्रकार भौतिक विज्ञान तो अपनी उन्नति के शिखर पर पहुँच गया, परन्तु अध्यात्म विज्ञान के गुरुओं के क्रमिक ह्रास के कारण उसका लोप हो गया।

भौतिक सत्ता पर जब तक आध्यात्मिक सत्ता का अंकुश नहीं लगता, भौतिक विज्ञान का उपयोग सुख और शान्ति के लिए नहीं किया जा सकता। यही कारण है, संसार भर के भौतिक रूप से उन्नत देश इस शक्ति का उपयोग मानव जाति के संहार के रूप में कर रहे हैं।

श्री अरविन्द ने कहा है- "संसार, भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में, अपने उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका है; अब अध्यात्म विज्ञान की उन्नति का नम्बर है। एशिया, 'जगत्-हृदय' की शान्ति का रखवाला है; वह उठ रहा है। वह दिन अब दूर नहीं, जब एशिया संसार की भौतिक शक्तियों को अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के अधीन करके, संसार में सुख-शान्ति का राज्य स्थापित करेगा। इस काम में भारत की भूमिका मुख्य होगी। इस प्रकार भौतिक और आध्यात्मिक सत्ता के सहयोग से धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।"

५४.

आध्यात्मिक-ज्ञान प्राप्ति का समय भी युवावस्था

मनुष्य जीवन में क्रमिक विकास के अनुसार ही कार्य करने के नियम निर्धारित किये गए हैं। शारीरिक और बौद्धिक विकास को ध्यान में रखते हुए, सम्पूर्ण जीवन को चार भागों में बाँटा है-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। प्रथम २५ वर्षों में विद्या-अध्ययन अर्थात् भौतिक और अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति, ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करते हुए, करने का विधान निश्चित किया हुआ है।

विद्यार्थी जीवन के आखिरी २-३ वर्षों में वैदिक दर्शन और योगदर्शन की शिक्षा सम्पूर्ण ढंग से दी जाती थी, ताकि वह अगले तीनों आश्रमों में पूर्ण रूप से अर्थात् शरीर, मन और बुद्धि से स्वस्थ रहते हुए सार्थक जीवन जी सके। दूसरे २५ वर्ष, गृहस्थ धर्म का पालन करने के लिए निश्चित किये हुए थे। तीसरे २५ वर्ष, वानप्रस्थ धर्म के लिए निश्चित थे। इसमें मनुष्य, गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता था और अपने सम्पूर्ण अर्जित ज्ञान की शिक्षा अपनी संतानों को देकर, उनका पथ प्रदर्शन करता था। इस प्रकार उसकी संतानें भी जो ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम में होती थीं, सार्थक जीवन जीने के लिए सम्पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेती थीं। इसके बाद वह घर का सम्पूर्ण त्याग करके पूर्ण रूप से संन्यासी का जीवन बिताने जंगलों में चला जाता था।

उपर्युक्त व्यवस्था त्रेता और द्वापर में रही होगी, जब मनुष्य की क्षमता और संसार का वातावरण पूर्ण रूप से ठीक था। उन युगों में तामसिक वृत्तियों की प्रधानता नहीं थी, अतः मनुष्य का चरित्र बहुत उज्ज्वल था। परन्तु जब से कलियुग का प्रहर प्रारंभ हुआ है, तामसिक वृत्तियों ने सभी धर्मों को छिन्न-भिन्न कर दिया है। मनुष्य पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी हो गया है। जीवन की सभी मर्यादाएँ पूर्ण रूप से छिन्न-भिन्न हो चुकी हैं।

हम जिस वैदिक दर्शन और योग दर्शन की बात करते हैं, वह व्यावहारिक जीवन से लोप प्रायः हो चुका है। आज हमारे उपर्युक्त दोनों दर्शन मात्र दार्शनिक ग्रंथों में कैद पड़े हैं। जब तक इस ज्ञान को कैद से मुक्त करके, मनुष्य शरीर रूपी प्रयोगशाला में प्रमाणित नहीं किया जाएगा, सार्थक जीवन बिताना असंभव है। काल के गुणधर्म के कारण योग दर्शन लुप्त प्रायः हो गया है। सांख्य दर्शन निरन्तर उन्नति कर रहा है। उसकी सभी उपलब्धियों पर पूर्ण रूप से

तामसिक वृत्तियों का आधिपत्य है, अतः उसका उपयोग वे वृत्तियाँ मात्र अपने स्वार्थ के लिए कर रहीं हैं। ऐसी स्थिति में मानव शांति, एक सुखद कल्पना मात्र है।

तामसिक वृत्तियों के कारण ईश्वर मात्र कल्पना का ही विषय है। जीवन की सच्चाई लुप्त हो चुकी है। एक सर्वमान्य सिद्धान्त बन गया है कि अध्यात्म ज्ञान प्राप्ति का समय मात्र वृद्धावस्था ही है। कैसी भ्रांति फैला दी है, मानो अध्यात्म ज्ञान व्यावहारिक जीवन में एक अड़चन है। अगर वह ईश्वर व्यावहारिक जीवन में सार्थक नहीं था तो बुढ़ापे में वह क्या कर देगा? बुढ़ापे में सभी अंग प्रत्यंग शिथिल पड़ जाते हैं। अनेक प्रकार की बीमारियाँ घेर लेती हैं। उन्हीं कष्टों की तरफ ध्यान रहेगा, ईश्वर याद ही नहीं आएगा। अतः सभी प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने का समय किशोरावस्था ही है।

अध्यात्म-विज्ञान, मनुष्य को पूर्ण सार्थक जीवन जीने के योग्य बनाता है। हमारे धर्म में घुसी हुई भ्रांति के कारण ही धर्म का पतन हुआ है। मेरे पास प्रथम बार कुछ पॉलीटेक्निक और मेडिकल कॉलेज के छात्र आए। उन्होंने पूछा - "अध्यात्म विज्ञान कैसा विज्ञान है और मनुष्य जीवन में इसकी क्या सार्थकता है?" मैंने कहा, "जहाँ आपका भौतिक विज्ञान खत्म होता है, अध्यात्म विज्ञान वहाँ से शुरू होता है। आपका विज्ञान एक टैस्ट ट्यूब में कैद है। हमारे विज्ञान की टैस्ट ट्यूब पूरा ब्रह्माण्ड है।" उन्हें मेरी बात बहुत ही बुरी लगी।

उन्होंने ताने के रूप में कहा, "हमारे वैज्ञानिक तो चन्द्रमा पर पहुँच गए और आप लोग पहुँच गए रसातल में, और आप अध्यात्म विज्ञान रूपी काल्पनिक ज्ञान को बड़ा बताते हो।" मैंने कहा, "बेटा! आपकी बात ठीक है, परन्तु जहाँ सच्चाई है, वहाँ तो वैसा ही है, जैसा मैंने कहा।" इससे वे और उत्तेजित हो गए और मेरी तरफ हाथ से इशारा करते हुए कहा, "आप ही सच्चाई बताने निकले हैं क्या? दूसरे बड़े-बड़े मठाधीश क्या कर रहे हैं?"

मैं अच्छी तरह जानता था कि मुझे यही बातें सुनने को मिलेंगी। मैंने कहा, "देखो बेटा! जैसा चाहो प्रमाण पत्र दे जाना, मैं सहर्ष स्वीकार कर लूँगा परन्तु प्रमाणपत्र देने से पहले मेरी बात तो सुनो।" तो वे कुछ शांत हुए और सुनने समझने के लिए तैयार हो गए। मैंने कुण्डलिनी महाविज्ञान, योग दर्शन और शक्तिपात की बात समझाकर, इस संबंध की पुस्तकें उन्हें दे दीं। वे पुस्तकें अपने हॉस्टल में ले गए; उन्होंने और उनके कई साथियों ने उन्हें पढ़ा। इसके बाद करीब २५-२६ छात्र मेरे पास आये, और बोले कि पुस्तकों में जो लिखा है उसकी अनुभूति जब तक हमें नहीं होती, हम नहीं मानेंगे। मैंने कहा, "कोई भी नहीं मानेगा।"

जिस प्रकार ध्यान की विधि मैंने बताई, वे मेरे सामने बैठकर ध्यान करने लगे। ज्योंहि

मन शांत हुआ, उन्हें कुछ आनन्द आने लगा और ज्योंहि वे लोग मानसिक रूप से तैयार हुए, शक्तिपात की लहर उनमें प्रवेश कर गई और सभी को यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगीं। करीब आधे घंटे बाद मुद्राएँ बंद हो गईं। मैंने उनसे पूछा, "आप लोग यह कैसी कसरत करने लगे? क्या मेरा कमरा खेल का मैदान था?"

लड़कों की स्थिति बड़ी विचित्र हो गई। कहने लगे, "हमने नहीं किया, यह तो हमारी इच्छा के विपरीत हो गया।"

मैंने कहा, "मैं देख रहा था, आप ही कर रहे थे।"

उन्होंने कहा, "आपके आदेश के अनुसार आँख बंद करके, हमेशा की तरह आज्ञाचक्र पर ध्यान केन्द्रित कर रहे थे कि अचानक अन्दर से ये क्रियाएँ करवाई जाने लगीं। हमने आँखें खोलने का प्रयास भी किया परन्तु आँखें नहीं खुलीं। शरीर को मजबूती से रोकने का प्रयास किया, परन्तु नहीं रोक सके। आखिर सोचा, होने दो, देखें, आगे क्या होता है!

अब अपने आप बंद हो गईं। कोई अंदर से निर्देश दे रहा था, उसी कारण से हो रही थीं। अन्दर कौन दिशा-निर्देश दे रहा था, हमें दिखाई नहीं दिया!"

तब मैंने कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि अन्दर कोई ऐसी शक्ति भी है, जो आपको अपनी इच्छा से चला सकती है।"

वे बोले, "अब इसमें तर्क की गुँजाईश ही नहीं।"

मैंने कहा, "फिर अन्दर वाले से गहरी दोस्ती करो, वह आपको बहुत कुछ बताएगा।"

इसके बाद शाम पाँच से छह बजे तक, वे रोज आकर ध्यान करते और सभी को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होतीं। ज्योंहि कुण्डलिनी आज्ञाचक्र के निकट पहुँची, प्राणायाम स्वतः होने लगा। तब मैंने कहा कि इस दीक्षा में मंत्र दीक्षा के बिना आप समाधिस्थ नहीं हो सकोगे।

आज्ञाचक्र तक तो हठ योग से भी काम चल जाता है, परन्तु आज्ञाचक्र का भेदन करके परब्रह्म (सत्+ चित्+आनन्द=सच्चिदानन्दघन) के जगत् में प्रवेश करने के लिए, उपयुक्त मंत्र का जप, ध्यान के साथ नितान्त जरूरी है।

तब तक वे सभी मानसिक रूप से तैयार हो चुके थे। दीक्षा के बाद, थोड़े दिनों में उनकी समाधि लगने लगी। तब एक दिन मैंने उनसे कहा, "बेटा! अब जो भी प्रमाणपत्र देना चाहो दे दो, मैं सहर्ष स्वीकार करने को तैयार हूँ।" लड़के बहुत ही शर्मिन्दा हुए और बोले, "गुरुजी,

आप हमें कुछ भी कहें, हम निर्दोष थे।"

क्या भारत के आध्यात्मिक जगत् में यह ज्ञान करवाया जा रहा है?

अतः मेरी यह मान्यता है कि जब संसार के लाखों युवा अपनी आन्तरिक चेतना की अभिवृद्धि करके भौतिक-विज्ञान पर शोध कार्य करेंगे तो भौतिक विज्ञान की असंख्य समस्याएँ सुलझ जाएंगी।

मैं सामूहिक दीक्षा देता हूँ। उस परमसत्ता के लिए, एक लाख लोगों को चेतन करने के लिए, एक क्षण के समय की भी आवश्यकता नहीं। अगर मेरे सामने एक लाख लोग दीक्षा लेने बैठे हैं तो उनमें से सभी सकारात्मक लोग एक साथ चेतन हो जाऐंगे, चाहे उनकी संख्या कितनी ही अधिक क्यों न हो। सामूहिक शक्तिपात दीक्षा बिना विश्व शांति असम्भव है।

५५. संसार के लोग अध्यात्म से निराश और विमुख क्यों?

(२६ मार्च १९८८)

हम देख रहे हैं, हर धर्म में ईश्वर के प्रति निराशा और विमुखता, इस समय चरम सीमा तक पहुँच चुकी है। संसार के सभी धर्मों के लोगों ने एक प्रकार से धर्मगुरुओं से विद्रोह कर दिया है। भौतिक दृष्टिकोण से विचार करें तो हम पायेंगे कि इसमें वे लोग दोषी नहीं हैं, जिनका विश्वास धर्म से उठ गया है।

युग के गुणधर्म के कारण संसार के सभी धर्मों के धर्माचार्य अपनी आध्यात्मिक शक्ति खो बैठे हैं। वे स्वयं चेतन नहीं हैं। उनका स्वयं का सम्बन्ध उस परमसत्ता से पूर्ण रूप से छूट चुका है। अपनी इस कमजोरी को छिपाने के लिए, इन्हें तरह-तरह के स्वांग रचने पड़ रहे हैं। कई प्रकार के प्रदर्शनों, शब्द-जाल और तर्कशास्त्र का सहारा लेना पड़ रहा है। जिस प्रकार निर्जीव प्राणी अपना कुछ भी प्रभाव नहीं दिखा सकता है, ठीक उसी प्रकार इस युग के धर्मगुरुओं के सभी निर्जीव कर्मकाण्ड परिणाम रहित होने के कारण, संसार के लोगों में उस परमसत्ता के प्रति निराशा फैला रहे हैं। इससे तो अगर वे अपनी कमजोरी को खुले रूप में स्वीकार कर लें तो संसार के लोगों को इस निराशा से बचाया जा सकता है। परन्तु जितना वे अपनी कमजोरी को छिपाकर, झूठ के सहारे अपने धन्धे को चलाने का प्रयास और हठधर्मिता करते हैं, विद्रोह निरन्तर तेज होता जा रहा है। इस प्रकार आज सभी धर्मों में स्थिति भयंकर विस्फोटक हो गई है।

दूसरी तरफ भौतिक विज्ञान अपनी सच्चाई के कारण संसार के लोगों को अपनी तरफ अधिक आकर्षित कर रहा है। झूठ के पैर नहीं होते, यह कहावत इस समय संसार के सभी धर्मों पर लागू हो रही है। अध्यात्मवाद पूर्ण रूप से परिणाम रहित हो चुका है। ऐसी स्थिति में जब मानव को प्रार्थना का कोई प्रत्यक्ष उत्तर नहीं मिलता है तो उसका विश्वास खत्म हो जाता है। 'गुरु', ईश्वर और जीव को जोड़ने वाला 'तार' होता है। अगर तार कटा-फटा नहीं है और वह उस परमसत्ता से जुड़ा हुआ है तो जो भी प्राणी उससे जुड़ेगा, उसके अन्दर उस परमसत्ता का प्रकाश हुए बिना नहीं रह सकता। एक बार प्रकाश हुआ कि जीव चेतन हो जाता है। इस प्रकार एक जलता हुआ दीपक, असंख्य दीप प्रज्वलित करके संसार से अंधकार दूर कर सकता है।

सभी धर्म गुरु कहते हैं कि ईश्वर घट-घट का वासी है। इस प्रकार संसार के सभी दीपकों में तेल और बत्ती है; उसे मात्र प्रज्वलित करने की देर है, सारा संसार उस परमसत्ता के प्रकाश से जगमगा उठेगा। पहला दीपक ही जलना कठिन है। एक प्रज्वलित दीपक पूरे संसार के दीपकों को प्रज्वलित करके संसार के अंधकार को भगाने में सक्षम होता है। अतः एक ही चेतन संत सद्गुरु पूरे संसार के जीवों को चेतन कर सकता है।

संत सद्गुरु का सम्बन्ध उस परमसत्ता से सीधा जुड़ा होता है, अतः उससे जुड़ने वाले सभी जीवों में उस परमसत्ता का प्रकाश प्रज्वलित हो जायेगा। ऐसे संत से जुड़ने पर अगर जीव अपने पापों को अंगीकार करके, उन्हें त्यागने की ईश्वर से करुण प्रार्थना करे तो तत्काल चमत्कार होता है। ऐसे व्यक्ति के अन्दर से अन्धकार यानि तामसिक वृत्तियाँ तत्काल हमेशा-हमेशा के लिये विदा होकर, उनका स्थान सात्विक वृत्तियाँ ले लेंगी।

इस प्रकार एक ही चेतन संत सद्गुरु से चेतन जीव से जुड़ने वाले सभी जीव चेतन होते ही चले जाएंगे। जब यह क्रम वह परमसत्ता चला देती है तो पूरे संसार में उस प्रकाश के फैलने में कोई देर नहीं लगती। इस प्रकार से चेतन हुए सभी प्राणियों को प्रार्थना का प्रत्यक्ष जबाव मिलेगा और उनका मन उस परमानन्द से सराबोर हो जायेगा। जब यह आनन्द एक प्राणी में प्रकट हो जाता है तो पूरे संसार के प्राणियों में प्रकट होने में कोई समय नहीं लगता।

संसार में युग परिवर्तन अनन्तकाल से चला आ रहा है। यह कालचक्र न कभी रुका है और न रुकेगा। जिस प्रकार रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आती ही है, उसी क्रम से युग परिवर्तन भी उस परमसत्ता द्वारा निर्धारित समय पर होगा ही। कोई भी जीव प्राप्त शक्ति और अधिकार को स्वेच्छा से छोड़ना नहीं चाहता है; इसी प्रकार तामसिक वृत्तियाँ भी अपनी स्थिति संसार में बनाये रखने के लिए संघर्ष करती हैं, परन्तु परिवर्तन आज तक कभी नहीं रुका। तारे कभी नहीं चाहते कि सूर्योदय हो और उनकी सत्ता उनके यथास्थिति बने रहने पर भी समाप्त हो जाए, परन्तु फिर भी सूर्योदय होकर ही रहता है।

५६.
भीषण नरसंहार का आध्यात्मिक कारण

आज विश्व में जो भीषण नरसंहार हो रहा है उसका आध्यात्मिक कारण है, पार्थिव चेतना में उस परमतत्त्व का अवतरित हो जाना। कलियुग के गुणधर्म के कारण, सम्पूर्ण विश्व तामसिक शक्तियों के चंगुल में जकड़ा हुआ है। लाखों-करोड़ों निर्दोष स्त्री-पुरूष और बच्चों को बेहरमी से तड़पा-तड़पाकर मारा जा रहा है। आज तक जितने लोग मरे, उनमें सर्वाधिक संख्या यहूदियों की है। सम्पूर्ण विश्व में इन पर बहुत लम्बे समय से कहर बरपाया जा रहा है। मैं बहुत समय से ईसाई जगत् को इस भीषण नरसंहार के संबंध में निरन्तर संदेश भेज रहा हूँ कि यह दो धर्मों की लड़ाई है, इसका समाधान भी यहूदियों और ईसाइयों के धर्माचार्यों को एक साथ बैठकर ही करना होगा।

पैगम्बरवाद के सिद्धान्त के अनुसार ईसाई जगत्, सम्पूर्ण विश्व के सामने तीसरे और अन्तिम पैगम्बर का नाम घोषित करेगा, तभी इस भीषण नरसंहार का अंत होगा। मेरे निरन्तर प्रयास के कारण, मेरे संदेश को जब मेरे वेबसाइट पर लाखों ईसाइयों ने देखा और पढ़ा तो उनके अन्तर मन में हलचल पैदा हो गई। इसी के कारण तेल अवीव से रोजी नाम की ५४ वर्षीय एक यहूदी महिला, मुझे गुरु बनाने, जनवरी २००३ में भारत आई। उसने १६ जनवरी, २००३ को मुझसे दीक्षा लेकर, शिष्यत्व ग्रहण किया। इस प्रकार १६ जनवरी २००३ का बृहस्पतिवार, दोनों तत्त्वों के एक हो जाने के रूप में याद रखा जाएगा। यह आकाश तत्त्व और पृथ्वी तत्त्व का पूर्ण मिलन है; ऐसा मिलन जिसका कभी अन्त नहीं होगा। यह दो दिव्य शक्तियों का मिलन है। इसमें आकाश तत्त्व नीचे उतर कर, पृथ्वी तत्त्व में इस प्रकार मिल गया कि अब उसे कभी भी किसी प्रकार भी एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकेगा।

मैं भारत के भविष्य को बहुत उज्ज्वल देख रहा हूँ। भौतिक विज्ञान को जितना मानवीय चेतना में विकसित होना था, हो चुका है। परन्तु विश्व में अशान्ति निरन्तर बढ़ रही है। भारत में १९६७ के बाद से धार्मिक चेतना निरन्तर बढ़ रही है। यह चेतना १९६९ तक नीचे उतरकर पार्थिव चेतना में पूर्ण रूप से लय हो गई। भविष्य में सम्पूर्ण मानव जाति अपने असली स्वरूप अर्थात् दिव्य रूप में रूपान्तरित हो जाएगी।

५७.

एकमात्र सजीव शक्ति ही मोक्ष में सहयोगी है।

(१६ फरवरी १९८८)

संसार में आज तक भौतिक और आध्यात्मिक जगत् में जो प्रगति हुई है, वह मात्र सजीव और चेतन सत्ता के कारण ही सम्भव हुई है; निर्जीव और अचेतन स्वयं में भला-बुरा कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है। सजीव सत्ता अपनी इच्छा के अनुसार इनका उपयोग जैसा चाहे कर सकती है। भौतिक जगत् में आज तक जितनी प्रगति हुई है, वह सब मनुष्य के दिमाग की देन है। वह सजीव चेतन सत्ता मनुष्य के अन्दर बैठी हुई, इस सारे ज्ञान को भौतिक जगत् में प्रकट कर रही है। संसार के मानव ने कुछ समय तक तो इसे मात्र अपनी बुद्धि का ही चमत्कार समझा, परन्तु समय-समय पर उस चेतन सत्ता ने वैज्ञानिकों को ऐसे अद्भुत चमत्कार दिखाए कि उन्हें मानना पड़ा कि कोई ऐसी शक्ति जरूर है , जो संसार के मानव का पथ प्रदर्शन करके विश्व का संचालन कर रही है। इस प्रकार भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिक उस परमसत्ता की तरफ आकर्षित हुए, परन्तु अध्यात्म विज्ञान के वैज्ञानिकों की प्रयोगशालाएँ, कालचक्र की गहन गति के कारण पूर्ण रूप से लुप्त हो जाने के कारण भौतिक विज्ञान के लोगों को वे कुछ भी सहयोग करने में असमर्थ हैं।

इस युग के सभी धर्मों के अध्यात्म विज्ञान के विद्वानों के पास, सदियों और युगों पुराने सैद्धान्तिक ग्रन्थ पड़े हुए हैं, परन्तु प्रयोगशालाओं के अभाव में, ये सारे ग्रन्थ निरर्थक हैं। ये जिस युग में रचे गए थे, मात्र उसी समय के लिए उपयोगी थे। अपने क्रमिक विकास के साथ भौतिक जगत् ने जो प्रगति की है, उसी क्रम से अगर आध्यात्मिक विज्ञान तरक्की करता और भौतिक विज्ञान की तरह नए-नए आविष्कार करते हुए, आज के युग के अनुकूल अपनी स्थिति बना लेता, उसी स्थिति में यह संसार के जीवों का भला करने में सक्षम होता।

परन्तु आज स्थिति बिलकुल भिन्न है। भौतिक विज्ञान अपनी चरम सीमा के पास पहुँचने का प्रयास कर रहा है और अध्यात्म विज्ञान के वैज्ञानिक, अपने ज्ञान को प्रमाणित करने में पूर्ण रूप से असमर्थ हैं। अपनी ऐसी दयनीय स्थिति को छिपाने के लिए, उन्होंने संगठित रूप से प्रयास करने प्रारम्भ कर दिए; कुछ चतुर पूँजीपतियों के साथ मिलकर, धर्म को पूर्ण रूप से व्यवसाय बना डाला। तरह-तरह के स्वांग रचकर विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनों से संसार के लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने लगे। शब्दजाल और तर्क शास्त्र का सहारा लेकर धर्म और ईश्वर की नित्य नई-नई व्याख्या करके लोगों को भ्रम जाल में फँसाने लगे।

मृत्यु के बाद नर्क का ऐसा भयानक चित्रण करके, लोगों को भयभीत करने लगे। ऐसी निर्जीव वस्तुओं से धर्म को जोड़ दिया, जो कभी भी परिणाम दे ही नहीं सकतीं। इस प्रकार मोक्ष के पथ को तेली के बैल की स्थिति में लाकर छोड़ दिया। इस प्रकार संसार के भयभीत लोग, इस धार्मिक कोल्हू में जुते हुए अबाध गति से चल रहे हैं। ऐसी स्थिति में क्या परिणाम मिल सकता है?

इस प्रकार परिणाम के अभाव में संसार के लोगों ने, इन धर्माचार्यों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। आज स्थिति यह है कि कुछ बीमार और कमजोर तथा अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम भाग में पहुँचे हुए, जर्जरित लोग मात्र इनके शिकार हो रहे हैं; ऐसे भयभीत लोगों को मृत्यु भय दिखाकर ठग रहे हैं। मृत्यु अवश्यम्भावी है, इससे बचना असम्भव है फिर इससे भयभीत होने का कोई मतलब नहीं, परन्तु फिर भी ये शक्तिहीन लोग अपने जीवन के कर्मों को देखकर, अपनी ही तस्वीर से भयभीत हो रहे हैं।

ईश्वर आराधना से तो हर प्रकार का भय कोसों दूर भागता है, परन्तु यह बात इन्हें बिलकुल समझ में नहीं आ रही है। अपनी ही तस्वीर से ये लोग इतने डर चुके हैं कि इनकी बुद्धि पूर्ण रूप से जबाव दे चुकी है। ऐसी स्थिति में इन कमजोर लोगों के सहारे, ये तथाकथित धर्मगुरु कितने दिन जीवित रह सकते हैं? भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को, जब ऐसे गुरुओं से कुछ भी नहीं मिला तो इन्होंने अपने ही उपकरणों से उस असीम सत्ता की खोज प्रारम्भ कर दी। भौतिक निर्जीव और अचेतन उपकरण उस सजीव और चेतन सत्ता का पता लगाने में किसी भी हाल में सक्षम नहीं हो सकेंगे। शरीर के बाहरी भाग से, उस परमसत्ता से मिलना बहुत ही असम्भव है; उस तक जाने का रास्ता तो शरीर के अन्दर से होकर बहुत ही गहन भँवर जालों में से होकर गुजरता है। असंख्य ऐसे चौराहे आते हैं, जहाँ से रास्ता चूकने की बहुत अधिक सम्भावनाएँ हैं। ऐसी स्थिति में बेचारे इन भौतिक विज्ञान के सच्चे खोजियों को निराशा के अलावा कुछ भी हाथ लगने वाला नहीं है। धन, समय और शक्ति के दुरुपयोग के अलावा कुछ भी परिणाम नहीं निकलने वाला है।

इसके अलावा एक समस्या ऐसी है जिसने इन्हें और भ्रमित कर रखा है; काली विद्या को जानने वाले तामसिक लोग यदाकदा सस्ते और भ्रमित करने वाले चमत्कार दिखाकर, पथभ्रष्ट करने का प्रयास निरन्तर कर रहे हैं। एक तो उनका रास्ता गलत, दूसरा तामसिक शक्तियों का पग-पग पर पथ भ्रष्ट करने का प्रयास, ऐसी स्थिति में उन सच्चाई की खोज करने वाले लोगों का श्रम और शक्ति, व्यर्थ ही खर्च हो रही है। क्योंकि इस युग में तामसिक शक्तियों

का एक छत्र साम्राज्य है, अतः वे कभी भी ऐसी सात्विक और चेतन सत्ता की खोज को सफल होने देना नहीं चाहेंगी।

परन्तु इतिहास बताता है, जब-जब भी तामसिक सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची है, सात्विक सत्ता ने प्रकट होकर, उसका पूर्ण विनाश किया है। महर्षि अरविन्द ने भी इसके सम्बन्ध में कहा है, "प्राचीन काल में जब भगवान् अवतार लेते थे तो साथ ही दैत्य भी आया करते थे, जो भगवान् का विरोध करते थे। यह रीति सदा से चली आ रही है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि हर बार दैत्यों का विनाश हुआ है। इतिहास अपने आपको दोहराता है। अतः आगे भी वही होने वाला है। वह समय अब अधिक दूर नहीं है।

उस परमसत्ता के धाम तक पहुँचने के बारे में, हमारे सभी ऋषियों की तरह महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा है- "ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का कोई न कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ पर जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है; हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिए हैं; उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है। एक मास के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन-जिन चिह्नों की बात कही गयी है, मैं उन सबकी उपलब्धि कर रहा हूँ।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि उस परमसत्ता तक जाने का जो एकमात्र रास्ता हमारे धर्म ने बताया है, उस पर चलकर ही मंजिल तक पहुँचना सम्भव है, और सारे रास्ते भ्रमित करने वाले और गलत हैं। अतः अब अरविन्द की भविष्यवाणी के सच होने का समय आ गया है। श्री अरविन्द ने कहा था, "एशिया जगत् हृदय की शान्ति का रखवाला है, यूरोप की पैदा की हुई सभी बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

५८.

सुख-दुःख की अनुभूति ही जीवन है।

'मुझे किसी भी घटना के घटने का निश्चित समय नहीं बताया जाता था। केवल आगे घटने वाली घटना का सही दृश्य टेलीविजन की तरह दिखा दिया जाता था। ऐसी घटनाएँ, पूर्व जन्म तथा इस जन्म, दोनों से संबंधित होती थीं। जिज्ञासावश मैंने उन घटनाओं का समय जानने के लिए ध्यान को केन्द्रित करके आराधना प्रारम्भ कर दी। चन्द दिनों में उत्तर मिला कि जो होना है, पूर्व निश्चित है उसके लिए समय और शक्ति का दुरुपयोग क्यों कर रहे हो? सुख-दुःख की अनुभूति ही तो जीवन है। जीवन में होने वाली सभी बातें स्पष्ट मालुम होने पर सुख-दुःख की अनुभूति ही खत्म हो जायेगी। इस प्रकार जीवन पूर्ण रूप से नीरस हो जाएगा। इस प्रकार उस गुलाबी पर्दे की स्थिति हो जायेगी (इस वाक्य का भावार्थ समझने के लिए लेख-'मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ' को पढ़े)। अतः यह निरर्थक प्रयास क्यों कर रहे हो? अतः मैंने निश्चित समय मालूम करने का प्रयास बंद कर दिया।'

संसार एक स्वप्न है। दुःख-सुख की अनुभूतियाँ मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल है। इस संसार में विचरण करते हुए कोई भी जीव इसके प्रभाव से वंचित नहीं रह सकता। ईश्वर की इस माया से कोई भी प्राणी बच नहीं सकता। परन्तु जो जीव संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, उसके बंधन धीरे-धीरे कटने लगते हैं। माया की पकड़ से वह जीव एक ही जन्म में छुटकारा पाकर आज्ञाचक्र को भेदकर सत्लोक में अनायास ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह के जीव को संसार के सुख-दुःख अधिक प्रभावित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह जीव माया के क्षेत्र को लांघ जाता है। इसलिए माया भी उसकी चेरी बनकर उसको रोकने के स्थान पर ऊपर की तरफ आरोहण करने में मदद करती है।

संत सद्गुरु द्वारा प्राप्त किए हुए प्रकाशप्रद शब्द के सहारे वह जीव निर्विघ्न, निरन्तर उस परमसत्ता के नजदीक जाता रहता है। इस प्रकार से संसार के असंख्य जीव, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पा जाते हैं।

५९.
मैं न्यूटन की आखिरी इच्छा को पूर्ण करने आया हूँ।

(१३ जनवरी १९९१)

न्यूटन ने कहा था, "मैं जब अपने पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मैं एक अबोध बालक की तरह समुद्र के किनारे सीपियाँ, समुद्री घोंघों की हड्डियाँ ही चुनता रहा। अब मैं अन्तिम समय में, जब उस विशाल समुद्र को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि मैंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। इस विशाल समुद्र की खोज से ही शान्ति सम्भव होगी।"

यही नहीं, मैं उन्हें उस तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवाने आया हूँ, जिसकी खोज हमारे ऋषि-मुनियों ने की थी। उन्होंने इस भौतिक सूर्य जैसे लाखों सूर्य देखे। इसके अतिरिक्त उन्होंने देखा कि एक ऐसा ऊर्जा का पुँज है, जो इन लाखों सूर्यों को प्रकाशित कर रहा था। उन्होंने उस तत्त्व का जो ज्ञान प्राप्त किया, मैं उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार कराने संसार में निकला हूँ।

यह ज्ञान मुझे मेरे संत सद्‌गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी महाराज की अहेतु की कृपा के कारण ही प्राप्त हुआ है, अतः मैं इसे गुरु प्रसाद की संज्ञा देता हूँ।

०५ मार्च २००९, वापी, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१२ मार्च २००९, सूरत, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
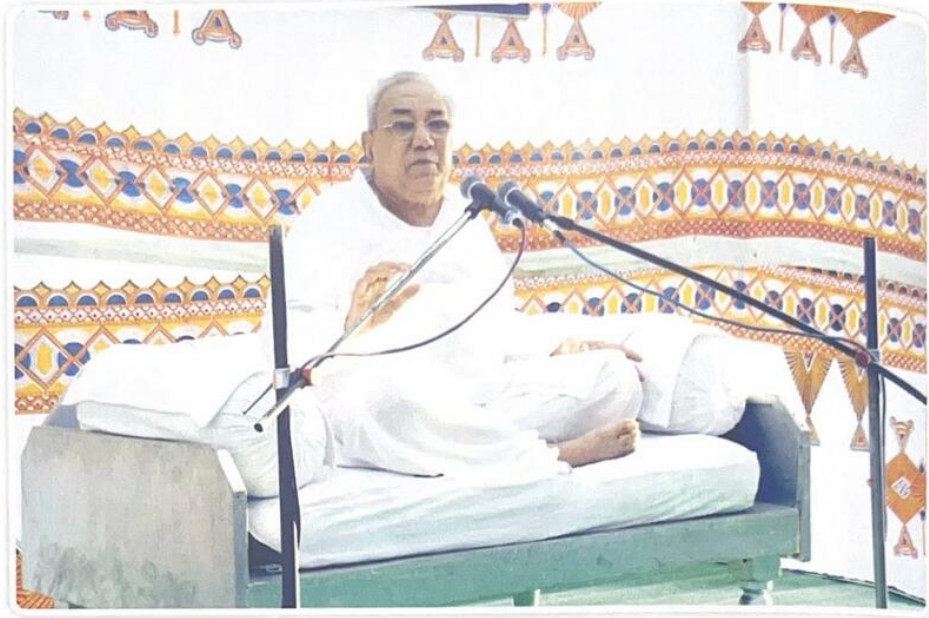
१९ मार्च २००९, गांधीनगर, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१९ मार्च २००९, अहमदाबाद, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

०१ अप्रेल २००९ को अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कलाऊ का उद्घाटन करते गुरुदेव।

०१ अप्रेल २००९, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-कलाऊ में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

०२ अप्रेल २००९, बाड़मेर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

सनातन धर्म एवं बाइबिल

६०.
बाइबिल में सनातन धर्म की झलक
(२५ जून १९८८)

(बाइबिल को देखकर मुझे ऐसा लगा, मानो सनातन धर्म की नकल है। यीशु के उपदेश से हिन्दू संत की झलक मिलती है।)

हिन्दू दर्शन में जिस प्रकार मनुष्य शरीर को ही सर्वोत्तम मंदिर कहा गया है, उसी प्रकार बाइबिल में भी यूहन्ना २:२१ में यीशु ने कहा था- "पर यीशु ने अपने शरीर के मन्दिर के विषय में कहा था"। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित उपदेशों को, जब पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है, कोई हिन्दू संत उपदेश दे रहा है।

मत्ती ५:२७ "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।"

मत्ती ५ : ३१ 'यह भी कहा गया है कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे तो उसे त्याग पत्र दे। परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उससे व्यभिचार करवाता है।'

मत्ती ६:१ से ६:६ तक

"सावधान रहो। तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए, अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। इसलिए जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न बजा, जैसा कपटी सभाओं और गलियों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम्हें सच कहता हूँ। वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, बायां हाथ न जानने पाये। ताकि तेरा दान गुप्त रहे और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।"

इसी प्रकार सभी धार्मिक कार्यों को गुप्त रूप से करने के आदेश दिये गए हैं। प्रदर्शन करने से उसका प्रतिफल ईश्वर की तरफ से किसी भी हालत में मिलना सम्भव नहीं है। यीशु कहता था, आगे क्या होगा? उसकी चिन्ता मत करो।

"कल के लिए चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप करेगा। आज

के लिए आज ही का दुःख बहुत है।" इसके अलावा संसार की उत्त्पति के विषय में कहा गया है। यूहन्ना १:४ "आदि में शब्द था और शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ज्योति अन्धकार में चमकती थी और अन्धकार ने उसे ग्रहण नहीं किया।"

इसी प्रकार प्रायः सभी सिद्धान्त मेल खाते हैं। परन्तु जैसा संसार के सभी धर्मों में हुआ, ईसाइयों ने भी धर्म के सभी नियम भंग कर दिये। विवाह सम्बन्धों के बारे में तो वे पूर्ण रूप से अतिवादी हो गए। हर स्त्री और पुरुष की तीन-चार शादी होना और त्यागना आम बात है। यीशु ने जिसे व्यभिचार की संज्ञा दी है, वह सिद्धान्त तो पूर्ण रूप से त्याग दिया गया है। जितना धार्मिक सिद्धान्तों का अतिक्रमण पश्चिमी जगत् में हुआ है और कहीं नहीं हुआ है। भारत में फिर भी किसी हद तक धार्मिक मर्यादाओं का पालन हो रहा है। भले ही संसार के लोग हमें रूढ़ीवादी कहें, हमारा देश अभी चारित्रिक दृष्टि से बहुत ठीक है।

संसार के सभी धर्म सीमा लांघ चुके हैं, केवल भौतिक तरक्की से अगर संसार में शान्ति हो सकती तो पश्चिमी जगत् में पूर्ण शान्ति होनी चाहिए थी, परन्तु इसके विपरीत उन देशों में सबसे अधिक अशान्ति है। हमारे देश में भी बड़े-बड़े शहरों में पश्चिम की नकल, जहाँ जितनी अधिक है, वहाँ उतनी ही अशान्ति अधिक है। जो क्षेत्र इस हवा से बचा हुआ है ,वहाँ का जीवन अधिक शान्त है।

अब तो पश्चिम के लोग केवल शान्ति की खोज के लिए प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में भारत आ रहे हैं।

६१.

२१ वीं सदी में सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा।

(०५ मई १९९३)

विश्व में २०वीं सदी के आखिरी दशक में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा, उसके सम्बन्ध में संसार के अनेक भविष्यदृष्टा संत, भविष्यवाणियाँ कर गए हैं। सभी ने एक ही स्वर में इस बात को स्वीकार किया है कि सन् २००० से पूर्व आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता, सम्पूर्ण विश्व में फैल जाएगी। भारत के एक देहात का एक ग्रामीण गृहस्थ, आध्यात्मिक व्यक्ति सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान क्रान्ति ला देगा।

भातृभाव पर आधारित यह नई सभ्यता देश, प्रान्त और जाति की सीमाएँ तोड़कर, सम्पूर्ण विश्व में अमन, चैन उत्पन्न कर देगी। यह मसीहा सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बाँध देगा तथा हिंसा, फूट, दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिट जावेंगे।

यह धार्मिक क्रान्ति सन् २००० से पहले-पहले सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर लेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी। मानवीय सद्गुणों का विकास उस भारतीय फरिश्ते द्वारा 'भौतिकवाद' से सफल संघर्ष के फल स्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा तथा उस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयाई बन कर, 'भौतिकवाद को अध्यात्मवाद' में बदल देंगे।

उस भारतीय महान् आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में संग्रहित होकर 'मात्र आत्मबल' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे। उस दिव्य महापुरुष के मानवतावादी विचारों को सुनने के लिए सम्पूर्ण विश्व को बाध्य होना पड़ेगा।

इजराइल के प्रोफेसर हरारे के अनुसार भारत १९८० से २००० के बीच धार्मिक विचार वाले लोगों के द्वारा रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि से भी कहीं ऊँची वैज्ञानिक उन्नति कर लेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान ही सम्पूर्ण विश्व को मान्य होगा।

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व आखिर क्यों भारत को पुनः धर्म गुरु स्वीकार करेगा? हमें इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द की भविष्यवाणी का गहन चिन्तन करना पड़ेगा। महर्षि ने स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी की है कि- "भारत, जीवन के सामने, योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और

महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।" इस सम्बन्ध में महर्षि ने कहा है- "एशिया जगत् हृदय की शान्ति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियन्त्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को आध्यात्मिक सत्ता के अधीन करके, धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

महर्षि की यह भविष्यवाणी है कि भारत उपर्युक्त सभी चीजों को आध्यात्मिक सत्ता के अधीन करके, धरती पर स्वर्ग बसाएगा, इजराइल के प्रोफेसर हरारे की भविष्यवाणी से मेल खाती है। प्रोफेसर हरारे ने भविष्यवाणी की है कि "भारत १९८० से २००० के बीच "धार्मिक विचार वाले लोगों के द्वारा, रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि से भी कहीं ऊँची वैज्ञानिक उन्नति कर लेगा।" इससे महर्षि श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी कि "भारत, योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा", पूर्ण सत्य प्रमाणित होती है।

आखिर श्री अरविन्द ने किस योग की घोषणा की है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया जा सकता है? इस समय भारतीय योग का जो प्रचार विश्व में किया जा रहा है, उसमें तो यह सामर्थ्य नहीं नजर आती है। आज भारत जिस योग की शिक्षा दे रहा है, वह तो मात्र शारीरिक कसरत है। अतः हमें सोचना पड़ेगा कि श्री अरविन्द जिस योग की भविष्यवाणी कर गए हैं, वह कौनसा योग है?

श्री अरविन्द जिस योग की भविष्यवाणी कर गए हैं, उसकी दीक्षा श्री अरविन्द ने स्वामी श्री विवेकानन्द जी से अलीपुर जेल में ली थी। सन् १९०८ में अंग्रेज सरकार ने एक साल के लिए श्री अरविन्द को जेल में डाल दिया था, जबकि स्वामी विवेकानन्द का स्वर्गवास ४ जुलाई, १९०२ को हो चुका था। स्वामी जी ने श्री अरविन्द को योग की दीक्षा लगातार १५ दिनों तक जेल में ही दी थी। श्री अरविन्द स्पष्ट लिखते हैं कि मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि यह कार्य स्वामी जी ने जीते जी क्यों नहीं किया! स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने जिस योग का प्रचार-प्रसार किया, उसे राजयोग अर्थात् ध्यान योग कहा जाता है। पतंजलि योगदर्शन में जिस योग की विधि बताई है, यह वही योग है जिसकी दीक्षा स्वामी जी ने श्री अरविन्द को जेल में दी थी।

पतंजलि ऋषि ने योगदर्शन के पहले अध्याय के दूसरे सूत्र में योग की व्याख्या करते हुए कहा है-

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"॥१:२॥

अर्थात् चित् की वृत्तियों को रोकने का नाम ही योग है।

योग दर्शन में ऋषि ने योगी की पूर्ण सफलता के लिए साधनपाद के २९ वें सूत्र में योग के आठ अंगों के अनुष्ठान की बात कही है, जो इस प्रकार हैं-१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान, ८ समाधि। योग के इन आठों अंगों का अनुष्ठन, इस युग के मानव के लिए पूर्ण रूप से असम्भव है। यही कारण है कि योग, भारत से लोप प्रायः हो चुका है।

पतंजलि योग दर्शन जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की जानकारी भी नगण्य लोगों तक ही सीमित है। भारत में ही योग के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है। वैसे तो भारतीय दर्शन में कई प्रकार के योगों का वर्णन मिलता है परन्तु मुख्य तौर पर निम्न लिखित पाँच योगों की तरफ ही ज्यादा ध्यान दिया जाता है-

(१) राजयोग अर्थात् ध्यान योग।

(२) ज्ञानयोग अर्थात् सांख्य योग।

(३) कर्मयोग अर्थात् अनासक्ति निष्काम कर्मयोग।

(४) भक्तियोग अर्थात् जप या मंत्र योग।

(५) हठयोग। यह तो राजयोग का साधनमात्र है।

शिव संहिता में हठयोग और राजयोग को परस्पर पूरक बताया गया है-"हठं बिना राजयोगो, राजयोगं बिना हठः।"

योग का वर्णन नाथमत के ग्रंथों में सर्वाधिक मिलता है। इस समय संसार में पतंजलि योगदर्शन की ही मान्यता अधिक है परन्तु यह बात सभी में है कि नाम (प्रणव) जप नितांत अनिवार्य है। इसके बिना सहस्त्रार में पहुँचना सम्भव नहीं। राजयोग हो या हठयोग, दीक्षा के बिना किसी प्रकार की सफलता नहीं मिलती।

भारतीय दर्शन में, गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का विधान है। इस दर्शन में गुरुपद की बहुत महानता बताई गई है। इस सम्बन्ध में कश्मीरी शैव-सिद्धांत कहता है-ईश्वर के पंचकृत्य हैं-(१) सृष्टि (२) स्थिति (३) लय (४) तिरोधान (५) अनुग्रह।

पाँचवा कृत्य जो 'अनुग्रह' है, इससे मानव को अपनी व विश्व की यथार्थता का बोध

होता है। कश्मीरी शैव सिद्धान्त में गुरु का वर्णन पाँचवां, ईश्वरीय काम सम्पन्न करने वाला, अर्थात् अनुग्रहकर्ता के रूप में किया गया है।

शिवसूत्र विमर्शिनी कहती है-

गुरुर्वा पारमेश्वरी अनुग्राहिका शक्तिः।

अर्थात् 'गुरु परमेश्वर की अनुग्रह शक्ति है।'

नाथ सिद्धों में गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा का एक दिव्य सिद्धान्त है। इस योग को सिद्धयोग या महायोग कहते हैं। सिद्धयोग में सद्‌गुरु आध्यात्मिक शक्तिपात से साधक की कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर देते हैं। सभी प्रकार की दीक्षाओं में 'शक्तिपात-दीक्षा' सर्वोत्तम होती है। इसमें सद्‌गुरु चार प्रकार से शिष्य की कुण्डलिनी को चेतन करके सक्रिय करते हैं- १. स्पर्श से २. दृष्टिमात्र से ३. शब्द (मंत्र) से ४. संकल्प मात्र से भी।

(१) स्पर्श दीक्षा में गुरु अपनी शक्ति शिष्य में तीन स्थानों-भूमध्य में अर्थात् आज्ञाचक्र में, दूसरा हृदय, तीसरा मेरूदण्ड के नीचे मूलाधार पर स्पर्श करके प्रवाहित करते हैं।

(२) मंत्र दीक्षा में गुरु की शक्ति मंत्र द्वारा शिष्य में प्रवाहित होती है। गुरु जिस मंत्र की दीक्षा देता है, उसे उसने लम्बे समय तक जपा हुआ होता है। मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। गुरु जिस शब्द को चेतन, सजीव व शक्तिपूर्ण बनाता है, उसी की शक्ति परिणाम देती है। उस मंत्र में और गुरु में कोई अन्तर नहीं रहता। गुरु का सम्पूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है, ऐसे चेतन मंत्र की गुरु जब दीक्षा देता है, वही मंत्र मुक्ति दिलाता है।

(३) हक् दीक्षा अर्थात् मात्र दृष्टि द्वारा दी जाने वाली दीक्षा।

(४) मानस दीक्षा अर्थात् जिसमें गुरु से दीक्षा लेने का मानस बनने मात्र से दीक्षा मिल जाती है।

सिद्धयोग में सद्‌गुरु अनुग्रहरूपी शक्तिपात दीक्षा से शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत करते हैं। कुण्डलिनी के जाग्रत होकर सहस्त्रार में पहुँचने का नाम ही मोक्ष है। हमारे शास्त्र कहते हैं- "जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत रहेगा और वह उस दिव्य परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे!"

जब गुरुकृपा रूपी शक्तिपात दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो वह साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत (अधीन) कर लेती है। अतः शक्तिपात दीक्षा के बाद

साधक को अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्तर पर अनुभव होने लगते हैं- जैसे कि यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम), विचार परिवर्तन और आध्यात्मिक विषय की सूक्ष्म समझ होने लगती है। मनुष्य सच्चे अर्थों में बन जाता है। शक्तिपात दीक्षा के बाद साधकों को अपने-अपने प्रारब्ध कर्मों के अनुसार अलग-अलग अनुभूतियाँ होती हैं। शास्त्रों में इन्हें क्रियावती, कलावती, वर्णमयी, वेधमयी, ज्ञानमयी इत्यादि प्रकार की दीक्षा कहा है। शक्तिपात होते ही क्रियावती दीक्षा में साधक को विभिन्न यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम अपने आप होने लगते हैं। इन सभी यौगिक क्रियाओं में साधक का सहयोग या असहयोग कुछ भी कार्य नहीं करता है। साधक तो आज्ञाचक्र पर ध्यान करते हुए, गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र (प्रणव) का जप करता रहता है। सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ, वह जाग्रत शक्ति (कुण्डलिनी, Mother Power) सीधा अपने नियन्त्रण में स्वयं करवाती है। भौतिक विज्ञान को यह खुली चुनौती है।

सभी प्रकार की यौगिक क्रियाओं से कुण्डलिनी ऊर्ध्व गमन करती है। इस प्रकार वह शक्ति तीनों ग्रंथियों- ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि तथा रुद्रग्रंथि और छह चक्रों- मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहद, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र का वेधन(भेदन) करती हुई साधक को समाधि स्थिति, जो कि समत्व बोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। इस प्रकार साधक पतंजलि योगदर्शन में वर्णित कैवल्य अर्थात् वेदान्त के अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानन्द को प्राप्त कर लेता है, संत जिसे मोक्ष की संज्ञा देते हैं।

योगदर्शन के अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। शिव संहिता में भी कहा है-

जानाति यः सर्वमिदं स योगी नात्र संशयः। शिव संहिता २:४

यह शरीर ब्रह्माण्ड के नाम से जाना जाता है।

ज्ञानसंकलिनी तंत्र में कहा है-

देहस्थाः सर्व्व विद्याश्च देहस्थाः सर्व्व देवताः।
देहस्थाः सर्व्व तीर्थानि गुरु वाक्येन लभ्यते।।

इस प्रकार योग के साधक को मूलाधार से लेकर सहस्त्रार तक का सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। सहस्त्रार में वह परमतत्त्व है, जो सृष्टि की उत्पति का आदि कारण है। उस परमसत्ता में ज्ञान की पराकाष्ठा है, अतः योगी को सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी होना, कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी योग को ध्यान में रखते हुए ही महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है

कि "भारत, योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।" इसी योग से भौतिक विज्ञान की असंख्य समस्याओं का समाधान होगा। तभी सम्पूर्ण विश्व, भारत को पुनः धर्मगुरु स्वीकार करेगा।

भौतिक विज्ञान की मान्यता है कि जो शब्द बोले जा चुके हैं, वे ब्रह्माण्ड में रहते हैं, नष्ट नहीं होते हैं। अगर उपयुक्त यन्त्र हो तो उन्हें सुना जा सकता है। भारतीय योग दर्शन कहता है कि उस शब्द को बोलने वाला भी कोई होगा, उसे बोलते हुए देखा-सुना जाना भी संभव है। वह फिल्म तो बन चुकी है, उसके देखने-सुनने में क्या कठिनाई है! हमारा योगदर्शन तो स्पष्ट शब्दों में कहता है कि अनिश्चित काल तक के भूत, भविष्य एवं वर्तमान को देखना-सुनना सम्भव है। पतंजलि योगदर्शन के विभूतिपाद के सूत्र संख्या ३३ एवं ३६ में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

प्रातिभाद्वा सर्वम्।। ३:३३

प्रातिभ ज्ञान से योगी सर्वज्ञाता होता है। इस ज्ञान की उत्पति होने पर योगी को बिना प्रयास के ही संसार की सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर के अन्दर है, अतः वह ज्ञान स्वयं के अन्दर से प्राप्त होता है। इसे और स्पष्ट करते हुए, ऋषि ने ३६ वें सूत्र में कहा है-

ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते।। ३:३६

"उस स्वार्थ संयम से प्रातिभ, श्रावण, वेदना, आदर्श, आस्वाद, वार्ता का ज्ञान उत्पन्न होता है।" सभी का अलग अलग वर्णन करते हुए कहा गया है-

(१) प्रातिभ-इससे भूत, भविष्य और वर्तमान एवं सूक्ष्म, ढकी हुई और दूर देश में स्थित वस्तुएँ प्रत्यक्ष हो जाती हैं।

(२) श्रावण-इससे दिव्य शब्द सुना जा सकता है।

(३) वेदन-इससे दिव्य स्पर्श का अनुभव होता है।

(४) आदर्श-इससे दिव्य रूप का दर्शन होता है।

(५) आस्वाद-इससे दिव्य रस का अनुभव होता है।

(६) वार्ता- इससे दिव्य गंध का अनुभव होता है।

ऋषि ने उपर्युक्त छह सिद्धियों को, समाधि सिद्धि में विघ्न डालने वाली बताया है जबकि

भौतिक विज्ञान की दृष्टि में यह ज्ञान दुर्लभ है।

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य शरीर की संरचना, सात प्रकार के कोशों (शैलों) से हुई है, जिनके अन्दर आत्मा अन्तर्निहित है; वे हैं-अन्न (matter), प्राण (life force), मन (mind), विज्ञान (intellect), आनन्द (bliss), चित् (becoming) एवं सत् (being)। प्रथम चारों कोश तो मानवता में चेतन हो चुके हैं। जब ये चारों मानवता में चेतन हो सकते हैं तो बाकी तीनों-सत्, चित्, आनन्द (सत्+चित्+आनन्द = सच्चिदानन्द) क्यों नहीं चेतन हो सकते हैं? परन्तु यह कार्य कलियुग में पैदा हुए, पैगम्बरवादी धर्मों की सामर्थ्य में नहीं है।

मात्र सनातन धर्म ही ईश्वरवाद का जनक है। एकमात्र वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मोक्ष सम्भव है। इस दिव्य ज्ञान का दान, अनादिकाल से भारत ही विश्व को करता आया है। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है- "सृष्टि का इतिहास इसका साक्षी है कि पार्थिव जीवन-लीला को अधिक पूर्ण और आनन्दमय बनाने में भारत को एक विशिष्ट कार्यभार, एक विलक्षण रोल (भूमिका) दिया गया है, जिसे दूसरा कोई भी राष्ट्र सम्पन्न नहीं कर सकता।"

इस समय कलियुग के गुणधर्म के कारण विश्व भर में मानवता का जो पतन हुआ है, उतना किसी भी युग में नहीं हुआ। आज के मनुष्य का वर्णन करते हुए श्री अरविन्द ने लिखा है-"आज का मनुष्य भी कोई मनुष्य है! आधा पशु, आधा मानव; यह तो सोचने और बोलनेवाला तकरीबन जानवर ही है। अपने को बड़ा पढ़ा-लिखा होशियार, समझदार, सभ्य और सुशिक्षित कहता है लेकिन है क्या? ऐसे अधूरे अशान्त इंसान को बदलना ही होगा। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं ऐसे मानव को अतिमानव में बदलकर ही चैन लूँगा।"

श्री अरविन्द ने विश्व के वर्तमान मानव के गहन अध्ययन के साथ-साथ उत्तराधिकारी मानव को जितनी गहराई से देखा है, उतना विश्व के किसी भी दार्शनिक ने नहीं देखा। मानवता में वैदिक मनोविज्ञान के आखिरी तीनों तत्त्वों (सत्+चित्+आनन्द = सच्चिदानन्द) को चेतन होने को ही ध्यान में रखकर महर्षि ने भविष्यवाणी की है कि- "आगामी मानव-जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।" इसी सन्दर्भ में श्री अरविन्द की निम्नलिखित घोषणा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह घोषणा गीता के चौथे अध्याय के सातवें और आठवें श्लोक पर आधारित है।

"२४ नवम्बर, १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण

अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध (Inspire) करके, विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।" श्री अरविन्द के अनुसार मानवता में अवतरित वह दिव्य सत्ता, अपने क्रमिक विकास के साथ १९९३ के अन्त तक सम्पूर्ण विश्व के सामने प्रकट हो जावेगी।

शक्तिपात दीक्षा से जब साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो उसे निरन्तर इंद्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की प्रत्यक्षानुभूति होती है। इस दिव्य आनन्द के सामने सभी नशों के आनन्द तुच्छ लगने लगते हैं। सभी नशों से दिल से घृणा हो जाती है और सभी प्रकार के नशे बिना किसी प्रकार के, कष्ट के स्वतः छूट जाते हैं। यही नहीं, इस दिव्य आनन्द के कारण मानसिक तनाव पूर्णरूप से शांत हो जाता है तथा इससे सम्बन्धित सभी रोग जैसे- उन्माद (पागलपन), रक्तचाप, अनिद्रा आदि सभी बीमारियाँ बिना दवा के स्वतः ठीक हो जाती हैं। जो मनोरोगी विद्युत उपचार और इन्स्यूलिन चिकित्सा से भी ठीक नहीं हुए, वे इस शक्तिपात दीक्षा से मिलने वाले आनन्द से, पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो शारीरिक असाध्य रोग होते हैं, वे सभी यौगिक मुद्राओं से ठीक हो जाते हैं। क्योंकि उस जाग्रत शक्ति (कुण्डलिनी) में ज्ञान की पराकाष्ठ है, उससे किसी रोग का इलाज छिपा हुआ रह ही नहीं सकता है। हमारे शास्त्रों में इसे जगत् जननी कहा है। भौतिक विज्ञान के शोधकर्ता, जब अन्तर्मुखी होकर शोध करेंगे तो उनकी असंख्य समस्याओं का आसानी से पूर्ण समाधान हो जाएगा।

मैंने तो मात्र अपने शरीर रूपी ग्रंथ को ही, सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहेतु की कृपा के कारण पढ़ा है, और इसे ही पढ़ाने सद्गुरुदेव के आदेश से, विश्व में निकला हूँ। सद्गुरुदेव का आदेश है कि कोई भी व्यक्ति, इस गुरु प्रसाद के लिए आता है तो वह खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए। अतः विश्व के सभी सकारात्मक जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सचाई जानने के लिए सप्रेम आमंत्रित करता हूँ।

६२.

सनातन धर्म के मतानुसार संसार की उत्पत्ति को प्रमाणित करना सम्भव है।

(११ अप्रेल १९८८)

भौतिक विज्ञान की वर्तमान प्रगति ने यथार्थवाद एवं प्रत्यक्षवाद को जितनी तेजी से उकसाया है, आत्मा, परमात्मा, परलोक, पुनर्जन्म एवं कर्मफल जैसे भारतीय दर्शन को उतना ही अमान्य भी किया है। आज हम भारतीयों में भी अपनी संस्कृति, धर्म एवं आध्यात्मिक मान्यताओं में आस्था नहीं रही। उसका कारण भी विज्ञान की यह तीव्र प्रगति ही है।

भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान, एक दूसरे के सहयोगी हैं। प्रगति की इस दौड़ में भौतिक विज्ञान अपने जनक, आध्यात्मिक विज्ञान से बहुत आगे निकल गया। आध्यात्मिक धर्मगुरुओं को इस तथ्य को स्वीकार करके अपनी कमजोरी को दूर करने के प्रयास करने चाहिए थे, परन्तु उन्होंने यह हिम्मत नहीं दिखाई। इसके विपरीत सभी धर्मों के धर्मगुरु पलायनवादी हो गए, और दोनों क्षेत्रों को कृत्रिम लक्ष्मण रेखा से दो भागों में विभक्त कर दिया। अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए एक के बाद एक, झूठ बोलते ही चले गए। इस प्रकार झूठ का अम्बार लगा दिया। एक तरफ झूठ का अम्बार, दूसरी तरफ सच्चाई का अम्बार, ऐसी स्थिति में सहयोग की कल्पना करना ही असम्भव है।

सच्चाई के सामने झूठ ठहर ही नहीं सकता, यही कारण है कि आज संसार भर के सभी धर्म बहुत ही दयनीय स्थिति में पहुँच गए हैं। जब तक इस सच्चाई को स्वीकार करके, उस क्षेत्र का शुद्धिकरण नहीं कर लिया जाता है, रोग का उपचार असम्भव है। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र के लोग इतने सच्चाई प्रिय हैं कि ज्यों ही आध्यात्मिक जगत् ने सच्चाई के रास्ते पर चलकर प्रमाण देना प्रारम्भ किया, उन्होंने उसका अनुसरण करना प्रारम्भ किया। भौतिक विज्ञान जगत् के लोग बहुत ही चेतन हैं, हर सच्चाई को स्वीकार करने में बिलकुल ही नहीं हिचकिचाते हैं।

संसार में जो नरसंहार और अशान्ति फैल रही है, वह इसी असन्तुलित व्यवस्था की देन है। भौतिक विज्ञान की जनक, आध्यात्मिक शक्ति, ज्यों ही अपने असली स्वरूप में प्रकट हुई कि भौतिक सत्ता उसके सामने नतमस्तक हुई। ज्यों ही संसार की यह स्थिति हुई, महर्षि

अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य हो जायेगी।

संसार में जितने भी भौतिक साधन प्रकट किये जा चुके हैं, उन सबका उपयोग अगर केवल सृजन के रूप में ही किया जाए तो संसार में घी-दूध की नदियाँ बहने में कोई देर नहीं लगेगी। इस प्रकार श्री अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य होने में देर नहीं लगेगी। श्री अरविन्द ने कहा था-"एशिया जगत् हृदय की शान्ति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके, धरती पर स्वर्ग बसाना है।" मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार आध्यात्मिक जगत् की अनेक समस्याएँ, भौतिक विज्ञान की तरह प्रमाण सहित सुलझाई जा सकती हैं। मैं देख रहा हूँ, आध्यात्मिक दृष्टि से जो लोग मुझसे जुड़ रहे हैं, उन्हें सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर आदि की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं। हिन्दू धर्म का सिद्धान्त, जिसे श्री अरविन्द ने सही प्रमाणित किया है, उसी रास्ते से चलने पर अनेक प्रकार की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं। श्री अरविन्द ने कहा था- "ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का, कोई न कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने आरम्भ कर दिया है। एक मास के अन्दर ही अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।"

बिलकुल ठीक इसी पथ से चलकर, मेरे से सम्पर्क करने वाले लोगों को इसी प्रकार की अनेक उपलब्धियाँ हो रही हैं। मूलाधार से अगम लोक तक की सभी अनुभूतियाँ, मुझे गुरुदेव के रहते हो चुकीं थीं, परन्तु उस समय मुझसे जुड़ने वाले किसी को ऐसी अनुभूति नहीं होती थी। ३१ दिसम्बर १९८३ को गुरुदेव का स्वर्गवास होने के बाद, मेरे अन्दर एक विचित्र प्रकार का परिवर्तन आ गया। इसके बाद मुझसे जुड़ने वाले सभी लोगों को वे अनुभूतियाँ अनायास होने लगती हैं, जो मुझे बहुत पहले हो चुकी हैं।

इस विचित्र स्थिति का जब मैंने अन्तर्मुखी होकर पता लगाया तो मालूम हुआ कि यह सारा चमत्कार गुरुदेव के शक्तिपात के कारण हो रहा है। जैसा कि मुझे बताया गया, कोई शक्ति संसार के कल्याण के लिए, मेरे माध्यम से प्रकट हो रही है।

श्री अरविन्द ने कहा था - "तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान

जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे सारे संसार को देना होगा।" इस बात को अधिक स्पष्ट करते हुए श्री अरविन्द ने कहा है- "क्रम-विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाएगा, और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना शुरू किया था। इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही करेगा।" इस प्रकार की अनुभूतियाँ और पथ प्रदर्शन निरन्तर हो रहा है। मुझे उस परमसत्ता ने बहुत से प्रमाण देकर, अच्छी प्रकार समझा दिया है कि संसार के हर परिवर्तन और माध्यम की व्यवस्था पूर्व निश्चित है, उसमें रत्ती भर का भी परिवर्तन असम्भव है।

पश्चिमी जगत् ने जो भौतिक प्रगति की है, उसे जब तक आध्यात्मिक सत्ता के अधीन नहीं कर लिया जाता है, संसार में शान्ति असम्भव है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है- "हम देशों और जातियों के पृथक् व्यक्तित्व को मिटाना नहीं चाहते, बल्कि उनके बीच से घृणा, द्वेष और गलतफहमियों की बाधाओं को हटाना चाहते हैं।" मुझे संसार भर के देशों में, अधिक समय तक कार्य करने की प्रेरणा है, परन्तु पहले कुछ समय तक, भारत में ही कार्य करने का आदेश है। श्रीमां के अनुसार "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जाएगा।"

मैं देख रहा हूँ, इस क्षेत्र में जो व्यक्ति माध्यम होंगे, वे मुझसे जुड़ने आरम्भ हो गए हैं। निरर्थक लोग अगर आ भी जाते हैं तो या तो भयभीत होकर या विशेष परिस्थितियों वश मुझसे फिर नहीं मिल सकते। प्रभु की यह बड़ी विचित्र लीला है। कौन व्यक्ति क्या कार्य करेगा, इस सम्बन्ध में भी बहुत ही स्पष्ट दिशा निर्देश मिल रहा है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है- "एक संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन में हर वस्तु के लिए अवकाश होता है।" अतः मेरा आध्यात्मिक जीवन कूप मंडूक न होकर, तथ्यों के आधार पर खुली किताब है, जिसे हर मानव पढ़ सकता है, इसमें धर्म और जाति भेद कोई बाधा नहीं है।

६३. मात्र सनातन धर्म ही विश्व शांति का रक्षक

महर्षि श्री अरविन्द ने घोषणा की थी कि भारत ही भगवान् को धरती पर लाएगा। महर्षि श्री अरविन्द ने कहा था कि अंधकार ठोस बनकर जम गया है, अब संतों से शांति असंभव है। अब धरा पर भगवान् के अवतार की आवश्यकता है और महर्षि ने मात्र इसीलिए आराधना की। महर्षि अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल हुए और उन्होंने घोषणा कर दी कि "२४ नवंबर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आंनदमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनंद की ओर उद्‌बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

इसी संदर्भ में महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की हुई है कि वह शक्ति जो २४ नवम्बर १९२६ को मनुष्य के रूप में जन्म ले चुकी है, सन् १९९३ के अंत तक अपने क्रमिक विकास के साथ संपूर्ण विश्व के सामने प्रकट हो जाएगी।

भगवान् ने श्री अरविन्द को अलीपुर जेल में आदेश दिया था कि "मैं इस देश को अपना संदेश फैलाने के लिए उठा रहा हूँ। यह संदेश उस 'सनातन धर्म' का संदेश है, जिसे तुम अभी तक नहीं जानते थे, पर अब जान गए हो। तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों को कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो। तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए उठाया जा रहा है। जब कहा जाता है कि भारतवर्ष महान् है तो उसका मतलब है, सनातन धर्म महान् है। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह और सबमें मौजूद हूँ; जो देश के लिए लड़ रहे हैं, उन्हीं में ही नहीं, देश के विरोधियों में भी काम कर रहा हूँ। जाने या अनजाने, प्रत्यक्ष रूप से सहायक होकर या विरोध करते हुए, सब मेरा ही काम कर रहे हैं। मेरी शक्ति काम कर रही है, और वह दिन दूर नहीं, जब काम में सफलता प्राप्त होगी।"

यीशु मसीह की भविष्यवाणियों के अनुसार भी उस सहायक के पूर्व से आने की बात कही गई है। उस सहायक के आने का यही समय है। इसके अतिरिक्त विश्व के कई भविष्यवक्ताओं ने भी कहा है कि २० वीं सदी के अंत से पहले, एक नई सभ्यता जिसका उद्‌गम भारत से होगा, संपूर्ण विश्व को आँधी तूफान की तरह ढक लेगी।

विश्वभर के सभी धर्मों में मात्र सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जो मनुष्य को विकास की चरम सीमा तक पहुँचाने की बात कहता है। वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य शरीर की संरचना सात प्रकार के तत्त्वों से हुई है, जिनके अन्दर आत्मा अन्तर्निहित है। इन सात तत्त्वों की अलग-अलग व्याख्या करते हुए ऋग्वेद कहता है- (१.) अन्नमय कोश (२.) प्राणमय कोश (३.) मनोमय कोश (४.) विज्ञानमय कोश (५.) आनन्दमय कोश (६.) चित्मय कोश (७.) सत्मय कोश।

आज तक इनमें से प्रथम चार कोश ही मानवता में विकसित हो पाये हैं। बाकी तीनों (सत्+ चित्+आनन्द = सच्चिदानन्द) कोश अभी तक विकसित नहीं किए जा सके।

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार अन्नमय कोश से विज्ञानमय कोश तक अपरार्ध या सत्ता का निम्नतर भाग है, जहाँ विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है। आनन्द से सत् तक परार्ध या उच्चतर अर्ध जिसमें अविद्या पर विद्या का प्रभुत्व है और वहाँ अज्ञान, पीड़ा या सीमा का नाम नहीं। क्योंकि प्रथम चारों कोशों में विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है, इसलिए विज्ञान का प्रयोग सृजन के स्थान पर विध्वंस में ही अधिक हो रहा है।

विश्व में मात्र वैदिक धर्म ही अवतारवाद का जनक है, वही कहता है ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार संभव है। संसार के बाकी पैगम्बरवादी धर्मों में यह सामर्थ्य नहीं है। वे तो मात्र पैगम्बर के बताए अनुसार ही ईश्वर को जानते हैं। प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का कोई पथ, उन धर्मों में नहीं है। जब सात में से चार तत्त्वों की जानकारी विश्व को हो चुकी है तो बाकी तीन कोशों का भी ज्ञान प्राप्त करना संभव है। परन्तु उस ज्ञान को प्राप्त करने की सामर्थ्य केवल सनातन धर्म में ही है, क्योंकि वह ईश्वरवाद का जनक है। पैगम्बरवादी धर्म यह कार्य नहीं कर सकते। क्योंकि अब बाकी तीनों तत्त्वों (सत्+ चित्+आनन्द = सच्चिदानन्द) के चेतन होने का नम्बर है, अतः यह कार्य मात्र भारत ही करेगा। अनादिकाल से यह ज्ञान विश्व को भारत ही देता रहा है। इसी दिव्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार संपूर्ण विश्व में पुनः करके, अपने स्वर्ण युग में प्रवेश कर जाएगा।

मनुष्य योनि में चरम विकास की बात कहते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १३ वें अध्याय के २३वें श्लोक में पुरुष की व्याख्या करते हुए कहा है-

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२३

(वास्तव में पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी, पर (त्रिगुणातीत) ही है, (केवल) साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीवरूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से 'परमात्मा' ऐसा कहा गया है।)

गीता की उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार मनुष्य आत्म साक्षात्कार करते हुए 'तद्रूप' बन सकता है। अतः वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार उपर्युक्त सातों तत्त्वों को चेतन करके मनुष्य अपने चरम विकास को प्राप्त कर सकता है। भारत के ही नहीं, विश्वभर के अनेक भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की है कि भारत का ही दर्शन २१वीं सदी में मान्य होगा। २१वीं सदी में भारत पुनः अपने 'जगत्गुरु' के पद पर आसीन हो जाएगा।

इसी प्रकार भारतीय योगदर्शन भी क्रियात्मक ढंग से उस परमपद को प्राप्त करने की विधि बताता है। हमारे दर्शन के अनुसार मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, मनुष्य वास्तव में विराट है। अतः हमारा दर्शन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड में है। इसीलिए ज्ञानसंकलिनी तन्त्र में कहा है-

देहस्थाः सर्व्व विधाश्च देहस्थाः सर्व्व देवताः।
देहस्थाः सर्व्व तीर्थानि गुरु वाक्येन लभ्यते।।

उपर्युक्त दार्शनिक सिद्धान्त के अनुसार, ऋषियों ने जब संपूर्ण ब्रह्माण्ड को देखकर उस परमतत्त्व की खोज मनुष्य शरीर में आरंभ की तो पाया कि उस परमसत्ता का निवास सहस्रार में है। उसी ने अपनी शक्ति के सहारे इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना की, जिसका निवास स्थान उसने मूलाधार में पाया। इन्हीं दोनों तत्त्वों के कारण संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई। प्रभु की वह शक्ति सहस्रार से नीचे चली और असंख्य ब्रह्माण्डों और लोकों की रचना करती हुई, मूलाधार में आकर स्थित हो गई।

यह शक्ति सुषुप्त अवस्था में रहती है। केवल मनुष्य योनि में ही इसे जाग्रत किया जा सकता है। यह कार्य गुरुकृपा रूपी शक्तिपात से ही संभव है। सिद्धयोग में गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा का विधान है। गुरु, शक्तिपात करके साधक की कुंडलिनी को चेतन करते हैं। चेतन होते ही वह शक्ति सुषुम्ना के रास्ते, अपने स्वामी से मिलने सहस्रार की तरफ ऊर्ध्वगमन करने लगती है। गुरु का उस पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, अतः वे उसका नियंत्रण और संचालन स्वयं करते हैं। वह शक्ति ऊर्ध्व गमन करती हुई, छह चक्रों और तीनों ग्रन्थियों का वेधन

(भेदन) करती हुई, साधक को समाधि स्थिति, जो कि समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। इस प्रकार पृथ्वी तत्त्व के आकाश तत्त्व में लय होने को ही मोक्ष अर्थात् कैवल्य पद प्राप्त होने की संज्ञा दी गई है।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो ऊर्ध्व गमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरुद्ध रहता है। अतः साधक को विविध प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत्त कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं, उसमें साधक का किसी प्रकार का सहयोग या असहयोग कार्य नहीं करता है। साधक न तो उन्हें करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ करवाती है। इस प्रकार भौतिक विज्ञान को यह खुली चुनौती है।

मेरे शिष्यों में अनेक इंजीनियरिंग के छात्र तथा इंजीनियर हैं। उन सभी को ये क्रियाएँ होती हैं। इससे पतंजलि योग दर्शन में वर्णित सभी सिद्धियों के ज्ञान के साथ-साथ, हर प्रकार से पूर्ण स्वस्थ होकर मोक्ष प्राप्त होता है।

पतंजलि योग दर्शन में साधक को जिन सिद्धियों का ज्ञान प्राप्त होता है उनमें एक का नाम प्रातिभ ज्ञान है। इस ज्ञान का वर्णन विभूतिपाद के ३३वें तथा ३६वें सूत्र में किया गया है। इस संबंध में ऋषि ने कहा है-

ततःप्रातिभश्रावण वेदनास्वादवार्ता जायन्ते।।

उससे प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद और वार्ता ये (छह सिद्धियाँ) प्रकट होती हैं-

(१.) प्रातिभ- इससे भूत, भविष्य और वर्तमान एवं सूक्ष्म, ढकी हुई और दूर देश में स्थित वस्तुएँ प्रत्यक्ष हो जाती हैं।

(२.) श्रावण- इससे दिव्य शब्द सुनने की शक्ति आ जाती है।

(३.) वेदन- इससे दिव्य स्पर्श का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

(४.) आदर्श- इससे दिव्य रूप का दर्शन करने की शक्ति आ जाती है।

(५.) आस्वाद- इससे दिव्य रस का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

(६.) वार्ता- इससे दिव्य गंध का अनुभव करने की शक्ति आ जाती है।

उपर्युक्त ज्ञान के अतिरिक्त पतंजलि योगदर्शन में वर्णित सभी बातों की, मेरे अनेक साधकों को प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार हो रहे हैं, जो कि भौतिक जगत् में पूर्ण सत्य प्रमाणित हो रहे हैं। मेरे शिष्यों में अधिकतर शिक्षित स्त्री-पुरुष हैं। बहुत से भौतिक विज्ञान के शिक्षक और छात्र हैं। सभी को उपर्युक्त ज्ञान प्राप्त हो रहा है। मेरी मान्यता है कि भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ता को करवा देगी। इस प्रकार विश्व के मानव की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

मैं संसार में इस ज्ञान को बाँटने के लिए ही, मेरे गुरु के आदेश से निकला हूँ। यह ज्ञान मात्र गुरु कृपा से ही प्राप्त होना संभव है। इसकी कीमत मात्र गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण है। और किसी विधि या बौद्धिक प्रयास से यह ज्ञान प्राप्त होना असंभव है। इस समय मानव, बुद्धि को बहुत बड़ी मानता है परन्तु इस युग का मानव भूल जाता है कि 'मन' बुद्धि को दिन में कई सब्जबाग दिखाकर चकमा दे जाता है।

भारतीय योग दर्शन में मन को स्थिर करके ही यह ज्ञान प्राप्त करने की क्रियात्मक विधि बताई गई है। पतंजलि ऋषि ने जब योग दर्शन लिखना आरंभ किया तो योग की व्याख्या करते हुए, दूसरे सूत्र में स्पष्ट शब्दों में कहा है- 'चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।' और यह कार्य मनुष्य स्वयं नहीं कर सकता। इसमें चेतन गुरु की नितान्त आवश्यकता होती है।

इस संबंध में महोपनिषद् में कहा है-

दुर्लभो विषयत्यागो दुर्लभं तत्त्वदर्शनम्।

दुर्लभो सहजावस्था सद्गुरोः करुणां बिना।। ७७

'सद्गुरु की दया के बिना विषय-त्याग दुर्लभ है, तत्त्वदर्शन दुर्लभ है और सहजावस्था दुर्लभ है।'

मेरे संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहेतु की कृपा मुझ पर नहीं होती तो मैं, सौ जन्म आराधना करके भी यह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता था। अतः इसे गुरुप्रसाद समझकर बाँटने निकला हूँ।

विश्व के सभी सकारात्मक स्त्री-पुरूषों को सचाई जानने के लिए सप्रेम आमंत्रित करता हूँ।

६४.

वैदिक दर्शन

(३१ मई २००३)

सम्पूर्ण मानव जाति के नाम शुभ संदेश।

पेंटागन द्वारा २२ अप्रेल, २००३ को जो विज्ञप्ति जारी की गई, उसे पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि अमेरिका को वैदिक दर्शन की पूर्ण जानकारी नहीं है।

वैदिक दर्शन मानवीय दर्शन है। उस पर किसी भी जाति, धर्म एवं देश का एकाधिकार नहीं है। वह सार्वभौम दर्शन है। वैदिक दर्शन जिसका मूल वेद है, दो धाराओं में आगे बढ़ता है। एक पक्ष दर्शन में वर्णित ज्ञान को पढ़कर सुनाता है, दूसरा मानवता में उसे मूर्तरूप देता है। पहले को 'वेदान्त' और दूसरे को 'योग' कहा जाता है। इस प्रकार वेदान्त+योग पूर्ण दर्शन बनता है। योग के बिना वेदान्त पंगु है।

कलियुग के गुणधर्म के कारण योग, भौतिक जगत् से प्रायः लोप हो गया है। भारतीय योगदर्शन में वर्णित योग का तो मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। जबकि आज विश्व में उसे रोग ठीक करने का उपाय माना जा रहा है, फिर रोग ठीक क्यों नहीं हो रहे हैं?

पश्चिमी जगत् की कल्पना है कि मानव मरकर स्वर्ग में पहुँचने के बाद ही मोक्ष को प्राप्त करता है। इसके विपरीत भारतीय दर्शन 'पार्थिव चेतना' में, जीवित रहते हुए, जीवन मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बताता है। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-

"The aim of yoga is to manifest, reach or embody a higher consciousness upon earth and not to get away from earth into a higher world or some supreme absolute."

(योग का उद्देश्य पृथ्वी पर एक उच्चतर चेतना को उतारना है न कि पृथ्वी से दूर किसी उच्चतर लोक में जाना।)

पेंटागन ने जिस भाषा का प्रयोग किया है, उसे पढ़कर मुझे भारी कष्ट की अनुभूति हुई। यह तो भयभीत पेंटागन की भाषा है। पेंटागन को इस पर पुनः विचार करना चाहिए। इसके प्रारम्भ में ही कहा गया है- "Islam is a very evil and wicked religion." क्या पेंटागन यह बताने का कष्ट करेगा कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान लगभग दस लाख यहूदियों की निर्मम हत्या किसने की थी? क्या उसमें भी इस्लाम का हाथ था? क्या जलियांवाला बाग

काण्ड में भी इस्लाम का हाथ था?

विश्व का इतिहास साक्षी है, इस भूमण्डल पर 'अहिंसा परमोधर्मः' के सिद्धांत पर जन्मी, हिन्दू और यहूदी जाति का शोषण बहुत लम्बे समय से किया जा रहा है। दोनों को कुचला जा रहा है, रौंदा जा रहा है, असंख्य स्त्री-पुरुषों का कत्लेआम किया जा रहा है, परन्तु आज भी दोनों जातियाँ अपने मूलभूत सिद्धांत पर अडिग हैं। दोनों जातियों को ईश्वर में अटूट विश्वास है। मैं देख रहा हूँ, संपूर्ण विश्व में जो तूफानी परिवर्तन आरम्भ हुआ है, यह दोनों के उद्धार के लिए है। प्रभु शीघ्र न्याय करने वाला है।

इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने, अगस्त १८९३ को न्यू इंग्लैण्ड के ग्राम में, प्रोफेसर जे.एच. राइट के मकान में ठहर कर अपने प्रवचन में कहा था, "प्रभु कहते हैं कि प्रतिशोध मेरा है, मैं उसे अवश्य चुकाऊँगा। विनाश आ रहा है। हूणों का एक और आक्रमण होगा.....।" स्वामी जी ने फिर जोर देकर कहा "ईश्वर प्रतिशोध अवश्य लेगा।"

मैं देख रहा हूँ, प्रभु ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

६५.

अवतारवाद- हिन्दू एवं ईसाई दर्शन के अनुसार

यीशु 'स्त्री' का पुत्र था और पुनरागमन, 'पुरुष' के पुत्र के रूप में होगा।

१. गलतियों ४:४ में कहा गया है- "परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, 'जो स्त्री से जन्मा' और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।"

२. मत्ती (मैथ्यु) २४:२७ में कहा गया है- "क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसे ही 'मनुष्य के पुत्र' का भी आना होगा।"

उपर्युक्त में 'स्त्री का पुत्र' और 'पुरुष का पुत्र' दो बहुत ही रहस्यमय शब्दों का प्रयोग किया गया है। बाइबिल पिता और पुत्र दो परमतत्त्वों के शक्ति का विस्तार है। इस प्रकार स्त्री तत्त्व के रूप में पुत्र जन्मा और पिता, 'पुरुष' तत्त्व के रूप में जन्मेगा। यह बात बहुत ही रहस्यपूर्ण है।

हिन्दू धर्म अवतारवाद में विश्वास करता है। हिन्दू दर्शन के अनुसार 'दस अवतार' होते हैं। दसवें अवतरण के साथ ही मानवजाति त्वरित क्रमिक विकास के साथ पूर्णता की ओर तेजी से विकसित होने लगेगी। हिन्दू दर्शन के अनुसार नौ अवतारों का अवतरण हो चुका है। (१) मत्स्यावतार (२) कच्छप अवतार (३) वराह अवतार (४) नृसिंह अवतार (५) मनु अवतार(६) वामन अवतार(७) परशुराम अवतार(८) श्रीराम अवतार(९) श्रीकृष्ण अवतार। इस प्रकार अब अन्तिम अवतार के अवतरण के साथ ही मानव का अन्तिम विकास अर्थात दिव्य रूप में रूपान्तरित होने का क्रमिक विकास प्रारम्भ हो जाएगा।

बाइबिल भी मानव के इस दिव्य रूपान्तरण के संबंध में कहती है-

१. नीतिवचन ४:१८-परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिनका प्रकाश 'दोपहर तक' अधिक-अधिक बढ़ता रहता है।

२. दानियेल १२:३-'तब' सिखाने वालों की चमक आकाश मण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाई प्रकाशमान रहेंगे।

३. उस समय धर्मी अपने 'पिता के राज्य' में सूर्य की नाई चमकेंगे, जिसके कान हों वह सुन लें।

४. २ कुरिन्थियों ३:१८ परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में 'अंश-अंश' करके बदलते जाते हैं।

६६.

यहूदियों! अब करुण पुकार का समय है।

कालचक्र अनादिकाल से अबाध गति से चलता आया है और चलता रहेगा। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। ईश्वर, समय-समय पर संपूर्ण विश्व में संतों को पैदा करके शान्ति स्थापित करता है। परन्तु जब तामसिक वृत्तियाँ इतनी प्रबल हो जाती हैं और संतों के उपदेश का कुछ भी प्रभाव नहीं होता है, वरन् वे संत पुरूषों को तंग ही नहीं करती हैं, उनके प्राण तक ले लेती हैं, ऐसी स्थिति में उस परमसत्ता को उन दुष्ट वृत्तियों का संहार करने के लिए, स्वयं अवतार लेना होता है। क्योंकि तामसिक वृत्तियाँ निर्दयी और क्रूर होती हैं, अतः वे लड़ाई किए बिना कभी नहीं मानती। अतः युग परिवर्तन की प्रथम शर्त है, नरसंहार। इतिहास साक्षी है, ऐसा हर युग में परिवर्तन के समय हुआ है।

यीशु ने भी युग परिवर्तन की स्पष्ट शब्दों में घोषणा की है। युग परिवर्तन में जो भयंकर नरसंहार होगा उसका वर्णन करते हुए उसने कहा है-सेंट मार्क १३:१९से २० - 'क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न कभी होंगे। और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई भी प्राणी नहीं बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया है।'

यीशु ऐसे ही अंधकारपूर्ण युग में प्रकट हुआ। उस समय तामसिक वृत्तियों ने प्रभु के मंदिर में भी व्यभिचार और पापों का अड्डा बना रखा था। यीशु ने ज्योंही उन वृत्तियों का विरोध करना प्रारम्भ किया कि वे क्रोधित हो उठीं। उन्होंने अकारण ही उस पवित्रात्मा को मृत्यु दण्ड दिलवा दिया। उसका दोष मात्र यही था कि उसने कह दिया कि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। इसी संदर्भ में उसने उस समय के धर्माचार्यों से कहा कि अगर मेरी बात असत्य है तो जो चमत्कारपूर्ण कार्य प्रभु ने मेरे से करवाये, आप लोगों में से कोई करके दिखा दे। परन्तु फिर भी उस समय के क्रूर धर्मगुरु नहीं माने और उस निर्दोष को मृत्यु दंड दिलवा दिया।

जब उस निर्दोष के प्राण लिए गए तो प्रकृति बहुत ही कुपित हुई। इस संबंध में बाइबिल में लिखा है- 'दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा 'एली' एली, लमा शबक्तनी? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? जो वहाँ खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, यह

तो एलियाह को पुकारता है। औरों ने कहा ठहरो एलियाह उसे बचाने आता है कि नहीं। धर्माचार्यों ने उस समय खुशियाँ मनाई। उन्होंने कहा देखते हैं मंदिर ढहाने वाला और तीन दिन में बनाने वाला क्रूस पर से उतर कर, अपने आपको बचा ले। इसी प्रकार महामायाजक भी शास्त्रियों सहित आपस में ठट्ठे से कहते थे, कि उसने औरों को बचाया और अपने आपको नहीं बचा सकता। इजराइल का राजा, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम विश्वास करें।'

यीशु की भविष्यवाणी के अनुसार, इस युग के अंत के समय भी प्रकृति वही रूप धारण करेगी, जो कुपित होकर उस महान् आत्मा की मृत्यु के समय धारण किया था। इस भविष्यवाणी का समय ज्यों-ज्यों पास आ रहा है, तामसिक वृत्तियाँ भयभीत हो रही हैं। प्राण तो सभी को प्यारे होते हैं। उस निर्दोष पवित्र आत्मा ने तीन बार औंधे मुँह गिरकर प्राण रक्षा के लिए कैसी करुण पुकार की थी, परन्तु फिर भी क्या उसके प्राण बच सके? इसी प्रकार भविष्यवाणी के अनुसार इस युग का अंत होगा और उन वृत्तियों को उनकी करनी का दंड मिलेगा। प्रभु के घर न तो देर है और न अंधेर ही। पाप का घड़ा भरने पर ही फूटता है। यह प्रभु की पूर्व निश्चित व्यवस्था है, जोकि अटल है।

आज विश्व भर में प्रभु का सुसमाचार सुनाने वालों के कानों में, उस पवित्र आत्मा के ये करुण शब्द कि 'आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है' क्या नहीं गूँजते? इन शब्दों में इतनी प्रबल शक्ति है कि धनबल और जनबल के सहारे धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले मठाधीशों की नींद हराम हो जाएगी।

रोग एक नहीं, कई लगे हैं। बाइबिल बारम्बार उस पीढ़ी के अंत की बात कहती है, जो युग परिवर्तन के समय होगी। इस संबंध में २पीटर के ३:३से८ एवं १० से १३ में स्पष्ट शब्दों में कहा है-'और यह जान लो कि अंतिम दिनों में हंसी ठठ्ठा करने वाले लोग आएँगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। और कहेंगे,उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बाप दादा सो गए हैं, सब कुछ ऐसा ही है, जैसा सृष्टि के आरंभ से था। वे तो जानबूझकर भूल गए हैं कि परमेश्वर के शब्द (वचन) के द्वारा आकाश प्राचीन काल से वर्तमान है, और पृथ्वी भी जल से बनी और जल में स्थिर है। इन्ही के द्वारा उस युग का जगत्, जल में डूबकर नाश हो गया था। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे कि जलाए जाएँ, और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहें।' 'परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाई आएगा', उस दिन आकाश बड़ी हड़बड़ाहट के शब्द के साथ जाता रहेगा और तत्त्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल

जाएँगे। जब ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं, तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होने चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की किस रीति से बाट जोहनी चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएगा, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार 'हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं, जिसमें धार्मिकता वास करेगी।'

यहूदियों को मात्र यीशु ने ही श्राप नहीं दिया था, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, बल्कि परमेश्वर का भी 'भारी श्राप' दिया हुआ है। इस संबंध में मलाकी ३:८ से १० में कहा है- क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकते हैं? देखो तुम मुझको धोखा देते हो, और पूछते हो कि हमने किस बात में तुझे लुटा? दसमांश और उठाने की भेंटों में। तुम पर भारी श्राप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो वरन सारी जाति ऐसा करती है।

युग परिवर्तन के बारे में पुराने नियम में भी जगह-जगह भविष्यवाणियाँ की हुई हैं। इस संबंध में मलाकी ४:१से ३ 'क्योंकि देखो वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएँगे, और उस आने वाले दिनों में, वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं का यहोवा का यही वचन है।'

बाइबिल के अनुसार मूसा और यीशु का समय, व्यवस्था का युग था। यीशु ने जिस सहायक के भेजने की प्रतिज्ञा की है, जब वह प्रकट होकर पवित्रात्मा का बपतिस्मा (शक्तिपात-दीक्षा) देकर संसार भर के लोगों पर अनुग्रह करना प्रारंभ कर देगा, तब व्यवस्था का युग समाप्त हो जाएगा। इस संबंध में यीशु ने भी सेंट मैथ्यू ५:१७एंव १८ में कहा है। 'यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों का लोप करने आया हूँ। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ, क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाय, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी पूरा हुए बिना नहीं टलेगा।' अतः यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा स्वर्ग राज्य की घोषणा किये जाने के समय से लेकर मसीह का बादलों में पुनरागमन तक यह व्यवस्था का युग जारी रहेगा(मती ११:१२ एवं लूक १६:१६) अनुग्रह के युग के शुरुआत के साथ ही व्यवस्था समाप्त हो जावेगी।

ईसाई जगत् को अनुग्रह के युग की अभी जानकारी नहीं है। वे तो मात्र अपनी पुस्तकों के आधार पर उस युग की कल्पना करते हैं। जब उन पर अनुग्रह होगा, तब वे पूर्ण सत्य से अवगत होंगे। इस संबंध में स्वामी मुक्तानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'कुंडलिनी जीवन का रहस्य' में कश्मीरी शैव सिद्धान्त का वर्णन करते हुए लिखा है- 'कश्मीरी शैव सिद्धान्त के अनुसार

ईश्वर के पंचकृत्य है- सृष्टि, स्थिति, लय, तिरोधान और अनुग्रह। पाँचवा कृत्य जो अनुग्रह है, उससे मानव को अपनी व विश्व की यथार्थता का बोध होता है। कश्मीरी शैव सिद्धान्त में गुरु को पाँचवा कार्य सम्पन्न करने वाला अर्थात् अनुग्रहकर्त्ता के रूप में माना गया है। शिवसूत्र विमर्शिनी कहती है-

'गुरुर्वा पारमेश्वरी अनुग्रहिका शक्तिः'

'गुरु परमेश्वर की अनुग्रह शक्ति है'।।४

वह शक्ति की पुरातन प्रक्रिया द्वारा अनुग्रह प्रदान करता है, जिससे साधक की सुषुप्त कुण्डलिनी क्रियाशील हो जाती है।

बाइबिल में जिस पवित्रात्मा के बपतिस्मे (शक्तिपात दीक्षा) की बात कही गई है, जब वह उन्हें मिलने लगेगी, तब ईसाई जगत् को अनुग्रह की वास्तविकता का ज्ञान होगा। इस दीक्षा से २कुरिन्थियों के ६:१६ में वर्णित सार्वभौम सिद्धान्त के अनुसार, मन मंदिर में ही मनुष्यों को उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होने लगेंगे। ऐसी स्थिति में मानव निर्मित मंदिरों की लोगों को आवश्यकता ही नहीं रहेगी। इस प्रकार उस सहायक के प्रकट होकर शक्तिपात दीक्षा देने के कारण, चर्चों और मंदिरों का अस्तित्व समाप्त होगा, न कि ईश्वर विरोधी और यीशु विरोधी तत्त्वों के कारण। 'यह व्यवस्था संपूर्ण विश्व में एक साथ बदलेगी।'

हे यहूदियों! यीशु और परमेश्वर के भारी श्राप के कारण यहूदी जाति का भारी संहार होने वाला है, उसे ध्यान में रखते हुए, करुण पुकार का समय है। उस महान् आत्मा ने बहुत दुःखी होकर यहूदियों को कहा था कि-

'तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अब से जब तक तुम न कहोगे कि धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।'

दानियेल १२:११एवं १२ को यहूदियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। 'जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे। क्या ही धन्य है, वह जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन के अंत तक भी पहुँचे।'

बाइबिल की सभी भविष्यवाणियों के अनुसार वह सहायक २० वीं सदी के अंत से

पहले प्रकट हो जाएगा। संसार में तामसिक वृत्तियाँ इतनी प्रभावी हो चली हैं कि किसी भी धर्म के लोगों को अपने धर्म ग्रन्थ पर थोड़ा भी विश्वास नहीं रह गया है। सभी लोग ऐसा मानकर चल रहे हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं होने जा रहा है। कलियुग की करामात देखो, सबकी अक्ल को भी अंधा कर दिया है। संत श्री तुलसीदास जी की यह बात पूर्ण सत्य प्रमाणित हो रही है कि 'जाको प्रभु दारूण दुख देहि ताकी मति पहिले हर लेहि।'

विश्व के अविश्वासी नास्तिक चाहे संतों की भविष्यवाणियों पर विश्वास करें या न करें, प्रभु की पूर्व निश्चित व्यवस्था में कोई अन्तर नहीं आवेगा। ऐसा हमेशा से होता आया है कि यथा स्थितिवादियों ने परिवर्तन को कभी स्वीकार नहीं किया। रावण, कंस, दुर्योधन आदि अनेक उदाहरण हैं। उनकी जो गति अतीत में हो चुकी, वही गति ऐसे लोगों की आगे भी होगी।

६७.

सत्य का आत्मा या अधिमानसिक देव

युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। जब सतयुग नहीं रहा, त्रेतायुग नहीं रहा, द्वापरयुग नहीं रहा, तब एक चरण का छोटा सा कलियुग कैसे रह सकेगा? भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के ५ वें श्लोक में कहा है-

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप॥ ४:५

(हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं। हे परंतप! उन सबको तू नहीं जानता है (और) मैं जानता हूँ।)

भगवान् श्री कृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हर युग में, जब पाप बहुत अधिक बढ़ जाता है, तब मैं अवतार लेता हूँ। इस प्रकार भगवान् के पृथ्वी से अन्तर्धान होने के साथ ही युग बदल जाता है। यह सत्य बीते हुए युगों से सत्य प्रमाणित होता है। इसी प्रकार इस युग की समाप्ति की बात वह महान् आत्मा यीशु भी कर गया है। उसने भी कहा है कि मैं पिता की ओर से एक सहायक और भेजूँगा, जिसकी उत्पत्ति सीधी पिता से होगी। जब वह आवेगा तो यह युग समाप्त हो जावेगा। यीशु की भविष्यवाणियों के अनुसार उस सहायक का प्रकटीकरण इस २०वीं सदी के अन्त से पूर्व ही होगा।

इस सम्बन्ध में सेंट जॉन के १५:२६ और १६:७ से १६:१५ में कहा है- "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा।" "तो भी मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँगा तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और वह आकर संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुतर (कायल) करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् "सत्य का आत्मा" आयेगा तो तुम्हे सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह

अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें (दिखाएगा) बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें (दिखाएगा) बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसीलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें (दिखाएगा) बताएगा।"

यीशु ने एक ऐसा पक्का प्रमाण दिया है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि वह भी भक्त शिरोमणि करमाबाई की तरह महान् प्रेम-मार्गी भक्त था। इस सम्बन्ध में सेंट मार्क ९:२ से ४ में कहा है- "छह दिन के बाद यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और उनको एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया; वहाँ पर उनके सामने उसका (यीशु का) रूप बदल गया। उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और ऐसा उज्ज्वल हुआ, जैसा पृथ्वी पर कोई भी धोबी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया, और वे यीशु के साथ बातें करते थे।" इससे यह तथ्य प्रमाणित होता है कि मलाकी भविष्यवक्ता का एलिय्याह नबी, उस समय का यीशु नबी और भूतकाल का मूसा नबी एक ही शक्ति थी। मेरे इस कथन का अर्थ मात्र आध्यात्मिक व्यक्ति ही ठीक तरह से समझ सकेंगे।

युग परिवर्तन की भविष्यवाणी करते हुए यीशु ने कहा है- विश्व में चर्च के नाम से एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं मिलेगा। सेंट मैथ्यु २४:२-३ में कहा है- "उसने उनसे कहा, क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ (चर्च के स्थान पर) पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।" जब उसके चेलों ने उससे पूछा कि तेरे आने और युग के अन्त (युग बदलने) का क्या चिह्न होगा, तब उसने संसार में आगे होने वाले परिवर्तनों का वर्णन किया।

महर्षि श्री अरविन्द ने "अधिमानसिक देव" के अवतरण की घोषणा करते हुए कहा है- "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था।" महर्षि ने इसी संदर्भ में कहा है कि मानव रूप में प्रकट हुई वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ अतिशीघ्र विश्व के सामने प्रकट हो जावेगी। आश्चर्य देखो, संसार में कितना पाप बढ़ गया है कि विश्व के लोगों को आज भी विश्व के संतों की भविष्यवाणियों पर बिलकुल ही विश्वास नहीं हो रहा है, जब कि प्रकृति अपना कार्य प्रारम्भ कर चुकी है।

६८.

हमें सत्य की खोज करनी होगी।

संसार एक बहुत ही विचित्र पहेली है। परमसत्ता ने अपनी त्रिगुणमयी माया के द्वारा, ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि कर्ता-भोक्ता में कोई भी अन्तर न होते हुए, अन्तर नजर आ रहा है। इस युग में मात्र जीवभाव ही शेष बचा है, आत्मभाव लुप्त प्रायः हो चुका है। यही कारण है कि आज विश्व में जितनी अशांति फैली हुई है, ऐसी पहले कभी नहीं रही। इस समय विश्व से सतोगुण लुप्त प्रायः हो चुका है। यही कारण है कि रजोगुण पर पूर्णरूप से तमोगुण का प्रभुत्व है। इसीलिए विश्व के कर्णधार भय से शांति स्थापित करने का असफल प्रयास कर रहे हैं।

पैगम्बरवादी अपने आणविक हथियारों का भय दिखाकर ज्यों-ज्यों शांति स्थापित करने का प्रयास तेज कर रहे हैं, अशांति उससे भी तेज गति से फैल रही है। आज विश्व में निरन्तर नरसंहार हो रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। आज सम्पूर्ण विश्व को ७-८ बार नष्ट करें, उतने हथियार बन चुके हैं। उनसे कोई यह पूछे कि पृथ्वी को एक बार नष्ट कर दोगे, फिर जब विश्व में प्राणधारी कोई बचेगा ही नहीं तो बाकी का क्या होगा? प्रभु ने जो शक्ति 'सृजन' के लिए दी थी, उसका उपयोग 'विध्वंश' में करने वाले क्या 'सेनाओं के यहोवा' के कोप से बच सकेंगे? सेनाओं का यहोवा क्या करेगा? उन्हें इस भविष्यवाणी का रोज चिन्तन करना चाहिए:- "सेनाओं का यहोवा, अचानक बादल गरजाता, भूमि को कम्पाता और महाध्वनि करता, बवण्डर और आँधी चलाता और नाश करने वाली अग्नि भड़काता हुआ, उसके पास आएगा।" यशायाह २९:६

क्योंकि विश्व भर में तामसिक वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य है, अतः वह शक्ति मानव को शांति से बैठकर सोचने का मौका ही नहीं देती है। शांति और अशांति मनुष्य के अन्दर है, आणविक अस्त्र-शस्त्र में नहीं! उनमें शांति ढूँढना मात्र मृगमरीचिका है। भय मिश्रित शांति, मानव-हृदय में जो वेदना पैदा करती है, उससे अशांति चौगुणी बढ़ती है।

विश्व-शांति मात्र धर्म से ही संभव है। संसार भर के सभी धार्मिक ग्रन्थ और संतों की वाणी जो सच्चाई कह रही है, जब तक हम सभी उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का प्रयत्न पूरी लगन से नहीं करेंगे, शांति मृगमरीचिका ही बनी रहेगी। मानव जब तक यह समझ कर कि मानव मात्र परमेश्वर की संतान है आचरण नहीं करेगा, तब तक शांति असंभव

है। मात्र शांति-शांति चिल्लाने से कोई लाभ नहीं होगा। जब तक संसार के लाखों करोड़ों लोग अंतर्मुखी होकर आत्म-साक्षात्कार नहीं करेंगे, कार्य सिद्धि असंभव है।

वेदान्त दर्शन स्पष्ट शब्दों में कहता है- "सर्वं खल्विदं ब्रह्म"। भारतीय दर्शन के सभी ग्रन्थ एक स्वर में कहते हैं कि उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार केवल मनुष्य योनि में ही, अपने अन्दर ही की जा सकती है। इस संबंध में भगवान् श्रीकृष्ण ने १३ वें अध्याय के २३ वें श्लोक तथा १८ वें अध्याय के ६१ वें श्लोक में कहा है-

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।

परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२३

(वास्तव में यह पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी 'पर' (त्रिगुणातीत) ही है। (केवल) साक्षी होने से 'उपद्रष्टा' और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से 'अनुमन्ता' (एवं) सबको धारण करने वाला होने से 'भर्ता', जीवरूप से 'भोक्ता' तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से 'महेश्वर' और शुद्ध सच्चिदानन्द घन होने से 'परमात्मा' ऐसा कहा गया है।)

उपर्युक्त श्लोक से स्पष्ट होता है कि मनुष्य योनि का उच्चतम विकास, उस परमसत्ता के तद्रूप होना है। जब तक विश्व में ऐसे विकसित लाखों करोड़ों लोग प्रकट नहीं होंगे, शांति असम्भव है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यंत्र में आरुढ़ हुए, सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

मात्र अन्तर्मुखी होने की देर है, सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। परन्तु यह कार्य गुरु के बिना असम्भव है। 'मात्र गोविन्द से मिलाने' वाले को ही सद्गुरु की संज्ञा दी जा सकती है।

ठीक उपर्युक्त भाषा में ही बाइबिल बोलती है। २ कुरिन्थियों ६:१६ में भगवान् ने ही अपने उपर्युक्त श्लोक दोहराते हुए कहा है- "और मूरतों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या संबंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूँगा, और उनमें चला-फिरा करूँगा, और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग।"

उपर्युक्त श्लोक से स्पष्टहै कि मनुष्य योनि में ईश्वर के दर्शन संभव है, जिसे मोक्ष कहते हैं; बाइबिल इसे अनन्त की संज्ञा देती है। प्रकाशित वाक्य २:११ में कहा है "जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है- "जो जय पाए, उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।"

"शब्द" के रूप में परिवर्तित हो सकता है, यह बात मात्र वेदान्त दर्शन ही कहता है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का सिद्धान्त, मात्र हमारे दर्शन की ही देन है। विश्व में इस दिव्य ज्ञान का दान, भारत अनादिकाल से करता आया है, और करता रहेगा। सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में गीता के १७ वें अध्याय के २३ वें श्लोक में कहा है-

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।। १७:२३

(ॐ तत् सत् ऐसे (यह) तीन प्रकार का सच्चिदानंद धन ब्रह्म का नाम कहा है, उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादिक रचे गए हैं।)

इस संबंध में वेद स्पष्ट कहता है- "आओ उस ज्योति में पहुँचें, जो स्वर लोक की है, उस ज्योति में जिसे कोई खण्ड-खण्ड नहीं कर सकता है।" इस प्रकार हम देखते हैं वह 'प्रकाशप्रद -शब्द' अजर- अमर है, अनादि अनन्त है।

पतंजलि योग दर्शन में भी ऋषि ने कहा है- "हरि नाम के जप के बिना कैवल्यपद प्राप्त नहीं किया जा सकता, योग सिद्धि नहीं हो सकती।" समाधिपाद के २४ से २९ तक के श्लोकों में ऋषि ने ईश्वर की व्याख्या करते हुए, उसके नाम जप से, विघ्नों का अभाव और आत्म साक्षात्कार की बात कही है। ऋषि कहता है- "क्लेश, कर्म, विपाक और आशय -इन चारों से जो संबंधित नहीं है (तथा) जो समस्त पुरूषों से उत्तम है, वह, 'ईश्वर' है। उस (ईश्वर) में सर्वज्ञता का बीज (कारण) अर्थात् ज्ञान निरतिशय है। (वह ईश्वर सबके) पूर्वजों के भी गुरु हैं, (सर्ग के आदि में उत्पन्न होने के कारण सबका गुरु ब्रह्मा को माना जाता है, परन्तु काल से अवच्छेद है। गीता ८:१७।।) क्योंकि उसका काल से अवच्छेद नहीं है। उस ईश्वर का वाचक (नाम) प्रणव (ॐ) है। उस नाम का जप उसके अर्थ स्वरूप परमेश्वर का चिन्तन (करना चाहिए) उक्त साधन से (ईश्वर के नाम जप से) विघ्नों का अभाव और अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान भी हो जाता है।"

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता के १० वें अध्याय के २५ वें श्लोक में नाम जप को अपना

स्वरूप बताते हुए, उसे सर्वोत्तम यज्ञ की संज्ञा देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है-

"यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि"।। १०:२५

महाभारत में भी हरिनाम के जप को सर्वश्रेष्ठ धर्म की संज्ञा देते हुए कहा है-

जपस्तु,सर्वाधर्मेभ्यः परमो धर्म उच्यते।

अहिंसया च भूतानां जपयज्ञः प्रवर्तते।।

(समस्त धर्मों में जप सर्वश्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि जप-यज्ञ, बिना किसी हिंसा के पूरा होता है।)

यहुदियों के 'सृष्ट्युत्पत्ति' प्रकरण में भी कहा है- "समुद्र के ऊपरी तल पर अन्धकार था, और ईश्वर की आत्मा जलों पर विचरण कर रही थी। शब्द के द्वारा उसने समुद्र को अन्तरिक्ष से विभक्त किया, जिसके परिणाम स्वरूप अब यहाँ दो समुद्र हैं , एक पार्थिव जो अंतरिक्ष के नीचे है, दूसरा द्युलोकीय जो अंतरिक्ष के ऊपर है।"

ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ बाइबिल में भी (जैसे गीता में ॐ को ईश्वर का प्रतीक माना है) 'शब्द' ही को परमात्मा की संज्ञा दी गई है। सेंट जॉन १:१ से ४ में कहा है-

(१) आदि में वचन (शब्द) था, और वचन (शब्द) परमेश्वर के साथ था, और वचन (शब्द) परमेश्वर था।

(२) यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

(३) सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ, उसमें कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

(४) उस (शब्द) में जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।

मनुस्मृति में भी जप यज्ञ की महिमा का बखान करते हुए, उसे कर्मकाण्ड वाले यज्ञों की अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ और आत्मा का कल्याण करने वाला कहा है-

विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टे दर्शाभर्गुणैः।

उपांशु स्याच्छतगुणः सहस्रो मानसः स्मृतः।।

ये पाकयज्ञाश्चत्वारोविधि यज्ञ समन्विताः।

सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति शोडशीम।।

-मनु स्मृति।

(दर्श पूर्णमास रूप कर्म यज्ञों की अपेक्षा जप यज्ञ दस गुणा श्रेष्ठहै। उपांशु-जप सौ गुणा और मानस जप सहस्त्र गुणा श्रेष्ठ होता है। कर्म यज्ञ के चार पाक-यज्ञ हैं। वे जप-यज्ञ के सोहलवें अंश के बराबर भी नहीं हैं।)

ईश्वर के नाम जप से जो दिव्य आनन्द, साधक को निरन्तर आता है, उसे संतों ने अपनी भाषा में 'नाम खुमारी' की संज्ञा दी है। इस संबंध में संत सद्गुरु श्री नानक देव जी महाराज ने कहा है-

भाँग धतूरा नानका उतर जाय परभात।
'नाम खुमारी' नानका चढ़ि रहे दिन-रात।।

संत श्री कबीर दास जी महाराज ने भी कहा है-

'नाम अमल' उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,
'नाम अमल' दिन बढ़े सवायो।।

अतः जब तक यह नाम खुमारी सम्पूर्ण विश्व को आनन्दित नहीं कर देती, शांति केवल कल्पना ही रहेगी।

गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शक्तिपात-दीक्षा हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य-विज्ञान है। यह गुरुओं द्वारा दी जाने वाली गुप्त दीक्षा है, जो आदि काल से गुरु-शिष्य परम्परा में चली आ रही है। गुरु, शक्तिपात द्वारा साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं। हमारे शास्त्रों में इसे जगत् जननी कहा है। जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिंड में है। यह दिव्य ज्ञान मात्र हमारे ऋषियों की ही देन है।

देहस्थाः सर्व्व विद्याश्च देहस्थाःसर्व्व देवताः।
देहस्थाः सर्व्व तीर्थानि गुरु वाक्येन लभ्यते।।
ब्रह्माण्ड लक्षणं सर्व्व देह मध्ये व्यवस्थितम्।।

-ज्ञान संकलिनी तन्त्र

सागर महि बूंद, बूंद महि सागर।
कवणु बुझै विधि जाणै।।

-श्री नानक देव जी।।

बूँद समानी समुंद में, यह जानै सब कोय।

समुंद समाना बूँद में, बूझै विरला कोय।। -कबीरदास जी

हमारे ऋषियों ने मनुष्य शरीर को विराट स्वरूप प्रमाणित करके, उसके अन्दर सम्पूर्ण सृष्टि को देखा। इसके जन्मदाता परमेश्वर का स्थान सहस्त्रार में और उसकी पराशक्ति (कुंडलिनी) का स्थान मूलाधार के पास है। इन्हीं दोनों के कारण ही सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई। साधक की कुंडलिनी चेतन होकर सहस्त्रार में लय हो जाती है, उसी को मोक्ष की संज्ञा दी गई है।

इसी सिद्धान्त के अनुसार संत सद्गुरु, शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत करके सहस्त्रार मे पहुँचाते हैं। शक्तिपात से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब क्या होता है, इस संबंध में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन यदा जाग्रति कुण्डली।

तदा सर्वानी पद्मानी भिदयन्ति ग्रन्थयोऽपिच।।

-स्वात्माराम हठयोग प्रदिपिका

(जब गुरुकृपा से सुप्त कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का वेधन(भेदन) होता है।)

जाग्रत हुई कुण्डलिनी, सुषुम्ना नाड़ी में से होकर ऊर्ध्व गमन करने लगती है। वह छह चक्रों-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र और तीनों ग्रन्थियों-ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि एवं रुद्रग्रंथि का वेधन(भेदन) करती है, और अन्त में समाधि स्थिति, जो कि समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। परन्तु विश्व का कोई भी दर्शन क्रियात्मक ढंग से मोक्ष प्राप्ति का पथ प्रदर्शित नहीं करता। यह अद्वितीय दिव्य ज्ञान तो मात्र सनातन धर्म, वेदान्त दर्शन की ही देन है। विश्व के बाकी धर्म बौद्धिक तर्क एवं शब्दजाल के जंजाल में फँसाकर ईश्वर की सत्ता का आभास दिलाने का प्रयास मात्र करते हैं। वे कोई प्रमाण नहीं दे सकते।

दीक्षा प्राप्त किए बिना मनुष्य को उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति हो ही नहीं सकती। इस सिद्धान्त को ईसाई दर्शन भी पूर्णरूप से स्वीकार करता है। गुरु से दीक्षा लेकर यीशु द्विज बना था। इसीलिए उसने इजराइलियों के धर्मगुरु, निकुदेमुस को कहा- "मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

परन्तु उस समय के धर्मान्ध और क्रूर धर्मगुरुओं ने उस निर्दोष संत का वध मात्र इसीलिए करवा दिया कि उनके पापों का भेद खुल न जाए। ईश्वर ने जो पथ प्रदर्शक यहूदियों को दिया, उसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार वे गहन अंधकार में फँसे रहे। जब यीशु ने देखा कि इन लोगों में किसी प्रकार का सुधार आने की संभावना नहीं है, तब उसे भविष्यवाणी करनी पड़ी कि "मैं पिता से प्रार्थना करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।"

यह बात इतनी गहन है कि आज ईसाई इसका अर्थ ही नहीं समझते हैं। जिस सहायक के भेजने की बात कही गई है, वह सर्वसिद्ध होगा, और वह शक्तिपात दीक्षा से उनकी कुंडलिनी जाग्रत करके, उन्हें आत्म साक्षात्कार करवायेगा। इस प्रकार सर्वदा साथ रहने की बात सत्य प्रमाणित होगी। उसने स्वर्ग जाने से पहले (मृत्यु के बाद चालीसवें दिन) अपने शिष्यों से मिलकर उन्हें आज्ञा दी "यरुशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो। क्योंकि जॉन ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों बाद तुम पवित्रात्मा से (में) बपतिस्मा पाओगे।"

बाइबिल में जिस आनन्द की बात वर्णित है, वह आनन्द पश्चिम को उस सहायक द्वारा शक्तिपात-दीक्षा (Baptized with the Holy Ghost) देने के बाद आने लगेगा। उस आनन्द की खुमारी के कारण वे साधक हर समय झूमते रहेंगे, और लोग समझेंगे कि उन्होंने शराब पी रखी है। हमारे संतों ने जिसे नाम खुमारी की संज्ञा दी है, उसी नाम खुमारी के कारण वे झूमेंगे। ज्ञान के अभाव में लोगों को भ्रम हो जाएगा कि उन्होंने पी रखी है।

इसका वर्णन करते हुए "प्रेरितों का काम" २:१४ से १८ में लिखा है "पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा कि हे यहूदियों और हे यरुशलेम के सब रहने वालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो ,ये नशे में है, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो 'योएल' भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है। परमेश्वर कहता है कि अंत के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये (वृद्ध) स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपनी आत्मा में से उड़ेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।"

बाइबिल के असंख्य संदर्भ ऐसे हैं जिन्हें समझने के लिए अन्तर्मुखी होना पड़ेगा, तभी उनका सही अर्थ समझ में आवेगा। प्रभु ने मुझे युग परिवर्तन के इस संधिकाल में सबसे कठिन

कार्य सौंपा है। ऐसा नहीं है कि कार्य की कठिनाई के बारे में, मैं अँधकार में हूँ। मुझे उस परमसत्ता ने सब कुछ दिखा और समझा दिया है। अंतिम नतीजा वही होगा, जो हर युग में होता आया है।

प्रारम्भ में जब प्रथम दीपक जलता है तो ऐसा लगता है कि टिमटिमाता दीपक विश्व के अँधकार को, जो कि ठोस बनकर जम गया है, कैसे दूर कर सकेगा? परन्तु जब दीपक से दीपक जलने लगता है, तो जलने वाले दीपकों की संख्या में जिस तेज गति से निरन्तर वृद्धि होती है, उससे संसार में अँधेरे का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

सेंट जॉन एक अभूतपूर्व दिव्य व्यक्ति था। मैं उसके जीवन को यीशु से कम महत्त्व का नहीं मानता। उस महान् आत्मा ने भी तो अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाकर अपना सिर कटवा लिया था। हेरोदेश उस समय चौथाई देश का राजा था। उसने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास को रख लिया था। सेंट जॉन ने कहा कि उसने यह पाप किया है। इस पर उसे जेल में डाल दिया और बाद में उसका सिर कटवा दिया था। इस प्रकार उसने भी तो यीशु से पहले धर्म के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी थी।

उसके प्रकाशित वाक्य में जो कुछ लिखा है, उसे आज का ईसाई जगत् समझ ही नहीं सकता। बाइबिल का यह सम्पूर्ण आखिरी भाग पूर्णरूप से प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। अतः अन्तरात्मा की अभिवृद्धि से ही समझा जा सकता है। मैं प्रकाशित वाक्य के कुछ संदर्भ नीचे लिख रहा हूँ , क्या इस पवित्र ग्रन्थ के मानने वाले, इनका अर्थ समझने में सक्षम हैं?

प्रकाशित वाक्य २:१६ एवं १७ "सो मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा। १७. जिसके कान हो, वह सुन ले, आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाए उसको मैं गुप्त मन्ना से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर दूँगा और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा।"

६९.

'दासोऽहम' का 'दा' नष्ट होना ही जीवन का उद्देश्य।

मनुष्य माया के प्रभाव के कारण, इस समय अपने स्वरूप को पूर्ण रूप से भूल चुका है। माया ने मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष आदि वृत्तियों के चक्कर में फंसाकर जितना असहाय इस समय बनाया हुआ है, उतना पहले कभी देखने में नहीं आया। प्रकृति के उत्थान-पतन के अटल सिद्धांत के कारण हमारे देश की आध्यात्मिक दृष्टि से जितनी गिरावट, आज हमें देखने को मिल रही है, वैसी कभी नहीं देखी गई। हम गिरावट के आखिरी बिन्दु को छू चुके हैं। अब इससे नीचे जाने की जगह ही नहीं बची है। सालों की पराधीनता ने हमारे दार्शनिक विचारों की दिशा ही बदल दी है। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार 'इस समय अन्धकार, भारत में ठोस बनकर जम चुका है।' उन्ही के शब्दों में-'यह कई कारणों से है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृत्तियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तामस ठोस बनकर जम गया है। कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास, विवेकानन्द-इनमें से कोई भी साधारण आदमी नहीं था, लेकिन इनके होते हुए भी तामस् बना हुआ है।' इस सम्बन्ध में 'श्रीमाँ' ने भी कहा था-'भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं, और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जायेगा। महर्षि ने एक जगह लिखा है कि हमने चिन्तन करने का तरीका भी पश्चिम से उधार ले रखा है। ऐसी दयनीय दासवृत्ति के रहते, हम हमारे दर्शन की सही स्थिति, विश्व के सामने प्रस्तुत कर ही नहीं सकते। पश्चिम के तथाकथित दार्शनिक कहे जाने वाले लोग, हमारे दर्शन की मनमाने ढंग से व्याख्या करके खिल्ली उड़ा रहे हैं और हम, असलियत प्रमाणित करने का कभी विचार ही नहीं करते। इसके विपरीत पूर्ण सत्य की अनदेखी करके, उन लोगों के प्रयास के प्रति अपनी सहमति प्रदान करते हैं। इस प्रकार की दासवृत्ति का उदाहरण विश्व में ढूँढने पर भी मिलना कठिन है।

मुझे हमारी दासवृत्ति का चिन्तन करते समय, मेरे एक आध्यात्मिक मित्र द्वारा कही हुई बात याद आ गई। प्रसंगवश मैं उसका विवरण देना ठीक समझता हूँ, क्योंकि हमारे आध्यात्मिक जगत् में इस समय उसी वृत्ति का सबसे अधिक प्रभाव है। मेरे मित्र ने जिस उदाहरण से उपदेश देकर समझाने का प्रयास किया, वह इस प्रकार है -एक व्यक्ति ने मंत्र दीक्षा में किसी संन्यासी से 'सोऽहम' शब्द की दीक्षा प्राप्त की, और वह उसका जप करने

लगा। थोड़े दिनों बाद एक दूसरा संन्यासी उसके घर आया और उससे पूछा, "बेटा, ईश्वर का नाम जप करते हो क्या?"

उसने कहा, "महाराज! मुझे एक संत ने 'सोऽहम' का जप करने का आदेश दिया था, सो उसी को जप रहा हूँ।" संन्यासी बोले, "बेटे! यह मंत्र तो पूर्ण नहीं है। इसके आगे एक 'दा' लगाकर जप करो।"

उसने 'दासोऽहम' का जप प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों में पहला संन्यासी पुनः आया और पूछा कि क्या वह मंत्र जप कर रहा है? उसने कहा, "महाराज! एक संन्यासी ने मुझे बताया कि मैं जिस मंत्र का जप कर रहा हूँ, वह पूर्ण नहीं है। अतः उनके आदेश के अनुसार 'दा' आगे लगाकर 'दासोऽहम' का जप कर रहा हूँ।" संन्यासी बोले, "यह ठीक नहीं हुआ। खैर! इसके आगे एक 'स' और लगाकर जपो।" अत: वह व्यक्ति 'सदासोऽहम' का जप करने लगा।

फिर जब दूसरे संन्यासी ने पुनः आकर जप के बारे में जानकारी ली तो उसने कहा, "महाराज! प्रथम दीक्षा देने वाले बाबा जी ने कहा कि इससे मुझे मुक्ति संभव नहीं। अतः उनके आदेशानुसार एक 'स' और लगाकर 'सदासोऽहम' का जप कर रहा हूँ।"

संन्यासी ने कहा, "बेटा! तुम फिर भ्रम में फँस गये। खैर! कोई बात नहीं; इसके आगे एक 'दा' और लगा लो।" अतः वह उस दूसरे संत के आदेशानुसार एक 'दा' और लगाकर 'दासदासोऽहम' का जप करने लगा।

इस प्रकार आज हमारे देश में दासों के भी दास बनने की वृत्ति का प्रभाव चल रहा है। ऐसी स्थिति में हम यह कल्पना करें कि हम २१वीं सदी में पुनः हमारे स्वर्ण-युग में प्रवेश कर जाएंगे तो यह मात्र मृगमरीचिका ही होगी। हमें दासवृत्ति का उन्मूलन राष्ट्रीय स्तर पर करना ही होगा, तभी सफलता संभव है। कैसी विडम्बना है कि अवतारवाद का जनक- 'सनातन धर्म', पैगम्बरवाद के सामने बौना नजर आ रहा है। पैगम्बरवादी दर्शन ही 'दासदासोऽहम' की वृत्ति का दर्शन है। कैसी उल्टी गंगा बह रही है! यह हमारी गिरावट की पराकाष्ठा है और नीचे जाने को अब जगह ही नहीं है।

कालचक्र अबाध गति से चलता है; प्रकृति के इस अटल सिद्धान्त के अनुसार हमारा उर्ध्व-गमन प्रारम्भ हो चुका है। प्रकृति के अटल सिद्धांत के अनुसार संसार की कोई भी शक्ति प्रगति के शिखर तक पहुँचने में, हमारे रास्ते में कोई बाधा नहीं खड़ी कर सकती। हमारे

सनातन-धर्म के उज्ज्वल भविष्य के बारे में, हमारे अनेक संत भविष्यवाणियाँ कर गये हैं परन्तु सालों की दासता ने हमारा स्वाभिमान पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया है। हमें, हमारे किसी भी महान् संत की भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं हो रहा है। इसके विपरीत पश्चिम का एक साधारण व्यक्ति कुछ भी कह दे, हम आँख बन्द करके उसे स्वीकार कर लेते हैं, इसीलिए मुझे विवश होकर पश्चिम के चन्द भविष्यदृष्टाओं की भविष्यवाणियों का विवरण लिखना पड़ रहा है। हमारे अनेक संतों ने इनसे कहीं अधिक स्पष्ट चित्र हमारे भविष्य का खींचा है। हमारी मजबूरी देखिये कि मैं उनका वर्णन इसलिए नहीं कर पा रहा हूँ, क्योंकि हमारी मानसिकता उन्हें सत्य मानने की है ही नहीं। विश्व भर के भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर से भविष्यवाणी की है कि २०वीं सदी के अन्त से पहले भारत धर्म और कर्म के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करेगा।

चंद भविष्यदृष्टाओं ने भारत के बारे में जो भविष्यवाणियाँ की हैं, उनका विवरण संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है -

(१) इंगलैंड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् १९२५ में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है कि 'सन् २००० से पूर्व ही, विश्व के महाविनाश के बाद एक नई सभ्यता सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञान-क्रांति ला देगा।'

(२) भविष्यवक्ता श्री वेजीलेटिन के अनुसार २०वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विश्व में अतिवृष्टि, अनावृष्टि उल्कापात, विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोप देखने को मिलेंगे। परन्तु बाद में भारत से उत्पन्न हुई शांति, भ्रातृभाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में देश, प्रांत और जाति की सीमा तोड़कर विश्वभर में अमन व चैन उत्पन्न करेगी।

(३) अमरीका की महिला भविष्यवक्ता जीन डिक्सन के अनुसार २०वीं सदी के अन्त से पहले विश्व में घोर नर-संहार होगा। युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवतः भारत के एक ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।

(४) अमरीका के श्री एण्डरसन के अनुसार २० वीं सदी के अन्त से पहले विश्व में भारी नर संहार होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति एक मानव, एक भाषा, एक झंडा की रुपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् १९९९ तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति से भर देगा।

(५) हालैंड के भविष्यदृष्टा श्री गेरार्ड क्राइसे के अनुसार २०वीं सदी के अन्त से पहले भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरुष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बाँध देगा व हिंसा, फूट, दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिट जावेगा।

(६) अमरीका के भविष्यवक्ता श्री चार्ल्स क्लार्क के अनुसार २० वीं सदी के अन्त से पहले भारत विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा, परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा। यह धार्मिक क्रांति सन् २००० से पहले-पहले सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर लेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

(७) हंगरी की महिला ज्योतिषी बोरिस्का के अनुसार सन् २००० से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों, हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्गुणों का विकास, एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरुप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा व इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयाई बनकर भौतिकवाद को अध्यात्मवाद में बदल देंगे।

(८) फ्रांस के डॉ जूलर्वन के अनुसार सन् १९९० के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झुकेंगे। सन् २००० तक विश्व की आबादी ६४० करोड़ के आसपास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी-तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान् आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में आत्मशक्ति से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

(९) फ्रंास के श्री नास्त्रोदमस के अनुसार विश्वभर में सैनिक क्रांतियों के बाद, थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाएंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता २० वीं सदी के अंत और २१ वीं सदी के शुरू में, किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातावृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बाँध देगा।

(१०) इजराइल के प्रोफेसर हरारे के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् २००० से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़ें मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उसके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों का होगा, जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होंगे।

(११) नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार सन् १९७१ के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

इसी संदर्भ में महर्षि श्री अरविन्द ने जो भविष्यवाणी की है, वह सभी भविष्यवाणियों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। श्री अरविंद की भविष्यवाणी गीता के निम्नलिखित श्लोकों पर आधारित है

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

हे भारत! जब-जब धर्म की हानि (और) अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने स्वरूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ। साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए और दूषित-कर्म करने वालों का नाश करने के लिए (तथा) धर्म-स्थापन करने के लिए, युग-युग में प्रकट होता हूँ।

महर्षि श्री अरविन्द ने इसी सदर्भ में कहा है- '२४ नवम्बर १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके, विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।' श्री अरविन्द के अनुसार मानवरूप में अवतरित वह परमसत्य अपने त्वरित क्रमिक विकास के साथ १९९३ के अन्त तक सम्पूर्ण विश्व के सामने प्रकट हो जावेगा।

इस समय विश्व में 'दासदासोऽहम' की वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य है। पैगम्बर प्रभु के दास और उसके अनुयाई पैगम्बर के दास। सोऽहम् के सिद्धांत का जन्मदाता तो एक मात्र सनातन धर्म ही है। कैसी उल्टी गंगा बह रही है! विश्व भर में आध्यात्मिक ज्ञान अपनी गिरावट की पराकाष्ठ तक पहुँच गया है। अब नीचे जाने को जगह ही नहीं बची है। अतः अब अन्धकार के खत्म होने का क्रम प्रारंभ ही नहीं हुआ है बल्कि उसका उषाकाल है।

सूर्य भगवान् अर्थात् सविता देव उदय होने ही वाले हैं, जिसका वर्णन वेदों के सर्वोत्तम गायत्री मंत्र में किया गया है अर्थात् दिव्य ज्ञान का प्रकाश। अतः अब हमें 'दासदासोऽहम्' की वृत्ति के स्थान पर अपनी मूलभूत 'नाथवृत्ति' का दिव्य प्रकाश विश्व में फैलाना ही होगा। इसके बिना विश्व-शांति मात्र एक कल्पना का ही विषय रहेगा। आज हम जिस दास-वृत्ति के सहारे जीवन बिता रहे हैं, विश्व उसे कभी स्वीकार नहीं करेगा। हमें अपने असली स्वरूप को पहचानना ही पड़ेगा। यह समय की माँग है, अर्थात् प्रभु की पूर्व निश्चित व्यवस्था है। अब हमारे उत्थान को विश्व की कोई भी शक्ति प्रभावित नहीं कर सकेगी।

२०वीं सदी के इस आखिरी दशक में, विश्व में जो परिवर्तन का तूफान आया है उससे कई संस्कृतियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। विभिन्न जातियों और धर्मों पर विश्व में जो नया संकीर्ण ध्रुवीकरण हो रहा है, वही विश्व के महाविनाश का कारण बन सकता है। इस दिव्य ज्ञान के सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी की है- 'हमारे ऋषियों ने जिस दिव्य ज्ञान को प्राप्त किया था, वह पुनः लौटकर आ रहा है, हमें इस प्रसाद को सम्पूर्ण विश्व को बाँटना है।'

संसार में शांति स्थापित करने के सभी प्रयास असफल हो चुके हैं। अतः सम्पूर्ण विश्व की आँखें, भारत की ओर निहार रही हैं क्योंकि उनका अमोघ माना जाने वाला 'धनबल' और 'जनबल', शांति के प्रयासों में पूर्णरूप से असफल हो चुका है। अब तीसरे बल अर्थात् 'मनबल' का ही परीक्षण बाकी बचा है और भारत अनादिकाल से अपने मनबल रूपी अमोघ अस्त्र से विजय प्राप्त करता आ रहा है। भारत सम्पूर्ण मानव-समाज की असाध्य बीमारी का इलाज करेगा; उसका वर्णन करते हुए महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है - 'क्रम-विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जायेगा और उन समस्याओं को हल करना प्रारंभ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना-विचारना शुरू किया था। यह अभी तक एक व्यक्तिगत आशा विचार और आदर्श मात्र है, जिसने भारत और पश्चिम में दूरदर्शी विचारकों को वश में करना शुरू कर दिया है। इस मार्ग की कठिनाइयाँ प्रयास के किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा बहुत अधिक जबरदस्त हैं, परन्तु कठिनाइयाँ जीती जाने के लिए ही बनी थी, और यदि दिव्य परम-इच्छाशक्ति का अस्तित्व है तो वे दूर होंगी ही। यहाँ भी, यदि इस विकास को होना है तो चूंकि यह आत्मा और आन्तरिक चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगी, इसका प्रारंभ भारत ही कर सकता है, और यद्यपि इसका

क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।'

यह कार्य कितना कठिन है, उसका वर्णन महर्षि ने ऊपर बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। अगर आम भारतीय के दिल में नाथवृत्ति जाग्रत हो जाय तो कार्य सम्पूर्ण सफलता के साथ अवश्य पूर्ण होगा। सालों की पराधीनता ने हमें भारी आघात पहुँचाया है। आजादी के बाद भी देश की जो स्थिति है, उससे आम भारतीय की निराशा कुछ बढ़ी ही है, कम नहीं हुई, परन्तु यह अवतारों की धरती है। प्रकृति के उत्थान-पतन के सिद्धांत के कारण आज हम कमजोर जरूर दिख रहे हैं, परन्तु २१वीं सदी के प्रारंभ के पहले ही हम हमारे स्वर्णयुग की सीमा में पुनः प्रवेश कर जावेंगे।

इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द की निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं :

'भगवान् की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्त्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय-ही-विजय होगी। तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं। तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से लौटकर आ रहा है, उसे हमें सारे संसार को देना है।'

आजादी प्राप्त करने के बाद श्री अरविन्द ने कहा था 'हम केवल सरकार का रूप बदलने के लिए तैयारी नहीं कर रहे हैं; हम एक राष्ट्र को गढ़ना चाहते हैं।' राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग है। हम केवल राजनीति, सामाजिक संगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन, साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहते। हमारे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है 'धर्म' और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं। जीवन के कुछ महान् नियम हैं; मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म-विद्या का एक भंडार है। ये सब तत्त्व हमारे 'सनातन धर्म' के अन्दर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है। विदेशी प्रभाव के कारण भारत अपने धर्म को खो बैठा है। सनातन धर्म-सिद्धांतों का, धार्मिक परिपाटियों का एक समूह नहीं है। जब तक उसे जीवन में न उतारा जाय, हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज के अन्दर-चाहे वह राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या राष्ट्रीय कूटनीति-मूर्त रूप से न लाया जाय, तब तक उसकी सफलता नहीं होगी। "भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श

रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।"

योग के द्वारा सच्ची-स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करने की बात हमें तब तक समझ में नहीं आ सकती, जब तक हम क्रियात्मक ढंग से उसका वास्तविक आनन्द ले नहीं लेते। भारतीय योग दर्शन उस परमतत्त्व से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का क्रियात्मक पथ बताता है। उस परमसत्ता में ही मात्र ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। अभी उसके पास असीम ज्ञान और विज्ञान विश्व में प्रकट करने को पड़ा है।

श्री चार्ल्स क्लार्क का कथन है कि भारत विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा, अथवा हंगरी की महिला भविष्यवक्ता बोरिस्का का कथन है कि वह भारत का अलौकिक आध्यात्मिक व्यक्ति भौतिकवाद को अध्यात्मवाद में बदल देगा अथवा नार्वे के के.बी. आनन्दाचार्य की यह भविष्यवाणी है कि सम्पूर्ण विश्व को भारत का विज्ञान ही मान्य होगा- किसी हिन्दू संत की भविष्यवाणियाँ नहीं हैं कि उस पर अपने ज्ञान की बड़ाई करने का दोष लग सके। सभी भविष्यवक्ता गैर हिन्दू हैं।

७०.
सत्य का संहारक युग

कलियुग के गुणधर्म के कारण आज विश्व भर के अध्यात्म-जगत् से सत्य प्रायः लोप हो गया है। आज विश्व के प्रायः सभी धर्मों के धर्माचार्यों की कथनी और करनी में भारी अंतर है। यही कारण है, आज विश्व भर में अधिकतर लोगों का धर्म पर से विश्वास उठ चुका है। जैसा धार्मिक होने का हम ढिंढोरा पीट रहे हैं, प्रायः विश्व के सभी धर्मों के धर्माचार्य भी वैसा ही कर रहे हैं। आज संसार के अन्दर जितना शोर धार्मिक जगत् के लोग मचा रहे हैं, वैसा पहले कभी सुनने में नहीं आया। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रायः रोज सुबह-शाम विश्वास करो, विश्वास करो, की ध्वनि से वायुमंडल गूँज उठता है। इसके विपरीत विश्व में अशान्ति निरंतर बढ़ रही है। विश्व की यह अशान्ति हमें धर्माचार्यों पर, उनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगाने को विवश कर रही है। आखिर परिणाम न मिलने के कारण का पता लगाये बिना तो समस्या का समाधान नहीं होगा।

हम इतिहास पर नजर डालें तो देखते हैं कि विश्व भर में असंख्य साधु-संतों और सच्चे लोगों को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गई। धर्म की गिरावट यहाँ तक हो गई कि सच्चे लोगों के प्राण तक ले लिए गए। परन्तु सच्चे लोगों का साहस देखो, मृत्यु को स्वीकार कर लिया, परन्तु सत्य पर अडिग रहे। दूसरी तरफ इस युग के लोगों की गिरावट पराकाष्ठा तक पहुँच गई। सत्य कहने पर जिसकी हत्या करते हैं, मरने के बाद उन्हीं हत्यारों के वंशज उसको पूजते हैं। महान् आत्मा यीशु ने उस समय के धर्माचार्यों को कहा है- 'हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों! तुम पर हाय! तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें संवारते हो और धर्मियों की कब्रें बनाते हो।'

कलियुग के गुणधर्म का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर, प्रायः एक जैसा ही पड़ा है। क्रूर, निर्दयी, और स्वार्थी वृत्तियाँ इतनी प्रबल हो गई हैं कि मानवता को कुचलते हुए, किसी को तनिक भी दया नहीं आती। कोई भी संत पुरुष विश्व में प्रकट होता है तो उसका पग-पग पर अकारण विरोध होता है। सभी दुष्टवृत्तियाँ मिलकर उसे कुचलने का प्रयास करती हैं; उनका वश चलने पर उस साधु पुरुष की हत्या तक कर दी जाती है। वही पुरुष जब ब्रह्मलीन हो जाता है तो वे वृत्तियाँ गिरगिट की तरह रंग बदलने में कुछ भी संकोच नहीं करतीं। इस प्रकार उसकी त्याग, तपस्या और बलिदान का भरपूर लाभ उठाती हैं और जो लोग कठिन समय में उस संत

का साथ देते हैं, उन्हें दुत्कार कर दूर भगा देतीं हैं।

इस प्रकार उस महान् आत्मा के नाम से जो मिशन चलता है, उस पर पूर्ण रूप से अवसरवादी लोगों का कब्जा हो जाता है। इस प्रकार असंख्य संतों के नाम से चलने वाले मिशनों पर पूर्ण रूप से अवसरवादी लोगों का जमावड़ा है। मुझे कुछ दिन पूर्व ईसाई मिशन की प्रचार सामग्री की एक पुस्तक में कुछ पढ़ने को मिला। मुझे उसे पढ़कर भारी वेदना हुई। ऐसे सुन्दर ढंग से गिरजाघरों में स्वेच्छाचारी जीवन बिताने की छूट ले ली है, जिसे पढ़कर मैं हैरान रह गया। अघोषित चार्वाकवाद पर पर्दा डालते हुए कहा है- 'परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।' इसे पढ़ते ही १ कुरिन्तियों के ५:१ एवं २ बात अचानक याद आ गई। प्रायः सभी धर्मों के मिशनों पर कलियुग का प्रभाव कमोबेश एक जैसा ही पड़ा है। मैं क्योंकि कर्त्ता मात्र ईश्वर को ही मानता हूँ, संसार के लोग तो उसकी कठपुतली हैं, उन्हें भरमाते हुए वह परमसत्ता अपनी इच्छानुसार नचा रही है, अतः मैं किसी धर्म के धर्माचार्यों को दोष नहीं देता हूँ। वैसे अनेक पवित्र संत प्रकट हुए हैं परन्तु मैं, मात्र दो ऐसे महान् आत्माओं के जीवनकाल का वर्णन करना चाहूँगा, जिन्हें आज सम्पूर्ण विश्व श्रद्धा से पूजता है। वे हैं- महान् आत्मा यीशु मसीह और स्वामी विवेकानंद जी।

महान् आत्मा यीशु ने जिस प्रकार नीली छतरी के नीचे अपना सम्पूर्ण जीवन कष्ट और यातनाएँ सहन करते हुए बिताया, ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं। उसने मानवता में जो चमत्कारपूर्ण कार्य कर दिखाये, वैसे कार्यों को करने की आज का विज्ञान कल्पना तक नहीं कर सकता परन्तु संसार के क्रूर लोगों ने जो प्रतिफल दिया, वह जग जाहिर है। उसका दोष इतना ही था कि उसने सच्ची बात कह दी कि 'मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। ईश्वर की आज्ञा से ही मैंने ये चमत्कार पूर्ण कार्य किए। अगर मेरी बात असत्य है तो संसार का कोई धर्म गुरु, ऐसे कार्य करके दिखावे।' एकमात्र इस दोष के कारण, उस समय के धर्माचार्यों ने उस निर्दोष पवित्रात्मा को मृत्यु दण्ड दिलवा दिया। और आज, उन्हीं धर्माचार्यों के वंशज कण्ठ फाड़-फाड़कर, उसे ईश्वर का पुत्र स्वीकार कर रहे हैं। क्या एक ही पाप की दो सजा हो सकती हैं? ईश्वर के घर न देर है और न अन्धेर; पाप का घड़ा भरने पर फूटता ही है।

यीशु मसीह के उस समय के धर्माचार्यों के साथ कैसे मधुर संबंध थे, उसकी सच्ची तस्वीर बाइबिल के सेंट मैथ्यु के २३:१३से ३९ को देखने से मिलती है- 'हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों! तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो, न

तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो।'

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिए सारे जल और थल में फिरते हो, और वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।

हे अन्धे अगुवा, तुम पर हाय! जो कहते हो कि यदि कोई मंदिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मंदिर के सोने की सौंगध खाए तो उससे बन्ध जाएगा। हे मूर्खों और अन्धों, कौन बड़ा है सोना या वह मंदिर जिससे सोना पवित्र होता है। फिर कहते हो यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उसकी शपथ खाएगा तो बंध जाएगा। हे अन्धों, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी, जिससे भेंट पवित्र होती है। इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी और जो उस पर है उसकी भी शपथ खाता है। और जो मंदिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उसमें रहने वाले की भी शपथ खाता है। और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की भी शपथ खाता है।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोदीने, सौंफ और जीरे का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गंभीर बातों की अर्थात् न्याय, दया और विश्वास को छोड़ दिया है। चाहिए तो यह था कि उन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। हे अंधे अगुओं, तुम मच्छर को तो छानते हो और ऊँट को निगल जाते हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों! तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो, परन्तु वे भीतर असंयम से भरे हुए हैं। हे अन्धे फरीसो! पहले कटोरे और थाली को भीतर से माँज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों! तुम पर हाय, तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हुई हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हो।

हे कपटी शास्त्रियों और फरिसियो! तुम पर हाय, तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें सँवारते हो और धर्मियों की कब्रें बनाते हो। और कहते हो कि यदि हम अपने बाप-दादों के दिनों में होते तो भविष्यवक्ताओं की हत्या में उनके साझी न होते। इससे तो तुम अपने पर, आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यवक्ताओं के घातकों की सन्तान हो। सो तुम अपने बाप-दादों

के पाप का घड़ा भर दो। हे साँपो, हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे? इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ता भेजता हूँ, और तुम उनमें से कितनों को मार डालोगे और क्रॉस पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। जिससे धर्मी हाबील से लेकर विरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुमने मंदिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेगी।

हे यरुशलेम, हे यरुशलेम तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थर वाह कहता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पँखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसी ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा। देखो! तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।'

स्वामी श्री विवेकानंद जी की ही देन है, जो सम्पूर्ण विश्व आज हमारे वैदिक दर्शन की ओर, तेजी से झुक रहा है। स्वामी जी ने शिकागो धर्म-महासभा में सन् १८९३ में वैदिक दर्शन की विजय पताका फहराई थी। आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में, स्वामी जी का नाम बहुत ही श्रद्धा से लिया जाता है। परन्तु स्वामी जी को अपने जीवनकाल में यीशु मसीह की तरह, अपने देश के लोगों से सहयोग और प्रेम नहीं मिला। इस तथ्य का प्रमाण स्वामी जी के अमेरिका से लिखे पत्र देते हैं, अतः मैं उन पत्रों को स्वामी जी की भाषा में ही यथावत लिख रहा हूँ। इन पत्रों से उस समय के आध्यात्मिक जगत् में कार्य करने वाले लोगों की वस्तु स्थिति का भान होता है।

दिनांक २८ दिसम्बर १८९३ को शिकागो से लिखा पत्र-

'भारत के लाख-लाख अनाथों के लिए कितने लोग रोते हैं? हे भगवान्! क्या हम मनुष्य हैं? तुम लोगों के घरों के चतुर्दिक जो पशुवत् भंगी डोम हैं, उनकी उन्नति के लिए क्या कर रहे हो? उनके मुँह में एक ग्रास अन्न देने के लिए क्या करते हो? बताओ न! उन्हें छूते भी नहीं और उन्हें दूर-दूर कहकर भगा देते हो। क्या हम मनुष्य हैं? वे हजारों साधु-ब्राह्मण भारत की नीच, दलित, दरिद्र जनता के लिए क्या कर रहे हैं? 'मत छू'-'मत छू' बस यही रट लगाते हैं। उनके हाथों हमारा सनातन धर्म कैसे तुच्छ और भ्रष्ट हो गया है! अब हमारा धर्म किसमें रह

गया है? केवल छुआछूत में- 'मुझे छूओ नहीं' 'छूओ नहीं।' (-द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-५)

दिनांक २४ जनवरी १८९४ को शिकागो से लिखा पत्र-

'जहाँ तक अमेरिकी महिलाओं का प्रश्न है, उनकी कृपा के लिए, मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करने में असमर्थ हूँ। भगवान् उनका भला करे। इस देश के प्रत्येक आन्दोलन की जान महिलाएँ हैं। और राष्ट्र की समस्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं, क्योंकि पुरुष तो अपने ही शिक्षा लाभ में अत्यधिक व्यस्त हैं।' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-५)

अमेरिका से ही १८९४ में खेतड़ी के राजा को लिखा पत्र-

'अमेरिकन महिलाओं! सौ जन्म में भी, मैं तुमसे उऋण न हो सकूँगा। मेरे पास तुम्हारे प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने की भाषा नहीं है। प्राच्य अतिशयोक्ति ही प्राच्यवासी मानवों की आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करने की एकमात्र भाषा है-'यदि समुद्र मसि-पात्र, हिमालय पर्वत मसि, पारिजात वृक्ष की शाखा लेखनी तथा पृथ्वी पत्र हो तथा स्वयं सरस्वती लेखिका बनकर अनन्त काल तक लिखती रहे, फिर भी तुम्हारे प्रति मेरी कृतज्ञता प्रकट करने में, ये सब समर्थ न हो सकेंगे।' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-६)

स्वामी जी की उपर्युक्त व्याख्या स्पष्ट करती है कि अमेरिका की सम्पन्नता का मुख्य कारण, उस देश की गृहलक्ष्मियाँ ही हैं। विश्व के कुछ देश ईर्ष्यावश कुछ भी कहें, जिस देश में ऐसी नारियाँ होंगी, उस देश की सम्पन्नता अक्षय होगी।

३ मार्च १८९४ को लिखा पत्र-

'तुमने मांस भोजी क्षत्रियों की बात उठाई है। क्षत्रिय लोग चाहे मांस खाये, वे ही हिन्दू धर्म की उन सब वस्तुओं के जन्मदाता है, जिनको तुम महत्त और सुन्दर देखते हो। उपनिषद किसने लिखी थी? राम कौन और कृष्ण कौन थे? बुद्ध कौन थे? जैनों के तीर्थंकर कौन थे? जब कभी क्षत्रियों ने उपदेश दिया, उन्होंने सभी को धर्म पर अधिकार दिया। और जब कभी ब्राह्मणों ने कुछ लिखा, उन्होंने औरतों को सब प्रकार के अधिकारों से वंचित करने की चेष्टा की। गीता या व्यास सूत्र पढ़ो या किसी से सुन लो, गीता में मुक्ति की राह पर सभी नर-नारियों, सभी जातियों और सभी वर्णों को अधिकार दिया गया है, परन्तु व्यास गरीब शुद्रों को वंचित करने के लिए वेद की मनमानी व्याख्या करने की चेष्टा करते हैं। क्या ईश्वर तुम जैसा मूर्ख है

कि एक टुकड़े मांस से उसकी दया रूपी नदी के प्रवाह में बाधा खड़ी हो जायेगी। अगर वह ऐसा ही है तो उसकी मोल एक फूटी कौड़ी भी नहीं।' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-४)

१९ मार्च १८९४ को शिकागो से लिखा पत्र-

'हम जैसे कूपमण्डूक दुनिया में नहीं हैं। कोई भी नई चीज किसी देश से आवे तो अमेरिका उसे सबसे पहले अपनाएग और हम? अजी, हमारे ऐसे ऊँचे खानदान वाले दुनिया में और हैं ही नहीं। हम तो आर्यवंशी जो ठहरे! कहाँ है वह आर्यवंश! उसे तो हम जानते ही नहीं। एक लाख लोगों के दबाने से तीस करोड़ लोग कुत्ते के समान घूमते हैं, और वे आर्यवंशी हैं!'

१९ मार्च १८९४ को ही शिकागो से लिखा एक पत्र-

'जिस देश में करोड़ों मनुष्य महुआ खाकर दिन गुजारते हैं और दस-बीस लाख साधु और दस बारह करोड़ ब्राह्मण, उन गरीबों का खून चूसकर पीते हैं और उनकी उन्नति के लिए कोई चेष्टा नहीं करते, क्या वह देश है या नरक? क्या यह धर्म है या पिशाच का नृत्य? भाई इस बात को गौर से समझो। मैं भारत को घूम-घूमकर देख चुका हूँ और इस देश को भी देखा है। क्या बिना कारण, कहीं कार्य होता है? क्या बिना पाप के सजा मिल सकती है?' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद-वॉल्युम-६)

अगस्त १८९४ में अमेरिका से लिखा पत्र-

'वास्तव में, भारत ने मेरे लिए जो किया, उससे कहीं अधिक मैंने भारत के लिए किया है। वहाँ तो मुझे रोटी के एक टुकड़े के लिए डलिया भर गालियाँ मिलती हैं। मैं कहीं भी क्यों न जाऊँ, प्रभु मेरे लिए काम करने वालों के, दल के दल भेज देता है। वे लोग भारतीय शिष्यों की तरह नहीं हैं, अपने गुरु के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देने को प्रस्तुत हैं। पाश्चात्य देशों में प्रभु क्या करना चाहते हैं, यह तुम हिन्दुओं को कुछ ही वर्षों में देखने को मिलेगा। तुम लोग प्राचीन काल के यहूदियों जैसे हो, और तुम्हारी स्थिति नाँद में लेटे हुए कुत्ते की तरह है, जो न खुद खाता है और न दूसरों को खाने देना चाहता है। तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है, रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हंडिया बर्तन ही तुम्हारा शास्त्र। अपनी तरह असंख्य सन्तानोत्पादन में ही तुम्हारी शक्ति का परिचय मिलता है।' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-५)

९ सितम्बर १८९४ को पेरिस से लिखा गया पत्र-

'मैं जैसे भारत का हूँ, वैसे ही समग्र जगत् का भी हूँ। इस विषय को लेकर मनमानी बातें बनाना निरर्थक है। मुझसे जहाँ तक हो सकता था, मैंने तुम लोगों की सहायता की है, अब तुम्हें स्वयं ही अपनी सहायता करनी चाहिए। ऐसा कौन सा देश है, जो कि मुझ पर विशेष अधिकार रखता है? क्या मैं किसी जाति के द्वारा खरीदा हुआ दास हूँ? अविश्वासी नास्तिकों, तुम लोग ऐसी व्यर्थ की मूखर्तापूर्ण बातें मत बनाओ। मैंने कठोर परिश्रम किया है और जो धन मिला है, उसे मैं कलकत्ते और मद्रास भेजता रहा हूँ। यह सब करने के बाद, अब मुझे उन लोगों के मूखर्तापूर्ण निर्देशानुसार चलना होगा?

क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं उन लोगों का किस बात का ऋणी हूँ? क्या मैं उनकी प्रशंसा की कोई परवाह करता हूँ या उनकी निंदा से डरता हूँ? बच्चे! मैं एक ऐसे विचित्र स्वभाव का व्यक्ति हूँ कि यह पहचानना तुम लोगों के लिए भी अभी संभव नहीं है। तुम अपना काम करते रहो, नहीं कर सकते तो चुपचाप बैठ जाओ। अपनी मूर्खता के बल पर मुझसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने की चेष्टा न करो। मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, जीवन भर मैं ही दूसरों की सहायता करता रहा हूँ।

श्री रामकृष्ण परमहंस के कार्यों के लिए सहायता प्रदान करने के लिए, जहाँ के निवासी दो-चार रुपये भी एकत्र करने की शक्ति नहीं रखते हैं, वे लोग लगातार व्यर्थ की बातें बना रहे हैं और उस व्यक्ति पर अपना हुक्म चलाना चाहते हैं, जिसके लिए उन्होंने कभी कुछ नहीं किया; प्रत्युत जिसने उन लोगों के लिए जहाँ तक हो सकता था, सब कुछ किया। जगत् ऐसा ही अकृतज्ञ है। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि ऐसे जातिभेद, जर्जरित, कुसंस्कार युक्त, दयारहित, कपटी, नास्तिकों एवं कायरों में से जो केवल शिक्षित हिन्दुओं में ही पाये जा सकते हैं, एक बनकर जीने-मरने के लिए, मैं पैदा हुआ हूँ? मैं कायरता से घृणा करता हूँ। कायर तथा मूर्खतापूर्ण बकवासों के साथ, मैं अपना सम्बध नहीं रखना चाहता। किसी प्रकार की राजनीति में मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर तथा सत्य ही जगत् में एक मात्र राजनीति है, बाकी सब कूड़ा करकट है।' (- द कम्पलीट वर्कस् ऑफ स्वामी विवेकानंद- वॉल्युम-५)

आज से करीब सौ साल पहले हमारे देश की धार्मिक दृष्टि से क्या स्थिति थी, स्वामी जी के उपर्युक्त पत्रों से स्पष्टहोती है। पिछले सौ सालों में हमारे धार्मिक जगत् में युग के गुणधर्म के कारण कुछ गिरावट ही आयी है। जिनके वंशजों ने स्वामी के साथ कैसा व्यवहार किया, परन्तु आज संपूर्ण देशवासी स्वामी जी के गुणगान करते नहीं थकते। इसी प्रकार की अकर्मण्य एवं स्वार्थीवृत्ति ने सनातन धर्म को रसातल में पहुँचा दिया है। इसमें मैं कलियुग के

गुणधर्म को ही दोषी मानता हूँ। मनुष्य तो कठपुतली है, वह परमसत्ता जिस प्रकार नचाना चाहती है, नचा रही है।

ऐसा लगता है ईसाई जगत् अपने ही धार्मिक ग्रंथ की भविष्यवाणियों से ही अत्यधिक भयभीत है। उनके अन्दर अन्तर्द्वन्द्व छिड़ गया है। जीवन में यही एक स्थिति ऐसी है, जिसके छिड़ जाने से मनुष्य स्वयं अपने ही प्रयासों से खत्म हो जाता है।

७१.

दसवें अवतार का अवतरण

हिन्दू दर्शन के अनुसार दसवें अवतार के अवतरण के कारण, सम्पूर्ण मानव जाति पूर्णता प्राप्त कर लेगी। दसवें अवतार के अन्तर्धान होने के साथ ही कलियुग का अन्त होकर, सत्युग का श्रीगणेश हो जाएगा। सम्पूर्ण विश्व के भविष्यदृष्ट संतों ने एक स्वर से भविष्यवाणी की है कि २० वीं सदी के आखिरी दशक में सम्पूर्ण विश्व में जो धार्मिक क्रान्ति होगी, उसका नेतृत्व भारत का एक वेदान्ती करेगा। इस सम्बन्ध में पश्चिम के कुछ भविष्यदृष्टाओं की भविष्यवाणियाँ निम्न प्रकार हैं-

(१) इंगलैण्ड के ज्योतिषी श्री कीरो के अनुसार- "यहूदी-इजराइल की समस्या ही लगभग अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर, विश्व संकट का बड़ा कारण बनेगी तथा अरब-राष्ट्र बुरी तरह तहस-नहस हो जावेंगे। सन् २००० से पूर्व ही (विश्व के महाविनाश के बाद) 'एक नई सभ्यता' सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी और भारत का एक व्यक्ति, सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान-क्रान्ति ला देगा।"

(२) भविष्यवक्ता श्री वेजीलेटिन के अनुसार- "२०वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उल्कापात, विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोप देखने को मिलेंगे, परन्तु बाद में भारत से उत्पन्न हुई शान्ति, भ्रातृभाव पर आधारित 'एक नई सभ्यता' संसार में देश, प्रान्त, व जाति की सीमाएँ तोड़कर, अमन व चैन उत्पन्न करेगी।"

(३) अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता जीन डिक्सन के अनुसार- "२०वीं सदी के अन्त से पहले (विश्व के महाविनाश के बाद) आध्यात्मिकता पर आधारित 'एक नई सभ्यता' संभवतः भारत के एक ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जन्मेगी व संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।"

(४) अमेरिका के श्री एण्डरसन के अनुसार- "२०वीं सदी के अन्तिम दशक में विश्व में भीषण रक्तपात होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति 'एक मानव, एक भाषा, एक झण्डा' की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा तथा सन् १९९९ तक यह मसीहा संसार में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शान्ति भर देगा।"

(५) हालैंड के भविष्यदृष्टा श्री गेरार्ड क्राइसे के अनुसार- "२०वीं सदी के अन्त से पहले भयंकर युद्ध के कारण, कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरुष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बाँध देगा व हिंसा, फूट, दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिट जावेगा।"

(६) अमेरिका के भविष्यवक्ता श्री चार्ल्स क्लार्क के अनुसार- "२० वीं सदी के अन्त से पहले भारत, विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा, परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा! यह धार्मिक क्रांति सन् २००० से पहले-पहले सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करने लगेगी व मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।"

(७) हंगरी की महिला ज्योतिषी बोरिस्का के अनुसार- "सन् २००० से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों, हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्‌गुणों का विकास, एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरुप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा व इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयाई बनकर 'भौतिकवाद' को 'अध्यात्मवाद' में बदल देंगे।"

(८) फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार- "भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान् आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई, देखते-देखते एक समर्थ संस्था के रूप में, मात्र 'आत्म शक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।"

(९) फ्रांस के श्री नास्त्रेदमस के अनुसार- "सागर के नाम वाले धर्म की विजय शुरू होगी। जिस प्रायद्वीप में तीन समुद्र मिलते हैं, वहाँ बृहस्पतिवार के पुजारी वीर जन्म लेंगे, जो अपने धर्मबल से राष्ट्रों को नतमस्तक करेंगे, एशिया में उन्हें रोकने का प्रयास पागलपन होगा।" (सेंचुरी१ कंत्रा ५०)

(१०) इजराइल के प्रोफेसर हरारे के अनुसार- "भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् २००० से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़ें मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उसके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत सन् १९८० से २००० के बीच धार्मिक-विचार वाले लोगों के द्वारा रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि से भी कहीं ऊँची वैज्ञानिक उन्नति कर लेगा। हिमालय में गुप्त खजाना मिलेगा, यह दुनिया का सबसे बड़ा पर्यटन स्थल बन जाएगा।"

(११) नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार- "सन् १९७१ के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक, और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान ही पूरे विश्व को मान्य होगा।"

हिन्दू दर्शन में वर्णित अवतारवाद के अनुसार, हर अवतार मानवता में एक नई चेतना पैदा करता है। श्री अरविन्द के अनुसार- "यदि क्रमविकास के साथ अवतारवाद का कोई सम्बन्ध न हो तो अवतारवाद का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।"

हिन्दू दशावतारों की श्रृंखला अपने आप में मानो क्रमविकास का रूपक है-

(१) सर्वप्रथम मत्स्यावतार हुआ है, जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ।

(२) फिर पृथ्वी व जल के स्थल-जलचर, 'कच्छप' का अवतरण हुआ।

(३) तीसरे अवतार 'वराह' के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई।

(४) 'नृसिंह' अवतार पशुओं व मनुष्यों की स्थिति को स्पष्ट करता है।

फिर 'मनु', 'वामन', 'परशुराम', 'राम' व 'कृष्ण' आदि अवतरित हुए, जो निरन्तर प्राणमय-राजसिक से सात्विक-मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने। इस प्रकार भगवान् श्री कृष्ण नौवें अवतार थे।

उपर्युक्त में पश्चिम के भविष्यदृष्टाओं ने बारम्बार 'एक नई सभ्यता' का वर्णन किया है। क्योंकि अवतारवाद का जनक तो वैदिक-धर्म ही है, यही कारण है पश्चिम के भविष्यदृष्टा, मानवता में होने वाले अन्तिम तथा पूर्ण विकास को समझने की सामर्थ्य नहीं रखते। नवें अवतार से मानवता में जो चेतना पैदा हुई थी, वह तो लगभग पाँच हजार वर्ष पुरानी हो चुकी है। अतः अब नई चेतना का स्पष्ट अर्थ है, दसवें अवतार का अवतरण।

महर्षि श्री अरविन्द की मान्यता थी कि संत और पैगम्बर तो विश्व में शान्ति स्थापित करने में असफल हो चुके हैं। अब मात्र उस परमसत्ता का मानवता में अवतरण, विश्व शान्ति स्थापित कर सकता है। अतः महर्षि श्री अरविन्द ने इसी अवतरण के लिए आराधना की और श्री अरविन्द ने अपने जीवनकाल में ही पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-

"मैंने मानवता के लिए, परात्पर (ईश्वर) से उतना बड़ा वरदान प्राप्त किया है, जितना यह

पृथ्वी माँग सकती थी।" यह वरदान अतिमानस के अवतरण का वचन था, जिसे महायोगी ने अपनी कठिनतम साधना द्वारा सत्य के लोक में स्थित परम-आद्यशक्ति से प्राप्त किया था।

श्री अरविन्द को मिले वरदान के अनुसार-

"शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व-लोक से एक भागवत-शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित मृत्यु और असत्य के राज्य को समाप्त कर, यहाँ भी भगवान् के राज्य की स्थापना करेगी।"

इस प्रकार महर्षि श्री अरविन्द को दिये गए वरदान के अनुसार, वह परमसत्ता मनुष्य-देह धारण करके, भारत की पुण्य भूमि पर अवतरित हो गई। श्री अरविन्द ने इस अवतरण को बहुत ही निकट से देखा और घोषणा कर डाली- "२४ नवम्बर, १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध (Inspire) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के ७ वें तथा ८ वें श्लोक में दिये वचन को पूरा कर दिया। इन दो श्लोकों में भगवान् ने कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

अलीपुर जेल में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्री अरविन्द को जो आदेश दिये थे, उससे भी दसवें अवतार के अवतरण की पुष्टि होती है। उन आदेशों का वर्णन करते हुए श्री अरविन्द ने उत्तरपाड़ा भाषण में कहा है- "मैं तुम्हें जिस काम के लिए जेल में लाया हूँ, अपने उस काम की ओर मुड़ो और जब तुम जेल से बाहर निकलो तो याद रखना-कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत। याद रखो, यह सब मैं कर रहा हूँ, तुम या और कोई नहीं। अतः चाहे जितने बादल घिरें, चाहे जितने खतरे और दुःख-कष्ट आयें, कठिनाइयाँ हों, चाहे जितनी असंभवताएँ आयें, कुछ भी असंभव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है। मैं इस देश और इसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी, वही होगा, दूसरों की

इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूँ, उसे कोई मानव शक्ति नहीं रोक सकती।"

श्री अरविन्द के माँगने पर भगवान् श्री कृष्ण ने योगयुक्त अवस्था में उन्हें दो आदेश दिये थे।

(१) "मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है और वह है इस जाति(हिन्दू) के उत्थान में सहायता देना। शीघ्र ही वो समय आएगा, जब तुम्हें जेल से बाहर जाना होगा, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम अपना समय, औरों की तरह अपने देश के लिए कष्टसहते हुए बिताओ। मैंने तुम्हें काम के लिए बुलाया है और यही वह आदेश है, जो तुमने माँगा था। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि जाओ और काम करो।"

(२) "इस एक वर्ष के एकान्तवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है। वह चीज दिखाई गई है, जिसके बारे में तुम्हें संदेह था, वह है हिन्दू-धर्म का सत्य। इसी धर्म को, मैं संसार के सामने ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह धर्म है, जिसे मैंने ऋषि-मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है, और अब यह धर्म अन्य जातियों में मेरा काम करने के लिए आगे बढ़ रहा है। मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिए इस जाति को ऊपर उठा रहा हूँ। यही वह सनातन धर्म है, जिसे तुम पहले सचमुच नहीं जानते थे, परन्तु जिसे अब मैंने तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है।

तुम्हारे अन्दर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था, उसका उत्तर दे दिया गया है क्योंकि मैंने अन्दर और बाहर, स्थूल और सूक्ष्म, सभी प्रमाण दे दिये हैं और उनसे तुम्हें संतोष हो गया है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा अपनी जाति को यही वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के लिए ऊपर उठ रहे हैं। वे अपने लिए नहीं बल्कि संसार के लिए ऊपर उठ रहे हैं। मैं उन्हें संसार की सेवा के लिए स्वतंत्रता दे रहा हूँ।

अतएव, जब यह कहा जाता है कि भारत ऊपर उठेगा तो उसका अर्थ होता है, सनातन धर्म ऊपर उठेगा। जब कहा जाता है कि भारतवर्ष महान् होगा तो उसका अर्थ होता है सनातन धर्म महान् होगा। जब कहा जाता है कि भारत बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है, सनातन धर्म बढ़ेगा और सम्पूर्ण विश्व पर छा जावेगा।

धर्म के लिए और धर्म के द्वारा ही भारत का अस्तित्व है। धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है, देश की महिमा बढ़ाना। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं ही सब जगह हूँ, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओं में हूँ। मैं इस आन्दोलन में हूँ और केवल उन्हीं के अन्दर काम नहीं कर रहा हूँ, जो

देश के लिए मेहनत कर रहे हैं, बल्कि उनके अन्दर भी जो उनका विरोध करते हैं और मार्ग में रोड़े अटकाते हैं।

मैं प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर काम कर रहा हूँ और मनुष्य चाहे जो कुछ सोचें या करें, परन्तु वे मेरे हेतु की सहायता करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं, वे मेरे शत्रु नहीं बल्कि मेरे यंत्र हैं। तुम यह जाने बिना भी कि तुम किस ओर जा रहे हो, अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे ही बढ़ रहे हो। तुम करना चाहते हो कुछ और, पर कर बैठते हो कुछ और। एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं, जो उससे भिन्न या उल्टे परिणाम लाते हैं।

शक्ति का आविर्भाव हुआ है और उसने लोगों में प्रवेश किया है। मैं बहुत लम्बे समय से इस उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूँ और अब वह समय आ गया है। अब मैं स्वयं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊँगा।"

७२.

प्रभु का अनुग्रह

"Very few people know that the biblical lifespan of Jesus is only "three years". The gospel talks about the 12 year old Jesus and then his sudden appearance in the middle of the desert at the age of 30, of the interval of 18 years, nothing is known."

(अनुवादः- बहुत ही कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि यीशु का बाईब्लिकल जीवनकाल केवल ३ वर्ष का ही था। इंजील (गॉस्पेल) १२ वर्षीय यीशु की बात करता है और फिर यीशु के यकायक ३० वर्ष की आयु में मरुस्थल में प्रकट होने की बात कहता है। बीच के १८ वर्षों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।)

बॉम्बे(मुम्बई) में पैदा हुई प्रीति (चन्द्रकान्त) ने फिल्म बनाने का काम अमेरिका में सीखा था, उसने उपर्युक्त के सम्बन्ध में एक फिल्म बनाई है। इस फिल्म के कारण ईसाई जगत् में बहुत क्रुद्ध प्रतिक्रिया हुई है। विशेष तौर से वेटिकन में लोग आगबबूला हो गए।

उस महान् आत्मा यीशु के सम्पूर्ण जीवन की पूर्ण जानकारी के बिना हम उसके उपदेशों का रहस्य नहीं समझ सकते। इस वैज्ञानिक युग के ईसाई भी इस रहस्य को जानने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ईसाई जगत् के गिरजाघर, इस सत्य के प्रकट होने से कितना भयभीत हैं, परन्तु सत्य न कभी दबा है और न ही कभी दबेगा और रुकेगा।

मैंने मेरी पुस्तक (Religious Revolution in the World) में ईसाई जगत् से एकमात्र यही प्रश्न पूछा है (कि यीशु ने अपने जीवन के १८ वर्ष कहाँ बिताए?)। इस पुस्तक को वेबसाइट- www.the-comforter.org पर पढ़ा जा सकता है। परन्तु ईसाई जगत् अभी तक तो कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है।

हाँ, ११ सितम्बर २००१ के हमले के बाद मैंने अमेरिका के दोनों सदनों के लगभग सभी सदस्यों को १७,१८ और १९ अक्टूबर २००१ को जो ई-मेल भेजी है, उसके बाद ईसाई जगत् में एक अन्तर्द्वन्द अवश्य शुरू हो गया है।

तेल अवीव की एक यहूदी महिला (रोजी) मुझसे शक्तिपात दीक्षा लेने १६ जनवरी

२००३ को बीकानेर आई थी। दीक्षा लेने के बाद मेरी संस्था के लोगों ने उससे भारत आने का कारण पूछा तो उसने इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी दी और इस सम्बन्ध में अपने भविष्य के कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। इस बातचीत की एक वीडियो फिल्म भी बनाई गई है, जिसे संस्था की तरफ से सम्पूर्ण विश्व के प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को भेजा जा चुका है।

ईसाई और मुसलमान, पैगम्बरवाद के सिद्धांत को मानने वाले धर्म हैं। मैं ईसाइयों को काफी लम्बे समय से कहता आ रहा हूँ कि अगर आप मोहम्मद साहब को तीसरा और अन्तिम पैगम्बर नहीं मानते तो तीसरे पैगम्बर का नाम घोषित करके बाइबिल की भविष्यवाणियों की कसौटी पर खरा उतरने वाले व्यक्ति को विश्व स्तर पर स्वीकार करो, तभी इस भीषण नरसंहार का अन्त होगा। परन्तु ईसाई जगत् ने मेरी बात को सुना-अनसुना कर दिया।

क्योंकि इस खूनी ताण्डव का केन्द्र बिन्दु तो इजराइल ही है, इसलिए प्रभु ने तेल अवीव से दीक्षा लेने आई यहूदी महिला को, ध्यान के दौरान अर्थात् योगयुक्त स्थिति में, अपनी शक्ति के द्वारा भविष्य की एक झलक दिखा दी।

प्रभु की शक्ति असीम है। मेरी वेबसाइट- www.the-comforter.org को देखकर यहूदी महिला रोजी ने उसमें से मेरी तस्वीर को निकालकर, उसका ध्यान, आँखें बन्द करके किया था, तभी प्रभु ने उसे अपना चमत्कार दिखाया था। अगर सम्पूर्ण विश्व में करोड़ों यहूदी और ईसाई इसी प्रकार आँखें बन्दकर, अपने आज्ञाचक्र पर मेरी तस्वीर का ध्यान करें और उनमें से करोड़ों जिज्ञासु स्त्री/पुरुषों को प्रभु विभिन्न प्रकार की दिव्य प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कारों से चेतन कर दें, तभी यहूदी समझेंगे कि किस प्रकार प्रभु के अनुग्रह से मनुष्य 'द्विज' बन जाता है, जिसका वर्णन यीशु ने जॉन ३:७ में किया है।

७३.

सेंट जॉन के प्रकाशित वाक्य

बाइबिल का यह आखिरी हिस्सा वास्तव में बाइबिल का प्राण है। सेंट जॉन एक बहुत बड़े महान् संत थे। वे यीशु के मुक्तिदाता सद्गुरु थे। जिस प्रकार हमारा इतिहास बताता है कि भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण को भी गुरु धारण करने पड़े थे; उनके गुरु भी अच्छी प्रकार जानते थे कि ये कोई साधारण मानव नहीं हैं, फिर भी उन्हें शिक्षा-दीक्षा दी। इसी प्रकार सेंट जॉन को भी मालूम था कि यीशु कौन था परन्तु फिर भी उसने यीशु को दीक्षा दी, क्योंकि गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त किये बिना, मनुष्य द्विज नहीं बनता और द्विज बने बिना उस परमतत्त्व से नहीं जुड़ सकता और न ही उस दिव्य ज्ञान को पाने का अधिकारी बनता है। इसी प्रकार अगर यीशु सेंट जॉन से दीक्षा नहीं लेता तो वह कुछ भी कर पाने में सक्षम नहीं होता।

ईसाइयों में आज भी सेंट जॉन द्वारा दी जाने वाली 'पानी की दीक्षा' प्रचलित है, क्योंकि यीशु दीक्षा (बपतिस्मा) नहीं देता था। उसे मालूम था कि जो दीक्षा वह देगा, उसे उस समय का मानव सहन नहीं कर सकेगा। इसीलिए उसने कहा था, "मुझे तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" यीशु ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि द्विज बने बिना उस परमतत्त्व का प्राप्त होना असम्भव है। उसने कहा है कि "यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

प्रकाशित वाक्य में कहा है, "यीशु मसीह का प्रकाशित वाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए; और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना (सेंट जॉन) को बताया।" जो भविष्यवाणियाँ बाइबिल में की गई हैं उन सबको, मूर्तरूप से घटने से पहले ही दिखाया गया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि जो बात हमारा दर्शन कहता है कि अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को देखना-सुनना सम्भव है, पूर्ण सत्य है। पश्चिम को यह ज्ञान २० वीं सदी के अन्त में मिलेगा, बाइबिल की भविष्यवाणियों का मात्र यही अर्थ है। इसीलिए यीशु मसीह ने भविष्यवाणी की है कि "थोड़े दिनों बाद तुम पवित्रात्मा से (में) बपतिस्मा (दीक्षा) पाओगे।"

धार्मिक ग्रन्थों के उपदेश 'पश्यन्ति वाणी' में दिये जाते हैं, ज्ञानी संत पश्यन्ति वाणी समझ सकते हैं, इसलिए उस ज्ञान को वैखरी वाणी में लिखकर संसार के सभी मनुष्यों के लिए

छपवा देते हैं। पश्यन्ति वाणी ध्वनिरूप शब्दों वाली "वैखरी-वाणी" से और भावात्मक विचारमयी वाणी से भी विलक्षण स्वात्मविमर्शमयी अनुभूति-रूपी वाणी है, जिसे भौतिक भाषा में 'उद्‌बुद्ध करना' (Inspiration) कहा जाकर समझाने का प्रयास कहा जा सकता है। इसीलिए सेंट जॉन ने जगह-जगह कहा है, "मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, मैं आत्मा में वहाँ गया इत्यादि।" पश्चिमी जगत् के लोग मात्र वैखरी वाणी ही समझते हैं, इसलिए वे अपरा विद्या के ही ज्ञाता है, क्योंकि अपरा विद्या का ज्ञान वैखरी वाणी में लिखा जाता है।

बाइबिल के कई संदर्भ ऐसे भी हैं, जिनका सही अर्थ अन्तर्मुखी होकर ही समझा जा सकता है, और यह कार्य पश्चिम के लोगों के सामर्थ्य से बाहर है। इस संबंध में मुझे एक बात याद आ गई। बाइबिल की भविष्यवाणियों की प्रत्यक्षानुभूति के संबंध में, मैंने भारत स्थित कई संस्थाओं से संपर्क किया था। मैंने उन्हें बाइबिल में वर्णित आनन्द के बारे में पूछा था, जिसका वर्णन इस प्रकार है- "यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है, यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका (प्रभु का) आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाए। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़कर दूसरों तक बह सकता है।" मुझे दिल्ली की एक संस्था ने कुछ सामग्री भेजी, जिसमें कटोरों के चित्र बनाकर आनन्द के उमड़ने की बात समझाई गई थी। उसे देखकर मुझे बहुत हँसी आई, और साथ में उन लोगों के अल्प ज्ञान पर तरस भी आया। मैं प्रकाशित वाक्य की चन्द बातें जो सेंट जॉन ने पश्यन्ति वाणी में सुनी थी, यथावत लिख रहा हूँ। क्या ईसाई जगत् इनकी सही व्याख्या करके प्रमाणित करने की स्थिति में है? मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह कार्य अन्तर्मुखी हुए बिना असंभव है।

सेंट जॉन ने लिखा है- मैं यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था। "कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना कि जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिखकर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे।" जब तक अन्तर्मुखी होकर उस परमसत्ता से नहीं जुड़ते, बाइबिल के ऐसे संदर्भ समझ में आ ही नहीं सकते।

प्रकाशित वाक्य १:१६ "वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था; और उसके मुख से दोधारी तलवार निकलती थी, और उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था; जैसा सूर्य कड़ी धूप में चमकता है।" २.११ " जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता

है; जो जय पाए, उनको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।" २:१६ "सो मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।" २:१७ "जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक पत्थर भी दूँगा, और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई नहीं जानेगा।" २:२७ और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते हैं जैसे कि मैंने भी ऐसा अधिकार अपने पिता से पाया है।" ३:४ "पर हाँ, सरदीस में तेरे यहाँ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किये, वे स्वेत वस्त्र पहिने मेरे साथ घूमेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं।" ३:२० "देख! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।" ७:२३ "फिर मैंने एक स्वर्ग दूत का जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा। जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी, समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।"

प्रकाशित वाक्य की केवल उपर्युक्त बातें ही अलौकिक नहीं, इसका तो सम्पूर्ण भाग ही प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। इस पवित्र ग्रन्थ में विश्वास रखने वाले सभी पवित्र आत्मा वाले लोगों को २०वीं सदी के अंत से पहले बाइबिल के सम्पूर्ण रहस्य की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार हो जाएगा, क्योंकि वह पवित्रात्मा यीशु इसकी भविष्यवाणी कर गया है।

मैं पश्चिम के लोगों से आग्रह पूर्वक कहना चाहूँगा कि धनबल के सहारे विश्व के गरीब लोगों का शोषण किया जा रहा है, उस पर युग परिवर्तन के इस संधिकाल में पुनर्विचार करें, ऐसा न हो कि फिर पछताना पड़े। मैं उन्हें बाइबिल के निम्न संदर्भों पर रात-दिन चिन्तन करने की सलाह देता हूँ। हो सकता है प्रभु की कृपा हो जाए। सेंट मैथ्यु १९:२३ व २४ "तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान का, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। फिर तुमसे कहता हूँ कि "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से, ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" इस संबंध में, मैं प्रभु से सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना ही कर सकता हूँ।

७४.

प्रभु की लीला विचित्र है।

(०८ सितम्बर १९८८)

ईसाइयों की प्रथम सेन्ट जॉन द्वारा लिखी 'जीवन का मार्ग' सन् १९८४ में अनायास पढ़ने को मिली। परन्तु बाइबिल में वर्णित बातों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ तथा साक्षात्कार बहुत पहले से प्रारम्भ हो गए थे। 'द न्यू टेस्टामेंन्ट' (The New Testament) तो सन् १९८६ के अन्तिम दिनों में मिली। इसके बाद सभी तथ्यों का, जो बाइबिल में दो हजार साल पहले लिख दिया गया था, कार्यरूप में मेरे माध्यम से परिणित होते हुए, परमसत्ता द्वारा दिखाया गया। बड़ी विचित्र बात है। पश्चिमी जगत् को स्वीकार करने में भारी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु सोने को जंग नहीं लगता; आखिर सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

आइन्सटीन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि अनादिकाल से बोले गए शब्द, ब्रह्माण्ड में आज भी मौजूद हैं, वे वैज्ञानिक उपकरण से सुने जा सकते हैं। मैं कहता हूँ, शब्द ही नहीं, सभी घटनाओं के दृश्य भी, चाहे वे भूतकाल की हैं या भविष्य में घटने वाली हैं, देखे-सुने जा सकते हैं। मैं इसे प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। यीशु-मूसा तो कल हुए थे।

मैंने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठ रहीं थीं परन्तु उससे बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था, वह इतनी ऊँची थीं कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थीं। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ठ व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुककर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ नीचे की ओर बढ़ा दिया। मैंने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा।

मैंने सोचा वह मुझे खींचकर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खींचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं। मैं बहुत परेशान हुआ, सोचा क्या किया जाय। फिर मैंने, मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे, मेरे शरीर को संभाला और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगुठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए, दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढकेलते हुए बाहर आ गया।

पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में सफलता मिल जायेगी क्योंकि ऊपर खड़ा अतिबलिष्ठ व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं खींच रहा था। अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया।

और सभी बातें बाइबिल से मिलकर वैसे ही सही प्रमाणित हो रहीं हैं, जैसा उसमें लिखा है। एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया। इस पर मुझे प्रेरितों के काम के २:३३ को देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर, अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा है। मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण भर में उसे सम्भव करके, कार्य रूप में परिणित कर देता है। मुझे भारी अचम्भा हो रहा है।

एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से, ये असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं? कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपे, जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो, इस पर मुझे उत्तर मिला कि यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता। अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से खुशी होती है; न असफलता से दुःख, क्योंकि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ। केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ; घाटे-नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं।

७५.

शांति का संहारक युग

(१५ मई २००३, मुम्बई)

इतिहास साक्षी है, इस भूमण्डल पर दो जातियों-हिन्दू और यहूदी पर पिछले लम्बे समय से घोर अत्याचार हो रहे हैं। मेरे विचार से परीक्षित के शासन काल के बाद से, यह कुकृत्य निरन्तर चल रहा है। कितने आश्चर्य की बात है, इतने लम्बे समय तक असहनीय कष्टों को भोग रही जातियों ने अपने मूलभूत "अहिंसापरमोधर्मः" के सिद्धान्त को नहीं छोड़ा है। विश्व की सभी जातियों और धर्मों ने अनेक बार उन्हें इस भूमण्डल से, जड़ से उखाड़ने की कोशिश की, परन्तु असफल रहे। क्योंकि ये दोनों जातियाँ जिस धर्म पर जिन्दा हैं, वह ईश्वरीय आदेश है, अतः वह अमर हैं।

अमेरिका का यह कहना कि "Islam is a very evil and wicked religion" विश्व को सत्य नहीं लग रहा है। क्या जर्मनी में दूसरे विश्व युद्ध के दौरान एक लाख से भी अधिक यहूदियों की हत्या इस्लाम धर्म के मानने वाले लोगों ने की थी? सम्पूर्ण विश्व साक्षी है, यह कुकृत्य एक ईसाई धर्म को मानने वाले क्रूर और निर्दयी व्यक्ति ने किया था। यीशु को मारने वाली तामसिक शक्तियाँ, यीशु की मृत्यु से लेकर आज तक इस घृणित कार्य में जुटी हुई हैं। परन्तु ये दोनों दयालु जातियाँ, सम्पूर्ण विश्व में आज भी जिन्दा हैं।

भारत ने हमेशा यहूदियों को शरण दी है, इतिहास साक्षी है। १६ जनवरी २००३ को यहूदी जाति ने विश्व की सभी क्रूर शक्तियों से बचने के लिए हिन्दू जाति की शरण ले ली। यह तेल अबीब से दीक्षा लेने आई ५४ वर्षीय यहूदी महिला का प्रश्न नहीं है (यह संदर्भ समझने हेतु लेख- 'प्रभु का अनुग्रह' पढ़े)। बाइबिल के सिद्धान्त के अनुसार आकाश-तत्त्व पृथ्वी पर उतर आया। दोनों एक दूसरे में लय हो गए। इस प्रकार विश्व की कोई भी शक्ति, इन दोनों को कभी भी किसी भी तरह से कभी अलग नहीं कर सकेगी। भारत का सिद्धान्त शरणागत के बदले अपने प्राणों की बलि देना है।

१६ जनवरी १९९१ को आरम्भ हुआ कार्य अपने अन्त की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। निश्चित समय सीमा बताकर प्रकृति के कार्य में बाधा डालना पाप है। विश्व में युगों की व्यवस्था है। इस प्रकार आज का मानव युग परिवर्तन के संधिकाल में जी रहा है। हमारे दर्शन के अनुसार युग परिवर्तन के समय सम्पूर्ण तामसिक शक्तियों का भौतिक जगत् में अन्त हो जाता है।

द्वापर युग का अंत महाभारत की लड़ाई से हुआ।

समय-समय पर विश्व की तामसिक शक्तियाँ, इस दयालु जाति को भौतिक जगत् से समूल नष्ट करने का निरन्तर प्रयास करती चली आ रही हैं, परन्तु यह जाति आज भी गर्व से जी रही है। यही हाल बेचारी यहूदी जाति का है। १६ जनवरी २००३ को इन दोनों जातियों के मिलन के कारण, सम्पूर्ण तामसिक वृत्तियाँ, मृत्यु भय से थर-थर काँप रही हैं। सभी एक दूसरे को दोष देकर, आपस में ही मर कट रही हैं। हिंसा का अन्त हिंसा से ही हो सकता है; वही हो भी रहा है।

मैं देख रहा हूँ, जल्दी ही दोनों मिलकर एक हुई जाति का सम्पूर्ण विश्व पर एक छत्र राज होगा। मैं संतुष्ट हूँ कि मृत्यु भय से थर-थर काँपने वाली वृत्तियों को मेरी बात पर बिलकुल ही विश्वास नहीं होगा। ये केवल "विश्वास करो, विश्वास करो" कहना जानती हैं, करना नहीं जानती।

७६.

अनुग्रह का युग

बाइबिल के अनुसार जो सहायक प्रकट होकर शक्तिपात-दीक्षा (Baptized with the Holy Ghost) देगा, वह सम्पूर्ण विश्व की सभी जातियों को देगा। इस बड़े उद्धार का लाभ सम्पूर्ण विश्व को मिलेगा। इस संबंध में बाइबिल के प्रेरितों के कार्य २:१६ से १९, कुरन्थियों के १२:१३, गलतियों के ३: २८ तथा कुलिसियों के ३: ११ में स्पष्ट लिखा है। बाइबिल कहती है कि इतना बड़ा उद्धार पहले किसी युग में उपलब्ध नहीं था और न ही बाद में कभी उपलब्ध होगा। वैदिक दर्शन के अनुसार इस युग में सम्पूर्ण मानव जाति पूर्णता प्राप्त करेगी।

बाइबिल की भविष्यवाणियों के अनुसार, यीशु के पुनरागमन तक का समय, व्यवस्था का समय था। जिस सहायक को भेजने की भविष्यवाणी यीशु ने सेंट जॉन के १५: २६ एवं १६: ७ से १५ में की है, जब वह आकर शक्तिपात दीक्षा (Baptized with the Holy Ghost) देने लगेगा, जिसका वर्णन प्रेरितों के कार्य १: ४ एवं ५ में किया गया है, तब व्यवस्था का युग समाप्त होकर, अनुग्रह का युग आरम्भ हो जावेगा।

इस अनुग्रह रूपी शक्तिपात दीक्षा से (Baptized with the Holy Ghost) विश्व का जो महान् उद्धार होगा, उसे बाइबिल के सभी संत और भविष्यवक्ता बिलकुल ही नहीं समझ सके। बाइबिल में वर्णित इब्रानियों ११: १३, सेंट ल्युक १०:१२ से २३ के अनुसार इस बड़े उद्धार को संतों और भविष्यवक्ताओं ने देखना समझना चाहा, परन्तु वे इसे न देख और न ही समझ सके। उन्होंने दूर से ही देखकर, इस बड़े उद्धार के बारे में भविष्यवाणी की थी। उन पर इस उद्धार का भेद प्रकट ही नहीं किया गया था।

इफिसिया ३:१ से १६, १ पीटर १:१० से १२, बाइबिल के अनुसार स्वर्ग के देवता भी उस बड़े उद्धार के बारे में कुछ भी नहीं समझ सके। इसलिए वे भी इसे देखने की लालसा रखते हैं। परमेश्वर के राज्य अर्थात् अनुग्रह के युग की पहचान के बारे में बाइबिल कहती है- मनुष्यों को रोगों से मुक्ति दिलाना और दुष्ट आत्माओं को निकालने की सामर्थ्य। सेंट ल्यूक ११: २० "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" सेंट ल्यूक १०: ९ "वहाँ के बीमारों को चंगा करो और उनसे कहो

कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ चुका है।"

७७.
यीशु के उपदेश कौन कितने मानता है?
(१८ अगस्त १९८८)

यीशु ने जो उपदेश दिये, उन पर उसके अनुयाई कितना विश्वास करते और चलते हैं? सभी धर्मों की तरह वहाँ भी धर्म के नाम पर, केवल शोषण और ठगी के सिवाय कुछ नहीं चल रहा है। चर्चों में फैले भ्रष्टाचार को, वे यह कहकर लीपापोती करने का प्रयास करते हैं कि "परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।" इस बात को ईसाई स्वीकार करते हैं कि चर्चों की यह दशा प्रारम्भ से ही चली आ रही है। इसको ईसाई लोग पुराने चर्चों के उदाहरण जैसे:- Philippians 2:19-21 से दुर्दशा पर पर्दा डालने का प्रयास करते हैं।

2:19 But I trust in the Lord Jesus to send Timotheus shortly unto you, that I also may be of good comfort, when I know your state.

(अनुवाद:- प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों से मेरा भी उत्साह बढ़ सके।)

2:20 For I have no man like minded, who will naturally care for your state.

(अनुवाद:- क्योंकि दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित हो।)

2:21 For all seek their own, not the things which are Jesus Christ's.

(अनुवाद:- क्योंकि और सभी अपने अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों में कोई नहीं लगा है।)

इस प्रकार के तर्कों से सच्चाई नहीं छिप सकती। यीशु के उपदेश बहुत पवित्र थे। सेंट लूक ०६:२७ से ३८ में लिखा है-

06:27 But I say unto you which hear, Love your enemies, do good to them which hate you

(अनुवादः- ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी भलाई करो।)

06:28 Bless them that curse you, and pray for them which despitefully use you.

(अनुवादः- उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।)

06:29 And unto him that smiteth thee on the one cheek offer also the other; and him that taketh away thy cloke forbid not to take thy coat also.

(अनुवादः- यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो।)

06:30 Give to every man that asketh of thee; and of him that taketh away thy goods ask them not again.

(अनुवादः- जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ रख ले तो उससे वापस मत माँगो।)

06:31 And as ye would that men should do to you, do ye also to them likewise.

(अनुवादः- तुम अपने लिये जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये।)

06:32 For if ye love them which love you, what thank have ye? for sinners also love those that love them.

(अनुवादः- यदि तुम बस उन्हीं को प्यार करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई, क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक भी प्रेम करते हैं।)

06:33 And if ye do good to them which do good to you, what thank have ye? for sinners also do even the same.

(अनुवादः- यदि तुम बस उन्हीं का भला करो, जो तुम्हारा भला करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई, ऐसा तो पापी तक करते हैं।)

06:34 And if ye lend to them of whom ye hope to receive, what thank have ye? for sinners also lend to sinners, to

receive as much again.

(अनुवादः- यदि तुम केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल जाने की आशा है तो तुम्हारी क्या बड़ाई, ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी पूरी रकम वापस मिल जाये।)

06:35 But love ye your enemies, and do good, and lend, hoping for nothing again; and your reward shall be great, and ye shall be the children of the Highest: for he is kind unto the unthankful and to the evil.

(अनुवादः- बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो, उनके साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा छोड़कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल महान् होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान बनोगे क्योंकि परमेश्वर अकृतज्ञों और दुष्ट लोगों पर भी दया करता है।)

06:36 Be ye therefore merciful, as your Father also is merciful.

(अनुवादः- जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।)

06:37 Judge not, and ye shall not be judged: condemn not, and ye shall not be condemned: forgive, and ye shall be forgiven:

(अनुवादः- किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी।)

06:38 Give, and it shall be given unto you; good measure, pressed down, and shaken together, and running over, shall men give into your bosom. For with the same measure that ye mete withal it shall be measured to you again.

(अनुवादः- दूसरों को दो, तुम्हे भी दिया जायेगा। वे पूरा नाप दबा-दबाकर और हिला-हिलाकर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी झोली में उड़ेलेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी से तुम्हें भी नापा जायेगा।)

श्रद्धा, प्रेम, दया, सहयोग, विश्वास और अहिंसा की जो शिक्षा यीशु ने दी है, आज उनके अनुयाई ठीक उसके विपरीत आचरण कर रहे हैं। रोज बाइबिल पढ़ते-पढ़ते सभी ईसाइयों को पूरी बाइबिल कण्ठस्थ हो गई है परन्तु जो हिंसा, घृणा, द्वेष, अविश्वास और असहयोग तथा

स्वार्थपरिता आज पश्चिमी देशों में नजर आ रही है, संसार में और कहीं नहीं है। तामसिकता सीमा लांघ चुकी है। आज उनका मानसिक तनाव इतना बढ़ चुका है कि नशीले पदार्थों के सेवन के बिना आम आदमी को नींद लेना भी असम्भव हो गया है। ऐसी स्थिति में अब भौतिक साधन उन्हें बहुत परेशान करने लगे हैं। परन्तु इतने आगे निकल चुके हैं कि अब लौटना पूर्ण रूप से असम्भव हो गया है। अब तो यीशु की भविष्यवाणी के अनुसार उस सहायक के बिना, जिसका उद्‌गम ईश्वर से बताया गया है, कल्याण असम्भव है। श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार २४ नवम्बर १९२६ को अवतरित शक्ति ही वह सहायक तो नहीं?

७८.

स्नेह निमन्त्रण

मैं प्रारम्भ में ही कह चुका हूँ कि जब तक मनुष्य शरीर रूपी ग्रन्थ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान संसार में प्रकट नहीं होगा, विश्व में शांति असम्भव है। कलियुग के गुणधर्म के कारण, अन्धकार विश्व में ठोस बनकर जम गया है।

संपूर्ण विश्व में कमोबेश एक जैसी ही स्थिति है। ईश्वर में विश्वास रखने वाले सच्चे और ईमानदार लोगों का जीना बड़ा कठिन है। सबसे अधिक दुःख तो इस बात का है कि धार्मिक संस्थाओं पर ही अविश्वासी-नास्तिकों का कब्जा है। मैं जब तक अन्तर्मुखी होकर आराधना करता रहा, मैंने इस संबंध में किसी से बात नहीं की। सन् १९६७ से लेकर १९८३ तक मैं निरन्तर आराधना में लगा रहा।

३१ दिसम्बर १९८३ को जब मेरे संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ब्रह्मलीन हो गए, तब उनके आदेश के कारण मुझे सार्वजनिक रूप से प्रकट होना पड़ा। मुझे भारी आशा थी कि आध्यात्मिक जगत् के लोग इस सच्चाई को जानकर बहुत प्रसन्न होंगे, परन्तु मेरी आशाएँ, निराशा में बदल गई। मैं इस संबंध में किसी भी संस्था का नाम नहीं लेना चाहता हूँ, परन्तु विश्व स्तर की संस्थाओं ने मोटे तौर पर एक ही उत्तर दिया- 'माल चाहे अन्दर आपका हो, ब्राण्ड तो हमारा ही रहेगा।' मैं इससे भारी निराश हुआ और मैंने गुरुदेव की समाधि पर जाकर प्रार्थना की, "प्रभु आपने मुझे गलत चुन लिया। आप किसी सन्यासी या ब्राह्मण को शक्तिपात दीक्षा का अधिकार दे जाते तो आसानी से स्वीकार कर लिया जाता। आप अपनी माया वापस लेकर किसी और को दे दो।" दो दिन तक कोई उत्तर नहीं मिला। तीसरे दिन आदेश हुआ कि 'देने- लेने' का काम तो पंच भौतिक शरीर तक ही सीमित है। सगुण साकार रूप में यह कार्य किया जाता है। तुझे इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि कौन मानता है, कौन नहीं। तू तो आसन लगाकर बैठ जा। बाकि काम जिसका है, वह स्वयं करेगा। अतः साढ़े छह साल पहले ही, आदेश के अनुसार सेवा निवृत्त होकर आसन लगाकर बैठ गया।

मैंने किसी धर्म के दार्शनिक ग्रन्थ का अध्ययन नहीं किया। जीवन में रोटी के लिए इतना संघर्ष करना पड़ा कि और किसी बात की तरफ ध्यान दे ही नहीं सका। जिस प्रकार छोटे बच्चे को डरा धमकाकर पढ़ाया जाता है, उसी प्रकार अपने शरीररूपी ग्रन्थ को ही पढ़ाया

गया। सन् १९८४ में सेवा निवृत्ति से पहले उसी प्रकार बाइबिल के विशिष्ट दो संदर्भों को देखना पड़ा। मैंने सिर्फ 'बाइबिल' शब्द ही सुना था। मेरी जानकारी के अनुसार वह ईसाइयों का धार्मिक ग्रन्थ था। परन्तु हिन्दी अनुवाद में गलती के कारण से जब मुझे छानबीन करनी पड़ी तो पता लगा कि बाइबिल भी दो है, और दोनों एक दूसरे से बिलकुल भिन्न। खैर, अब मैं अंधकार में नहीं हूँ।

मुझे उस परमसत्ता ने सब कुछ दिखा और समझा दिया है। मुझे क्या करना है, कब करना और कैसे करना है, सब कुछ समझाया और दिखाया हुआ है। इसके अतिरिक्त आज भी पग-पग पर पथ प्रदर्शन और दिशा-निर्देश मिलते रहते हैं। इसीलिए मैं प्रारंभ में ही लिख चुका हूँ कि मैं किसी भी धर्म के व्यक्ति का दिल नहीं दुखाना चाहता हूँ, परन्तु इस पथ पर चलना मेरी मजबूरी है। मुझे बाइबिल के विचित्र-विचित्र संदर्भों को मूर्तरूप से बहुत ही आश्चर्यपूर्ण ढंग से दिखाया गया। उनमें से जिन पर लिखा जाना संभव था, मैंने लिखकर समझाने का प्रयास किया। परन्तु मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि यह रहस्यपूर्ण ग्रन्थ है, इसके प्रायः संदर्भ प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार से ही समझ में आ सकते हैं।

इस संदर्भ में, मैं दो बातों का ही वर्णन करना चाहूँगा, जिन्हें लिखकर समझाया जाना पूर्ण रूप से असंभव है। वे संदर्भ निम्न प्रकार हैंः-

(१.) प्रेरितों के कार्य २:३३ सेन्ट जॉन के प्रकाशित वाक्य १२:५ तथा १२:११ ये ऐसे संदर्भ हैं, कि उनकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार को दो शब्दों द्वारा समझा पाना पूर्ण रूप से असंभव है। इनका अर्थ तो वह परमसत्ता अपनी भाषा में ही बाइबिल के मनीषियों को जब समझावेगा, तभी समझ में आ सकेगा। मेरे माध्यम से जो कुछ करवाया जा रहा है, वह इतना आश्चर्यजनक है, कि इन पर सहज में विश्वास होना बहुत कठिन है।

दूसरा अध्यात्म जगत् के लोगों की साख संसार भर में इतनी गिर चुकी है कि सभी लोग उनके हर कार्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। ऐसी स्थिति में अध्यात्म जगत् में काम करना जितना कठिन है, उसकी मैंने कभी कल्पना तक नहीं की थी। यह पूर्ण सत्य है कि कलियुग के गुणधर्म के कारण विश्व भर में, जीवन के हर क्षेत्र में झूठे और नकली लोगों का ही अधिक प्रभाव है।

सच्चे-झूठे की पहचान कर पाना, आम मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। परन्तु यह ईसाई जगत् की मजबूरी है कि इस सदी के अन्त से पहले सत्य को ढूँढकर स्वीकार करना ही पड़ेगा, क्योंकि वह पवित्रात्मा छाती ठोककर कह गया है कि, 'पृथ्वी और आकाश टल

सकते हैं परन्तु मेरी बातें कभी नहीं टलेगी।' (Heaven and earth shall pass away,but my word shall not pass away.)

इस समय विश्व में धर्म एक व्यवसाय का रूप ले चुका है। चन्द लोगों ने धार्मिक जगत् पर एकाधिकार कर लिया है। वे इन सुविधाओं को छोड़ने के लिए कभी तैयार नहीं होंगे, परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि विश्व में होने वाला परिवर्तन रुक जाएगा। कालचक्र अनादिकाल से, अबाधगति से चलता आया और चलता जाएगा।

मेरे पास कई धार्मिक व्यक्ति आते हैं। जब वे धरातल पर खड़े होकर बात करते हैं तो सच्चाई को स्वीकार कर लेते हैं परन्तु कुछ उग्र प्रकृति के लोग कह देते हैं आप किस-किस को समझाओगे, हम तो इन भेड़ों की ऊन इसी प्रकार काटते रहेंगे। ऐसे यथा स्थितिवादी लोग हर युग में होते आए हैं, जिन्होंने परिवर्तन को आखिरी दम तक स्वीकार नहीं किया। रावण, कंस, दुर्योधन आदि कई उदाहरण हैं, परन्तु कालचक्र सबको निगल गया और ऐसा ही हर युग में होगा भी।

अतः मैं सफलता या असफलता से बिलकुल प्रभावित नहीं होता। देव-दानव का यह संघर्ष मनुष्य के अन्दर अनादिकाल से चलता आया है और चलता रहेगा। क्रमिक उत्थान-पतन प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। मैं किसी धर्म विशेष की बात नहीं करता हूँ। कलियुग के गुणधर्म के कारण प्रायः सभी धर्म एक ही स्थिति में हैं। मैं कर्त्ता मात्र उसी परमसत्ता को मानता हूँ। संसार के सभी लोगों को वह अपनी इच्छा से भ्रमित करते हुए, नचा रहा है। इस संबंध में भगवान् ने गीता के १८ वें अध्याय के ६१ वें श्लोक में कहा है:-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए, संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर, अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

अतः यह विषय किसी भी धर्म और धर्माचार्य की आलोचना करने का है ही नहीं। मात्र धर्म का व्यवसाय करने वाले लोग ही, संसार के लोगों को अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए आपस में लड़ा रहे हैं।

अतःमैं संसार के सभी धर्मों के सकारात्मक लोगों को सच्चाई जानने के लिए सप्रेम आमन्त्रित करता हूँ। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि मेरे माध्यम से जो शक्ति, ईश्वर कृपा

और मेरे संत सद्गुरुदेव की अहेतु की कृपा के कारण प्रकट हो रही है, सार्वभौम है। उस पर किसी भी धर्म विशेष, जाति विशेष या देश विशेष का एकाधिकार नहीं हैं, इति श्री।

०७ अप्रेल २००९, कोटा, राजस्थान- गुरुदेव का कोटा में आगमन।

०७ अप्रेल २००९, कोटा, राजस्थान- गुरुदेव के कोटा में आगमन पर साधकों द्वारा रैली का आयोजन
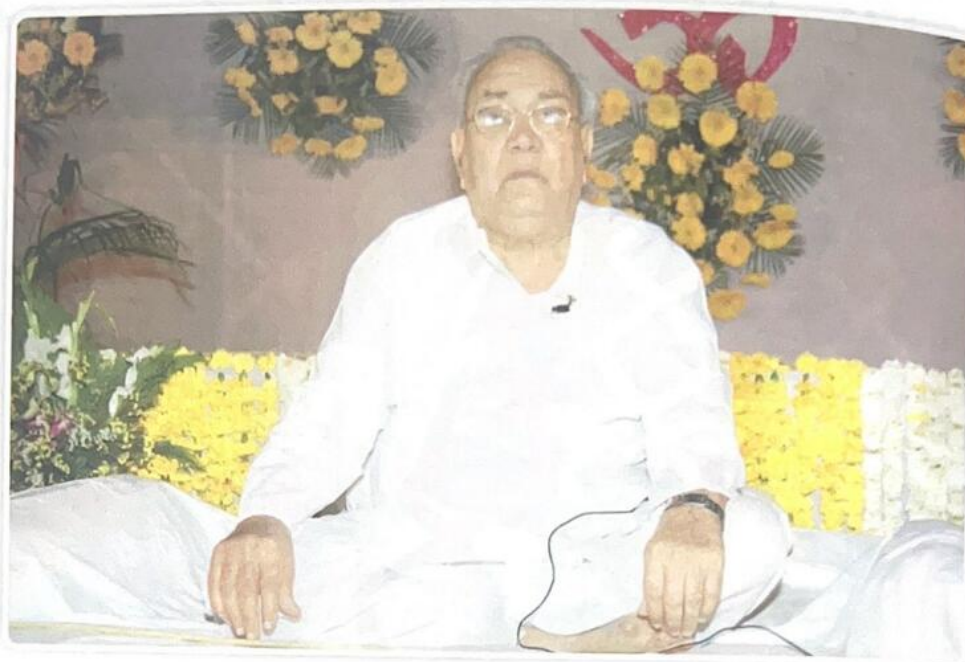
०९ अप्रेल २००९, कोटा, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

११ जून २००९, बालेसर, जोधपुर- बालेसर शाखा का उद्घाटन एवं शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
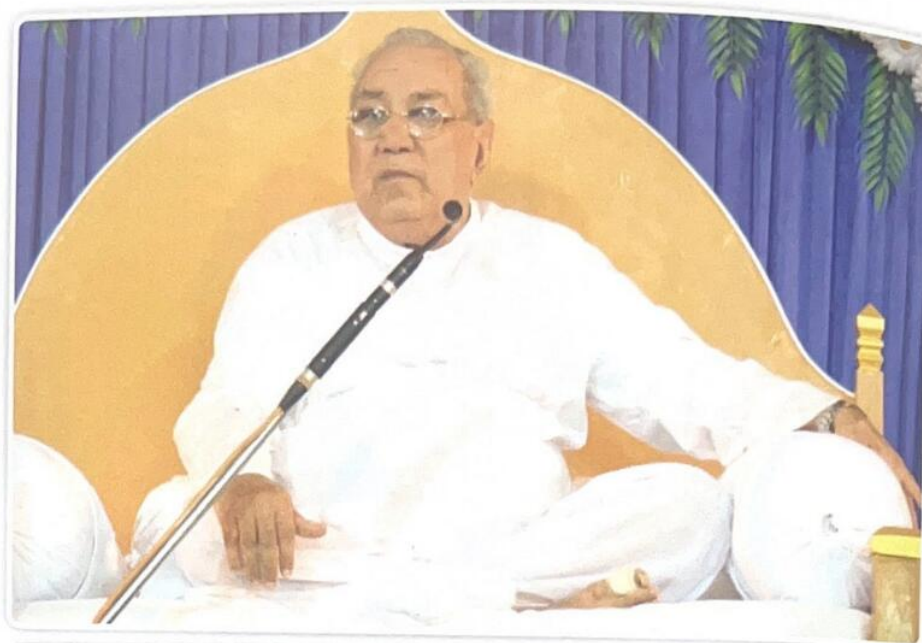
गुरुवार, ३० जुलाई २००९, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान ऐतिहासिक शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

(इस कार्यक्रम में गुरुदेव ने पहली बार संजीवनी मंत्र को सीडी में रिकॉर्ड करवा के जनमानस के लिए सार्वजनिक किया था। इससे पहले गुरुदेव केवल अपनी उपस्थिति में और गुरुवार के दिन ही शक्तिपात दीक्षा देते थे। इस कार्यक्रम के बाद से, गुरुदेव की वाणी में मंत्र सुनकर किसी भी दिन दीक्षा ली जा सकती है।)

भारत

७९.

भारत में अंधेरा ठोस बनकर जम गया है।

३१ मार्च १९९७, जोधपुर

निश्चित रूप से भारत तामसिक शक्तियों से पूर्णरूप से जकड़ा हुआ है। जिस प्रकार गज (हाथी) समुद्र में डूबने लगा था, उसी प्रकार भारत अन्धकार में डूब रहा है और जिस प्रकार गज की करुण पुकार पर सुदर्शनधारी ने उसे मुक्त किया था, भारत भी मात्र उसी उपाय से बच सकता है।

भारत को आजाद करना, पश्चिम की मजबूरी थी। यही कारण है, वे शक्तियाँ भारत के दो टुकड़े कर गयीं और वे शक्तियाँ आज तक एक और विभाजन के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने लगभग सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत को ईसाई बनाने का षड्यंत्र रचा हुआ है ताकि भारत का एक और विभाजन कर सकें।

दूसरी तरफ देश को आर्थिक जाल में बुरी तरह से जकड़ रखा है। आज देश की आय का एक तिहाई भाग ब्याज में देना पड़ रहा है। क्या कोई व्यवसाय ३३ प्रतिशत की दर से रकम उधार लेकर पनप सकता है? कभी नहीं। तीसरे विभाजन की कोशिश मध्यपूर्व की शक्तियाँ कर रहीं हैं। वे पश्चिमोत्तर भारत को, भारत से अलग करने का पूर्ण प्रयास कर रहीं हैं। इसके अतिरिक्त, उपर्युक्त दोनों शक्तियों ने सम्पूर्ण देश में भाषा, धर्म, जाति, और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर सम्पूर्ण देश का वातावरण अशान्त बना रखा है। ऐसी स्थिति में देश को बचाने का एक ही आधार है-'धर्म', क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने महर्षि श्री अरविन्द को अलीपुर जेल में कहा था- "भारत, धर्म के द्वारा और धर्म के लिए ही अस्तित्व में है।"

भारत का सिद्धान्त है- 'अहिंसा परमोधर्मः।' इस देश और इस धर्म को हिंसा से कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द जी ने ब्रुकलीन में १८९५ में कहा था- "भारत का संदेश है कि शांति, शुभ, धैर्य और नम्रता की अन्त में विजय होगी। क्योंकि वे यूनानी कहाँ हैं, जो एक समय पृथ्वी के स्वामी थे? समाप्त हो गए। वे रोम वाले कहाँ हैं, जिनके सैनिकों की पद्चाप से संसार काँपता था? मिट गए। वे अरब वाले कहाँ हैं, जिन्होंने पचास वर्षों में अपने झण्डे अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर तक फहरा दिये थे? और वे स्पेन वाले करोड़ों मनुष्यों के निर्दयी हत्यारे कहाँ हैं? दोनों जातियाँ लगभग मिट गई। परन्तु अपनी संतान की नैतिकता के कारण यह दयालु जाति (हिन्दू) कभी नहीं मरेगी, और वह

फिर अपनी विजय की घड़ी देखेगी।"

इस संबंध में महर्षि श्री अरविंद ने भी कहा था-"भारत, सच्ची स्वतंत्रता राजनीतिक अस्त्रों के माध्यम से नहीं वरन् आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा प्राप्त करेगा।"

इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा है-"भारत का प्राण धर्म है, भाषा धर्म है तथा भाव धर्म है।"

८०.

बारहवाँ लोकसभा चुनाव

१३ फरवरी १९९७, बीकानेर

१२वीं लोकसभा के चुनावों में हिन्दू धर्म के नारे के साथ चुनाव में उतरी भारतीय जनता पार्टी को अगर इटली में जन्मी एक रोमन कैथोलिक ईसाई महिला सत्ता में आने से रोक देती है तो भारत के हिन्दुओं को इन तथाकथित हिन्दू धर्म के ठेकेदारों पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाकर आत्म मंथन करना होगा। देश की ८० प्रतिशत जनता हिन्दू-धर्म को मानती है, ऐसी स्थिति में अगर कोई पार्टी हिन्दू-धर्म के नाम पर चुनाव लड़कर भी सत्ता से बाहर रहती है तो उसे हिन्दू-धर्म का शोषक ही माना जाना चाहिए।

श्रीमती सोनिया गाँधी की सभाओं में उमड़ी भीड़ से तो ऐसा लगता है कि भारत में नेतृत्व करने वाले लोगों का पूर्ण रूप से अभाव हो गया है; देश की ऐसी स्थिति पहले कभी नहीं हुई। इस चुनाव में अगर भारतीय जनता पार्टी ११ वीं लोकसभा से कम सीटें प्राप्त करती है तो उसका स्पष्ट अर्थ होगा कि देश पुनः ईसाइयों की गुलामी की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। राष्ट्रपति भवन तो ईसाइयों के कब्जे में पहले ही आ चुका है। इस कार्य में श्री अटल जी का समर्थन जग जाहिर है। ऐसा लगता है कि अब श्री अटल जी प्रधानमंत्री का पद भी ईसाइयों को भेंट करने वाले हैं। मेरे विचार में श्री वाजपेई जी इस कार्य में सफल नहीं हो सकेंगे, परन्तु अगर ऐसा हो गया तो करोड़ों हिन्दुओं की आशाओं पर तुषारापात हो जाएगा।

विश्व के सभी भविष्यदृष्टाओं की भविष्यवाणियों के अनुसार २१ वीं सदी में वैदिक धर्म अर्थात् हिन्दू धर्म, विश्व धर्म होगा। ऐसा होना ईश्वरीय इच्छा है।

८१.

भारत का भविष्य

भारत सदियों तक गुलाम रहा, इसलिए इस पवित्र भूमि पर अंधकार ठोस बनकर जम गया है। वेदान्तियों को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व के धर्मों के अनुयाइयों का विकास अभी द्वैतभाव तक ही हुआ है। आज भारत में भी द्वैतवादियों का ही बोलबाला है। दर्शन के हिसाब से भारत अद्वैतवाद तक सदियों पहले विकसित हो चुका था। यह सत्य हमारे दार्शनिक ग्रन्थों से पूर्ण सत्य प्रमाणित होता है।

प्रकृति का एक अटल सिद्धान्त है- उत्थान एवं पतन। पतन की भी एक सीमा होती है। भारत उस सीमा तक पहुँच चुका है। इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है-

"भारत की नियति का सूर्य उदय हो चुका है। अब प्रवाह ऊपर की ओर है। पतन का काल समाप्त हो गया है। अब प्रभात निकट है, और अगर एक बार प्रकाश अपना दर्शन दे दे तो रात्रि फिर कभी नहीं हो सकती। उषा काल शीघ्र ही पूरा हो जाएगा और सूर्य क्षितिज पर उदित होगा। भारत की नियति का सूर्य उदित होगा, और समस्त भारत को अपनी ज्योति से भर देगा। और केवल भारत को ही नहीं एशिया और जगत् भर को प्लावित कर देगा। हर घड़ी, हर पल उन्हें दिवस की कान्ति और दीप्ति के निकट लाते हैं जिसकी स्वीकृति भगवान् ने दी है। पतन का काल समाप्त हो गया है। नया भारत उठ रहा है। सचेतन हो रहा है, और राष्ट्रों की बिरादरी में अपना उचित स्थान लेने की तैयारी कर रहा है।"

महर्षि श्री अरविन्द ने भारत तथा सम्पूर्ण विश्व को अन्तर्दृष्टि से जितना निकट से देखा है, उतना कम ही लोगों ने देखा है। श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि "आगामी मानव-जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।" इसका स्पष्ट अर्थ है मानव-जाति हमारे अद्वैतवाद के सिद्धान्त के अनुसार क्रमिक विकास के सिद्धान्त के मुताबिक पूर्णता प्राप्त कर लेगी।

मैंने परिस्थितियों वश सन् १९६८ में, सर्दियों में आरम्भ होने वाली नवरात्रि पर्व से, गायत्री मंत्र का अनुष्ठान प्रारम्भ किया। सवा लाख मंत्रों का जप, हवन कुण्ड में प्रत्येक मंत्र के बाद स्वाहा के साथ आहुति देते हुए किया। १९६९ के प्रारम्भ में मुझे गायत्री मंत्र की सिद्धि हो गई।

मुझमें हुए इस परिवर्तन के कारण ही मेरे माध्यम से मानवता में यह दिव्य परिवर्तन आ

रहा है। भविष्य में मानवता में होने वाले इस परिवर्तन को देखकर ही श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि "आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।" क्योंकि यह विकास सार्वभौम है, अतः सम्पूर्ण विश्व इससे प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता।

८२.

भारत में आध्यात्मिक जागृति

३० मार्च १९८८

इस समय भारत में आध्यात्मिक जगत् में, पूर्ण रूप से अन्धकार है। जब तक भारत का आम नागरिक अपनी इस कमजोरी को दिल से स्वीकार करके, दूर करने का सामूहिक प्रयास प्रारम्भ नहीं करता है, यह भयंकर अन्धकार मिटने वाला नहीं है। हम भारतीयों में यह कमी है कि हम, हमारी कमजोरी को स्वीकार नहीं करते। उसे छिपाने के लिए तर्क शास्त्र के सहारे अनेक झूठे तर्क देकर, झूठ को सत्य प्रमाणित करने का प्रयास निरन्तर करते रहते हैं। इस प्रकार हमने सच्चाई के स्थान पर, झूठ के अम्बार लगा लिए हैं।

हम आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण रूप से खोखले हो चुके हैं। जब तक हम इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करते हैं, हमारी स्थिति में कोई भी परिवर्तन आने वाला नहीं है।

भारत के अन्धकार के बारे में महर्षि अरविन्द ने कहा है, "यह कई कारणों से है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृत्तियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तमस् ठोस बनकर, यहाँ जम गया है। कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास, विवेकानन्द, इनमें से कोई भी साधारण व्यक्ति नहीं था, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।"

इस सम्बन्ध में श्री माँ ने भी कहा है, "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं, और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जाएगा।"

उपर्युक्त तथ्यों को जब तक आप भारतीय, खुले दिल से स्वीकार करके, सच्चाई का मार्ग नहीं खोजोगे, अन्धकार मिटने वाला नहीं है। जहाँ सच्चाई होगी, वहीं ईश्वर की शक्ति प्रत्यक्ष रूप से कार्य करेगी। ईश्वर कृपा से मानव; मानसिक, शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और सुख-शान्ति का जीवन बिताता है। हमारे देश की दरिद्रता, गरीबी, हर वस्तु का अभाव, हिंसा, घृणा, द्वेष, क्रूरता आदि स्पष्ट दर्शाती है कि यहाँ आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण रूप से अन्धकार है। केवल भ्रमित करने वाले उपदेश, तरह-तरह के स्वांग, प्रदर्शन, शब्दजाल और तर्क शास्त्र से समस्या का समाधान होता तो अब तक चेतना कभी की आ गई होती।

परन्तु इन सब के चलते अन्धकार दिनों दिन ठोस होता जा रहा है। हमें इस सच्चाई को

स्वीकार करना होगा। इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका से जो पत्र लिखकर भारत भेजे, उनसे स्थिति बहुत स्पष्ट हो जाती है। स्वामी जी ने अगस्त १८९५ में अमेरिका से श्री अलासिंग पेरूमल को पत्र लिखा वह इस प्रकार है :- "वास्तव में भारत ने मेरे लिए जो किया है, उससे कहीं अधिक मैंने भारत के लिए किया है। वहाँ तो मुझे रोटी के एक टुकड़े के लिये डलिया भर गालियाँ मिलती हैं। मैं कहीं भी क्यों न जाऊँ, प्रभु मेरे लिए काम करने वालों के, दल के दल भेज देता है। वे लोग भारतीय शिष्यों की तरह नहीं हैं, अपने गुरु के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देने को प्रस्तुत हैं।

पाश्चात्य देशों में प्रभु क्या करना चाहते हैं, यह तुम हिन्दुओं को कुछ ही वर्षों में देखने को मिलेगा। तुम लोग प्राचीन काल के यहूदियों जैसे हो और तुम्हारी स्थिति नांद में लेटे हुए कुत्ते की तरह है, जो न खुद खाता है और न दूसरों को ही खाने देना चाहता है। तुम लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना नहीं है। रसोई ही तुम्हारा ईश्वर है तथा हँडिया-बर्तन तुम्हारा शास्त्र। अपनी तरह असंख्य सन्तानोत्पादन में ही तुम्हारी शक्ति का परिचय मिलता है।"

उपर्युक्त तस्वीर हमारे अध्यात्मवाद को स्पष्ट करती है, जिसके दम्भ पर हम फूले जा रहे हैं।

इसी सम्बन्ध में स्वामी जी ने एक पत्र ०१ सितम्बर १८९५ को पेरिस से लिखा था। उस पत्र में हमारे अध्यात्मवाद की असली तस्वीर नजर आती है। स्वामी जी ने लिखा है- "मैं जैसा भारत का हूँ, वैसे ही समग्र जगत् का भी हूँ। इस विषय को लेकर मनमानी बातें बनाना निरर्थक है। मुझसे जहाँ तक हो सकता था, मैंने तुम लोगों की सहायता की है, अब तुम्हें स्वयं ही अपनी सहायता करनी चाहिए।

ऐसा कौनसा देश है, जो कि मुझ पर विशेष अधिकार रखता है? क्या मैं किसी जाति के द्वारा खरीदा हुआ दास हूँ? अविश्वासी नास्तिकों, तुम लोग ऐसी व्यर्थ की मूर्खतापूर्ण बातें मत बनाओ। मैंने कठोर परिश्रम किया है और मुझे जो कुछ धन मिला है, उसे मैं कलकत्ते और मद्रास भेजता रहा हूँ। यह सब करने के बाद, अब मुझे उन लोगों के मूर्खतापूर्ण निर्देशानुसार चलना होगा? क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं उन लोगों का किस बात का ऋणी हूँ? क्या मैं उनकी प्रशंसा की कोई परवाह करता हूँ या उनकी निन्दा से डरता हूँ? बच्चे, मैं एक ऐसे विचित्र स्वभाव का व्यक्ति हूँ कि मुझे पहचानना तुम लोगों के लिए भी, अभी संभव नहीं है। तुम अपने कार्य करते रहो। नहीं कर सकते तो चुपचाप बैठ जाओ। अपनी मूर्खता के बल पर मुझसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने की चेष्टा न करो।

मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, जीवनभर मैं ही दूसरों की सहायता करता रहा हूँ। श्री रामकृष्ण परमहँस के कार्यों में सहायता प्रदान करने के लिए, जहाँ के निवासियों में दो-चार रुपये भी एकत्र करने की शक्ति नहीं है, वे लोग लगातार व्यर्थ की बातें बना रहे हैं और उस व्यक्ति पर अपना हुक्म चलाना चाहते हैं, जिसके लिए उन्होंने कभी भी कुछ नहीं किया, प्रत्युत जिसने उन लोगों के लिए जहाँ तक हो सकता था, सब कुछ किया।

जगत् ऐसा ही अकृतज्ञ है। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि ऐसे जातिभेद, जर्जरित, कुसंस्कारयुक्त, दया रहित, कपटी, नास्तिक, कायरों में से जो केवल शिक्षित हिन्दुओं में ही पाये जा सकते हैं, एक बनकर जीने-मरने के लिए, मैं पैदा हुआ हूँ?

मैं कायरता को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। कायर तथा राजनीतिक मूर्खतापूर्ण बकवासों के साथ, मैं अपना सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। किसी प्रकार की राजनीति में मुझे विश्वास नहीं है। ईश्वर तथा सत्य ही जगत् में एक मात्र राजनीति है, बाकी सब कूड़ा-करकट है।"

मुझे, उस परमसत्ता ने आध्यात्मिक जगत् की जो प्रत्यक्षानुभूति करवाई है, वह उपर्युक्त तथ्यों से सत्यापित होती है। जब तक हम झूठे दम्भ को त्यागकर, उस परमसत्ता से वास्तविक सम्बन्ध स्थापित नहीं करेंगे, काम नहीं बनेगा। झूठ के पैर नहीं होते। आखिर हम देशवासियों को कितने दिन धोखा दे सकेंगे? काल की गति ने किसी को माफ नहीं किया, बड़ी से बड़ी तामसिक सत्ता भी उसके सामने नहीं टिक सकी। भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।११:३२

(मैं लोकों का नाश करने वाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। जो प्रतिपक्षियों की सेना में स्थित हुए योद्धा लोग हैं, वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे।)

वही परमसत्ता संसार में अवतरित हो चुकी है जिसकी भविष्यवाणी संसार के बहुत से संत कर चुके हैं। अतः अब तामसिकता का अन्त होकर, युग परिवर्तन में अधिक देर नहीं है।

८३.

संसार में भारत की भूमिका के सम्बन्ध में श्री अरविन्द के कथन।

२६ जुलाई १९८८

क्रम-विकास में अगला कदम मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाएगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना-विचारना शुरू किया था। यह अभी तक एक व्यक्तिगत आशा, विचार और आदर्शमात्र है जिसने भारत और पश्चिम में, दोनों जगह दूरदर्शी विचारकों को वश में करना शुरू कर दिया है। इस मार्ग की कठिनाइयाँ प्रयास के किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा बहुत अधिक जबरदस्त है, परन्तु कठिनाइयाँ जीती जाने के लिए ही बनी थीं और यदि दिव्य परम इच्छा शक्ति का अस्तित्व है तो वे दूर होंगी ही। यहाँ भी यदि इस विकास को होना है तो चूंकि, यह आत्मा और अन्तर चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा, इसका प्रारम्भ भारत वर्ष ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा तथापि केन्द्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।

क्रान्ति दर्शी श्री अरविन्द ने पहले ही उस समय को देख लिया था, जब भारत, धर्म और कर्म के जगत् में संसार का नेतृत्व करेगा। तभी तो उन्होंने स्पष्ट कहा है- "अगर सब कुछ नष्ट भ्रष्टहो जाए तो भी मैं उस विनाश के परे, नये सृजन की राह देखूँगा। आज संसार में जो कुछ हो रहा है, उससे मैं जरा भी नहीं घबराता। मैं जानता था कि घटनाएँ ऐसा रूप लेंगी। रही बात बौद्धिक आदर्शवादियों की, मैंने उनकी आशाओं को कभी नहीं स्वीकारा, इसलिए मैं निराश भी नहीं होता।"

प्राचीन काल में जब भगवान् अवतार लेते थे तो साथ ही दैत्य भी आया करते थे, जो भगवान् का विरोध करते थे। यह रीति सदा से हम देखते आ रहे हैं कि अपने पूर्ण विनाश तक दैत्यों ने किसी भी युग में भगवान् की सत्ता को स्वीकार नहीं किया है। अतः इस युग का अन्त भी ठीक वैसे ही होगा।

इस सम्बन्ध में फ्रांस के प्रसिद्ध भविष्यद्रष्टा श्री नास्त्रेदमस ने अपनी पुस्तक सेंचुरीज में भी साफ चित्रण किया है- सेंचुरी १० कंत्रा ९६ "सागर के नाम (हिन्द महासागर) वाले उस धर्म (हिन्दू) की विजय शुरू होगी।"

सेंचुरी १ के कंत्रा ५० की भविष्यवाणी ध्यान देने योग्य है-

"जिस प्रायद्वीप में तीन समुद्र मिलते हैं,
वहाँ बृहस्पतिवार के पुजारी वीर जन्म लेंगे,
एशिया में उन्हें रोकने का प्रयास पागलपन होगा।"

जिन लोगों ने हिन्दू संस्कृति को अपने शासन के दौरान नष्ट करने का प्रयास किया, उनका अन्त करके हिन्दू, संसार में सनातन धर्म की पताका फहरा देंगे।

मुसलमान मिश्र को मूर्तिपूजक कहते हैं। सेंचुरी के अनुसार मिश्र और इजराइल, तीसरे विश्व युद्ध में भारत का साथ देंगे। सेंचुरी में लिखा है कि रूस में साम्यवाद समाप्त हो जाएगा तथा रूस और अमेरिका दोनों भारत से मित्रता कर लेंगे। भारत तीसरे विश्व युद्ध का नेतृत्व करेगा और ये दोनों आज की महाशक्तियाँ उसका साथ देंगी। इस प्रकार २१ वीं सदी में भारत अपने पुरातन स्वर्णिम युग में पुनः प्रवेश करके, संसार में शान्ति स्थापित करेगा।

संचुरी २ कंत्रा २९ में लिखा है-

"भारतीय नेता विजय-दुर्ग से आगे बढ़ेंगे
ऐपेनिस के पार फ्रांस पहुँच जाएंगे।
समुद्र मेघ और बर्फ का राज्य जीत लेंगे
तो सभी शत्रु उनके चरणों पर लोटेंगे।"

इस सम्बन्ध में संसार के कई संतों ने भविष्यवाणियाँ कर रखी हैं। ईसाई धर्म के जन्मदाता यीशु ने भी अपने अन्तिम समय से कुछ दिन पहले भविष्यवाणी की थी, जिसका वर्णन बाइबिल के 'द न्यू टेस्टामेंट' में सेंट मार्क के १३:१ से १३:३३ तक स्पष्ट तौर पर किया है-

13:01. And as he went out of the temple, one of his disciples saith unto him, Master, see what manner of stones and what building are here!

(अनुवादः- जब वह मन्दिर से निकल रहा था तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, हे गुरु! देख, कैसे कैसे पत्थर और कैसे कैसे भवन हैं!)

13:2 And Jesus answering said unto him, seest thou these great buildings? There shall not be left one stone upon

another, that shall not be thrown down.

(अनुवाद:- यीशु ने उससे कहा, क्या तुम ये बड़े बड़े भवन देखते हो, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा, जो ढाया न जाएगा।)

13:3 And as he sat upon the mount of Olives over against the temple, Peter and James and John and Andrew asked him privately.

(अनुवाद:- जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा।)

13:4 Tell us, when shall these things be? And what shall be the sign when all these things shall be fulfilled?

(अनुवाद:- कि हमें बता कि ये बातें कब होंगी और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी, उस समय का क्या चिह्न होगा।)

13:5 And Jesus answering them began to say, take heed lest any men deceive you.

(अनुवाद:-यीशु उनसे कहने लगा, चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए।)

13:6 For many shall come in my name, saying, I am Christ; and shall deceive many.

(अनुवाद:-बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूँ और बहुतों को भरमाएंगे।)

13:7 And ye shall hear of wars and rumours of wars; see that ye be not troubled; For all these things must come to pass, but the end is not yet.

(अनुवाद:-और जब तुम लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तो न घबराना, क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।)

13:8 For nation shall rise against nation, and kingdom against kingdom and there shall be famines and pestilences, and earthquakes in diverse places. All these are the beginning of sorrows.

(अनुवाद:-क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा और हर कहीं भूईडोल होंगे, और अकाल पड़ेंगे, यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।)

13:9 But take heed to yourselves; for they shall deliver you up to councils, and in the synagogues ye shall be beaten. And ye shall be brought before rulers and kings for my sake, for a testimony against them.

(अनुवादः-परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो, क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो।)

13:10 And the gospel must first be published among all nations.

(अनुवादः-पर अवश्य है कि पहिले सुसमाचार, सब जातियों में प्रचार किया जाए।)

13:11 But when they shall lead you, and deliver you up, take no thought beforehand what ye shall speak, neither do ye premeditate, but whatsoever shall be given you in that hour, that speak ye; for it is not ye that speak, but the holy Ghost.

(अनुवादः-जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे, पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना, क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।)

13:12 Now the brother shall betray the brother to death, and the father the son; and children shall rise up against their parents, and shall cause them to be put to death.

(अनुवादः-और भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिये सौंपेंगे, और लड़केवाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।)

13:13 And ye shall be hated of all men for my name's sake, but he that shall endure unto the end, the same shall be saved.

(अनुवादः-और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।)

13:14 But when ye shall see the abomination of desolation, spoken of by Daniel the prophet, standing where it ought not, (let him that readeth understand,) then let them

that be in Judaea flee to the mountains:

(अनुवादः-सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदियों में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ।)

13:15 And let him that is on the housetop not go down into the house, neither enter therein, to take any thing out of his house:

(अनुवादः-जो कोठे पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए।)

13:16 And let him that is in the field not turn back again for to take up his garment.

(अनुवादः-और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।)

13:17 But woe to them that are with child, and to them that give suck in those days!

(अनुवादः-उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय हाय!)

13:18 And pray ye that your flight be not in the winter.

(अनुवादः-और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो।)

13:19 For in those days shall be affliction, such as was not from the beginning of the creation which God created unto this time, neither shall be.

(अनुवादः-क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे।)

13:20 And except that the Lord had shortened those days, no flesh should be saved: but for the elect's sake, whom he hath chosen, he hath shortened the days.

(अनुवादः-और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया।)

13:21 And then if any man shall say to you, Lo, here is Christ; or, lo, he is there; believe him not:

(अनुवादः-उस समय यदि कोई तुमसे कहे; देखो, मसीह यहाँ है, या देखो, वहाँ है तो

प्रतीति न करना।)

13:22 For false Christs and false prophets shall rise, and shall shew signs and wonders, to seduce, if it were possible, even the elect.

(अनुवादः-क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।)

13:23 But take ye heed: behold, I have foretold you all things.

(अनुवादः-पर तुम चौकस रहोः देखो, मैंने तुम्हें सब बातें पहले से ही कह दी हैं।)

13:24 But in those days, after that tribulation, the sun shall be darkened, and the moon shall not give her light,

(अनुवादः-उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा और चाँद प्रकाश न देगा।)

13:25 And the stars of heaven shall fall, and the powers that are in heaven shall be shaken.

(अनुवादः-और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे; और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएंगी।)

13:26 And then shall they see the son of man coming in the clouds with great power and glory.

(अनुवादः-तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे।)

13:27 And then shall he send his angels, and shall gather together his elect from the four winds, from the uttermost part of the earth to the uttermost part of heaven.

(अनुवादः-उस समय वह अपने दूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठे करेगा।)

13:28 Now learn a parable of the fig tree; When her branch is yet tender, and putteth forth leaves, ye know that summer is near:

(अनुवादः-अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखोः जब उसकी डाली कोमल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं ; तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है।)

13:29 So ye in like manner, when ye shall see these things come to pass, know that it is nigh, even at the doors.

(अनुवादः-इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो, कि वह निकट है वरन द्वार ही पर है।)

13:30 Verily I say unto you, that this generation shall not pass, till all these things be done.

(अनुवादः-मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।)

13:31 Heaven and earth shall pass away: but my words shall not pass away.

(अनुवादः-आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।)

13:32 But of that day and that hour knoweth no man, no, not the angels which are in heaven, neither the Son, but the Father.

(अनुवादः-उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।)

13:33 Take ye heed, watch and pray: for ye know not when the time is.

(अनुवादः-देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।)

इस सम्बन्ध में मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार मैं इतना ही कह सकता हूँ कि श्री अरविन्द ने २४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण के पृथ्वी पर अवतरण की जो भविष्यवाणी की है, वह पूर्ण सत्य है। भगवान् के अवतरण का सीधा अर्थ तामसिक सत्ता का पूर्ण विनाश है। गीता के ११वें अध्याय के ३२वें श्लोक में भगवान् ने जो कहा है, तीसरे विश्व युद्ध में वही होगा। भगवान् ने कहा है-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।

ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।।११:३२

इसके अतिरिक्त गीता के चौथे अध्याय के ७वें तथा ८वें श्लोक में स्पष्टकहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

अवतार अनादिकाल से हमारी भारत भूमि पर ही होते आये हैं। इस सम्बन्ध में यीशु ने भी यह कहते हुए इशारा किया है- सेंट मैथ्यु २४:२७- "For as the lightening cometh out of the east and shineth even unto the west; so shall also the coming of the son of man be."

(अनुवादः-क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।)

८४. विश्व को सच्ची शान्ति और आनन्द भारत से ही मिलेगा।

२० मार्च १९८८

शान्ति और आनन्द मनुष्य को हृदय से प्राप्त होता है। भौतिक संसाधनों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। अन्तर और बाह्य में जब तक पूर्ण सामंजस्य पैदा नहीं होगा, संसार के मानव को सच्ची शान्ति और आनन्द मिलना असम्भव है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है कि "पश्चिम के लोग भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं, अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

हमारे धर्म गुरु संसार के सामने चाहे कितना ही ढिंढोरा पीटें, परन्तु इस समय भारत के आध्यात्मिक जगत् में जितना अन्धकार है, पहले कभी नहीं था। इस सम्बन्ध में श्रीमां (श्री अरविन्द आश्रम) ने स्पष्ट कहा है - "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जाएगा।"

यह एक कटु सत्य है कि इस समय भारत में तमस् संसार भर से अधिक है और लोगों को इस बात से भारी दुःख होता होगा, मुझे तो इससे खुशी है। हर वस्तु का एक निश्चित सीमा के लांघते ही रूप परिवर्तित हो जाता है, हमें मालूम है कि जब-जब ही इस भू-खण्ड पर राक्षसों का पूर्ण आधिपत्य हुआ है, ईश्वर ने राम और कृष्ण के रूप में अवतरित होकर, राक्षसों को मारकर, पृथ्वी का भार हल्का किया है। भगवान् श्री कृष्ण ने इस सम्बन्ध में गीता में स्पष्ट कहा है।-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

श्री अरविन्द की भविष्यवाणी कि, "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है, अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करते

हैं। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‍बुद्ध (Inspire) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।", पूर्ण सत्य है।

अलीपुर जेल में भगवान् ने श्री अरविन्द को स्पष्ट आदेश दिया था- "मैं इस देश को अपना संदेश फैलाने के लिए उठा रहा हूँ। यह संदेश उस सनातन धर्म का संदेश है जिसे तुम अभी तक नहीं जानते थे, पर अब जान गए हो। तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों से कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो, तुम्हें स्वार्थसिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए उठाया जा रहा है।

जब कहा जाता है कि भारत वर्ष महान् है तो उसका मतलब है कि सनातन धर्म महान् है। मैंने तुम्हें दिखा दिया कि मैं सब जगह और सब में मौजूद हूँ। जो देश के लिए लड़ रहे हैं, उन्हीं में नहीं, देश के विरोधियों में भी, मैं ही काम कर रहा हूँ। जाने या अनजाने, प्रत्यक्ष रूप से सहायक होकर या विरोध करते हुए, सब मेरा ही काम कर रहे हैं। मेरी शक्ति काम कर रही है और वह दिन दूर नहीं, जब काम में सफलता प्राप्त होगी।"

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में जो व्याख्या की है, श्री अरविन्द को दिये उपर्युक्त आदेश से पूर्ण रूप से मेल खाती है। गीता में भगवान् ने स्पष्ट कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

संसार के सभी धर्मों के संतों ने मुख्य तौर पर एक ही भविष्यवाणी की है कि वह शक्ति भारत के उत्तरी भाग में मानव के रूप में अवतरति होगी। सभी का मत है कि इस सदी के अन्त तक वह अपने क्रमिक विकास के साथ संसार के सामने प्रकट होकर, पूरे विश्व को संचालित करने लगेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार वह पूर्ण सत्ता सन् १९९३ तक भारत में अपना पूर्ण प्रकाश फैला देगी।

इसके बाद सदी के अन्त तक संसार की सारी भौतिक सत्ता को अपने अधीन करके उसका संचालन करने लगेगी। इस प्रकार कलियुग का अंत होकर, संसार में पूर्ण सात्त्विक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। इस तरह जब भौतिक सत्ता का सीधा संचालन आध्यात्मिक सत्ता करने लगेगी तो युग परिवर्तन होकर पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आवेगा। जो कुछ होने वाला है, उसका आभास संसार भर के संतों की भविष्यवाणी से स्पष्ट होता है।

८५.
२१वीं शताब्दी के बारे में भारत में इतना शोर क्यों मच रहा है?

२४ फरवरी १९८८

२१वीं शताब्दी में भारत की संसार में क्या स्थिति होगी, इसको लेकर सत्ता पक्ष और विरोधी पक्ष में काफी छींटाकसी चल रही है। सभी लोगों का ध्यान मात्र वैज्ञानिक उन्नति पर है। सभी लोग मात्र वैज्ञानिक उपलब्धियों को ही उन्नति का प्रतीक मानते हैं। अगर वैज्ञानिक उपलब्धियाँ ही मात्र संसार की सुख शान्ति का सहारा होती तो पश्चिम के देशों में तो इस समय पूर्ण शान्ति होनी चाहिए थी, परन्तु वहाँ स्थिति ठीक इसके विपरीत है।

लोगों का जीवन इतना अशान्त और तनावपूर्ण है कि ८०-८५ प्रतिशत लोगों को सोने के लिए विभिन्न प्रकार के नशे की दवाइयों का सहारा लेना पड़ता है। जो वस्तु ईश्वर ने बिना किसी भेदभाव के, संसार के सभी प्राणियों को मुफ्त में प्रदान की हुई है, वह भी इन लोगों के नसीब में नहीं लिखी है।

इस प्रकार मानसिक शान्ति के अभाव में निरन्तर तनावग्रस्त दिमाग, विभिन्न प्रकार के दुष्कर्म संसार में फैला रहा है। ईश्वर ने जो वैज्ञानिक ज्ञान संसार को दिया है, उसका उपयोग मानव की भलाई के लिए कम और विनाश के लिए अधिक किया जा रहा है। संसार को दो विश्व युद्धों में झोंकने वाला जर्मनी आज सबसे अधिक चिन्तित है। उसकी हालत संसार भर से विपरीत है। सारे संसार में जन्म दर बढ़ रही है, परन्तु वहाँ जन्म दर निरन्तर घट रही है। वहाँ के विद्वानों को इस स्थिति से भारी चिन्ता हो रही है। उनका कहना है कि अगर यही स्थिति रही तो जर्मन खून संसार से खत्म हो जाएगा। यही स्थिति और देशों की है, कहीं भी शान्ति का नामो निशान तक नहीं है।

ऐसी स्थिति में हमारे देशवासी अगर मात्र वैज्ञानिक उन्नति को प्रगति का प्रतीक समझें तो यह एक भारी भूल होगी। फिर वह परमसत्ता २१वीं सदी का इतना शोर क्यों मचवा रही है? महर्षि अरविन्द ने कहा था, आजादी लेने के बाद भारत का स्वरूप संसार के सामने कैसा हो, यह अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है। अगर भारत अपनी सीमाओं का विस्तार करता हुआ, वैज्ञानिक दृष्टि से संसार के अन्य देशों के बराबर खड़ा हो जाय तो संसार में कुछ भी फर्क पड़ने वाला नहीं है, जहाँ इतने देश हैं, एक और जुड़ जाएगा।

इस प्रकार भौतिक उन्नति संसार में शान्ति स्थापित करने में सफल नहीं होगी। वैज्ञानिक दृष्टिसे द्वापर युग का मानव सर्वोत्तम स्थिति में था। फिर भी महाभारत का युद्ध हुआ और संसार वैज्ञानिकों और वीरों से खाली हो गया। अगर संसार में सच्ची आध्यात्मिक चेतना नहीं आई तो महाभारत के युद्ध में संसार की जो हालत हुई, उससे भिन्न परिणाम की आशा केवल कल्पना है। परन्तु संसार के धार्मिक ग्रन्थ और संतों की भविष्यवाणियाँ संकेत कर रही हैं कि वह परमसत्ता मानव रूप में, संसार में सुख शान्ति स्थापित करने हेतु अवतार ले चुकी है।

अपने क्रमिक विकास के साथ वह शक्ति, इस सदी के अन्त तक संसार भर की मानव जाति को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार वह शक्ति सन् १९९३ तक भारत में अपना पूरा प्रभाव जमा लेगी। इसके बाद आगे के वर्षों में पूरे संसार में उसका एक छत्र प्रभाव स्थापित हो जाएगा।

इस समय संसार में सबसे बड़ा ईसाई धर्म, फिर मुस्लिम धर्म और फिर बौद्ध धर्म है। ईसाई धर्म के प्रवर्तक यीशू ने संसार छोड़ने से पहले ही घोषणा कर दी थी- "मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और वह आकर संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर कर देगा। 'पाप' के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। 'धार्मिकता' के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे। 'न्याय' के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। मुझे तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उसे सह नहीं सकोगे। परन्तु जब 'वह' अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

इसके अलावा यीशू के अनुयाइयों में से कई और संतों ने भविष्यवाणियाँ की है कि २०वीं सदी के अन्त तक कलीसिया का अस्तित्व मिट जाएगा। यीशु तथा अन्य संतों की भविष्यवाणियों को लेकर ईसाई जगत् में आज खलबली मची हुई है। दबी जुबान से ईसाई धर्म प्रचारक इसे स्वीकार करते हुए कहते हैं- "कुछ विनाश के ऐसे नबी हैं, जो यह भविष्यवाणी करते हैं कि बीसवीं शताब्दी के अन्त तक कलीसिया का अस्तित्व ही मिट जाएगा। यह एक ऐसे जर्जर वृद्ध व्यक्ति का चित्र है, जो कब्र के निकट पहुँच चुका हो, परन्तु परमेश्वर के परिवार

के लिए वास्तव में कोई ऐसा खतरा नहीं है। परमेश्वर ने इसलिए अपने इकलौते पुत्र को दे दिया कि हम सब एक रह सकें। उसने अपने परिवार के लिए भारी मूल्य चुकाया है।"

मैं नहीं मानता कि परमेश्वर उस कार्य को सम्पन्न नहीं करेगा, जो उसने प्रारम्भ किया है। उपर्युक्त से एक ऐसी झलक नजर आती है कि ईसाई जगत् यीशु (अपने परमात्मा) और अपने ही धर्म के सन्तों की भविष्यवाणियों से अत्यधिक भयभीत है।

इस सम्बन्ध में मैंने एक कामकाजी ईसाई महिला से एक दिन 'यूहन्ना' को कही यीशु की बात के बारे में पूछताछ की तो उसने कहा कि मुझे तो इतना ज्ञान नहीं है, मैं आपको हमारे पादरी से मिलाकर मालूम करवा सकती हूँ। इसके बाद उसने कहा कि आजकल प्रार्थना के बाद पादरी साहब हमें मुख्य चर्च से आया आदेश हर इतवार को सुनाते हैं। आदेश कुछ इस प्रकार है-

"इस समय ईसाई धर्म बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है। धर्म पर संकट के बादल मण्डरा रहे हैं। हमारे धर्म पर भारी आक्रमण होने वाला है। अगर आपको ईसाई धर्म या और किसी भी धर्म का धर्मगुरु हमारे धर्म के बारे में कुछ भी उपदेश दे तो आप उसकी बात न सुनो। आप को चर्च के पादरी जो आदेश दें, उसी का पालन करते हुए, इस संकट की घड़ी में अपने धर्म की रक्षा करें।" मैंने उस महिला से पूछा क्या आप लोगों को कोई प्रत्यक्ष संकट नजर आ रहा है तो उसने उत्तर दिया कि मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

इसके बाद मुस्लिम धर्म का नम्बर है। इस धर्म के प्रवर्तक मोहम्मद साहब की भी कलम १४ वीं सदी के बाद बन्द हो गई। इस धर्म के अनुयाइयों के अनुसार आगे का समय इस धर्म के अनुकूल नहीं रहेगा। इस प्रकार ये दोनों बड़े धर्म ह्रासोन्मुख हो चले हैं।

तीसरा धर्म, बौद्ध धर्म है। इस धर्म की जहाँ उत्पत्ति हुई, वहीं पूर्ण रूप से नष्टहो चुका है। बौद्ध और जैन धर्म दोनों निरीश्वरवादी धर्म हैं। ये धर्म मात्र राज्य सत्ता के सहारे पनपे हुए हैं। जब सनातन धर्म रूपी सूर्य उदय होगा तो इन सभी टिमटिमाते हुए सितारों के प्रकाश की ज्योति पूर्ण रूप से समाप्त हो जायेगी।

२१ वीं सदी से सनातन धर्म का एक छत्र साम्राज्य संसार में प्रारम्भ हो जाएगा। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने संसार के सभी संतों से एक कदम आगे बढ़ कर घोषणा की है। श्री अरविन्द ने उस परमसत्ता के अवतरण की स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा है- "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं;

इस प्रकार भौतिक उन्नति संसार में शान्ति स्थापित करने में सफल नहीं होगी। वैज्ञानिक दृष्टिसे द्वापर युग का मानव सर्वोत्तम स्थिति में था। फिर भी महाभारत का युद्ध हुआ और संसार वैज्ञानिकों और वीरों से खाली हो गया। अगर संसार में सच्ची आध्यात्मिक चेतना नहीं आई तो महाभारत के युद्ध में संसार की जो हालत हुई, उससे भिन्न परिणाम की आशा केवल कल्पना है। परन्तु संसार के धार्मिक ग्रन्थ और संतों की भविष्यवाणियाँ संकेत कर रही हैं कि वह परमसत्ता मानव रूप में, संसार में सुख शान्ति स्थापित करने हेतु अवतार ले चुकी है।

अपने क्रमिक विकास के साथ वह शक्ति, इस सदी के अन्त तक संसार भर की मानव जाति को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार वह शक्ति सन् १९९३ तक भारत में अपना पूरा प्रभाव जमा लेगी। इसके बाद आगे के वर्षों में पूरे संसार में उसका एक छत्र प्रभाव स्थापित हो जाएगा।

इस समय संसार में सबसे बड़ा ईसाई धर्म, फिर मुस्लिम धर्म और फिर बौद्ध धर्म है। ईसाई धर्म के प्रवर्तक यीशू ने संसार छोड़ने से पहले ही घोषणा कर दी थी- "मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और वह आकर संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर कर देगा। 'पाप' के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। 'धार्मिकता' के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे। 'न्याय' के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। मुझे तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उसे सह नहीं सकोगे। परन्तु जब 'वह' अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

इसके अलावा यीशू के अनुयाइयों में से कई और संतों ने भविष्यवाणियाँ की है कि २०वीं सदी के अन्त तक कलीसिया का अस्तित्व मिट जाएगा। यीशु तथा अन्य संतों की भविष्यवाणियों को लेकर ईसाई जगत् में आज खलबली मची हुई है। दबी ज़ुबान से ईसाई धर्म प्रचारक इसे स्वीकार करते हुए कहते हैं- "कुछ विनाश के ऐसे नबी हैं, जो यह भविष्यवाणी करते हैं कि बीसवीं शताब्दी के अन्त तक कलीसिया का अस्तित्व ही मिट जाएगा। यह एक ऐसे जर्जर वृद्ध व्यक्ति का चित्र है, जो कब्र के निकट पहुँच चुका हो, परन्तु परमेश्वर के परिवार

के लिए वास्तव में कोई ऐसा खतरा नहीं है। परमेश्वर ने इसलिए अपने इकलौते पुत्र को दे दिया कि हम सब एक रह सकें। उसने अपने परिवार के लिए भारी मूल्य चुकाया है।"

मैं नहीं मानता कि परमेश्वर उस कार्य को सम्पन्न नहीं करेगा, जो उसने प्रारम्भ किया है। उपर्युक्त से एक ऐसी झलक नजर आती है कि ईसाई जगत् यीशु (अपने परमात्मा) और अपने ही धर्म के सन्तों की भविष्यवाणियों से अत्यधिक भयभीत है।

इस सम्बन्ध में मैंने एक कामकाजी ईसाई महिला से एक दिन 'यूहन्ना' को कही यीशु की बात के बारे में पूछताछ की तो उसने कहा कि मुझे तो इतना ज्ञान नहीं है, मैं आपको हमारे पादरी से मिलाकर मालूम करवा सकती हूँ। इसके बाद उसने कहा कि आजकल प्रार्थना के बाद पादरी साहब हमें मुख्य चर्च से आया आदेश हर इतवार को सुनाते हैं। आदेश कुछ इस प्रकार है-

"इस समय ईसाई धर्म बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है। धर्म पर संकट के बादल मण्डरा रहे हैं। हमारे धर्म पर भारी आक्रमण होने वाला है। अगर आपको ईसाई धर्म या और किसी भी धर्म का धर्मगुरु हमारे धर्म के बारे में कुछ भी उपदेश दे तो आप उसकी बात न सुनो। आप को चर्च के पादरी जो आदेश दें, उसी का पालन करते हुए, इस संकट की घड़ी में अपने धर्म की रक्षा करें।" मैंने उस महिला से पूछा क्या आप लोगों को कोई प्रत्यक्ष संकट नज़र आ रहा है तो उसने उत्तर दिया कि मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

इसके बाद मुस्लिम धर्म का नम्बर है। इस धर्म के प्रवर्तक मोहम्मद साहब की भी कलम १४ वीं सदी के बाद बन्द हो गई। इस धर्म के अनुयाइयों के अनुसार आगे का समय इस धर्म के अनुकूल नहीं रहेगा। इस प्रकार ये दोनों बड़े धर्म ह्रासोन्मुख हो चले हैं।

तीसरा धर्म, बौद्ध धर्म है। इस धर्म की जहाँ उत्पत्ति हुई, वहीं पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका है। बौद्ध और जैन धर्म दोनों निरीश्वरवादी धर्म हैं। ये धर्म मात्र राज्य सत्ता के सहारे पनपे हुए हैं। जब सनातन धर्म रूपी सूर्य उदय होगा तो इन सभी टिमटिमाते हुए सितारों के प्रकाश की ज्योति पूर्ण रूप से समाप्त हो जायेगी।

२१ वीं सदी से सनातन धर्म का एक छत्र साम्राज्य संसार में प्रारम्भ हो जाएगा। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने संसार के सभी संतों से एक कदम आगे बढ़ कर घोषणा की है। श्री अरविन्द ने उस परमसत्ता के अवतरण की स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा है- "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं;

श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्मदय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

इस परमसत्ता के क्रमिक विकास के साथ संसार में जो परिवर्तन होने वाला है, उसका वर्णन करते हुए श्री अरविन्द ने कहा है- "एशिया जगत्-हृदय की शान्ति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके, धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

संसार के सभी धर्मों की घबराहट और सभी धर्मों के धर्माचार्यों की भविष्यवाणियाँ यह दर्शा रही हैं कि संसार में कोई ऐसी आध्यात्मिक शक्ति प्रकट होने वाली है, जो संसार भर के मानवों को अपनी तरफ आकर्षित करके, उन्हें आनन्द और शान्ति की तरफ उद्‌बुद्ध करके, विकास का समर्थन और संचालन करेगी।

अंग्रेजी की कहावत है कि आने वाली घटनाएँ, अपनी परछाँई पहले भेज देती हैं। यही कारण है कि भारत में भी २१वीं सदी को लेकर सभी वर्ग के लोग कुछ न कुछ कह रहे हैं। वे खुद नहीं समझ रहे हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं। वह परमसत्ता सबको भरमाते हुए, अपनी इच्छा के अनुसार चला रही है। इस युग का मानव आर्थिक सत्ता के मद में अपने होश भूल चुका है। जब वह करोड़ों सूर्यों से भी तेज सत्ता, संसार के सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होगी तो सब का मद चूर-चूर हो जाएगा।

८६.

नारी जाति के चेतन हुए बिना संसार में शान्ति असम्भव है।

२३ फरवरी १९८८

संसार के प्राणियों की उत्पत्ति का कारण नर और मादा शक्तियाँ ही हैं। दोनों के सहयोग से ही आज जो संसार हम देख रहे हैं, उसकी रचना हुई हैं। दोनों के मिलाप बिना, यह कार्य सम्भव नहीं है। संसार में युग परिवर्तन के साथ-साथ नारी जाति का पतन होता ही गया। ज्यों-ज्यों सात्त्विक शक्ति का ह्रास होता चला गया और संसार में तामसिक शक्ति का प्रभाव बढ़ता गया, मातृ शक्ति का पतन होता ही चला गया। नारी को हमारे धर्म में शक्ति का प्रतीक माना है।

आदि गुरु शंकराचार्य जी ने प्रारम्भिक जीवन में केवल भगवान् शंकर की ही आराधना की, जगत् जननी पार्वती को उन्होंने याद तक नहीं किया। इस तरह वे हर प्रकार से शक्तिहीन होते ही चले गए। जब उन्हें इसका ज्ञान हुआ तो भगवान् शिव से क्षमा माँगकर माँ की शरण में चले गए। इस प्रकार हम देखते हैं, सम्पूर्ण भारत में सनातन धर्म का एक छत्र साम्राज्य स्थापित करने में वे सफल हुए। मण्डन मिश्र की धर्म पत्नी गार्गी के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उन्हें परकाया प्रवेश के द्वारा वह ज्ञान प्राप्त करना पड़ा तभी उन्हें पूर्ण सफलता मिल सकी।

आजकल के सभी धर्मों के धर्माचार्य कंचन और कामिनी को पतन का मुख्य कारण मान रहे हैं। आज संसार में नारी जाति की जो दुर्दशा हो रही है, उसमें इन धर्माचार्यों का मुख्य हाथ है। स्त्री में मनुष्य से कई गुणा अधिक शक्ति होती है। यही कारण है कि वह शक्ति अपनी अपार सत्ता के कारण संसार की रचना करती और उसका पालन पोषण करती है। इसके विपरीत आज के मानव ने अपनी उत्पत्ति और पोषक शक्ति की जो दुर्दशा की है, उसका वर्णन असम्भव है। हम देखते हैं कि परकाया प्रवेश द्वारा आदिगुरु शंकराचार्य जी ज्ञान प्राप्त नहीं करते तो उनका ज्ञान अधूरा रहता और उन्हें अपने उद्देश्य में कभी भी सफलता नहीं मिलती।

आज उन्हीं के अनुयाई सभी धर्माचार्य कामिनी को पतन का कारण मान रहे हैं। सभी लोग उनके उपदेश को सुनते हैं और उसी के अनुसार कल्याण की कामना करते हैं। आदिगुरु शंकराचार्य जी अगर जगत् जननी पार्वती की आराधना नहीं करते तथा परकाया प्रवेश द्वारा ज्ञान प्राप्त नहीं करते तो आज संसार में उनका नाम तक कोई नहीं जानता। तामसिक शक्तियों ने सबसे अधिक ह्रास इसी मातृ शक्ति का किया है। तामसिक शक्तियाँ अच्छी प्रकार समझती

हैं कि जब तक शक्ति कमजोर नहीं होगी, तब तक यह अपनी सन्तानों की रक्षा करती रहेगी। अतः सबसे पहला प्रहार इस जगत् जननी पर ही हुआ।

संसार का कोई भी प्राणी निश्चित समय और आवश्यकता के बिना रति क्रिया की तरफ आकर्षित नहीं होता। एक मनुष्य जाति ही ऐसी भ्रष्टहुई है कि जिसने सभी सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है। जीव धारियों में यह सबसे अधिक पतित हुई। संसार के सभ्य कहलाने वाले देश, समलैंगिक विवाह को न्याय संगत करार देने तक के कुत्षित कार्य को करते हुए भी नहीं शरमा रहे हैं। इससे अधिक पतन मानव जाति का असम्भव है। मुझे सबसे अधिक दुःख तो उस समय होता है जब भारतीय संस्कृति उस पथ-भ्रष्ट और विकृत संस्कृति की तरफ आकर्षित होती है।

हमारे देशवासियों की ऐसी प्रवृत्ति देखकर मुझे भारी कष्ट होता है। मेरी समझ में आज जो दशा हमारे देशवासियों की है, उसके मूल कारणों में मुख्य कारण नारी जाति का पतन है। जब तक इस जाति को चेतन नहीं किया जाता है, देश में आध्यात्मिक चेतना असम्भव है। आध्यात्मिक चेतना के बिना संसार का जो क्रमिक पतन हो रहा है, उसको रोक पाना असम्भव है।

अतः पुरुषों के साथ-साथ जब तक नारी जाति को भी आध्यात्मिक दृष्टि से चेतन नहीं किया जाता है, संसार में पूर्ण शान्ति असम्भव है। जब तक सनातन धर्म के अनुसार नारी जाति का सम्मान नहीं होगा, हमारा शान्ति का सपना अधूरा ही रहेगा। हमारे देश की नारी का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है- "अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।" इसके विपरीत पश्चिमी जगत् ने बराबरी का रंगीन भ्रमित करने वाला नारा देकर नारी का भयंकर शोषण प्रारम्भ कर रखा है। मात्र हमारा सनातन धर्म ही है, जो मनुष्य समाज को सन्तुलित व्यवस्था देता है।

८७.

भारत का भाग्योदय होने ही वाला है।

०४ फरवरी १९८८

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में अर्जुन को युग-युग में स्वयं प्रकट होने का स्पष्टसंकेत किया है। संसार में जब धर्म का लोप हो जाता है, तब भगवान् दुष्टों का विनाश करने और संत लोगों का कल्याण करके, पुनः संसार में धर्म स्थापित करने के लिए युग-युग में अवतार लेते हैं।

पैगम्बर यानि संत लोग संसार में प्रकट होकर, अपनी आध्यात्मिक शक्ति और त्याग के द्वारा सात्विक चेतना फैलाने का कार्य करते हैं। संतों के उपदेशों से जब काम चलना बन्द हो जाता है और संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, ऐसी स्थिति में भगवान् अवतार लेते हैं। संसार भर से पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का सफाया करके और सात्विक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित करके, स्वयं अपने धाम को पधार जाते हैं।

संसार में पूर्ण शांति और सात्विक शक्तियों का साम्राज्य भगवान् के अवतार के बिना सम्भव नहीं है। स्वयं अवतार लेने से पहले, कुछ ऐसे संतों को भेजते हैं जो भगवान् के अवतार के सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ करते हैं। ठीक इसी प्रकार की भविष्यवाणियाँ, संसार भर के विभिन्न धर्मों के संत काफी समय से करने लगे हैं। मोटे तौर पर सभी एक ही बात कहते हैं कि वह शक्ति भारत के उत्तर भाग से प्रकट होकर अपने क्रमिक विकास के साथ, इस सदी के अन्त तक पूरे संसार को अपनी तरफ आकर्षित कर लेगी। संसार भर के सभी धर्मों के लोग, उसकी तरफ इतने आकर्षित होंगे कि सबका ध्यान उस शक्ति पर केन्द्रित हो जाएगा। सारे संसार के लोग उसके आदेशों का पालन करने लगेंगे।

इस प्रकार २१ वीं सदी में संसार भर में इस शक्ति के प्रभाव से सात्विक शक्तियों का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा और भारत पुनः अपने जगद्गुरु के पद पर आसीन होकर मानव

मात्र के कल्याण हेतु कार्य प्रारम्भ कर देगा।

८८.

भारत के नाथ सम्प्रदाय के संतों के नाम संदेश

१२ जनवरी १९९१

भारत में शासक वर्ग ने जब तक संतों के आदेश के अनुसार शासन किया, उस समय तक देश हर प्रकार से समृद्धशाली रहा। ज्यों-ज्यों सत्ता पक्ष ने संतों के आदेश की अवहेलना करनी प्रारम्भ की, उनकी गिरावट प्रारम्भ हो गई। इसी प्रकार, संतों का पक्ष भी असन्तुलित होकर नीचे की तरफ गिरने लगा। अब सत्ता पक्ष और संतों का पक्ष, दोनों ही अपनी-अपनी गिरावट की सीमा लाँघ चुके हैं।

संसार की इस अन्धकार पूर्ण स्थिति का उपचार गोरक्ष नाथ के अनुयाइयों के पास ही है। अब उन्हें संगठित होकर संसार के अन्धकार को भगाना ही होगा। यह हमारा इतिहास बताता है कि अवतार मात्र इसी भूमि पर हुए हैं, बाकी सभी जगह पैगम्बर ही हुए हैं।

मुसलमान धर्म का मानना है कि मोहम्मद साहब आखिरी पैगम्बर थे। इसके साथ-साथ वे यीशु और मूसा को भी अपना पैगम्बर मानते हैं। इस प्रकार प्रकृति के नियम के अनुसार क्रमिक विकास के अनुसार अब आखिरी पैगम्बर के बाद अवतार का नम्बर है और क्योंकि अवतार केवल भारत की भूमि पर ही हुए हैं, अतः इस भूमि पर वह सत्ता प्रकट होने वाली है।

जब तक भारत के साधु-संत दास वृत्ति त्यागकर नाथवृत्ति धारण नहीं करेंगे, देश का कल्याण असम्भव है। इस देश में हमेशा ऐसा ही होता आया है। अतः मैं मेरे संत सद्गुरुदेव भगवान् श्री गंगाई नाथ जी योगी के आदेश से, देश के नाथ सम्प्रदाय के साधु-संतों को संदेश देता हूँ कि अपनी असलियत को पहचानो। तुम तो संसार के इन अनाथों के नाथ हो। नाथ ही अनाथों की रक्षा कर सकता है, अतः सम्पूर्ण विश्व का अन्धकार पूर्ण रूप से खत्म होने तक आराम से मत बैठो, अब सोचने का समय नहीं है।

८९.

भारत की स्थिति

१० अक्टूबर १९९७, बीकानेर

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है। कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं।

हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येनकेन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही है। देश का आधे से ज्यादा धन, इस वृत्ति के लोगों के पास अनधिकृत रूप से काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है। एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने को कोई जगह नहीं है। जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।

मैं देख रहा हूँ, ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है। सबसे खुशी की बात तो यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

९०.

जगत् का नियम

१७ मई २००८

आदान-प्रदान के सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है- "जगत् का नियम है-आदान-प्रदान। इस नियम को जो लोग, जो जाति, जो देश नहीं मानेगा उसका कल्याण नहीं होगा। हम लोगों को भी उस नियम का पालन करना ही चाहिए, इसलिए मैं अमेरिका गया था। उन लोगों के अन्दर इस समय अधिक मात्रा में धर्म पिपासा है कि मेरे जैसे लोग यदि हजारों की संख्या में भी वहाँ जाएँ तो भी उन्हें स्थान मिलेगा। वे लोग तुम्हें बहुत दिनों से धन-रत्न दे रहे हैं, तुम लोग अब उन्हें अमूल्य रत्न दो। तुम देखोगे, घृणा के स्थान में श्रद्धा-भक्ति मिलेगी और तुम्हारे देश का वे स्वयं ही उपकार करेंगे। वे वीर जाति हैं, उपकार नहीं भूलते।"

स्वामी जी की उपर्युक्त बात को सत्य मानकर ही मैं सन् २००७ में अमेरिका गया था। मैं फिर जून २००८ के प्रथम सप्ताह में अमेरिका जाऊँगा।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है- "जब पश्चिम के मेरे हजारों शिष्यगण तैयार होकर यहाँ आएंगे और तुम लोगों से कहेंगे- "तुम लोग क्या कर रहे हो! तुम्हारा धर्म-कर्म और रीति-नीति किस बात में कम है? देखो, हम लोग तुम्हारे धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। तब देखो, उस बात को लोग 'दल के दल' सुनेंगे। उन लोगों के द्वारा इस देश का 'विशेष' भला होगा। ऐसा न समझना वे लोग 'धर्मगुरु' होकर इस देश में आएंगे। भौतिक अवस्था को समुन्नत बनाने वाले विज्ञान आदि व्यावहारिक शास्त्रों में वे लोग तुम्हारे गुरु होंगे, और धर्म विषय में इस देश के लोग उनके गुरु होंगे। धर्म विषय में भारत के साथ 'समस्त जगत्' का 'गुरु-शिष्य' का सम्बन्ध चिरकाल तक रहेगा। इस प्रकार भारत पुनः विश्वगुरु होकर पुनः अपने स्वर्ण युग में प्रवेश करेगा।"

यही कारण है मैं बार-बार अमेरिका जा रहा हूँ।

०५ नवम्बर २००९, काजलवास, पाली, राजस्थान
नौ नाथों की जीवित समाधियों पर अर्चना करते हुए गुरुदेव।

०५ नवम्बर २००९, काजलवास, पाली, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१९ नवम्बर २००९, अजमेर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
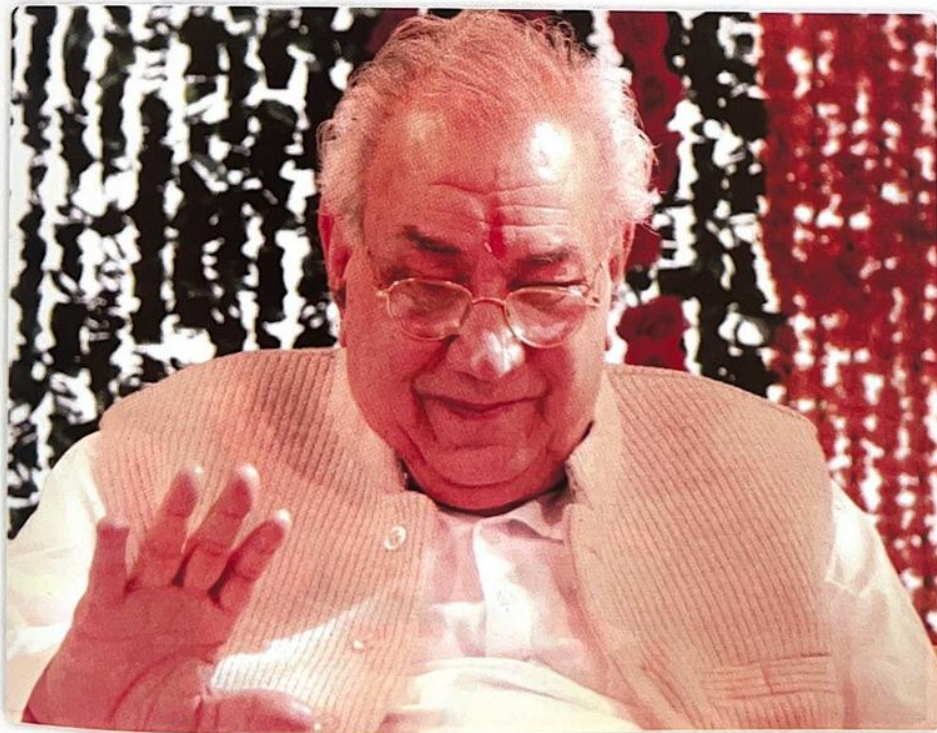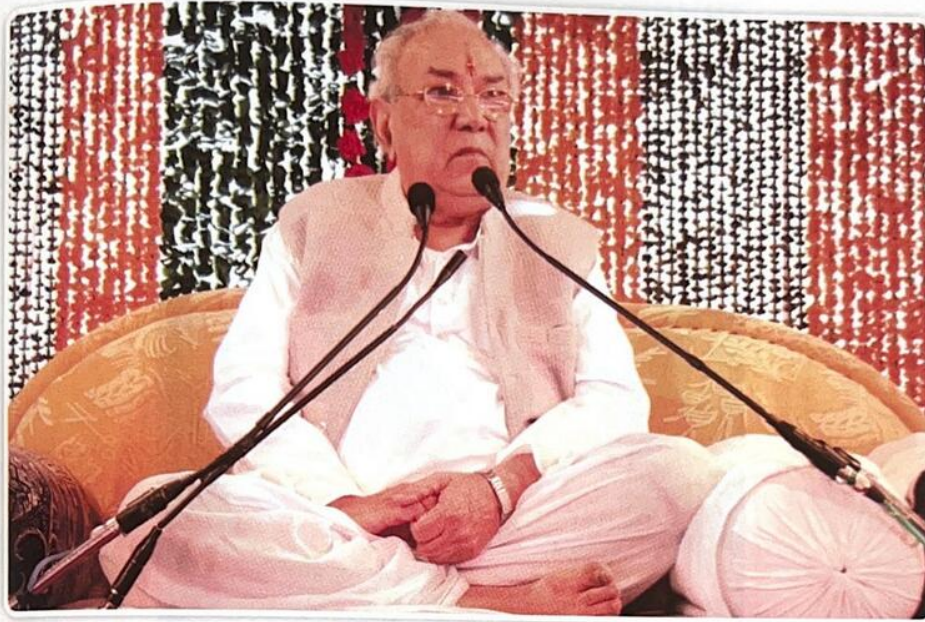
२४ नवम्बर २००९, कोटा, राजस्थान- अवतरण दिवस समारोह।
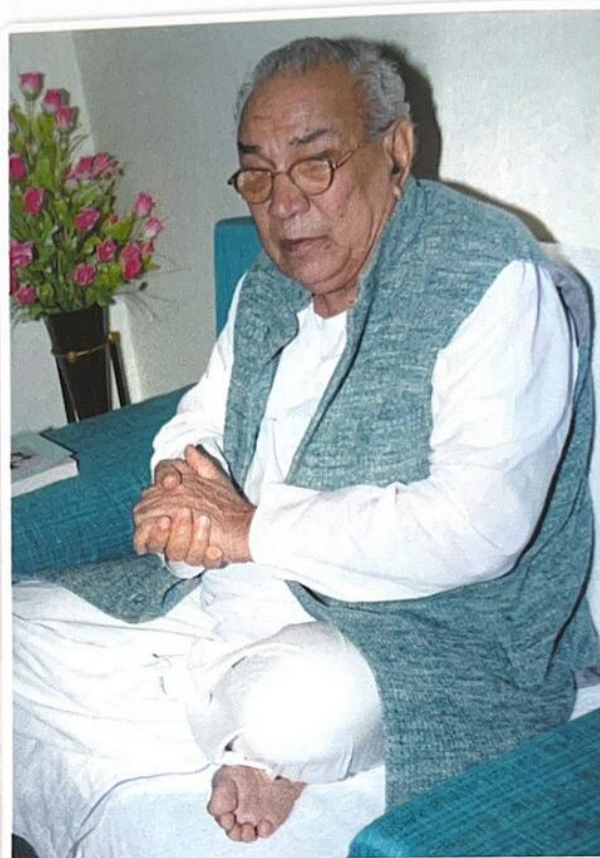
२५ नवम्बर २००९, कोटा, राजस्थान- एसटीएन टीवी चैनल के पत्रकार को इंटरव्यू देते गुरुदेव।

ईश्वर एवं उसका साक्षात्कार

९१.

यह सम्पूर्ण संसार एक ही परमसत्ता का विस्तृत स्वरूप है।

०१ अप्रेल १९८८

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के १० वें अध्याय के ३९ वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।। १०:३९

(और हे अर्जुन! जो सब भूतों की उत्पत्ति का कारण है, वह भी मैं ही हूँ। क्योंकि वह चर और अचर भूत नहीं है, जो मेरे रहित होवे।)

इसे और स्पष्ट करते हुए ४२वें श्लोक में कहा है-

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।। १०:४२

(अथवा हे अर्जुन! इस बहुत जानने से तेरा क्या प्रयोजन है? मैं इस सम्पूर्ण जगत् को एक अंशमात्र से धारण करके स्थित हूँ।)

ऐसी स्थिति में, संसार में जो कुछ हो रहा है, उसका दोष किसी को भी देना व्यर्थ है। वह परमसत्ता सब भूत प्राणियों को भरमाते हुए, अपनी इच्छा के अनुसार चला रही है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द को भगवान् ने अलीपुर जेल में जो आदेश दिया था, उससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर भारत में निश्चित रूप से अवतरित हो चुके हैं।

भगवान् ने कहा है- "मैं इस देश को अपना संदेश फैलाने के लिए उठा रहा हूँ। यह संदेश उस सनातन धर्म का संदेश है जिसे तुम अभी तक नहीं जानते थे, पर अब जान गए हो। जब तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों से कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो। तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए उठाया जा रहा है।"

श्री अरविन्द को दिये उपर्युक्त आदेश से मालूम होता है कि वह परमसत्ता इस देश में अवतरित होकर संसार भर में पुनः सनातन धर्म की एक मात्र सत्ता स्थापित करके, युग परिवर्तन करना चाहती है। ईसाई धर्म के संतों की यह भविष्यवाणी है कि- "बीसवीं शताब्दी

के अन्त तक चर्चों का अस्तित्व मिट जाएगा।" यीशु ने अपने अन्तिम दिनों में स्वयं अपने शिष्यों से कहा था- "मैं तुम्हें सचाई बताता हूँ। यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ। यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा। पर यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। जब वह आ जाएगा तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा। 'पाप' के विषय में इसलिए कि संसार के लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया। 'धार्मिकता' के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे फिर न देखोगे। 'न्याय' के विषय में इसलिए कि इस संसार का शासक दोषी ठहराया गया है।

मुझे, तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, पर अभी तुम उन्हें सहन नहीं कर सकते। जब 'वह' सत्य का आत्मा आएगा, तब वह सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। जो बातें वह सुनेगा, वही कहेगा। वह होने वाली घटनाओं के विषय में तुम्हें बतलाएगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा। जो पिता का है, वह मेरा है इसलिए मैंने कहा कि आत्मा मेरी बात ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा।"

यह शब्द कि "जो पिता का है, वह मेरा है" स्पष्ट करता है कि जो शक्ति अवतरित होगी, उसका सीधा सम्पर्क उस परमसत्ता से होगा क्योंकि आगे होने वाली बात ईश्वर के सिवाय कोई भी नहीं जान सकता। भगवान् ने १० वें अध्याय के ३४ वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।। १०:३४

(मैं सबका नाश करने वाला, मृत्यु और आगे होने वालों की उत्पत्ति का कारण (हूँ) तथा स्त्रियों में कीर्ति, श्री, वाक्, मेधा, धृति और क्षमा हूँ।)

उपर्युक्त श्लोक में भगवान् ने कहा है कि संसार में आगे होने वालों की उत्पत्ति का कारण केवल वही हैं। यीशु का यह कहना है कि वह सत्य की आत्मा 'आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा' स्पष्ट करता है कि वह पूर्ण सत्ता ही मनुष्य के रूप में अवतरित होगी। इसी प्रकार संसार के अनेक संत उस परमसत्ता के अवतरित होने की भविष्यवाणियाँ काफी समय से कर रहे हैं।

१५वीं शताब्दी में ब्रिटेन की एक महिला ने घोषणा की थी कि "बीसवीं सदी के

आखिरी दो दशकों में सारा संसार गृह युद्ध की लपेट में आकर, भारी जन-धन की हानि उठाएगा। अन्त में, २०वीं सदी के आखिरी दशक में भारत के उत्तरी हिस्से में एक ऐसा मनुष्य प्रकट होगा, जो संसार को सम्बोधित करेगा। उसकी सभी बातें सत्य होंगी और सारा संसार उसकी बातों का अनुसरण करने लगेगा। इस प्रकार २१वीं सदी में पूरे संसार में सुख-शान्ति स्थापित हो जाएगी और भारत पुनः जगद्गुरु का स्थान ग्रहण कर लेगा। अतः श्री अरविन्द ने २४ नवम्बर १९२६ को भगवान् श्रीकृष्ण के अवतरण की जो घोषणा की है वह सत्य प्रमाणित होगी।

१२.
संसार का हर प्राणी ईश्वर कृपा का अधिकारी है।

०५ फरवरी १९८८

संसार के सभी जीव धारियों में, मनुष्य योनि सर्वोत्तम है। मनुष्य योनि के द्वारा ही जीव मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। यह योनि एक ऐसा संगम है, जहाँ से अगर जीव अच्छे कर्म करता है तो निरन्तर ऊपर उठता हुआ, निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और यदि इस संगम से मनुष्य बुरे कर्मों द्वारा पतन की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर देता है तो फिर उसे चौरासी लाख योनियों के भोग के बाद फिर मनुष्य योनि मिलती है।

इस प्रकार जीव, मनुष्य योनि को अगर व्यर्थ में बिता देता है तो समझो कि उसके कर्म फल बहुत बुरे हैं। कर्मों की गति गहन है। ईश्वर के सिवाय इसको समझने की क्षमता किसी में नहीं है। कलियुग में मोक्ष प्राप्ति के दो आसान रास्ते हैं, (१) ईश्वर के नाम का निरन्तर जप करना (२) दान।

इस युग का मानव प्रदर्शन और प्रचार करके अपने आपको सच्चा अध्यात्मवादी समझ रहा है। जब कि यह रास्ता प्रदर्शन का है ही नहीं। हमारे संतों ने ईश्वर के नाम की बहुत महिमा गाई है। इस युग में 'नाम' में भारी चमत्कार है। संत कबीरदास जी ने इसकी महिमा करते हुए कहा है-

नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़ै सवाई।।

संत सतगुरु नानकदेव जी महाराज ने भी इन्हीं शब्दों में नाम की महिमा गाई है-

भांग धतूरा नानका, उतर जाय प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन-रात।।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी कहा है-

कलियुग केवल नाम आधारा, सुमरि सुमरि नर उतरहिं पारा।

इस युग का मानव उपर्युक्त 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' की बात को केवल अतिशयोक्ति की संज्ञा देकर अपने अल्प ज्ञान पर गौरवान्वित हो रहा है। हमारे धर्म में गुरु का

स्थान बहुत ऊँचा माना गया है। गुरु की महिमा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह लक्ष्य निम्न दोहे से स्पष्ट होता है-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूं पांव।

बलिहारी गुरु देव की, गोविन्द दियो मिलाय।।

उपर्युक्त दोहे से गुरु पद की गरिमा स्पष्ट झलकती है। मीराबाई ने भी इस सम्बन्ध में कहा है कि "यदि मुझे गुरु और गोविन्द दोनों में से एक को चुनने को कहा जाए तो मैं प्रथम गुरु को चुनूँगी क्योंकि गुरु में गोविन्द से मिलाने की शक्ति है। अगर गुरु को छोड़, गोविन्द को चुनूं और यदि देवयोग से गोविन्द से बिछुड़ जाऊँ तो फिर उससे मिलना सम्भव नहीं।" स्वामी विवेकानन्द जी ने भी इस संदर्भ में कहा है कि "आध्यात्मिक जगत् में गुरु कृपा बिना चलना असम्भव है, परन्तु इस युग में सच्चा गुरु मिलना बहुत कठिन है।"

सन् १९६७ से लेकर १९८२ तक मैं भी यही कहता था कि मेरे और ईश्वर के बीच में गुरु की दलाली की आवश्यकता क्या है? इन १५ सालों में मेरी तिजोरी आध्यात्मिक धन से ठूँस-ठूँसकर भर चुकी थी, परन्तु उसमें से एक पैसा भी निकाल कर खर्च करने की स्थिति में नहीं था। १९८३ में ज्यों ही संत सद्गुरुदेव श्री गंगाईनाथ जी महाराज की चरण रज माथे पर लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो काया पलट गई।
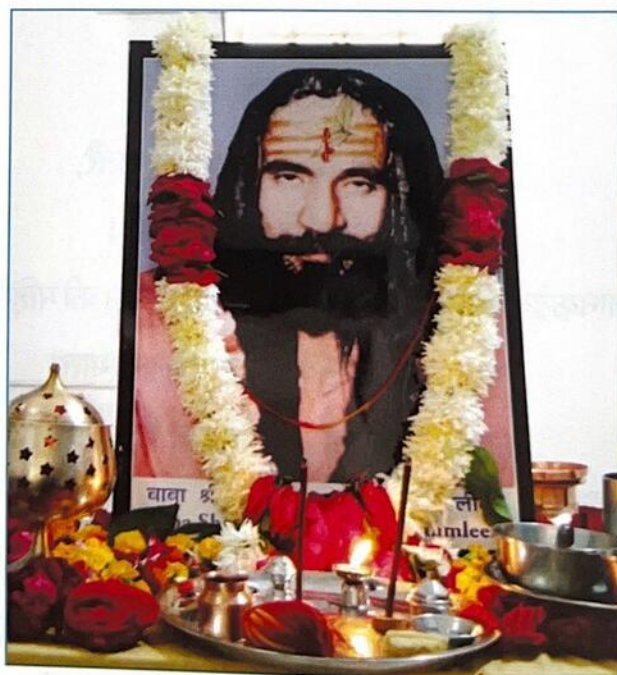
गुरुदेव ने कृपा करके उस आध्यात्मिक धन से भरी तिजोरी की चाबी, मुझे अनायास ही सौंप दी। मैं इस स्थिति से ऐसा चकाचौंध हो गया कि समझ ही नहीं पा रहा था कि इस अपार धन का कैसे सदुपयोग करूँ ?

मैं अभी संभल ही नहीं पाया था कि ३१ दिसम्बर १९८३ की क्रूर काल रात्रि ने उस महान् आत्मा को भौतिक रूप से छीन लिया। इसके बाद करीब दो साल (अगस्त १९८५) तक मैं अपनी सुध-बुद्ध खोये, पागल की तरह से भटकता रहा।

२३ अगस्त ८३ से ६ अगस्त ८५ तक मैं बिना किसी भौतिक कारण के अपनी नौकरी से अनुपस्थित रहा। इसके बाद नौकरी पर उपस्थित हुआ। जामसर जाकर समाधि पर पूजा अर्चना की तो दूसरी ही दुनिया में पहुँच गया। धीरे-धीरे जब शान्त हुआ तो यह देखकर चकित रह गया कि गुरुदेव अनायास ही अपनी असंख्य पीढ़ियों की अथाह आध्यात्मिक धन राशि, मेरे नाम वसीयत कर गए। मैं आज भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि मेरे पास कितना आध्यात्मिक धन है और इसका कैसे उपयोग करूँ ? परन्तु एक बात से मैं आश्वस्त हूँ कि आज भी पग-पग पर गुरुदेव मेरा पथ प्रदर्शित करते हैं।

गुरु कृपा से मेरे साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध जोड़ने वाले लोगों को 'नाम खुमारी' और 'नाम अमल' का आनन्द आने लगता है। मुझमें कुछ भी शक्ति नहीं है। यह गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से हो रहा है। मुझे इस संबंध में कोई भ्रम नहीं है। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह शक्ति असंख्य गुरुओं द्वारा संचित की हुई है, जो कि अनायास ही मुझे गुरुदेव द्वारा वसीयत में मिल गई। गुरु कृपा की महिमा करने को, न मेरे पास भाव है, और न ही शब्द। अतः उसका वर्णन करना कम से कम मेरे वश की तो बात नहीं है।

इस युग में दूसरा मोक्ष प्राप्ति का रास्ता दान है। हमारे संतों ने कहा है "कलियुग में दान ही एक मात्र धर्म है। तप और कठिन योगों की साधना, इस युग में नहीं होती।"

दान की व्याख्या करते समय हमारे संतों ने कहा है कि सब दानों में श्रेष्ठ-धर्म दान (अध्यात्म दान) है। फिर विद्या दान और इसके बाद प्राण दान। भोजन और वस्त्र का दान सबसे हल्का दान है। इसी संदर्भ में व्यास जी ने भी कहा है कि आध्यात्मिक ज्ञान दान ही सर्वोत्तम दान है।

उपर्युक्त तथ्यों से प्रभावित होकर, मेरे गुरुओं द्वारा अर्जित विपुल आध्यात्मिक ज्ञान दान के लिए संसार में निकल पड़ा हूँ। मेरा अपना इसमें कुछ नहीं है। जो कुछ भी बाटूँगा

उसका फल तो उन्हीं पुण्यात्माओं को मिलेगा। मैं तो मात्र उनका सेवक हूँ। अतः मैं तो इस काम की मजदूरी मात्र लेने का हकदार हूँ।

ईश्वर का कोई ठेकेदार नहीं, वही सबका ठेकेदार है। अतः संसार में इस समय जो वर्ग, मात्र अपने आपको इसका अधिकारी मानता है, वह संसार के प्राणियों को गुमराह कर रहा है। इस सम्बन्ध में वात्स्यायन ने स्पष्ट कहा है- ''जिसने यथाविहित धर्म की अनुभूति की है, वह म्लेच्छ होने पर भी ऋषि हो सकता है। इसीलिए प्राचीन काल में वेश्या पुत्र वशिष्ठ, धीवर तनमय (मछुआरी पुत्र) व्यास, दासी सुत नारद आदि प्रभृति ऋषि कहलाये थे। वाल्मिकी, रैदास और कबीर आदि अनेक संतों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि 'जाति पांति पूछे न कोई, हरि को भजै सो हरि को होई।' अब वह समय दूर नहीं है, जब तम के घोर अन्धकार को चीरता हुआ, धर्म का सूर्य उदय होगा और संसार से तामसिकता को पूर्णरूप से नष्ट कर देगा। इस प्रकार श्री अरविन्द के शब्दों में 'धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा।'

१३.

मोक्ष क्या है? उसको प्राप्त करना क्यों जरूरी है?

१४ फरवरी १९८८

हम देख रहे हैं कि संसार की हर वस्तु नाशवान है। हमारे सभी संत कह गए हैं कि वह अजर अमर है। उसकी प्राप्ति के बिना परमशान्ति असम्भव है। केवल ईश्वर प्राप्ति से ही परमशान्ति और परमानन्द की प्राप्ति सम्भव है, इसके बिना जीव के बन्धन कटने का कोई उपाय नहीं है। हमारे सभी संत कह गए हैं कि मनुष्य जीवन ही मात्र मोक्ष प्राप्त करने का समय है। अगर जीव कर्मों की गहन गति के कारण, मनुष्य जन्म पाकर भी अपने उस सही गन्तव्य की तरफ यात्रा प्रारम्भ नहीं करता है तो इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात कोई और हो ही नहीं सकती। इस संसार के बारे में संतों ने स्पष्ट कहा है कि यह मात्र ईश्वर का ही विस्तृत स्वरूप है। मनुष्य योनि, ईश्वर की उच्चत्तम स्थिति का ही नाम है।

इसीलिए हमें संतों ने स्पष्ट कहा है कि पूर्ण ब्रह्माण्ड सहित सभी लोक, मनुष्य शरीर के अन्दर हैं। मनुष्य शरीर ही असली मन्दिर है, जिसमें प्रवेश करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है। उस परमसत्ता तक पहुँचने का यही एक मात्र रास्ता है। इसके बिना उस परमसत्ता से जुड़ने का कोई उपाय नहीं है। इस समय संसार में जितनी भी आराधनाएँ प्रचलित हैं, प्रायः सभी का तरीका बहिर्मुखी है। कुछ चन्द अन्तर्मुखी होने की बात बताते हैं, परन्तु वह सब माया के क्षेत्र में प्रवेश करने मात्र का उपाय है। कुछ लोग श्वास की क्रिया विशेष के द्वारा उस परमसत्ता से जुड़ने की बात तो करते हैं, परन्तु किसी को भी उसका पूर्ण ज्ञान नहीं है। यह आराधना इस युग की न होने के कारण, अब होनी असम्भव है।

पतंजलि आदि हमारे कई ऋषियों ने इसके लिए यम, नियम, खान-पान तथा रहन-सहन के जो सिद्धान्त बताये हैं, उनका पालन इस युग में तो पूर्णरूप से असम्भव है। अगर करोड़ों में एक मनुष्य कुछ आंशिक सफलता पा भी लेता है तो उससे क्या लाभ? इस क्षेत्र की कमाई मात्र उसी के काम आती है, जो कमाता है। इसके अलावा ईश्वर ने स्त्रियों की प्रकृति ही ऐसी बनाई है कि उनके लिए तो यह आराधना संभव ही नहीं है। क्या स्त्रियों को मोक्ष का अधिकार नहीं है? ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार स्त्री-पुरुष दोनों को इस संसार में जीवन यापन करते हुए, मोक्ष प्राप्ति का एक बराबर अधिकार है। इस प्रकार पिछले युगों की आराधनाएँ, इस युग में सम्भव नहीं हैं।

काल चक्र अबाध गति से चलता रहता है। अतः संसार की हर वस्तु में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। इसे रोकने की किसी में भी क्षमता नहीं है। हम देख रहे हैं, भौतिक जगत् में विज्ञान ने कितनी तरक्की कर ली है। यह बात यथार्थ और सही है। परन्तु अभी तक आध्यात्मिक जगत् में, इस सम्बन्ध में बिलकुल चेतना नहीं आई है।

एक निर्जीव पदार्थ की तरह, यह जगत् पूर्णरूप में अचेतन अवस्था में पड़ा है। विज्ञान के सभी सिद्धान्त प्रयोगशालाओं में कई बार सही प्रमाणित होने के बाद लिपिबद्ध किये जाते हैं। फिर भी उन पुस्तकों को पढ़कर, कोई भी विद्यार्थी, डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकता, जब तक वह उन सिद्धान्तों को प्रयोगशाला में स्वयं सिद्ध करके नहीं देख लेता। इस प्रकार विज्ञान के विद्यार्थियों को अगर प्रयोगशाला का मुँह ही नहीं देखने दिया जाय और केवल इस ज्ञान की पुस्तकें पढ़ाकर डॉक्टर और इंजीनियर बनाने के प्रयास किये जायें तो पूर्णरूप से असफलता ही हाथ लगेगी। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर प्रयोगशालाएँ प्रगति करती रही हैं और नई-नई खोज, शोध कार्यों द्वारा होती गई और नई खोज के सिद्धान्तों को लिपिबद्ध किया जाता रहा है।

यही कारण है कि भौतिक विज्ञान आज अपनी चरम सीमा तक पहुँचने वाला है। इसके ठीक विपरीत अध्यात्म विज्ञान की प्रायः सारी की सारी प्रयोगशालाएँ, समय और कालचक्र के साथ समन्वय नहीं रख पाने के कारण, पूर्ण रूप से नष्ट हो गईं। इस समय संसार के सभी धर्माचार्यों के पास पुराने आध्यात्मिक विज्ञान के वैज्ञानिकों की पुस्तकें मात्र बची हुई हैं। प्रयोगशालाओं के अभाव में ये सभी ग्रन्थ निरर्थक हैं।

केवल सैद्धान्तिक ग्रन्थ इस ज्ञान को सजीव बनाकर मानव का कल्याण करने में समर्थ हो ही नहीं सकते। अतः जब तक प्रयोगों के द्वारा शोध करके, इस विज्ञान को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा, तब तक तोते की तरह ग्रन्थों को रटने से कुछ भी लाभ नहीं होगा, क्योंकि सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का खजाना, मनुष्य शरीर के अन्दर ही छिपा है। आज तक की भौतिक विज्ञान की उन्नति का कारण मनुष्य के अन्तर की प्रेरणा और चेष्टाओं का ही फल है। अतः अध्यात्म विज्ञान की खोज भी मनुष्य को अन्तर्मुखी होकर ही करनी पड़ेगी।

भौतिक विज्ञान तो मनुष्य को भौतिक सुख ही प्रदान कर सकता है। ये सुख अस्थाई और क्षणिक होते हैं। इनसे स्थाई सुख शान्ति सम्भव नहीं है। अतः जब तक भौतिक विज्ञान के बराबर अध्यात्म विज्ञान उन्नति नहीं कर लेता, तब तक महर्षि अरविन्द की, 'धरा पर स्वर्ग उतर आने' की भविष्यवाणी सत्य नहीं हो सकेगी।

भौतिक विज्ञान बहिर्मुखी चेतना का परिणाम है, इसके ठीक विपरीत आध्यात्मिक शक्तियों का साक्षात्कार अन्तर्मुखी आराधना के द्वारा ही सम्भव है। भौतिक विज्ञान इन्हीं आध्यात्मिक शक्तियों की देन है। अतः जब तक यह शक्ति अपनी पैदा की हुई, वैज्ञानिक शक्ति को सीधा अपने अधीन करके इसका संचालन करना प्रारम्भ नहीं करती है तब तक, श्री अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य नहीं होगी।

भौतिक विज्ञान की इस विनाश लीला पर तो अंकुश लगाने में सिर्फ आध्यात्मिक शक्ति ही सक्षम है, और सभी उपाय पूर्ण रूप से निरर्थक हैं। मानव अपनी बुद्धि के कौशल से इस विनाश लीला को रोक पाने में असमर्थ है। इस युग के धर्मगुरु जो कृत्रिम शान्ति मिशन चला रहे हैं, उससे कुछ भी असर होने वाला नहीं है। भौतिक विज्ञान एक सचाई है। यह किसी झूठ का आदेश कभी नहीं मानेगा। जब तक इसका जन्म दाता, स्वयं प्रकट होकर प्रमाण सहित इस शक्ति को सन्तुष्टनहीं करेगा, यह किसी का आदेश नहीं मानेगी।

अतः जब तक संसार का मानव अन्तर्मुखी होकर, उस परमसत्ता के धाम को जाने वाले रास्ते से चलकर, उसका साक्षात्कार नहीं कर ले, शान्ति सम्भव नहीं। इस प्रकार ज्यों ही संसार का मानव उस परमसत्ता से जुड़ा कि ये भौतिक शक्तियाँ, मानव के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो जाएगी और चेरी बनकर प्राणीमात्र की सेवा में लग जाएगी। भारत, जगत् हृदय की शांति का रखवाला है। अतः इस भूभाग पर पैदा होने वाले मनुष्य के माध्यम से ही वह परमशक्ति अपनी सत्ता का बोध, सारे संसार को कराकर शान्ति स्थापित करेगी।

हमारे संतों ने उसके ध्येय तक पहुँचने के रास्ते का स्पष्ट वर्णन किया है। संन्यास मार्ग और भक्ति मार्ग द्वारा पहुँचना सम्भव है। गीता में स्पष्ट लिखा है, संन्यास मार्ग का रास्ता बहुत कठिन है, परन्तु निष्काम कर्मयोग के सिद्धान्त पर चलकर भक्ति करता हुआ, प्रेम मार्गी जीव निश्चित रूप से निर्विघ्न उस परमसत्ता से जुड़ जाता है।

हमारे शरीर में छह चक्रों का वर्णन आता है। योगी मूलाधार से चलना प्रारम्भ करता है। इस प्रकार छठा चक्र भेदने पर, वह माया के क्षेत्र को पार कर सकता है। इस चक्र को आज्ञाचक्र भी कहते हैं। क्योंकि नीचे के माया के जगत् की सारी शक्तियाँ आज्ञाचक्र के ऊपर की शक्ति के आदेश से कार्य करती हैं, इसीलिए इसे आज्ञाचक्र कहा गया है। छठे चक्र तक की सभी मायावी शक्तियाँ इतनी प्रबल हैं कि कोई भी अपनी सीमा से बाहर, जीव को निकलने ही नहीं देती।

अतः इस मार्ग से पहुंचना, इस युग में कठिन ही नहीं, असम्भव सा लगता है। परन्तु

निष्काम कर्मयोग के सिद्धान्त पर चलकर जीव, प्रेमपूर्वक ईश्वर भक्ति करता हुआ निर्विघ्न आसानी से, अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है। अतः गीता में इसी मार्ग को श्रेष्ठ बताते हुए, इसी पर चलने का निर्देश दिया गया है। इस युग के धर्म गुरुओं ने ज्ञान के अभाव में, इस पथ पर चलने की व्याख्या करते हुए, ऐसी उलझनें पैदा कर दीं कि प्राणी, विभिन्न भ्रान्तियों में उलझकर रह जाता है। पाप, पुण्य, दान, त्याग, तपस्या, धर्म आदि की ऐसी गलत व्याख्याएँ कर डालीं कि जीव भ्रमजाल में फँसकर रह जाता है।

कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्कशास्त्र और अन्ध विश्वास के सहारे, अध्यात्म का रूप ऐसा विकृत कर दिया कि मनुष्य भ्रमित होकर भटक जाता है। सही रास्ता उसे दिखाई ही नहीं देता। यही कारण है कि इतना आसान काम ही असम्भव बन गया और इस प्रकार लोगों का धर्म पर से विश्वास ही खत्म हो गया। परिणाम के अभाव में हर कार्य की यही स्थिति होती है। निरर्थक कार्य कोई क्यों करेगा? अतः आज संसार में धर्म के प्रति लोगों की आस्था समाप्त होने का दोष, इस युग के धर्म के धर्मगुरुओं का है। धर्म को उन्होंने पेट से जोड़ लिया।

इस प्रकार धर्म की आड़ में जब शोषण, अन्याय और अत्याचार अपनी सीमा लांघ गया तो लोगों ने विद्रोह कर दिया। धर्म की इस हालत को देखकर, भंयकर दुःख होता है। इतना होने पर भी धर्मगुरुओं को दया नहीं आ रही है। आज भी नये-नये हथकण्डे अपनाकर लूट में लगे हुए हैं। अगर सच्चा आध्यात्मिक गुरु मिल जाय तो क्षण भर में अन्धकार भाग जाता है। सच्चे गुरु की व्याख्या, मैं पहले कर ही चुका हूँ। क्योंकि संत सद्‌गुरु मायातीत सत्ता से सीधा सम्पर्क रखता है, इसलिए संसार की माया उसके सामने चेरी बनकर, हाथ जोड़े खड़ी रहती है। इस प्रकार ऐसे गुरु से जुड़ने वाला जीव अनायास ही माया के प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार गुरु कृपा से वह सीधा आज्ञाचक्र भेदकर, अपनी यात्रा प्रारम्भ करता है। क्योंकि गुरु कृपा से अनायास ही जीव माया के चक्र से मुक्त होकर, उस परमसत्ता की आकर्षण सीमा में प्रवेश कर जाता है, इस प्रकार आगे के मार्ग में केवल सहयोगी शक्तियाँ ही उसे मिलती रहती हैं। इस प्रकार ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है, आकर्षण बढ़ता जाता है और चलने की गति तेज होती जाती है। इन आध्यात्मिक लोकों में समय की दूरी जीव को प्रभावित नहीं कर सकती। अतः उस परमसत्ता से जुड़ने में उसे कोई देर नहीं लगती। विघ्न बाधाएँ तो आज्ञाचक्र तक ही होतीं हैं। इस प्रकार संत सद्‌गुरु से जुड़ते ही वे सभी अनायास ही समाप्त हो जातीं हैं। इस प्रकार जीव उस परमसत्ता से जुड़कर, जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा जाता है। आज्ञाचक्र से ऊपर मोटे तौर पर तीन लोक हैं- सत्‌लोक, अलखलोक और अगमलोक।

अगमलोक में पहुँच कर जीव उस परतसत्ता में लीन हो जाता है। यहाँ परमानन्द और चिरस्थाई शान्ति रहती है।

त्रिगुणमयी माया द्वारा रचा गया जगत ही दिखाई देता है क्योंकि संसार के जीव इस माया द्वारा संचालित हैं, अतः उसे भी देखने में सक्षम नहीं हैं। केवल अन्तर्दृष्टि ही इन्हें देखने में सक्षम है। ज्यों-ज्यों जीव ऊपर चढ़ता जाता है, नीचे के लोक और उसकी शक्तियाँ स्पष्ट दिखाई देती जाती हैं। मनुष्य का शरीर तीन भागों में विभक्त है- १. स्थूल शरीर २. सूक्ष्म शरीर ३. कारण शरीर। स्थूल शरीर सभी को दिखता है। सूक्ष्म शरीर दिखाई नहीं देता पर वह हर जगह भ्रमण करने में सक्षम है। वह इस लोक तथा ब्रह्माण्ड की हद तक सभी जगह भ्रमण करके वहाँ का ज्ञान प्राप्त करने में सक्ष्म है। कारण शरीर में इस जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक का पूरा हिसाब होता है। मनुष्य अपने जीवन की आगे होने वाली घटना का ज्ञान इस शरीर में प्रवेश करने पर टेलीविजन के सीन की तरह जान जाता है।

ये तीनों शरीर त्रिगुणमयी माया की हद में है। उनके अन्दर होती है आत्मा। परमात्मा करोड़ों सूर्य से भी तेज शक्ति का पुँज है। उसकी एक किरण का नाम आत्मा है। क्योंकि यह उस पूर्ण सत्ता का ही अंश है अतः आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं होता। इससे जीव का जब साक्षात्कार हो जाता है तो इसी धार के सहारे जीव उसके उद्‌गम स्थान यानी परमात्मा तक पहुँच जाता है। माया के क्षेत्र में इससे साक्षात्कार सम्भव नहीं है। अतः आज्ञाचक्र का भेदन किये बिना, यह कार्य असम्भव है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर तथा आत्मा और परमात्मा इस प्रकार से लिप्त हैं कि इनको अलग-अलग करके देखना असम्भव है। उदाहरण के तौर पर एक गन्ने के अन्दर दो हिस्से होते हैं। अन्दर के भाग में रस छिपा रहता है। देखने से केवल ऊपर का सख्त भाग ही दिखाई देता है। इस प्रकार दबाने से उसमें रस निकलता है। रस को देखकर हम उसका स्वाद नहीं जान सकते। वह तो चखने पर ही मालूम होता है कि वह मीठा है। उस रस में जो मीठापन है, उसको पैदा करने वाली सत्ता ही ईश्वर है। इस प्रकार रस तक के तीन रूप, शरीर के रूपों की तरह हैं। इसके अन्दर जो मीठापन है वह आत्मा और जिस सत्ता के कारण यह मीठापन पैदा हुआ वह परमात्मा है। गन्ने को देखने से हमें उसमें निहित इन सभी वस्तुओं का ज्ञान नहीं हो सकता। यह उदाहरण मात्र मोटे तौर पर समझाने का प्रयास मात्र है। असलियत तो प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। उसका ज्ञान तो आध्यात्मिक ज्ञान की प्रयोगशाला में परीक्षण करने पर ही प्राप्त हो सकता है।

जब संसार में धर्म का लोप हो जाता है और अधर्म का बोलबाला होकर तमस ठोस

बनकर संसार में जम जाता है, उस समय जिस जीव के माध्यम से परमसत्ता अपना सात्त्विक प्रकाश फैलाती है, वही सच्चा गुरु होता है। एक ही सच्चा संत सद्गुरु सम्पूर्ण संसार का अन्धकार भगाने में सक्षम होता है। इससे समझा जा सकता है कि गुरु क्या होता है? इसीलिए हिन्दू धर्म के सभी ग्रन्थों में, गुरु की महिमा को वर्णन करने से परे बताया है।

भौतिक सुख क्षणिक और भरमाने वाले माया के खेल हैं। बचपन में जिससे सुख महसूस होता है; तरुण अवस्था आते ही सुख के कारण और हो जाते हैं और ज्यों ही जवानी आती है और ही चीजों से सुख की अनुभूति होती है। बुढ़ापे में स्थिति फिर बदल जाती है। अन्त काल में जीव को भारी पश्चाताप होता है कि मैंने इन झूठे सुखों के चक्कर में, मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया। श्री राजगोपालाचार्य ने अपने अन्तिम समय में इन सुखों की जो व्याख्या की है, वह पूर्ण साफ है।

सच्चा सुख चिर स्थाई, एक जैसा ही रहता है। वह सुख केवल परमसत्ता से जुड़ने पर ही मिल सकता है। अतः मनुष्य को सच्चाई की खोज में प्रयत्नशील रहना चाहिए। परमात्मा हर समय, झुककर उसका हाथ थामने को तैयार रहता है। ऐसी स्थिति में पहुँचने पर थोड़े से प्रयास से ही भवसागर को पार करके, उस परमसत्ता में लीन हुआ जा सकता है। इस प्रकार मिलने वाला परमसुख और परमशान्ति चिर स्थाई होती है। एक बार मिल जाए तो अनन्तकाल तक जीव ऐसी स्थिति में रहता है और जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाता है; ऐसी स्थिति का ही नाम मोक्ष है।

९४.

सारा संसार उस एक ही परमसत्ता का विस्तार है।

११ अप्रेल १९८८

संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार है, इस सम्बन्ध में गीता के १३वें अध्याय में भगवान् ने कहा है-

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।। १३:१

(हे अर्जुन! यह शरीर क्षेत्र है, ऐसे कहा जाता है। इसको जो जानता है, उसको क्षेत्रज्ञ, ऐसा उनके तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी जन कहते हैं।)

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।। १३:२

(और हे अर्जुन! सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ मेरे को ही जान। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ को जो तत्त्व से जानता है, वह ज्ञान है, ऐसा मेरा मत है।)

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।। १३:१६

(और (वह) विभाग रहित एक रूप से आकाश के सदृश परिपूर्ण हुआ भी चराचर संपूर्ण भूतों में पृथक्-पृथक् के सदृश स्थित, वह जानने योग्य परमात्मा, विष्णु रूप से भूतों को धारण पोषण करने वाला और रुद्र रूप से संहार करने वाला तथा ब्रह्मा रूप से सबको उत्पन्न करने वाला है।)

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।। १३:१७

(वह ब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति, माया से अति परे कहा जाता है। (वह परमात्मा) बोधस्वरूप (और) जानने योग्य है, तत्त्व ज्ञान से प्राप्त होने वाला, सबके हृदय में स्थित है।)

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२२

(पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी पर (माया अतीत) है, साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता (एवं) सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीव रूप से भोक्ता, ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से परमात्मा, ऐसा कहा गया है।)

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैःसह।

सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते।। १३:२३

इस प्रकार पुरुष को और गुणों के सहित प्रकृति को जो मनुष्य तत्त्व से जानता है, वह सब प्रकार से बर्तता हुआ भी फिर नहीं जन्मता है अर्थात् पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता है।

हिन्दू धर्म का तो मूल मंत्र 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और 'तद्रूप' बन जाना है, परन्तु इस समय माया का इतना घोर प्रभाव हो चला है कि चारों तरफ घोर अंधेरा है। संसार में सात्विक प्रकाश का नितान्त अभाव हो चला है। अध्यात्म की चर्चा करते हुए, इस युग का मानव डरता है। क्योंकि प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात धर्म से लोप हो चुकी है, इस समय केवल वाद-विवाद, शब्दजाल और तर्कशास्त्र के सहारे अध्यात्म की शिक्षा दी जाती है। वाद-विवाद झगड़े की जड़ है, इसीलिए लोगों ने झगड़े के भय से धार्मिक चर्चा भी करनी बन्द कर दी है। यह स्थिति धर्म के घोर पतन का संकेत करती है। संसार के सभी धर्मों की कमोवेश एक ही स्थिति है। यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रह सकती है। क्योंकि पतन की दृष्टि से धर्म चरम सीमा लांघ चुका है, परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

उत्थान और पतन का यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। युग परिवर्तन उस परमसत्ता का विधान है। यह कोई नई बात नहीं हो रही है। रात और दिन का क्रम जिस प्रकार निरन्तर चल रहा है, युग परिवर्तन भी कालचक्र के अधीन निरन्तर होता आया है। गीता के आठवें अध्याय में भगवान् ने कहा है-

सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।

रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः।। ८:१७

(हे अर्जुन! ब्रह्मा का जो एक दिन है (उसको) हजार चौकड़ी युग तक अवधिवाला (और) रात्रि को (भी) हजार चौकड़ी युग तक अवधिवाली जो पुरुष तत्त्व से जानते हैं, वे योगीजन काल के तत्त्व को जानने वाले हैं।)

मेरी आज की स्थिति के बारे में, जब मैं शान्त चित्त् से सोचता हूँ तो एक ही नतीजे पर

पहुँचता हूँ कि मेरे माध्यम से जो कुछ भी हो रहा है, वह उस परमसत्ता की शक्ति का ही चमत्कार है, जो कि मेरे गुरुदेव के आशीर्वाद के कारण ही मेरे माध्यम से प्रकट हो रही है। मुझे इस बारे में कोई भ्रम नहीं है। जो कुछ हो रहा है, मैं तो मात्र द्रष्टा भाव से देख रहा हूँ।

मैं स्पष्ट महसूस कर रहा हूँ, कर्ता तो कोई और ही है। मुझे जैसे नचाया जा रहा है, नाच रहा हूँ।

९५.

ईश्वर आराधना से सब कुछ मिलता है।

१० अप्रेल १९८८

ईश्वर की आराधना से संसार का हर सुख प्राप्त हो सकता है तथा हर प्रकार के कष्ट से छुटकारा मिल सकता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के ७वें अध्याय में इस सम्बन्ध में कहा है-

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। ७:१६

(हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्मवाले अर्थार्थी (धन की इच्छा वाले), आर्त्त (संकट निवार्णार्थ), जिज्ञासु, और ज्ञानी चार प्रकार के भक्त जन मेरे को भजते हैं।)

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। ७:१७

(उनमें नित्य मेरे में एकीभाव से स्थित हुआ, अनन्य प्रेम भक्ति वाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है, क्योंकि ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझको प्रिय है।)

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।

आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।। ७:१८

(यह सभी (सब ही) उदार हैं (उत्तम हैं) परन्तु ज्ञानी मेरा स्वरूप ही है। (ऐसा) मेरा मत है, क्योंकि वह स्थिर बुद्धि, अति उत्तम, गतिस्वरूप मेरे में ही अच्छी प्रकार स्थित है।)

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।। ७:१९

(बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में, तत्त्वज्ञान को प्राप्त हुआ ज्ञानी, सब कुछ वासुदेव ही है, इस प्रकार मेरे को भजता है, वह महात्मा अति दुर्लभ है।)

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।

तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।। ७:२०

(अपने स्वभाव से परे हुए, उन-उन भोगों की कामना द्वारा ज्ञान से भ्रष्ट हुए, उस-उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को भजते हैं।)

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।। ७:२१

(जो-जो सकामी भक्त, जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस भक्त की मैं उसी देवता के प्रति श्रद्धा को स्थिर करता हूँ।)

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।

लभते च ततः कामान्मयैव विहितान् हि तान्।। ७:२२

(वह पुरुष उस श्रद्धा से युक्त हुआ, उस देवता के पूजन की चेष्टा करता है, और उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किये हुए, उन इच्छित भोगों को निःसन्देह प्राप्त होता है।)

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।। ७:२३

(परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान् है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, मेरा भक्त मुझको ही प्राप्त होता है।)

गीता में भगवान् ने यह स्पष्ट कर दिया कि जीव जिस भाव से पूजा करता है, वह वही पाता है। यह संसार एक ही परमसत्ता का विस्तार है, इस भाव को जिसने तत्त्व से जान लिया, उसका कर्ता भाव पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में जीव संसार में विचरण करते हुए जो भी कर्म करता है, वह उन सभी कर्मों के बन्धन से मुक्त ही रहता है।

भगवान् ने इस सम्बन्ध में साफ कहा है कि बहुत जन्मों के बाद अन्त के जन्म में जीव तत्त्व ज्ञान से ईश्वर को जानने में योग्य होता है। इसीलिए भगवान् ने १८वें अध्याय के ६६वें श्लोक में स्पष्टआदेश दिया है -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। १८:६६

(सर्व धर्मों को त्यागकर, केवल एक मुझ परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो, मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।)

इतने स्पष्ट आश्वासन के बाद भी, इस समय संसार में इतना घोर अन्धकार व्याप्त है कि जीवों को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। इससे यह बात ठीक लगती है जो भगवान् ने चौथे अध्याय में कही कि- 'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत' वाला समय अब अधिक दूर

नहीं है। इस समय जो स्थिति संसार की है, उसका इलाज तो उस परमसत्ता के अवतरण के बिना पूर्णरूप से असम्भव लगता है। छोटे-मोटे प्रकाश से संसार का तमस् मिटना, अब असम्भव हो गया है।

९६.
चेतन शक्ति से जुड़े बिना प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव है।

०८ फरवरी १९८८

अन्धेरा और उजाला दो बेमेल वस्तुएँ हैं। ये दोनों एक स्थान पर नहीं रह सकते। प्रकाश-निर्भयता, नया जोश और चेतनता प्रदान करता है, जबकि अन्धेरा-भय, निराशा और अचेतनता का प्रतीक है। दोनों एक दूसरे से विपरीत गुण धर्म की वस्तुएँ हैं। इसीलिए सभी धार्मिक ग्रन्थों में तामसिक शक्तियों की तुलना अन्धेरे से की गई है और सात्विक शक्तियों की उजाले से। तामसिक शक्तियाँ संसार में हिंसा, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि विनाशकारी शक्तियों का प्रसार-प्रचार करती हैं, जबकि सात्विक शक्तियाँ अहिंसा, प्रेम, दया, सद्भाव आदि सृजनात्मक सत्ता का प्रचार-प्रसार करने में निरन्तर लगी रहती हैं।

युग के गुण-धर्म की प्रधानता के कारण, इस समय संसार में तामसिक शक्तियों का बोलबाला है। सात्विक शक्तियाँ पूर्ण रूप से गौण हो चुकी हैं। मैं कह चुका हूँ कि मुझे परमसत्ता ने जो प्रत्यक्षानुभूति करवाई, उसके अनुसार सात्विकता के पूर्ण ह्रास के साथ-साथ, तामसिक सत्ता भी आखिरी सांस ले रही है। उसके बचे खुचे शक्तिहीन वंशज नितान्त निराशा के भाव में डूबे हुए, गिन-गिनकर अपने अन्तिम दिन बिता रहे हैं। तामसिक शक्तियों की यह स्थिति स्पष्टघोषणा करती है कि उस परमसत्ता का संसार में अवतरण हो चुका है।

ज्यों-ज्यों संसार के सामने उस परमसत्ता के प्रकट होने का समय नजदीक आ रहा है, ये बची-खुची शक्तिहीन तामसिक शक्तियाँ तेज गति से मृत्यु की तरफ बढ़ रही हैं। यीशु और मोहम्मद जो भविष्यवाणियाँ करके गए हैं, उससे इन दोनों धर्मों के धर्माचार्यों में भारी आतंक छाया हुआ है। सभी को एक ही चिन्ता खाये जा रही है कि धर्म के नाम पर अरबों-खरबों रूपयों का धन, चर्चों और मस्जिदों में आ रहा है, अगर नई शक्ति के प्रकट होने से वह बन्द हो जाता है तो उस पर पलने वाले करोड़ों लोगों का क्या हाल होगा?

हम देखते हैं मृत्यु अवश्यंभावी है; कालचक्र की गति के साथ-साथ, हर वस्तु, व्यवस्था, सभ्यता आदि सभी का अन्त सुनिश्चित है। किसी की घबराहट और किसी की खुशी से कालचक्र पूर्ण रूप से अप्रभावित है। युग परिवर्तन के साथ-साथ बहुत विशाल और प्रभावशाली शक्तियाँ हमेशा ही समाप्त होती आ रही हैं। मानवीय व्यवस्था इसे बचाने में

पूर्णरूप से असमर्थ है। मानवीय प्रयास मात्र डूबते हुए को तिनके का सहारा ही साबित होगा।

जिस परमसत्ता के अवतरण की महर्षि अरविन्द ने घोषणा की है, मेरे जीवन के प्रारम्भ काल से ही वह सत्ता परोक्ष-अपरोक्ष रूप से मेरे इर्द गिर्द अपनी उपस्थिति का भान निरन्तर कराती चली आ रही है। मैं अज्ञानवश कुछ भी समझ नहीं पा रहा था। मैं भी सांसारिक जीवों की तरह तामसिक शक्तियों से अत्यधिक प्रभावित था। सन् १९६७ में अचानक मुझे लगाम लगा दी गई। उस समय तो मैं कुछ नहीं समझ सका, पर अब अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि पहले मैं विपरीत दिशा में चल रहा था, परन्तु एक ही झटके में, उसने मेरा मुँह अपनी तरफ घुमा दिया। इस प्रकार मैं निरन्तर उसकी आकर्षण सत्ता के कारण तेज गति से उसकी तरफ बढ़ता गया। इस प्रकार निश्चित समय पर प्रत्यक्षानुभूतियाँ अनायास ही साक्षात्कार में बदल गई। प्रत्यक्ष आदान-प्रदान के बावजूद गुरु के अभाव में, जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में, मैं कुछ भी नहीं समझ सका।

ज्यों ही गुरुदेव की चरणरज माथे पर लगी, एकदम काया ही पलट गई। मैं अभी संभल ही नहीं पाया था कि गुरुदेव विरासत में सब सत्ता सौंपकर चल दिये। करीब दो साल तक मुझे कुछ भी होश नहीं रहा। इसके बाद धीरे-धीरे जब सारी स्थिति से अवगत कराया गया तो मैं कुछ समझ सका हूँ। यही कारण है कि मैं- "गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूँ पांव। बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दियो मिलाय" वाली बात पर अधिक भरोसा करता हूँ। यह संसार एक ही परमसत्ता का विस्तृत रूप है। ऐसे विशाल स्वरूप में उस परमसत्ता से साक्षात्कार कराने में केवल संत सद्गुरु ही सक्षम हैं। गुरु कृपा बिना यह कार्य पूर्ण रूप से असम्भव है।

'गुरु', ईश्वर का ही सात्विक स्वरूप है। ठेट अगम से आई हुई आत्मा ही गुरु पद पर पहुँच पाती है। इस प्रकार के चेतन गुरु का आशीर्वाद प्राप्त होते ही जीवन में आनन्द की लहरें दौड़ने लगती हैं। तत्काल सत्लोक की विभिन्न सात्विक शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ होने लगती हैं, जीव माया की परिधि को अनायास गुरु-कृपा से लाँघ जाता है। इसके बाद क्रमिक विकास के साथ अगम की तरफ बढ़ता हुआ, जीव एक ही जन्म में उस परमसत्ता में लीन हो जाता है। इस प्रकार गुरु कृपा से जीव, एक ही जन्म में जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर, मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि सात्विकता और तामसिकता, दो विपरीत शक्तियाँ हैं। दोनों एक स्थान पर नहीं रह सकती। मोटे रूप से रात और दिन के उदाहरण से समझा जा सकता है। सूर्य भगवान् के उदय होते ही अन्धेरा भाग जाता है, इस प्रकार संत सद्गुरु के चरणों में

समर्पित होते ही अन्धकार भाग जाता है। मेरे अनुभवों से मालुम हुआ कि गुरु के चरणों में बैठकर, सभी तामसिक वृत्तियों के अंगीकार के साथ-साथ उनको त्यागने की प्रार्थना अनिवार्य है। जीव स्वयं उस स्थिति में नहीं होता कि वह अकेला अंगीकार और उनका त्याग करने में सक्षम हो। तामसिक वृत्तियों ने जीव को ऐसा माया जाल में फँसा रखा है कि वह उनके वशीभूत होकर, जो कुछ भी कर रहा है, उसे न्याय संगत और ठीक समझता है।

गुरु के सानिध्य में जाते ही तामसिक भावनाएँ पूर्ण रूप से दूर भाग जाती हैं, परन्तु इसके लिए पूर्ण समर्पण अनिवार्य है। समर्पण के बिना कुछ भी नहीं मिल सकता। ज्यों ही गुरु के प्रति समर्पित हुआ कि तामसिक सत्ता के बंधन खुल जाते हैं। जीव जो कुछ कर रहा है, उसके भले बुरे का तत्काल ज्ञान हो जाता है। ऐसी स्थिति में पूर्ण अंगीकार सरल और सम्भव हो जाता है। परन्तु केवल अंगीकार से काम नहीं बन सकता। तामसिक शक्तियाँ बहुत प्रबल होती हैं, वे फिर कभी भी दबोच सकती हैं। अतःअंगीकार के साथ उन भावों के त्याग की भी प्रार्थना, गुरु के सामने करनी आवश्यक है। गुरु परमदयालु होते हैं। इस प्रकार अंगीकार और त्याग की प्रार्थना तत्काल स्वीकार कर लेते हैं।

इधर गुरु ने करुणा करके जीव की प्रार्थना स्वीकार की, उधर उसकी काया में तामसिकता का स्थान सात्विकता ले लेती है। इस प्रकार क्षण भर में गुरु कृपा से तामसिकता से सहज ही हमेशा-हमेशा केलिए जीव को छुटकारा मिल जाता है।

लोग जिस कार्य को कई जन्मों में होना असम्भव बताते हैं, गुरु कृपा से वह परिवर्तन क्षणभर में हो जाता है। मैंने इस प्रकार के परिवर्तन प्रत्यक्ष होते देखे हैं। मुझे परमसत्ता ने स्पष्ट बताया कि जिस प्रकार चावल की हांडी में से एक चावल का दाना लेकर देखने से सभी चावलों के पकने का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार सभी समर्पित लोगों के अंगीकार और न्याय की प्रार्थना का, एक जैसा प्रभाव होता है।

९७.

प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार की बात धार्मिक ग्रन्थों तक ही सीमित क्यों?

२८ फरवरी १९८८

प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार की बात आजकल के कोई धर्माचार्य करते ही नहीं। ईश्वर के नाम की महिमा तो खूब करते हैं। तर्क शास्त्र और शब्दजाल के आधार पर ईश्वर की नित्य नई व्याख्या करके, लोगों को बौद्धिक दृष्टि से नित्य नया व्यायाम करवाते रहते हैं। इस प्रकार उलझाने वाली प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। ऐसी पक्की धारणा लोगों के दिलों में बैठा रखी है कि यह काम इतना कठिन है कि कई जन्मों के लगातार प्रयास से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है; एक जन्म में तो किसी प्रकार भी सफलता सम्भव नहीं हैं। इस प्रकार संसार के असंख्य लोग व्यर्थ में अपना मनुष्य जीवन, निर्जीव और बहिर्मुखी आराधना में नष्टकर रहे हैं। ईश्वर के नाम में कितना चमत्कार है, इसकी व्याख्या करते हुए, संत कबीर ने कहा है-

नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल- छिन-छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़ै सवायो।

संत सद्गुरु नानकदेव जी ने ईश्वर नाम की महिमा गाते हुए एक कदम और आगे बढ़कर कहा है-

भांग धतूरा नानका, उतर जाय परभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

अक्षर उपर्युक्त बात सत्य है तो धर्माचार्य संसार के लोगों को उस नाम खुमारी का आनन्द क्यों नहीं दिला रहे हैं? या तो संत सद्गुरु नानकदेव जी और कबीर गलत कह गए हैं, या आधुनिक गुरु सही नहीं है। दोनों में से एक सत्य है। उस परमसत्ता से जुड़े बिना न तो साक्षात्कार और प्रत्यक्षानुभूति सम्भव है और न ही नाम खुमारी। उस परमसत्ता का साक्षात्कार हुए बिना सब झूठा है। तर्क, बुद्धिचातुर्य, प्रदर्शन, शब्दजाल, बहिर्मुखी आराधना और अन्धविश्वास उस परमसत्ता से जुड़ने में कोई सहयोग नहीं कर सकते। ये सब कृत्रिम तरीके विपरीत दिशा में ले जाते हैं।

निर्जीव पदार्थ अपने आपमें सजीव का भला बुरा करने की शक्ति बिलकुल नहीं रखते हैं। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही सब कुछ करने में सक्षम है। मेरी प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार संसार में इस समय सात्त्विकता का प्रायः अभाव हो चला है। तामसिक पक्ष में भी कोई प्रबल शक्तिशाली सत्ता नजर नहीं आ रही है। आध्यात्मिकता के नाम पर तुच्छ वाम मार्गी लोग, सस्ते चमत्कार और नाटक दिखाकर भ्रमित कर रहे हैं। दोनों ही पक्षों में ऐसा शक्तिहीन समय किसी युग में नहीं आया।

हर युग में सात्त्विक सत्ता का पलड़ा भारी रहा, परन्तु तामसिक पक्ष भी हर युग में सात्विक सत्ता को ललकारता रहा। परन्तु इस समय संसार की जो स्थिति है, ऐसा शून्य काल कभी नहीं आया। सात्त्विक शक्तियाँ मृतप्रायः हो चुकी हैं, परन्तु इसी प्रकार तामसिक शक्तियाँ भी अन्तिम श्वांस ले रही हैं। ऐसा शक्ति संतुलन कभी नहीं बिगड़ा। त्रेतायुग से सात्विक शक्तियों का ह्रास प्रारम्भ हुआ था। इस समय उनका सूर्य अस्त हो चुका है परन्तु इसके विपरीत जब मैं देखता हूँ कि तामसिक शक्तियों का भी सूर्य अस्ताचल तक पहुँच चुका है तो मुझे महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी शत प्रतिशत सत्य होती नजर आती है। श्री अरविन्द ने उस परम शक्ति के उदय की स्पष्ट भविष्यवाणी ही नहीं, घोषणा तक कर दी है-

"२४ नवम्बर १९२६ को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है, अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

जब अन्धकार खत्म होने लगता है तो हम समझ जाते हैं कि अब सूर्योदय होने वाला है। ठीक उसी प्रकार मैं देखता हूँ कि तामसिक सत्ता अपने अन्तिम श्वांस ले रही है, उसकी ठीक वही स्थिति है जो सूर्योदय के समय प्रकाश-शून्य होते हुए तारों की होती है। ज्यों ही भगवान् भास्कर अपनी किरणों का प्रकाश फैलाते हैं, सभी तारे यथास्थिति रहते हुए भी अदृश्य हो जाते हैं। उनके प्रकाश का संसार में कोई अस्तित्व नहीं रह जाता है। जब मुझे यह नजारा प्रत्यक्ष दिखाया जाता है तो मुझे पक्का विश्वास हो जाता है। ऊषा काल के बाद सूर्योदय में जितनी देर लगती है, ठीक उतनी ही देरी अब उस परमसत्ता के प्रकट होने में है। फिर अरविन्द की यह भविष्यवाणी सची हो जायेगी :- "एशिया जगत्-हृदय की शान्ति का रखवाला है। यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित

राजनीति, उद्योग, व्यापार, आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।"

९८.

प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार के बिना चेतना सम्भव नहीं।

२७ फरवरी १९८८

आज का मानव किसी ऐसी थोथी बात में विश्वास नहीं करता, जिससे कोई परिणाम न मिले। वैज्ञानिक उपलब्धियों ने इस युग के मानव को बहुत जाग्रत कर दिया है। मानव तत्काल परिणाम की माँग करता है। जीवन भर कोई परिणाम न देने वाली, किसी भी आराधना को, इस युग का मानव पूर्ण रूप से नकार चुका है। ऐसी स्थिति में सभी धर्मों में प्रचलित आराधना पद्धतियों को इस युग का मानव अब स्वीकार नहीं कर रहा है। यही कारण है कि संसार के युवा वर्ग ने सभी धर्मों के धर्मगुरुओं में विश्वास खो दिया है, चन्द बूढ़े और अशिक्षित लोगों के सहारे सभी धर्म रेंगते हुए मरणासन्न स्थिति में पहुँच चुके हैं।

ऐसे लोगों को भी इकट्ठा करने के लिए भारी प्रचार और धन का सहारा लेना पड़ रहा है। इस प्रकार अन्तिम सांस लेते हुए, सभी धर्मों का पतन सन्निकट है। प्रकृति कभी किसी स्थान को रिक्त नहीं छोड़ती है, जिस प्रकार बुड्ढा मनुष्य मरता है, उससे पहले बच्चा जवान होकर उसका स्थान लेने को तैयार हो जाता है, उसी प्रकार का बदलाव संसार की हर वस्तु में निरन्तर हो रहा है। गति का नाम ही जीवन है। संसार की हर वस्तु निरन्तर गतिशील है। सृजन की शक्ति युवा काल ही है। यह सिद्धान्त संसार की हर वस्तु पर लागू होता है। शक्तिहीन वस्तु में सृजन की क्षमता समाप्त प्रायः हो जाती है। ऐसी स्थिति में सभी धर्मों की मृतप्रायः, निरर्थक आराधना पद्धतियों का अन्तिम समय है।

प्रकृति निश्चित रूप से इस स्थान की पूर्ति के लिए, निश्चित समय पर नई शक्ति को संसार के जीवों के कल्याण के लिए प्रकट करेगी। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट इशारा कर दिया है। उस परमसत्ता तक पहुँचकर उसका साक्षात्कार और प्रत्यक्षानभूति करना सम्भव है, इस सम्बन्ध में जो पथ श्री अरविन्द ने दिखाया है, उसके अलावा कोई रास्ता है ही नहीं। बहिर्मुखी आराधना से असंख्य जन्मों में भी उस परमसत्ता तक पहुँचना सम्भव नहीं है। मुझे भी इस प्रकार की अनुभूतियाँ सालों से हो रही हैं। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद तो मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी श्री अरविन्द द्वारा वर्णित अनुभूतियाँ हो रही हैं। श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा हैः- "ईश्वर यदि है तो उसके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनके

साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का कोई न कोई पथ होगा; वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है; एक मास के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है; जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सबकी उपलब्धि कर रहा हूँ।"

इस कार्य को श्री अरविन्द क्यों करना चाहते थे, इस सबन्ध में उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा है- "मैं अपने निज के लिए कुछ भी नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे अपने लिए न मोक्ष की आवश्यकता है, न अतिमानसिक सिद्धि की। यहाँ मैं इस सिद्धि के लिए जो यत्न कर रहा हूँ, वह केवल इसलिए कि पार्थिव चेतना में इस काम का होना आवश्यक है और अगर यह पहले मेरेअन्दर न हुआ तो औरों में भी न हो सकेगा।"

उपर्युक्त से स्पष्टहोता है कि जितने भी महान् संत हुए हैं, उन्होंने अपने लिए कुछ भी नहीं किया। उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता, जीव मात्र के कल्याण के लिए खोजा। ऐसे ही परम हितैषी और दयालु संत सद्गुरु संसार का कल्याण करने में सक्षम होते हैं। वे अपने जीवन में इस बात की झलक तक नहीं दिखने देते कि वे क्या कर रहे हैं? उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता खोजकर उसका साक्षात्कार करके, उसी में लीन हो जाते हैं। संसार से विदा होने से पहले, वे इस अपनी अर्जित परमशक्ति को किसी ऐसे उपयुक्त पात्र को सौंपकर जाते हैं, जो संसार के प्राणी मात्र के कल्याण के लिए, इसका उपयोग कर सके। यह होता है सच्चा त्याग।

अपनी जीवन भर की कमाई को अनायास ही संसार की भलाई के लिए, अर्पित करके चुपचाप चले जाते हैं। घमण्ड, प्रदर्शन, लालसा आदि कोई भी तामसिक वृत्ति उनके पास भी नहीं फटक सकती। ऐसी अहेतु की कृपा से मिली दौलत ही, मैं संसार में बाँटने निकल पड़ा हूँ। मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। मैं तो मात्र उस परमात्मा का सेवक हूँ। मैं तो सेवा के बदले मजदूरी मात्र का अधिकारी हूँ। जो कुछ बाँट रहा हूँ, उस धन पर मेरा रत्ति भर भी अधिकार नहीं है।

९९.

पापों से मुक्ति केवल ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति से ही सम्भव है।

१९ मार्च १९८८

संसार का कोई भी कर्म ऐसा नहीं है जो दोषयुक्त न हो। हर काम में गुण और दोष ऐसे लिपटे रहते हैं कि उनको अलग करना असम्भव है। इस प्रकार संसार में विचरण करने वाला मानव, पाप से बच ही नहीं सकता है। इस युग के धर्माचार्य पाप और पुण्य की जिस प्रकार व्याख्या करके, पाप से बचने के जितने उपाय अपनी बुद्धि चातुर्य से बताते हैं, उनसे केवल झूठी सांत्वना के अलावा कोई फायदा नहीं है। इस संसार में विचरण करते हुए, पाप कर्मों से बचना असम्भव है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है-

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।

सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः।। १८:४८

(हे कुन्ती पुत्र! दोषयुक्त होने पर भी स्वाभाविक कर्म को नहीं त्यागना चाहिए, क्योंकि धुँए से अग्नि के सदृश सब ही कर्म दोष से आवृत हैं।)

ऐसी स्थिति में पाप से बचना सम्भव नहीं। मनुष्य त्रिगुणमयी माया के वशीभूत होकर, हर काम में कर्ता भाव रखता है। यही कर्ता भाव मनुष्य का एक मात्र शत्रु है। इसी के कारण जीव निरन्तर जन्म-मरण के चक्कर में फँसकर दुःख भोग रहा है। इस सम्बन्ध में भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

भगवान् श्री कृष्ण ने उपर्युक्त श्लोक में स्पष्ट बता दिया कि प्राणी मात्र को भरमाता हुआ, मैं अपनी इच्छा से चला रहा हूँ। इतने पर भी जीव माया के चक्र से निकल नहीं पा रहा है। युग के गुण धर्म के कारण तामसिक शक्तियों का इतना प्रबल प्रभाव हो चला है कि किसी को सही रास्ता नजर ही नहीं आ रहा है।

तामसिक शक्तियों ने ऐसे असंख्य तथाकथित अध्यात्मवादी सन्त, सात्विकता का भेष बनाकर फैला रखे हैं कि वे किसी को सही दिशा खोजने का, अवकाश ही नहीं पाने देते। निरन्तर ईश्वर की आड़ में नई तर्क बुद्धि द्वारा नई-नई व्याख्या गढ़कर, लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। भगवान् श्री कृष्ण निम्न श्लोक में स्पष्ट आदेश देते हैं, परन्तु धर्म गुरु इसे भी तोड़-मरोड़कर ऐसी व्याख्या कर देते हैं कि किसी को सच्चा मार्ग दिखाई नहीं देवे।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। १८:६६

(सब धर्मों को त्यागकर, केवल एक मेरी अनन्य शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, यह दृढ़ पतिज्ञा करता हूँ, तू शोक मत कर।)

इतने स्पष्ट आश्वासन के बावजूद, संसार का प्राणी अन्धकार में भटक रहा है। इसीलिए श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा था कि 'पार्थिव चेतना' में उस परमसत्ता का अवतरण ही एक मात्र उपाय है, जिससे संसार का अन्धकार मिट सकता है। बाकी सारी शक्तियाँ असफल हो चुकी हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा था, "श्री तिलक, दास, विवेकानन्द-इनमें से कोई भी साधारण मनुष्य न था, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।" श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा था "भगवान् की इच्छा है कि भारत, सचमुच भारत बने, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय ही विजय होगी।" फिर भी कोई धर्म गुरु चेतन नहीं है, उस परमसत्ता से जुड़े बिना चेतनता असम्भव है।

केवल प्रदर्शन, शब्दजाल और तर्क शास्त्र से काम चलने वाला नहीं। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के आधार पर, मैं इस कार्य को बहुत आसान और सम्भव मानता हूँ। मेरे गुरुदेव के आशीर्वाद के कारण, उनके स्वर्गवास के बाद, मुझसे जुड़ने वाले सभी जिज्ञासु व्यक्तियों को यह लाभ मिलना प्रारम्भ हो गया है। मुझे जो कुछ इस संसार का काम सौंपा गया है, उसके अनुसार तो श्री अरविन्द की भविष्यवाणियाँ सत्य होती नजर आ रही हैं।

मेरे जैसे साधारण मनुष्य को इस प्रकार की शक्ति ईश्वर ने क्यों दी, समझ में नहीं आ रहा है। एक बार कातर स्वर से करुण पुकार करके, मैंने ईश्वर से कहा था, "प्रभु! मेरे जैसे साधारण प्राणी से आप ऐसे असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं? किसी योग्य व्यक्ति को चुनो!"

आदेश हुआ - "मेरी आज्ञा पत्थर पर लकीर है। यह सब तुम्हें ही करना पड़ेगा।"

१००.

मोक्ष की प्राप्ति केवल कृष्ण उपासना से ही सम्भव है।

०३ अप्रेल १९८८

मनुष्य योनि, प्राणधारियों में सर्वोत्तम योनि है। मनुष्य शरीर, ईश्वर का सर्वोत्तम स्वरूप है। केवल इसी योनि में ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार संभव है और इसके बिना मोक्ष असम्भव है। केवल मोक्ष ही जीवन का आखिरी उद्देश्य है। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि यह मनुष्य शरीर सुखरहित क्षणभंगुर है। केवल ईश्वर प्राप्ति से ही मोक्ष और परमानन्द की प्राप्ति संभव है। इस सम्बन्ध में भगवान् ने गीता के नौवें अध्याय के ३२वें और ३३वें श्लोक में साफ कहा है -

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। ९:३२
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।। ९:३३

(क्योंकि हे अर्जुन! स्त्री, वैश्य, शुद्रादिक तथा पापयोनि वाले भी, जो कोई होवें, वे भी मेरे शरणागत होकर परमगति को प्राप्त होते हैं, फिर क्या कहना है कि पुण्यशील ब्राह्मणजन तथा राजर्षि भक्तजन (परमगति को) प्राप्त होते हैं, इसलिए सुखरहित क्षणभंगुर इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मेरा ही भजन कर।)

परन्तु हम देख रहे हैं, भगवान् ने गीता में सारी स्थिति स्पष्ट कर दी है फिर भी संसार का मानव भ्रमित हुआ, अविश्वासी नास्तिकों की तरह भटक रहा है या फिर छोटे-छोटे देवताओं तथा प्रेतों के सामने नतमस्तक हुआ, भयंकर कष्टभोगते हुए, नष्टहोकर अधोगति को प्राप्त हो रहा है। एक तो कलियुग के कारण संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य और फिर ऐसी स्थिति में त्रिगुणमयी योगमाया के चक्कर से निकलना इस युग में बड़ा कठिन है। केवल भगवान् की अनन्य शरण से ही काम बनना सम्भव है। इस सम्बन्ध में भगवान् ने सातवें अध्याय के १४वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।। ७:१४

(क्योंकि यह अलौकिक त्रिगुणमयी मेरी योगमाया बड़ी दुस्तर है, जो पुरुष मेरे को ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं।)

ऐसी स्थिति में, इस युग में प्रचलित आराधनाओं से मोक्ष प्राप्त करना असम्भव है। संसार के सभी प्राणी त्रिगुणमयी माया के क्षेत्र की शक्तियों को ही मोक्ष देने वाली सत्ता समझकर, उनके चक्कर में भ्रमित हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में गीता के आठवें अध्याय के १६वें श्लोक में स्थिति को स्पष्ट करते हुए भगवान् ने कहा है-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। ८:१६

(हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं। परन्तु हे कुन्ती पुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता है।)

इस पर भी काल के गुण धर्म के कारण लोगों की मति ऐसी भ्रमित हो रही है कि जन्म-मरण के चक्कर में डालने वाली शक्तियों से ही लोग मोक्ष की उम्मीद कर रहे हैं।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के अठारहवें अध्याय के ६६वें श्लोक में साफ कहा है-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। १८:६६

(सब धर्मों को त्यागकर, केवल एक मुझ परमात्मा की शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।)

इसके बावजूद संसार के प्राणी उस सनातन सत्ता को छोड़, माया की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। संसार में तामसिक वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो चुका है। भारत में तो यह अन्धकार सर्वाधिक ठोस बनकर जम चुका है। जब आध्यात्मिक गुरु, भौतिक विज्ञान की सचाई के विरुद्ध प्रचार करते हैं तो मुझे भारी दुःख होता है। ऐसे ढोंगी लोग अपना जीवन तो बिगाड़ ही रहे हैं, भोलेभाले लोगों को धर्म की आड़ में भारी संकट में डालकर, भारी पाप के भागी बन रहे हैं।

ऐसी स्थिति में अगर भारत के हिन्दू कितना ही प्रयास करें, संसार के लोगों को प्रभावित

नहीं कर सकेंगे। भारत में इस समय न धर्म बचा है, न सच्चाई और ईमानदारी बची है और न ही राष्ट्रीयता। जब तक हम इस कटु सत्य को स्वीकार करके, बीमारी का इलाज नहीं खोजेंगे, हमारा कल्याण असम्भव है। तिलक-छापे करने, कपड़े रंगने, तन रंगने से काम चलने वाला नहीं है। यह रोग तो मन रंगने से ही ठीक होगा, क्योंकि यह मन ही सारा प्रपंच हमसे करवा रहा है। मीराबाई ने ठीक ही कहा है- "अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया।"

१०१.
मोक्ष के प्रति इस युग का मानव उदासीन क्यों?

'मोक्ष' शब्द इस कलियुग में मात्र एक काल्पनिक स्थिति का सूचक है। इस समय सभी धर्माचार्य, शास्त्रों में वर्णित बातों को बौद्धिक तर्क और शब्दजाल के सहारे पाप-पुण्य और स्वर्ग-नरक का काल्पनिक भय दिखाकर, समझाने का असफल प्रयास कर रहे हैं। हमारे धर्म के धर्माचार्य अतीत का गुणगान करते हुए, त्रेता और द्वापर युग के साधकों का उदाहरण देते हैं। कलियुग का मानव वैसी आराधना करने में समर्थ नहीं है अतः उसे दोष लगाते हुए कहा जाता है कि वैसी आराधना के बिना मोक्ष पूर्ण रूप से असंभव है। उसके बचे-खुचे अवशेष बहिर्मुखी कर्मकाण्ड के रूप में शेष बचे हैं। सभी धर्माचार्य त्याग, तपस्या, दान, पुण्य आदि का उपदेश देते हैं। इस युग का मानव कहता है कि यह तो पलायनवादी भाव है; संसार से विमुख होने से ही अगर यह काल्पनिक स्थिति (मोक्ष) प्राप्त होती है तो संसार में कितने लोग इसको प्राप्त कर सकेंगे? अतः मोक्ष एक काल्पनिक आकर्षण मात्र है, इसमें सच्चाई बिलकुल ही नहीं है। संसार के लोगों का ऐसा सोचना पूर्ण सत्य है। इस समय संसार में धर्म के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उससे मोक्ष जैसी उच्चतम स्थिति की कल्पना तक नहीं की जा सकती। मोक्ष का अर्थ है, उस परमसत्ता के तद्रूप बन जाना। तद्रूप बनने के लिए साधक को जिस प्रक्रिया में से गुजरना पड़ता है, और इस यात्रा के समाप्त होने के पहले, जो-जो अद्वितीय स्वाद उसे चखने को मिलते हैं, मात्र उन्हीं से उस उच्चतम स्थिति का महत्त्व समझ में आ सकता है।

हमारे दर्शन के अनुसार 'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। असंख्य विद्वानों ने गीता पर टीकाएँ लिख-लिखकर अपनी विद्वता का परिचय दिया है। सभी धर्माचार्य गीता से पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि का भय दिखाकर तथा त्याग-तपस्या से जीवन बिताने का उपदेश देते हैं। गीता एक पूर्ण ग्रंथ है। वह जीवन के क्षेत्र का सम्पूर्ण ज्ञान कराती है। अतः तोड़-मरोड़कर उससे हर उपदेश देना संभव है, परन्तु गीता का रहस्य कुछ और ही है।

अक्षर गीता में से ११ वें अध्याय को अलग करके भगवान् ३६ अध्यायों का उपदेश दे देते तो भी अर्जुन के कुछ भी समझ में नहीं आता। विराट स्वरूप से जिस प्रकार पूर्ण सत्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवाया गया, उसे देखकर अर्जुन को पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया।

उसके बाद अर्जुन के भाव बदल गए, पूछने का लहजा बदल गया। बाद में सभी प्रश्न बहुत ही करुण भाव से पूछे। अतः गीता का रहस्य जितना अर्जुन समझा था, उतना कलियुग का मानव कैसे समझ सकता है? सम्पूर्ण गीता अन्तर्मुखी होकर प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करने का ग्रंथ है। गीता प्रवचन का विषय है ही नहीं। गीता का हर श्लोक स्वयं सिद्ध मंत्र है। अतः गीता रूपी मंदिर में जब प्रभु की मूर्ति स्थापित हो चुकी है, जिसके दर्शन करने से अर्जुन को जिस दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, गीता वही उपदेश देती है। पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने के बाद अर्जुन ने जो कार्य किया, गीता वही कार्य करने का उपदेश देती है। सम्पूर्ण ज्ञान एकाग्रचित होकर सुनने के बाद भगवान् ने पूछा क्या तेरा अज्ञान से उत्पन्न हुआ मोह नष्ट हुआ ?

तब अर्जुन ने कहा-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।। १८:७३

(हे अच्युत! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है, मुझे स्मृति प्राप्त हुई है, मैं संशय रहित हुआ स्थित हूँ और आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।)

इस समय विश्व में पूर्ण रूप से माया का साम्राज्य है। हमारा दर्शन तो ईश्वरवाद का जनक है। जब हमारे धर्माचार्य प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार के स्थान पर अतीत के गुणगान करके धर्म की इतिश्री कर रहे हैं, तब पैगम्बरवादी धर्मों को दोष देना व्यर्थ है। माया को जीत पाना कितना कठिन है, इस संबंध में भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के ७ वें अध्याय के १४ वें श्लोक में कहा है-

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।। ७:१४

(क्योंकि यह अलौकिक (अति अद्‌भुत) त्रिगुणमयी मेरी योगमाया बड़ी दुस्तर है, अतः जो पुरुष मेरे को ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।)

इस युग के धर्माचार्य लौकिक समस्याओं का समाधान करने में समर्थ नहीं हैं, अलौकिक समस्याओं के समाधान की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। मोक्ष प्राप्ति के लिए छह चक्रों और तीनों ग्रन्थियों का भेदन करने के साथ-साथ आज्ञाचक्र भेदन जैसा सर्वाधिक कठिन कार्य करने के बाद सच्चिदानंद घन (सत्+ चित्+आनंद) परब्रह्म के जगत् में प्रवेश

करना पड़ता है। इस जगत् में माया नाम की कोई वस्तु नहीं है, परन्तु फिर भी प्रभु का दिव्य आनंद साधक को मस्त बना देता है। साधक उस आनंद के कारण सुध-बुध भूल जाता है। अगर गुरु न चेतावे तो वह आनंदमय कोश और चित्मय कोश का भेदन करके सत्मयकोश अर्थात् सहस्रार में पहुँचने का प्रयास ही नहीं कर सकता। मेरे कई साधक काफी समय तक उसी स्थिति में स्थिर रहे। मेरे चेताने पर उन्हें सुध आई, वे बोले, "गुरुजी! आनंद भी कैसा है कि संसार की सुध-बुध भुला देता है! आप न चेताते तो न मालूम कितने समय और इसी स्थिति में अटके रहते।"

मोक्ष मात्र कुण्डलिनी के सहस्रार में पहुँचने पर ही होता है। इस संबंध में गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने भी कहा है-

धर्म तें बिरति योग तें ज्ञाना।

ज्ञान मोक्ष-प्रद वेद बखाना।।

मोक्ष के संबंध में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। ८:१६

(हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र! मेरे को प्राप्त होकर उसका पुनर्जन्म नहीं होता है।)

मात्र योग से ही सहज समाधि और सहज समाधि से मोक्ष संभव है। योगी की स्थिति का वर्णन करते हुए भगवान् ने कहा है-

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।

कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।। ६:४६

(क्योंकि योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है और शास्त्र के ज्ञानवालों से भी श्रेष्ठ माना गया है, तथा सकाम कर्म करने वालों से भी योगी श्रेष्ठहै, इससे हे अर्जुन! तू योगी हो।)

इस समय योग संसार से प्रायः लुप्त हो गया है। योग की व्याख्या करते हुए महर्षि श्री अरविन्द कहते हैं- "योग का अर्थ है परमात्मा के साथ संयोग, विश्व के परे जो परमात्मा तत्त्व है, उसके साथ संयोग या विश्वात्मा के साथ संयोग या व्यष्टिगत जो आत्मा है, उसके साथ संयोग अथवा जैसा कि इस योग में होता है, तीनों के साथ, एक साथ संयोग अथवा इसका

अर्थ है एक ऐसी चेतना को प्राप्त होना, जिसमें मनुष्य अपने क्षुद्र अहंकार, व्यष्टिगत मन-बुद्धि, व्यष्टिगत प्राण और शरीर से बंधा नहीं रहता, परन्तु परमात्मा के साथ या विश्वात्मचैतन्य के साथ एकत्व को प्राप्त होता है, जिससे वह अपने अन्तरात्मा के स्वरूप को जान लेता है, अपनी ही अन्तर सत्ता को तथा जीवन के वास्तविक सत्य को पहचान लेता है।"

सिद्धयोगियों की गुरु-शिष्य परम्परा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदिगुरु कैलाशवासी भगवान् श्री परशिव हैं जिन्हें सिद्धों की परिभाषा में 'श्रीकण्ठनाथ' कहा जाता है। कलियुग में इसका प्रसार-प्रचार योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने किया। इन्हीं के शिष्य महायोगी श्री गोरक्षनाथ जी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। योग साधना के संबंध में गोरक्षशतक में कहा है-

द्विजसेवितशाखास्य श्रुतिकल्पतरोः फलम्।
शमनं भवतापस्य योगं भजत सत्तमाः।।

गोरक्षशतक-६

('वेद' कल्पतरु है। जिस तरह कल्पतरु की शाखाएँ पक्षियों के आश्रय स्थान हैं, ठीक इसी तरह द्विजों द्वारा वेद की शाखाओं का परिशीलन किया जाता है। वेदरूपी कल्पतरु का अमर-फल 'योग' है। हे सत्पुरूषों! इसका सेवन करो। यह योग संसार के त्रिविध तापों (आधि-भौतिक, आधि-दैहिक व आधि-दैविक) का शमन (नाश) कर देता है।)

मनुष्य जीवन का रहस्य जन्म में नहीं ,उसकी मृत्यु में छिपा है। जब तक मनुष्य मृत्यु से भयभीत रहेगा, मोक्ष का रहस्य समझ में आ ही नहीं सकता। माया ने इस मृत्यु रूपी मोक्षदाता ज्ञान का स्वरूप ऐसा डरावना और विकृत बना दिया है कि मनुष्य मृत्यु का नाम सुनकर ही काँप उठता है। माया का प्रपंच देखिये, कि वह जीवात्मा को जीव भाव में इतना जकड़े रहती है कि उसे आत्मभाव की प्रत्यक्षानुभूति होने ही नहीं देती है। जब तक मृत्यु का रहस्य समझ में नहीं आता, मोक्ष एक कल्पना मात्र है। पतंजलि योग दर्शन के विभूतिपाद के सूत्र संख्या २२ में स्पष्ट कहा है कि योगी को अपनी मृत्यु का पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि वह कब और किस प्रकार तथा किन-किन कारणों से मरेगा।

सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्म तत्संयमादपरान्त ज्ञानमरिष्टेभ्यो वा ।। ३:२२

सूत्रार्थ- "उपक्रम सहित(तीव्र वेगवाले) उपक्रम रहित (मंद वेगवाले) दोनों प्रकार के कर्मों में संयम करने से मृत्यु का ज्ञान होता है अथवा अरिष्टों से भी मृत्यु का ज्ञान होता है।"

इससे स्पष्ट है कि योगी को जीवन काल में ही मृत्यु से पूर्ण साक्षात्कार हो जाता है। अतः वह जीते जी जीवनमुक्त हो जाता है। इस संबंध में संत कबीर दास जी ने कहा है-

साधो भाई जीवत ही करो आशा।।

जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा।

जियत करम की फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आशा।। १

तन छूटे जिव मिलन कहत है, सो सब झूठी आसा।

अबहुँ मिला सो तबहुँ मिलैगा, नहिं तो जमपुर वासा।। २

दूर दूर ढूँढ़े मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा।

साधु संत की करै न बन्दगी, कटै करम की फाँसा।। ३

सत्त गहै सतगुरु को चीन्है, सत्तनाम विश्वासा।

कहै कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।। ४

(बेलवेडियर प्रेस में छपी शब्दावली- शब्द ८, पृष्ठ ४३)

अतः मनुष्य जीवनकाल में ही मृत्यु से साक्षात्कार कर लेने के बाद अर्थात् मृत्यु का रहस्य जान लेने के बाद, जब वह समय आता है तो मनुष्य मृत्यु का स्वागत करके उसका वरण करता है, क्योंकि वह अपने जीवनकाल में ही अच्छी प्रकार समझ लेता है कि यह अंतिम जीवन है। उस समय की बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करता है। इस संबंध में संत कबीर ने कहा है-

ऊँचा तरवर गगन फल, बिरला पंछी खाय।

इस फल को तो सो चखै, जो जीवत ही मरि जाय।।

मरते-मरते जग मुआ, औसर मुआ न कोय।

दास कबीरा यों मुआ, बहुरि न मरना होय।।

जीवन से मरना भला, जो मरि जानै कोय।

मरने पहिले जो मरै, (ता) अजर अरु अमर होय।।

जा मरने से जग डरै, मेरे मन आनन्द।

कब मरिहौं कब पाइहौं, पूरन परमानंद।। -कबीर साखी-संग्रह

इस संबंध में ईसाइयों का पवित्र धार्मिक ग्रंथ भी उसी भाषा में बोलता है। अतः बाइबिल के प्रकाशित वाक्य २:११ में कहा है- "जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।"

ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की क्रियात्मक विधि जिस प्रकार योग दर्शन में वर्णित है, उसी पथ से महर्षि श्री अरविन्द ने उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त किया था। इसका वर्णन करते हुए महर्षि लिखते हैं- "यदि ईश्वर है तो उसके अस्तित्व को अनुभव करने का, उसके साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का, कोई न कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है; एक मास के अन्दर अनुभव कर सका हूँ, कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है, जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सबकी उपलब्धि कर रहा हूँ।"

मैं मानव मात्र को इस ज्ञान का अधिकारी मानता हूँ। इस समय तामसिक वृत्तियों ने संपूर्ण ज्ञान को छिन्न-भिन्न करके, मनुष्यों को छोटे-छोटे समूहों में कैद कर रखा है। सभी समूहों को आपस में लड़ा-लड़ाकर सबके बीच में अंधकार युक्त गहरी खाई बना रखी है। वे वृत्तियाँ कभी नहीं चाहेंगी कि अंधकार मिटे और प्रकाश हो। परन्तु यह प्रकृति का अटल नियम है कि कालचक्र अबाधगति से चलता आया है और चलता जाएगा। रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि सूर्योदय हो, परन्तु सूर्य अपने नियम से उदय होता आ रहा है। जिस गुरुकृपा रूपी प्रसाद को मैं बाँटने निकला हूँ, उसे रोकने की कल्पना करना ही पागलपन होगा।

१०२.

भगवान् की माया का खेल बड़ा विचित्र है।

०६ सितम्बर १९८८

मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के माध्यम से, प्रभु जो कुछ करवाने जा रहे हैं, वह भारी अचम्भे की बात है। जो कुछ मेरे माध्यम से होने जा रहा है, उसके बारे में संसार के आम व्यक्ति के सामने अगर मैं बताने लगूँ तो मैं निश्चित तौर पर पूर्णरूप से पागल घोषित कर दिया जाऊँगा।

संसार में एक रेगिस्तानी भाग पर एक गरीब की कच्ची झोंपड़ी में पैदा प्राणी, संसार में जो कुछ करने जा रहा है, वह ईश्वर का भारी चमत्कार है। सन् १९८४ में यूहन्ना का १५ : २६, २७ तथा १६ : ७ से १५ का अंश पढ़ने पर मुझे बड़ी जिज्ञासा हुई कि यह मेरे प्रश्न का कैसा उत्तर मिला। पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि वह अंश तो ईसाइयों की पवित्र धार्मिक पुस्तक 'बाइबिल' का अंश था।

अनायास मुझे कुछ दिनों बाद बाइबिल का एक भाग- 'द न्यू टेस्टामेंन्ट' (The New Testament) मिल गया। वह पुस्तक एक हिन्दी अनुवाद थी। मूल भाषा का हिन्दी अनुवाद बहुत गलत अर्थ समझा रहा था। इस पर मैंने वी. के. शर्मा नामक रेलवे अस्पताल, बीकानेर की मेट्रन से मूल भाषा की बाइबिल ली। उसके विशेष दो अंश मैंने मेरी डायरी में लिखे, जोकि मेरे से सम्बन्धित हैं, जिसे परमसत्ता ने मुझे दिखाया और उनकी प्रत्यक्षानुभूति करवाई।

सेन्ट जॉन- १६:१२ से १५ की सभी बाते जब सच्ची प्रमाणित होने लगीं तो मुझे भारी आश्चर्य होने लगा। एक दिन मैंने सोचा इस आनन्द के बारे में बाइबिल में क्या कहा है तो मुझे प्रेरणा मिली कि सेन्ट जॉन १५ : ११ तथा भजन संहिता २३ : ५ पढ़ूँ। जब मैंने उस अंश को पढ़ा तो भारी अचम्भा हुआ। जो कुछ लिखा था, ठीक वैसा ही आनन्द मेरे द्वारा मेरे शिष्यों में फैल रहा था। इस पर मुझे विचार आया कि मुझे तो आराधना विशेष के कारण ऐसा हो रहा है, परन्तु मुझसे जुड़ने वाले लोगों को ऐसा क्यों हो रहा है, इस पर मुझे प्रेरितों के काम(का १: ५ का अंश दिखाया गया। उसे पढ़कर, मैं कुछ भी नहीं समझा। विचार आया कि मुझसे सम्बन्धित सभी लोगों को प्रत्यक्षानुभूतियाँ किस कारण से हो रही हैं? इस पर मुझे सेन्ट जॉन ३ : ३ से ८ तक का अंश पढ़ने का आदेश मिला। उसे पढ़ने से, मैं समझा कि यह हिन्दू दर्शन

के द्विज बनने के सिद्धान्त की बात है।

मेरी आराधना का तरीका तो हिन्दू दर्शन के उस सिद्धान्त पर आधारित है कि सारा ब्रह्माण्ड अन्दर है। अतः उस परमसत्ता से सम्पर्क अन्तर्मुखी हुए बिना असम्भव है। इस पर मुझे सेन्ट जॉन २:१९ से २१ तथा २ कुरिन्थियों (corinthians) का ६: १६ भाग देखने की प्रेरणा मिली।

मुझे उपर्युक्त तथ्यों ने बहुत प्रभावित किया। विचार आया कि संसार के लोग स्वार्थवश अलग-अलग धर्म और सम्प्रदाय बनाकर उसके ठेकेदार बने बैठे हैं। ईश्वर ने जितने भी संत पैदा किये, वे संसार के सभी प्राणियों के लिए कार्य कर गए हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, बौद्ध, जैन, आदि सभी मानवीय बुद्धि का चमत्कार है।

एक दिन विचार आया कि इस समय तो बहुत कम लोगों से सम्पर्क है परन्तु जिस समय संसार के विभिन्न लोगों से सम्पर्क होगा तो फिर कैसी स्थिति होगी? इस पर मुझे प्रेरितों के काम (The acts of the apostles) २:१४ से १८ तथा २ : ३३ को देखने की प्रेरणा मिली।

उपर्युक्त तथ्यों को देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हो रहा है। दो हजार वर्ष पहले जो तथ्य एक महान् आत्मा ने बताए, वे सभी मेरे जैसे साधारण व्यक्ति से प्रमाणित होते देख बड़ा अचम्भा हो रहा है। बाइबिल और गीता में लिखी सभी बातें, मैं भौतिक जगत् में प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। अतिशीघ्र सभी तथ्य संसार भर में प्रकट होने वाले हैं।

१०३.

सारा संसार एक ही परमसत्ता का स्वरूप है।

१४ अप्रेल १९८८

एक ही सत्ता संसार में विभिन्न रूपों में प्रकट हो रही है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के १४ वें अध्याय में स्पष्ट करते हुए कहा है-

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।

तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ।। १४:४

(हे अर्जुन! सब योनियों में जितनी मूर्तियाँ (शरीर) उत्पन्न होती हैं, उन सबकी त्रिगुणमयी माया (तो) गर्भ को धारण करने वाली माता है (और) मैं बीज को स्थापन करने वाला पिता हूँ।)

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।

निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ।।१४:५

(हे अर्जुन! सतोगुण, रजोगुण (और) तमोगुण ऐसे प्रकृति से उत्पन्न हुए तीनों गुण (इस) अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं।)

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।

सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ ।। १४: ६

(हे निष्पाप! उन तीनों गुणों में प्रकाश करने वाला निर्विकार सत्‌गुण (तो) निर्मल होने के कारण सुख की आसक्ति से और ज्ञान की आसक्ति से बाँधता है।)

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्।

तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसंगेन देहिनम् ।।१४:७

(हे अर्जुन! राग रूप रजोगुण को कामना और आसक्ति से उत्पन्न हुआ जान, वह (इस) जीवात्मा को कर्मों की और उनके फल की आसक्ति से बाँधता है।)

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।

प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ।।१४:८

(और हे अर्जुन! सर्व देहाभिमानियों के मोहने वाले, तमोगुण को अज्ञान से उत्पन्न हुआ

जान, वह उस जीवात्मा को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा बाँधता है।)

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥१४:९

(हे अर्जुन! सतगुण सुख में लगाता है, रजोगुण कर्म में, (तथा) तमोगुण तो ज्ञान को आच्छादन करके प्रमाद में भी लगाता है।

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।

रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१४:१०

(और हे अर्जुन! रजोगुण, तमोगुण दबाकर सतोगुण बढ़ता है तथा रजोगुण, सतोगुण को दबाकर तमोगुण बढ़ता है, वैसे ही तमोगुण, सतोगुण को दबाकर रजोगुण बढ़ता है।)

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति।

गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥१४:१९

जिस काल में द्रष्टा तीनों गुणों के सिवाय अन्य किसी को कर्ता नहीं देखता है, और तीनों गुणों से अति परे, मुझ परमात्मा को तत्त्व से जानता है, उस काल में वह पुरुष मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं सारा संसार एक ही परमसत्ता का विराट स्वरूप है। भगवान् श्री कृष्ण ने और स्पष्ट करते हुए कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥१८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

इसीलिए भगवान् ने अर्जुन को स्पष्ट विश्वास दिलाया है कि-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥१८:६६

(सर्व धर्मों को त्यागकर, केवल एक मुझ परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो, मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।)

इस गीता रूपी अमृत को भी तामसिक वृत्तियों से इतना आच्छादित कर रखा है कि जीव बहुत ही भ्रमित हुआ भटक रहा है। इस समय धर्म और ईश्वर का स्वरूप ऐसा बना दिया गया है कि जीव माया के चक्कर में निरन्तर भटक रहा है। संसार के प्रायः अधिकतर लोगों का विश्वास धर्म से उठ चुका है। इस युग का मनुष्य, धर्म को ईश्वर के नाम पर चलने वाले व्यवसाय के अतिरिक्त कुछ भी मानने को तैयार नहीं है। सच्चाई धर्म से पूर्ण रूप से लोप हो चुकी है, केवल असत्य का बोलबाला है।

१०४.

संत मत के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन

१५ फरवरी १९८८

संत मत के अनुसार भी यह सारा संसार मात्र ईश्वर का ही विस्तार है। विभिन्न स्वरूपों में मात्र उसी पूर्ण सत्ता की शक्ति कार्य कर रही है। हमारा भौतिक विज्ञान भी मानता है कि सूक्ष्म से स्थूल की उत्पत्ति होती है, अतः साकार जगत् की उत्पत्ति का कारण निराकार शक्ति ही है।

मोटे तौर पर शब्द और प्रकाश ही इस संसार की उत्पत्ति का कारण हैं। शब्द और प्रकाश उस चेतन सत्ता का निराकार स्वरूप हैं। आदि में केवल शब्द ही था; प्रकाश उसकी चेतना का ही स्वरूप है। इस प्रकार शब्द और प्रकाश, भिन्न-भिन्न नहीं होकर, एक ही चेतन सत्ता की अभिव्यक्ति हैं, जिस प्रकार हीरे में से प्रकाश निकलता है, अतः हीरा और प्रकाश जैसे दो भिन्न वस्तुएँ न होकर, एक ही है।

जब इस निराकार सत्ता ने अपने विस्तार का विचार किया, यानि संसार को रचने की सोची तो अपनी इच्छा शक्ति से अपने ही निराकार स्वरूप को सूक्ष्म में और फिर सूक्ष्म से स्थूल में परिवर्तित कर दिया। आज हम संसार को जिस रूप में देख रहे हैं, यह उसी परम चेतन निराकर शक्ति का ही स्वरूप है।

इस प्रकार जब लोकों की रचना प्रारम्भ हुई तो सबसे पहले जो लोक रचा गया, संतों ने उसका नाम 'अगम लोक' रखा है। इस लोक में ईश्वर बालक रूप में प्रकट हुए। इस स्वरूप में से जो तेज प्रकाश निकलता है, उसी से यह लोक प्रकाशित है। इस लोक में शब्द (ईश्वर) अपने सूक्ष्मतम स्वरूप 'प्रत्यक्षानुभूति' में विराजमान है।

इसके बाद उस परमसत्ता ने नीचे उतरकर, दूसरे लोक की रचना की, जिसका नाम संतो ने 'अलख लोक' रखा है। इस लोक में शब्द का स्वरूप सूक्ष्म तरंग में परिवर्तित हो गया और वह परमसत्ता नील वर्ण में परिवर्तित हो गई परन्तु प्रकाश का स्वरूप सफेद ही है। इस लोक का स्वरूप भी अति सूक्ष्म होने के कारण दिखाई नहीं देता, केवल दिव्य दृष्टि से दखा जा सकता है।

इसके बाद उस परमसत्ता ने और नीचे उतर कर जिस लोक की रचना की, उसका नाम संतों ने 'सत् लोक' रखा है। इस लोक में भी उस परमसत्ता का स्वरूप नील वर्ण है, परन्तु प्रकाश अगम और अलख लोक जैसा ही सफेद है। शब्द का स्वरूप यहाँ भी तरंगों के रूप में

अपने को व्यक्त करता है। इस लोक में ईश्वर 'संत सद्गुरु' के रूप में प्रकट हुए हैं।

उपर्युक्त तीनों देश भिन्न होते हुए भी इनकी रचना पूर्ण निर्मल चैतन्य से हुई है। यहाँ किसी प्रकार की भी माया का कोई प्रभाव नहीं है। इन देशों में पहुँचने के बाद जीव काल-क्लेश, दुःख-दर्द और जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है। इन तीनों लोकों में असंख्य द्वीप हैं, जो पूर्णरूप से निर्मल चैतन्य से रचे हुए हैं। इनमें असंख्य जीव, जो जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा चुके हैं, निवास करते हैं।

इसके बाद नीचे उतरकर उस परमसत्ता ने ब्रह्माण्ड की रचना की। यहाँ उस सत्ता ने अपने आपको दो रूपों में प्रकट कर लिया- शुद्ध चैतन्य और शुद्ध माया। शब्द और रोशनी से ब्रह्माण्ड यानि ब्रह्मलोक की रचना हुई। इसके नीचे के स्थान को संत लोग सहस्त्रदल कँवल कहते हैं। यहाँ पर वह सत्ता राधा और कृष्ण (शब्द और रोशनी) के रूप में अलग-अलग प्रकट हुई। इन एक ही सत्ता के दो विभक्त स्वरूपों से सत्, रज, तम् यानि ब्रह्मा, विष्णु और महेश पैदा हुए। इन तीनों शक्तियों से पहले एक शक्ति और पैदा हुई थी जिसका नाम इस युग में गायत्री शक्ति के नाम से जाना जाता है। यह शक्ति ज्ञान की देवी है।

इसके बाद, इन तीन- सत्, रज और तम् (त्रिगुणमयी माया) द्वारा जिस नीचे के लोक की रचना हुई, उसे पिण्ड का देश या मृत्यु लोक कहते हैं। इसमें छह चक्र होते हैं। इस रचना में देवता, मनुष्य और निम्नलिखित चार प्रकार से पैदा होने वाले जीव शामिल हैं।

जरज-जो झिल्ली में लिपटे हुए पैदा होवें।

अण्डज-जो अण्डे के अन्दर पैदा हो कर प्रकट होवें।

स्वेदज -जो पानी और पसीने से पैदा होकर प्रकट होवें।

उठमज-जो जमीन में पृथ्वी और गर्मी से पैदा होवें। इसमें सभी प्रकार की वनस्पतियाँ सम्मिलित हैं।

इस प्रकार इन सभी जीवों को कर्मों के अनुसार चलाने के लिए, पाँच प्रकार की वृत्तियाँ पैदा हुई-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार।

इसके अलावा चार प्रकार के 'अंतःकरण' प्रकट हुए-मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार।

इसके अलावा जीवों के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ-आँख, कान, नाक, जुबान (रस का स्वाद लेने के लिए) और त्वचा।

इसके अतिरिक्त पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी दीं-हाथ, पाँव, जुबान (बोलने के लिए), पेशाब की इन्द्री और पखाने की इन्द्री।

क्योंकि ये सूक्ष्म और स्थूल लोक माया से ओतप्रोत हैं, अत: माया ने अनेक प्रकार के मायावी भोग प्रकट करके, मन और इन्द्रियों द्वारा उनको भोगने का लालच देकर, जीव को अपने भँवर जाल में फँसा लिया। इस प्रकार जीव त्रिगुणमयी माया के चक्कर में फँसकर, संसार के झूठे भोगों के प्रलोभन में आकर कष्ट भोग रहा है। दिखने में ये मायावी भोग अमृत के समान लगते हैं, परन्तु इनका परिणाम विष के समान होता है। इस प्रकार जीव, इस भँवर जाल में फँसकर दुख भोग रहा है।

इस जाल से निकलने का रास्ता मात्र एक ही है। शब्द-उस परमसत्ता से निकलने वाली सूक्ष्म धार (तरंग) है। केवल उसी धार के सहारे ही उस परमसत्ता तक पहुँचा जा सकता है और कोई उपाय नहीं है। चेतन शब्द से हीरे की तरह प्रकाश निकलता है, जो अन्धकार को भगा देता है और उस अगम लोक से आने वाले प्रकाश के सहारे, उसके उद्गम स्थान तक पहुँचा जा सकता है। इसके अलावा अन्य किसी प्रकार की आराधना से, उस परमसत्ता से जुड़ना असम्भव है।

माया के क्षेत्र की विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ छठे चक्र तक के सभी नाशवान भोग देने में समर्थ हैं। जीव इन भोगों के चक्कर में फँसकर, भूल-भुलैया में फँसकर रह जाता है और पूरा जीवन इनके चक्कर में व्यर्थ ही गवां देता है। फिर अन्त समय में भारी पश्चाताप करता है, परन्तु उस समय तक नाव पानी से इतनी भर चुकी होती है कि उसे डूबना ही पड़ता है, बचने का कोई मौका नहीं रहता। इस सभी चक्करों से बचने का रास्ता, हमारे सभी संतों ने संत सद्गुरु की शरण लेना ही बताया है।

सभी ऋषि कह गये हैं-जो कुछ ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड में है। सभी ने एक स्वर में कहा है- ईश्वर घट-घट का वासी है। फिर इस युग के लोग उसे बाहर कैसे पा सकते हैं? अन्दर का रास्ता वही बता सकता है, जो उस पर चलकर उस परमसत्ता का साक्षात्कार कर चुका है, जो उसकी प्रत्यक्षानुभूति कर चुका है। उस परमसत्ता से जुड़ा हुआ चेतन व्यक्ति ही असली भेद, उस अगम के रास्ते का जानता है।

ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी तेज शक्ति का पुँज है। गुरु उस तार का नाम है, जो उस पुँज से जुड़ा हुआ है, अगर आपका सम्बन्ध उस तार से हो जाता है तो आपके अन्दर तत्काल प्रकाश प्रकट हो जाएगा। उस चेतन गुरु का दिया हुआ शब्द, तत्काल आपके अन्दर प्रकाश पैदा कर

देगा। इस प्रकार आपके अन्दर जो शक्ति माया में लिपटी हुई, अचेतन अवस्था में पड़ी हुई है, तत्काल चेतन होकर माया रूपी अन्धकार को क्षण भर में भगा देगी। इस प्रकार आई हुई आत्म चेतना, आपको हर प्रकार की विघ्न व बाधाओं से बचाती हुई, निर्भय रूप से उस पूर्ण सत्ता से मिला देगी। इस प्रकार जीव जन्म-मरण के चक्करों से बच सकता है।

इस युग में चालाक लोगों ने हमारे शास्त्रों में वर्णित गुरु की महिमा को पढ़कर, उसका दुरुपयोग प्रारम्भ कर दिया है। इस प्रकार आज संसार में गुरुओं की संख्या, शिष्यों से अधिक हो गई है। हमारे सभी शास्त्रों में गुरु की महिमा में बहुत कुछ कहा गया है। संत कबीर ने कहा है-

कबिरा धारा अगम की, सद्गुरु दई लखाय ।

उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय ।।

(राधाकृष्ण)

गुरु का पद गोविन्द से भी ऊपर बताया गया है-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूँ पाँव ।

बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो मिलाय ।।

गुरु की महिमा करते हुए सहजो बाई ने भी कहा है-

ज्यों तिरिया पीहर बसे, सूरत रहे पिउ (पति) मांहि ।

ऐसे जन जग में रहें, गुरु को भूले नांहि ।।

मीरा बाई ने भी कहा है कि अगर मुझे गुरु और गोविन्द में से एक को चुनने के लिए कहा जाय तो मैं गोविन्द को छोड़कर, गुरु को चुनना पसन्द करूँगी। अगर मैं गोविन्द को चुनती हूँ और देवयोग से गोविन्द से बिछुड़ गई तो फिर मिलना असम्भव होगा। परन्तु अगर गुरु कृपा रही तो हजार बार बिछुड़ने पर भी गोविन्द मुझसे अलग नहीं रह सकते।

इस प्रकार संत मत को मानने वाले सभी लोगों ने गुरुपद की महिमा गाई है। ऐसे परम दयालु गुरु के मिलने पर जीव का कल्याण होने में कोई देर नहीं लगती। अध्यात्म जगत् में समय की दूरी बिलकुल नहीं होती। जिस प्रकार बिजली का बटन दबाते ही प्रकाश हो जाता है, ठीक उसी प्रकार सच्चा गुरु आपके अन्दर प्रकाश पैदा कर सकता है, क्योंकि उसका सम्बन्ध उस परम ज्योति पुंज से होता है। अगर तार टूटा-फूटा या नकली है तो अनेक जन्मों में भी

प्रकाश होना असम्भव है, परन्तु व्यक्ति चेतन है तो प्रथम मिलन के, प्रथम क्षण में ही आपको इसकी प्रत्यक्षानुभूति हो जाएगी, अन्यथा चाहे कितना ही समय बर्बाद करो, कुछ नहीं होगा।

१०५.
ईश्वर आराधना के बिना मोक्ष नहीं

०६ मई १९८८

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि ब्रह्मलोक तक के सभी लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं। गीता के ८ वें अध्याय के १६ वें श्लोक में भगवान् ने कहा है-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। ८:१६

(हे अर्जुन! ब्रह्म लोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र, मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता।)

इसे और स्पष्ट करते हुए भगवान् ने ९वें अध्याय के २५ वें श्लोक में कहा है-

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।। ९:२५

(देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, (और) मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।)

इतना स्पष्ट होने पर भी इस युग का मानव समझ नहीं पा रहा है, और विभिन्न प्रकार के देवताओं के चक्कर में फँसा पड़ा है। मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र का भेदन गुरु कृपा के बिना सम्भव नहीं है अतः अध्यात्म जगत् में संत सद्गुरु की कृपा के बिना चलना असम्भव है। इस कलियुग का मानव, युग के गुण धर्म के कारण, गुरु-शिष्य परम्परा में विश्वास नहीं करता। इसके अलावा इस युग में सात्विक संतों का नितान्त अभाव हो चला है। कपटी गुरुओं से ठगाते-ठगाते इस युग के मानव का गुरु भाव पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में संसार के जीवों का कल्याण असम्भव हो चला है। ईश्वरीय शक्ति के अवतरण के बिना, अब काम चलने वाला नहीं।

१०६.

भेद बुद्धि के भ्रम के कारण ही आलोचना-प्रत्यालोचना होती है।

२२ फरवरी १९८८

मैंने जो कुछ पिछले पृष्ठों में लिखा है, वह पूर्णरूप से मेरी प्रत्यक्षानुभूति पर आधारित है। इस समय संसार में आध्यात्मिक जगत् में जो वस्तुस्थिति चल रही है, उसका और सच्चाई का तुलनात्मक वर्णन करने के लिए मुझे विवश होकर आलोचनात्मक शैली का सहारा लेना पड़ा। यह मात्र समझाने के लिए किया गया प्रयास है। मैं जो कुछ बताना चाहता हूँ, उसे फिर भी स्पष्ट रूप से नहीं व्यक्त कर सका हूँ, क्योंकि अध्यात्मवाद मात्र प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का ही विषय है।

सांसारिक भाषा में उसे व्यक्त करना, कठिन ही नहीं, असम्भव सी बात है। सांसारिक जीवों को उसी की भाषा में समझाने के लिए इस तरीके के अलावा और कोई रास्ता है नहीं। संसार का यह विस्तृत स्वरूप मात्र उसी एक परमसत्ता का स्वरूप है। विरोधाभास और भिन्नता हमें दिखाई दे रही है, वह मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल है। दुःख-सुख की अनुभूति ही जीवन का रहस्य है। जब जीव, माया की परिधि से ऊपर उठ जाता है तो उसका भ्रम धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।

ऐसी स्थिति में उस महान् आत्मा को संसार की हर वस्तु में मात्र उसी परमसत्ता के दर्शन होते हैं-यह एक सच्चाई है। जब संसार एक ही सत्ता का स्वरूप है तो आलोचना कौन करे, किसकी करे? यह सब भेद तो आज्ञाचक्र के नीचे के माया के क्षेत्र में ही महसूस होता है। माया ने जीवों को ऐसा भ्रमित कर रखा है कि किसी को सच्चाई का भान तक नहीं हो पा रहा है। अलीपुर जेल में भगवान् ने महर्षि अरविन्द को जो दो आदेश दिये थे, उससे स्थिति बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। भगवान् ने पहले आदेश में श्री अरविन्द को कहा था- "मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है, तुम्हें इस राष्ट्र को उठाना है, मैं नहीं चाहता कि तुम अधिक समय तक इस चार दीवारी में बन्द रहो। तुम शीघ्र छूट जाओगे। जाओ और मेरा काम करो।"

दूसरे आदेश में भगवान् ने उनसे कहा था-

"इस एक वर्ष के एकान्तवास में तुम्हें बहुत कुछ दिखाया गया है, जिन बातों के बारे में तुम्हें शंका थी, उनको तुमने प्रत्यक्ष रूप से देख लिया है। मैं इस देश को अपना संदेश फैलाने

के लिए उठा रहा हूँ। यह संदेश उस सनातन धर्म का संदेश है, जिसे तुम अभी तक नहीं जानते थे, पर अब जान गए हो। तुम बाहर जाओ तो अपने देशवासियों से कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो। तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार के लिए उठाया जा रहा है।

जब कहा जाता है कि भारत वर्ष महान् है तो उसका मतलब है सनातन धर्म महान् है। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह और सब में मौजूद हूँ। जो देश के लिए लड़ रहे हैं, उन्हीं में नहीं, देश के विरोधियों में भी, मैं ही काम कर रहा हूँ। जाने या अनजाने, प्रत्यक्षरूप से सहायक होकर या विरोध करते हुए, सब मेरा ही काम कर रहे हैं। मेरी शक्ति काम कर रही है, और वह दिन दूर नहीं जब काम में सफलता प्राप्त होगी।"

भगवान् के उपर्युक्त आदेशों से स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है। उपर्युक्त से स्पष्ट हो गया है कि सर्वत्र एक ही शक्ति की सत्ता है, फिर कौन किसका विरोधी है ?

मुझे भी संसार में सनातन धर्म के लिए कुछ करने का आदेश है, उसका पावन संदेश संसार के लोगों तक पहुँचाना है, इसीलिए सेवाकाल समाप्त होने से छह साल पहले, सेवा निवृत्त होने के आदेश देकर, अपने काम में लगा दिया है। मैं एक सेवा छोड़कर, दूसरी सेवा में लग गया हूँ। जो कुछ मुझे करना है, वह पहले से सुनिश्चित है। इस सम्बन्ध में सारी स्थिति मेरे सामने स्पष्ट है। मुझे मेरा पथ, पग-पग पर आज भी प्रदर्शित किया जा रहा है। मुझे जो करना है उसके लिए मैं पूर्णरूप से आश्वस्त हूँ।

१०७.

सात्विक आराधना का फल कभी नष्ट नहीं होता।

०६ अप्रेल १९८८

संसार की हर वस्तु नाशवान है, परन्तु ईश्वर भक्ति का फल कभी भी नष्टनहीं होता है। वह हर जन्म में निरन्तर बढ़ता ही जाता है। इसके बारे में अर्जुन ने भगवान् श्री कृष्ण से पूछा-

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति।। ६:३७

(हे कृष्ण! योग से चलायमान हो गया है मन जिनका, ऐसा शिथिल यत्न वाला श्रद्धायुक्त पुरुष योग सिद्धि को न प्राप्त होकर, किस गति को प्राप्त होता है?)

इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति।। ६:४०

(हे पार्थ! उस पुरुष का न तो इस लोक में और न परलोक में ही नाश होता है, क्योंकि हे प्यारे! कोई भी शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है।)

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।। ६:४१

(योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को प्राप्त होकर, बहुत वर्षों तक वास करके, शुद्ध आचरणवाले श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है।)

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।। ६:४२

(अथवा ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता है। इस प्रकार का जो यह जन्म है, संसार में निःसन्देह अति दुर्लभ है।)

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।। ६:४३

(वहाँ उस पहले शरीर में साधन किये हुए बुद्धि के संयोग को अनायास ही प्राप्त हो जाता

है, और हे कुरुनन्दन! उसके प्रभाव से फिर भगवत् प्राप्ति के निमित्त यत्न करता है।)

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।

जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।। ६:४४

वह विषयों के वश में हुआ भी, उस पहिले के अभ्यास से ही, निःसन्देह भगवत् की ओर आकर्षित किया जाता है। समत्वबुद्धि रूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल का उल्लंघन कर जाता है।

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।

अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।। ६:४५

(अनेक जन्मों से अन्तः करण की शुद्धि रूप सिद्धि को प्राप्त हुआ और अति प्रयत्न से अभ्यास करने वाला योगी, संपूर्ण पापों से अच्छी प्रकार शुद्ध होकर, उस साधन के प्रभाव से परमगति को प्राप्त होता है।)

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।

कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।। ६:४६

(योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, और शास्त्र के ज्ञानवालों से भी श्रेष्ठ माना गया है, सकाम कर्म करने वालों से (भी) योगी श्रेष्ठ है, इसलिए हे अर्जुन! (तू) योगी हो।)

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।

श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।। ६:४७

(संपूर्ण योगियों में भी जो श्रद्धावान् योगी मेरे में लगे हुए, अन्तरात्मा से मेरे को निरन्तर भजता है, वह योगी मुझे परमश्रेष्ठ मान्य है।)

भगवान् ने उपर्युक्त आदेश से यह स्पष्ट कर दिया कि आराधना का फल मोक्ष पर्यन्त नष्ट नहीं होता। एक बार जब यह क्रम प्रारम्भ हो जाता है तो जन्म दर जन्म इसका स्तर ऊपर उठता ही जाएगा, और इसका अन्तिम लक्ष्य मोक्ष होगा। कभी-कभी हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि कोई मानव अनायास साधारण स्तर से बहुत ऊपर उठकर 'आध्यात्मिक शक्ति' की प्रत्यक्षानुभूति करने लगता है। ऐसी स्थिति में हमें समझ लेना चाहिए कि उसके पाप कर्म पूर्णरूप से नष्ट हो चुके हैं, और पूर्व जन्म के संचित शुभ कर्मों का कर्मफल मिलना प्रारम्भ हो गया है। ऐसी स्थिति अगर जवानी में ही हो जाए तो निश्चित रूप से यह उसका अन्तिम जन्म

होगा। आज्ञा चक्र से ऊपर की यात्रा का प्रारम्भ इसका स्पष्ट संकेत है।

१०८.

समन्वय किससे?

कलियुग के गुणधर्म के कारण संसार के सभी धर्मों के-शान्ति, प्रेम, सहयोग, अहिंसा, भ्रातृभाव, मानवता आदि के सिद्धान्त-जितने आज प्रभावहीन हुए हैं, अतीत में कभी नहीं हुए। विश्व के सभी धर्माचार्य शान्ति-शान्ति की रट जितनी तेज करते हैं, अशान्ति उतनी ही तेजी से फैल रही है। अतः अब विश्व के प्रबुद्ध लोगों को धर्मान्धता और धार्मिक कट्टरपन को तिलाजंली देकर शान्त दिल-दिमाग से मिल-बैठकर सोचना होगा, और इस प्रकार से जो मानवीय धर्म का स्वरुप प्रकट होकर विश्व के सामने आवेगा, मात्र वही विश्व शान्ति का रक्षक होगा।

विश्व भर के तथाकथित समन्वयवादी लोगों ने, धर्म और संस्कृति की आड़ में, विश्व में हिंसा, घृणा, द्वेष और शोषण ही फैलाया है। यह सत्य नहीं तो आज विश्व भर में धर्मान्धता और धार्मिक कट्टरपन के कारण जितना नरसंहार हो रहा है, उतना पहले कभी क्यों नहीं हुआ? संसार के सभी धर्मों की मान्यता है कि ईश्वर एक है और सम्पूर्ण विश्व के मानव उसी परमपिता परमेश्वर की संतानें हैं, फिर ईश्वर और धर्म के नाम पर विश्व में नरसंहार क्यों हो रहा है? आज विश्व की जो विस्फोटक स्थिति है, वह स्पष्ट संकेत दे रही है, कि यदि धर्म और जाति के नाम पर जो नरसंहार हो रहा है, नहीं रुका तो विश्व की कई संस्कृतियाँ खतरे में पड़ जाएंगी, और उनका अस्तित्व तक बचना कठिन हो जाएगा। विश्व भर की राजनिति के कर्णधार भरसक प्रयास तेज कर रहे हैं कि विश्व में शान्ति स्थापित हो, परन्तु ज्यों-ज्यों वे शान्ति का प्रयास तेज करते हैं, अशान्ति उससे चौगुनी बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति के चलते विश्व में शान्ति असम्भव है। घटनाएँ जिस तूफानी गति से मोड़ ले रही हैं, उसे ध्यान से देखें तो यह संभावना अधिक बलवती होती है कि यह अशान्ति अपनी चरम सीमा को कभी भी लांघ सकती है।

मुझे कई धार्मिक नेता कहते हैं कि मैं पूरब और पश्चिम में समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे उनकी बात सुनकर बहुत ही आश्चर्य होता है। सभी धर्म एक तरफ तो एक ही परमपिता की संतान होने की बात करते हैं, दूसरी तरफ समन्वय की; फिर समन्वय किससे, क्यों और कैसे? हमारा वैदिक दर्शन स्पष्ट कहता है- "सर्वं खल्विदं ब्रह्म"। ऐसे समन्वयवादी लोगों ने समन्वय की आड़ में विघटन ही किया है, अन्यथा संसार आज जिस विस्फोटक अशान्ति के दौर से गुजर रहा है, नहीं गुजरता।

धर्म में हिंसा का स्पष्ट अर्थ है, वह धर्म पतन की तरफ बढ़ रहा है। द्वेष, हिंसा, घृणा और भय पर आधारित कोई भी धर्म अपने पतन को रोक नहीं सकता है। ऐसे धर्म का प्रकाश जुगनू जैसा ही होता है। जितनी भी भविष्यवाणियाँ विश्व भर के भविष्यदृष्टाओं ने की हैं, उनको ध्यान से देखने से तो एक ही सर्वमान्य तथ्य प्रकट होता है कि कलियुग के आरम्भ होने के बाद से संसार में जितने भी धर्म प्रकट हुए हैं, २१ वीं सदी में उनका अस्तित्व ही मिट जावेगा। आज संसार में स्वार्थन्ध लोगों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि सच्चाई नजर ही नहीं आ रही है। भोले-भाले लोगों की भावनाओं को भड़काकर, एक धर्म के लोगों से दूसरे धर्म के लोगों को लड़ाकर, निर्दोष लोगों का शोषण किया जा रहा है। समन्वय की बातें करने वाले चतुर-चालाक लोग, समन्वय की आड़ में, धर्म के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हैं। विश्व में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नाम पर जो कुछ भी हो रहा है, अगर उसमें सच्चाई होती तो अब तक उसके परिणाम मिलने आरम्भ हो जाते। सच्चाई तो यह है कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आड़ में, एक दूसरे के घर में सेंध लगाने का प्रयास ही किया जा रहा है। अगर यह असत्य है तो सांस्कृतिक आदान-प्रदान विश्व में भाईचारे का मधुर सम्बंध स्थापित करने में असफल क्यों हो रहा है? कटु सत्य तो यह है कि इस समय सांस्कृतिक आदान-प्रदान, मात्र एक कूटनीति है।

मैं तो मानव मात्र में, जो एक ही शाश्वत-अविभाज्य सत्ता कार्य कर रही है, उसी की प्रत्याक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए विश्व में निकला हूँ। आज विश्व में जितने भी धर्म, जिस स्वरुप में चल रहे हैं, मैं उस संकीर्ण दायरे में कैद होने को तैयार नहीं हूँ। मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ मनुष्य शरीर है। मैं मात्र इसी ग्रंथ को पढ़ना सिखाता हूँ, अतः जब तक यह ग्रंथ संसार में रहेगा, तब तक मेरा मिशन चलता ही रहेगा।

मेरे रहने, न रहने से, इस मिशन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि आज भी मैं, हजारों शिष्यों को चेतन कर चुका हूँ। यह शक्ति, उनमें जो सबसे उपयुक्त होगा, उसके माध्यम से अपना कार्य सुचारु ढंग से निरन्तर चालू रखेगी। यह एक ऐसी शक्ति, सिद्ध नाथयोगियों ने प्रकट कर दी है, जिसे विश्व की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकेगी क्योंकि इसका उपयोग मात्र सृजन में ही हो सकता है विध्वंस में नहीं। इसलिए मैं बिना किसी प्रकार के झिझक के, हर धर्म और हर जाति के, लोगों को दीक्षा दे रहा हूँ। एक-एक व्यक्ति को दीक्षा देने से विश्व स्तर पर इस ज्ञान का प्रसार असंभव है, अतः मैं सामूहिक रूप से दीक्षा देता हूँ। जिस ज्ञान से हित-अहित दोनों हो सकते हैं, उसकी दीक्षा सोच समझ कर देनी पड़ती है। मैं जितना अधिक इस ज्ञान को

बाँटता हूँ, उतनी ही अधिक सामर्थ्य प्राप्त करता हूँ।

धार्मिक जगत् में दो प्रकार के लोग होते हैं-धर्मार्थी व रहस्यवादी। धर्मार्थी व्यक्ति पहले किसी धर्म संघ (सम्प्रदाय) में धार्मिक शिक्षा ग्रहण करता है, और तब उसका अभ्यास करता है। वह स्वयं के अनुभवों को अपने विश्वास का आधार नहीं बनाता है, परन्तु रहस्यवादी साधक सत्य का अन्वेषण आरम्भ करता है, पहले उसकी प्रत्यक्षानुभूति करता है फिर अपने मत को सूत्रबद्ध करता है। धर्म संघ दूसरों के अनुभवों को अपनाता है, परन्तु रहस्यवादी का अनुभव अपना ही होता है। धर्म संघ बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयास करता है, जबकि रहस्यवादी भीतर से बाहर आता है।

'अपराविद्या' तो पढ़ी-लिखी जा सकती है, परन्तु 'पराविद्या' अनिर्वाच्य विषय है। यह केवल प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय ही है। इस समय विश्व भर में धर्मार्थी लोगों का एक छत्र साम्राज्य है। हमारे देश में समय-समय पर रहस्यवादी संत प्रकट होते ही रहते हैं। श्री नानक देव जी, कबीरदास जी, रैदासजी, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक रहस्यवादी संत हो चुके हैं। मैं भी एक ऐसे ही रहस्यवादी संत का शिष्य हूँ।

मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्रीगंगाईनाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे। मेरे संत सद्गुरुदेव की असीम अहेतु की कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

स्वामी मुक्तानंद जी ने 'कुण्डलिनी जीवन का रहस्य' में गुरुपद प्राप्ति का विवरण देते हुए गीता के १३ वें अध्याय के १३ वें श्लोक का विवरण देते हुए कहा कि इसी परम पुरुष के प्रसन्न होकर आज्ञा देने तथा संत सद्गुरु के प्रसन्न होकर गुरुपद सौंपने पर ही साधक 'गुरु' बन सकता है, अन्यथा नहीं। स्वामी जी ने जिस रहस्य को प्रकट किया है, वह बात कभी पढ़ने-सुनने को नहीं मिली। इस रहस्य का ज्ञान होने के कारण ही मैं स्वामी जी को सच्चा संन्यासी मानता हूँ। मेरे में जो अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, वह मात्र स्वामी जी के उपर्युक्त विवरण के अनुसार ही आया है। मात्र उस नील पुरुष के प्रसन्न होने से मुझे यह सामर्थ्य प्राप्ति नहीं होती। नील पुरुष के प्रसन्न होने और मेरे सद्गुरुदेव के प्रसन्न होकर गुरुपद सौंपने से ही यह सामर्थ्य प्राप्त हुई है।

मैं, मेरे सद्गुरुदेव के आदेशानुसार सनातन धर्म का संदेश, सम्पूर्ण विश्व के सकारात्मक लोगों तक पहुँचाने निकला हूँ। मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बाँटने संसार में निकला हूँ। योगदर्शन, और दर्शनों की तरह किसी प्रकार का खण्डन-मण्डन नहीं करता। यह

तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है। यह तो मानव मात्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बतलाकर मोक्ष प्रदान करता है।

२६ नवम्बर २००९, कोटा, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
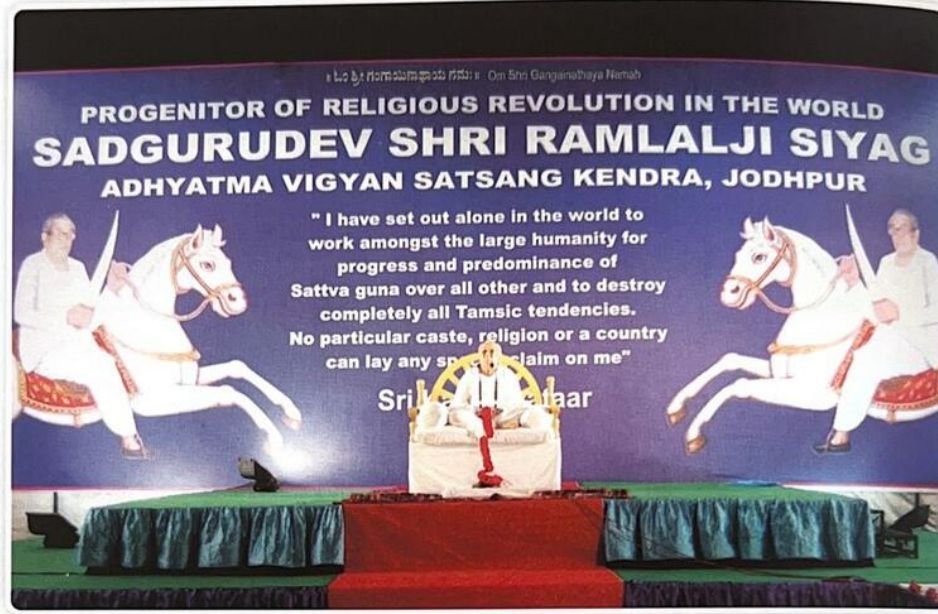
१४ जनवरी २०१०, बेंगलूरु, कर्नाटक- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२५ फरवरी २०१०, जयपुर, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२५ मार्च २०१०, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर,
शाखा-बाड़मेर में मूर्ति अनावरण करते हुए गुरुदेव।

२५ मार्च २०१०, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा-बाड़मेर में
शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

युग परिवर्तन

१०९.

युग परिवर्तन

०४ जुलाई १९९७

युग परिवर्तन का संबंध सम्पूर्ण मानव जाति के पूर्ण विकास से है। वैदिक दर्शन के अनुसार दसवें अवतार के अवतरित होकर अन्तर्धान होने के साथ ही कलियुग का अंत होकर, सत्युग प्रारम्भ हो जाएगा।

अवतारवाद का सिद्धान्त केवल वैदिक दर्शन अर्थात् हिन्दू दर्शन की देन है। वैदिक दर्शन के अनुसार अवतारवाद का संबंध मानव जाति के क्रमिक विकास से है। प्रत्येक अवतार के साथ मानव क्रमिक रूप से विकसित होता है। इस प्रकार दसवें अवतार के अवतरण के कारण सम्पूर्ण मानव-जाति पूर्णता को प्रात कर लेती है।

हिन्दू दशावतारों की शृंखला अपने आप में मानो क्रमिक विकास का रूपक है।

सर्वप्रथम मत्स्यावतार हुआ है, जिसके माध्यम से जल में जीवों की सृष्टि हुई।

फिर पृथ्वी व जल स्थल-जलचर, कच्छप का अवतरण हुआ।

तृतीय वराह अवतार के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई।

चौथा नृसिंह अवतार - पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है।

इसके बाद मनु, वामन, परशुराम, राम, और कृष्ण आदि अवतरित हुए, जो निरन्तर प्राणमय-राजसिक से सात्विक-मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने। इस प्रकार श्रीकृष्ण तक नौ अवतारों का अवतरण हो चुका है।

महर्षि श्री अरविन्द की घोषणा के अनुसार दसवाँ अवतार भारत की पुण्य भूमि पर २४ नवम्बर १९२६ को अवतरित हो चुका है। उस व्यक्ति ने ४२ वर्ष की उम्र में अर्थात् १९६८ में आध्यात्मिक चेतना का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया तथा अगले ५० वर्षों तक सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान-क्रान्ति ला देगा। इस प्रकार सन् २०१९ से सत्ययुग आरम्भ हो जाएगा।

युग परिवर्तन का मूल सिद्धान्त है, तामसिक वृत्तियों का संहार। इतिहास इसका साक्षी है कि तामसिक शक्ति मृत्यु स्वीकार कर लेती है, परन्तु परिवर्तन को स्वीकार नहीं करती। अतः युग परिवर्तन का स्पष्ट अर्थ है, घोर नरसंहार। उससे बचना असंभव है। इस युग का मानव उस भयंकर विनाश से बचने के जितने ही बौद्धिक प्रयास कर रहा है, वह उतना ही तेजी से उस विनाश की तरफ बढ़ रहा है; फिर भी कुछ नहीं समझ पा रहा है। २१वीं सदी का प्रथम दशक

विश्व के महाविनाश का समय है। इस काल में मानवजाति का जितना संहार होगा, उतना सृष्टि के प्रारम्भ काल से लेकर आज तक नहीं हुआ और न कभी होगा। इस महाविनाश के साथ ही युग परिवर्तन हो जावेगा। परन्तु प्रभु की माया का खेल देखो, मानव को कुछ भी आभास नहीं हो रहा है। मानवता की गिरावट की यह पराकाष्ठा है; मानवता में ऐसी गिरावट आज तक कभी देखने में नहीं आई।

११०.
युग परिवर्तन-०२

०६ मई २००३, मुम्बई

युग परिवर्तन, प्रकृति का अटल सिद्धांत है; इसके कारण पार्थिव चेतना में उत्थान और पतन अनादि काल से होते आ रहे हैं, और होते रहेंगे।

वैदिक धर्म के अनुसार चार युग की व्यवस्था है। इस वैदिक व्यवस्था परिवर्तन का प्रवाह ऊपर से नीचे की तरफ चलता है अर्थात् हर युग, अपने पतन के साथ समाप्त होता है। सत्य युग चतुष-पाद का धर्म था, त्रेता तीन का, द्वापर दो का और जिस युग में हम जी रहे हैं, उसे कलियुग कहा जाता है। इसमें धर्म का मात्र एक चरण बचा है।

यह एक चरण का युग बहुत छोटा होता है। इसलिए इसकी विशेषता है कि इस युग में मनुष्य क्षणभर ही प्रभु का ध्यान और नाम स्मरण करे तो वह तत्काल जीवन मुक्त हो जाता है। इसलिए इस युग की समाप्ति उत्थान के साथ होगी।

आज विश्व में कलियुग अपना जो रोद्र रूप दिखा रहा है, उससे इस भूमण्डल के सभी प्राणी डर से थर-थर काँप रहे हैं। इस युग के मानव की ऐसी वृत्ति हो गई है कि वह भयंकर कष्टों से घिरने पर ही भगवान् को याद करता है, आराम के समय में भूला रहता है। आज विभिन्न कारणों से सम्पूर्ण मानव जाति मृत्यु भय से थर-थर काँप रही है। अतः सम्पूर्ण मानव जाति एक स्वर में प्रभु से करुण पुकार कर रही है कि भू-मण्डल पर शीघ्र पधारकर मानव जाति के प्राणों की रक्षा करें। प्रभु दयालु हैं, और कलियुग की व्यवस्था के अनुसार, अगर क्षण भर ही प्रभु का ध्यान करें तो तत्काल जीवन मुक्त हो जाता है।

अतः आज का मानव युग परिवर्तन के सन्धि क्षणों में जी रहा हैं। युग परिवर्तन का स्पष्ट अर्थ होता है, तामसिक वृत्तियों का सम्पूर्ण विश्व से सफाया। यह कार्य विश्व में प्रारम्भ हो चुका है; अन्त के लिए अब लम्बा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा।

१११.

संसार का हर परिवर्तन पूर्व निश्चित है।

३१ मार्च १९८८

संसार की यह कहावत कि ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है, पूर्ण सत्य है। भगवान् श्री कृष्ण ने ११ वें अध्याय के ३२ से ३४ श्लोकों में स्पष्टकहा है-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥११:३२

(मैं लोकों का नाश करने वाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। जो प्रतिपक्षियों की सेना में स्थित हुए योद्धा लोग हैं, वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे।)

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥११:३३

(इससे तू खड़ा हो और यश को प्राप्तकर, शत्रुओं को जीतकर धन-धान्य से सम्पन्न राज्य को भोग। यह सब (शूरवीर) पहले से ही मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन! केवल (तू) निमित्तमात्र ही हो जा।)

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथाऽन्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥११:३४

(द्रोणाचार्य और भीष्मपितामह तथा जयद्रथ और कर्ण तथा और भी बहुत से मेरे द्वारा मारे हुए शूरवीर योद्धाओं को तू मार, भय मतकर, निःसन्देह (तू) युद्ध में वैरियों को जीतेगा, इसलिए युद्धकर।)

भगवान् के उपर्युक्त उपदेश से स्पष्ट होता है कि यह सारा संसार एक ही परमसत्ता का विस्तृत स्वरूप है। जीव, संसार के हर कार्य में निमित मात्र है। ईश्वर की त्रिगुणमयी माया जीवों को भरमाती हुई, अपनी इच्छा से चला रही है। जीव, अन्धकारवश, झूठे अहम् में आकर, जबरदस्ती कर्ता बन बैठता है और इस प्रकार तामसिक वृत्तियों के चक्कर में फँसकर, जन्म-मरण के जाल में फँसा हुआ, दुःख भोग रहा है। स्थिति को और स्पष्ट करते हुए भगवान् ने १८ वें अध्याय के ६१ वें श्लोक में कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर, अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

ऐसी स्थिति में भी जीव अपने अन्दर विराजमान, उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार के अभाव में, जन्म-मरण के चक्कर में फँसकर भयंकर दुःख भोग रहा है। इस युग में सभी आराधनाएँ बहिर्मुखी हैं, ऐसी स्थिति में ईश्वर का दर्शन और प्रत्यक्षानुभूति असम्भव है।

तोते की तरह धार्मिक ग्रन्थों को रटने से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। जब तक जीव, तत्त्व से उस परमसत्ता को नहीं पहचानता है, कुछ भी लाभ होना असम्भव है। गीता रूपी ज्ञान के अमृत का भी पान करने की स्थिति में जीव आज नहीं है। ऐसी स्थिति स्पष्ट करती है कि संसार पूर्ण रूप से तामसिक वृत्तियों से घिर चुका है। सात्त्विक वृत्तियों का लोप प्रायः हो जाना स्पष्टसंकेत है कि संसार में आमूलचूल परिवर्तन होने वाला है।

यह स्थिति स्पष्ट करती है कि अब संसार से तामसिक वृत्तियों का अन्त होने वाला है। जितने आध्यात्मिक गुरु इस समय संसार में है, पहले कभी देखने-सुनने में नहीं आये, परन्तु उनके रहते हुए भी संसार में अन्धकार निरन्तर ठोस होकर जम रहा है। ऐसी स्थिति में संसार का मानव इन गुरुओं पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाये बिना नहीं रह सकता। बेचारे सभी धर्मगुरु, युग के गुण धर्म और काल की गति के प्रवाह में ऐसे फँसे हुए हैं कि वे अपने आपको बचाने में असमर्थ हैं। डूबते हुए व्यक्ति की तरह उल्टे-सीधे हाथ-पाँव मार रहे हैं। इतिहास बताता है कि संसार में जब-जब भी ऐसी स्थिति पैदा हुई है, उस परमसत्ता ने अवतरित होकर जीवों का कल्याण किया है।

इस बारे में भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के ७ वें और ८ वें श्लोक में स्पष्ट घोषणा की है -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

११२.

परिवर्तन का समय

०१ जनवरी १९८८

संसार में जो अशान्ति, द्वेष, हिंसा, घृणा आदि तामसिक प्रवृत्तियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला है, उसके कई कारण हैं। उनमें से एक कारण नारी जाति का शोषण, अपमान और तिरस्कार है। आज का मानव तामसिक वृत्तियों से भयंकर घिरने के कारण, अपना विवेक पूर्ण रूप से खो चुका है।

भौतिक विज्ञान की प्रगति ने इस युग के मानव को इतना भ्रमित कर डाला है कि वह अपनी उत्पत्ति के कारण की भी घोर उपेक्षा कर रहा है। अपनी जननी के प्रति अपने कर्तव्य को पूर्ण रूप से भूल चुका है। संसार का मानव जब तक जगत् जननी का शोषण, अपमान और तिरस्कार खत्म नहीं करता है, संसार में शान्ति की कल्पना करना ही भूल है।

मात्र सनातन धर्म ही इस घोर अन्धकार को प्रकाश में बदल सकता है और कोई रास्ता नहीं है। मैंने आज से उस प्रकाश को संसार में फैलाने का निर्णय कर लिया है। सफलता, असफलता और विरोध की कोई चिन्ता न करते हुए, जीवन भर मैं इस पावन कार्य में लगा रहना चाहता हूँ। मैं जिस शक्ति के आदेश से इस पवित्र कार्य में लग रहा हूँ, उसका सही चित्रण संत कबीरदास के इस दोहे से होता है-

कबिरा 'धारा' अगम की, सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा, स्वामी संग लगाय।।

मात्र उपर्युक्त आदेश के कारण चल पड़ा हूँ। संसार का मानव चाहे कुछ भी समझे, मुझे उस सर्वशक्तिमान् ने स्पष्ट बता दिया है कि सन् १९९३ तक मैं अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लूँगा।

११३.

संसार की पूर्ण व्यवस्था, पूर्व निश्चित व्यवस्था के अनुसार होती है

०९ अगस्त १९८८

संसार भर के प्राणी जो कुछ करते आ रहे हैं और आगे किसको क्या करना है- यह सब पूर्व निश्चित है। त्रिगुणमयी माया से भ्रमित हुआ मानव, स्वयं को कर्ता मानकर जन्म-मरण के चक्कर में फँसा हुआ है। गीता के तीसरे अध्याय के २७वें श्लोक में भगवान् ने स्पष्ट कहा है-

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

अहंकारविमूढात्मा कर्ताऽहमिति मन्यते।। ३:२७

(हे अर्जुन! वास्तव में संपूर्ण कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा किये हुए हैं तो भी अहंकार से मोहित हुए अन्तः करणवाला पुरुष, मैं कर्ता हूँ, ऐसे मान लेता है।)

इसे और स्पष्ट करते हुए भगवान् ने गीता के १८ वें अध्याय के ६१ वें श्लोक में कहा है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। १८:६१

(हे अर्जुन! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए, संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूत प्राणियों के हृदय में स्थित है।)

इस सम्बन्ध में गीता के ११वें अध्याय के ३३वें और ३४वें श्लोक में भगवान् ने कहा है-

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।

मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।।११:३३

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथाऽन्यानपि योधवीरान्।

मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।। ११:३४

(इससे तू खड़ा हो और यश को प्राप्तकर तथा शत्रुओं को जीतकर धन-धान्य से सम्पन्न

राज्य को भोग। यह सब शूरवीर पहले से ही मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन्! तू तो केवल निमित्तमात्र ही हो जा।

द्रोणाचार्य और भीष्मपितामह तथा जयद्रथ और कर्ण तथा और भी बहुत से, मेरे द्वारा मारे हुए शूरवीर योद्धाओं को तू मार और भय मतकर, निःसंन्देह, तू युद्ध में वैरियों को जीतेगा, इसलिए युद्ध कर।)

ईश्वर का अवतार तामसिक सत्ता के विनाश के लिए ही होता है। तीसरे विश्व युद्ध में दो तिहाई जनसंख्या खत्म होने का स्पष्ट अर्थ है कि श्री अरविन्द की घोषणा के अनुसार २४ नवम्बर १९२६ को पृथ्वी पर श्रीकृष्ण का अवतरण हो चुका है।

११४.

युग परिवर्तन का अर्थ संसार के प्राणी मात्र के परिवर्तन से है।

१९ जून १९८८

युग परिवर्तन का सम्बन्ध सम्पूर्ण संसार से है। पृथ्वी के किसी भाग विशेष के चेतन होने से इसका सम्बन्ध नहीं है। ईश्वरीय सत्ता के 'अवतरण' के बिना युग परिवर्तन असम्भव है। आदिकाल से ऐसा होता चला आया है। मैं देख रहा हूँ कि मेरे जीवन के प्रारम्भिक काल से ही तामसिक शक्तियाँ, मुझ पर निरन्तर प्रहार करती चली आ रही हैं। प्रारम्भ में तो भयभीत करके रास्ते से हटाने का प्रयास किया। इसमें जब उन्हें सफलता नहीं मिली तो प्रलोभन आदि के रंगीले चित्र दिखाकर आकर्षित करने का प्रयास करती रहीं। जवानी के काल में यह हथकण्डा अपनाया और बचपन में भयभीत करने का। जब ये दोनों हथियार काम नहीं आये तो आजकल 'हितैषी का स्वांग' रचकर गुमराह करने का प्रयास करने में लगी हैं।

मैं देख रहा हूँ कि उनका यह हथियार भी असफल हो रहा है। उनका अगला कदम मेरे विरोध में प्रचार करने का होगा, मुझे इसका पूर्ण ज्ञान है। यह आखिरी हथियार मेरे लिए सहायक सिद्ध होगा क्योंकि इनके विरोध से मेरे प्रचार की गति बहुत तेज हो जायेगी। इससे ये तामसिक शक्तियाँ अपना संतुलन खो देंगी। इनके संतुलन खोने का अर्थ है, इनका अन्त। यह आगे होने वाली घटनाओं का चित्र है, जो कुछ होना है, सब अनिवार्य है। इसमें रत्ति भर का भी अन्तर नहीं आ सकता। अन्धेरे-उजाले का यह संघर्ष आदिकाल से चला आ रहा है। मेरा कार्यक्षेत्र सार्वभौम है। जितना अन्धकार भारत में हैं, उतना कहीं नहीं है। अगर मेरा कार्यक्षेत्र भारत तक सीमित होता तो कठिनाइयाँ अधिक होतीं, क्योंकि तामसिक शक्तियों की शक्ति सीमित होती है, जबकि सात्विक शक्तियों की शक्ति असीमित। इस संबंध में श्रीमां ने स्पष्ट कहा है- "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गईं हैं और उनके हल होने पर, सारे संसार का भार हल्का हो जाएगा।"

भारत में सात्विकता की आड़ में असंख्य तामसिक शक्तियाँ, मानव को भ्रमित करके लूट रहीं हैं। मुझे अच्छी प्रकार बता दिया गया है कि इन तामसिक शक्तियों की भी ताकत क्षीण हो चुकी है। मामूली सा विरोध करके ये परास्त हो जाएंगी। परन्तु जिन चतुर लोगों ने धर्म को व्यवसाय के रूप में अपना रखा है, वे ही अधिक विरोध करेंगे। क्योंकि मेरा कार्य क्षेत्र

सार्वभौम है, इसलिए इन धर्म के व्यवसाइयों की पोल संसार के सामने खुल जाएगी। ऐसी आराधना से लोग पूर्ण रूप से विमुख हो चुके हैं, जो प्रत्यक्ष परिणाम न दे।

इस युग का मानव अब अगले जन्म तक इन्तजार करने में विश्वास नहीं रखता। वह तो चाहता है कि जो कुछ भी वह करता है, उसके बारे में उसे प्रत्यक्षानुभूति होनी चाहिए कि उसका कुछ न कुछ परिणाम निकल रहा है। इस युग में प्रायः सभी धर्मों की आराधना बहिर्मुखी है तथा केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित है- जिसका परिणाम निकलना असम्भव है। थोड़ी बहुत आराधनाएँ अन्तर्मुखी हैं, परन्तु उनकी हद माया के क्षेत्र तक यानि कि आज्ञाचक्र के नीचे तक ही है। हमारे धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा है कि मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक माया का क्षेत्र है। इससे भौतिक लाभ तो मिल सकता है, परन्तु आध्यात्मिक लाभ मिलना असम्भव है।

आज्ञाचक्र का भेदन करके ही अध्यात्म जगत् में प्रवेश किया जा सकता है। गीता के ८वें अध्याय के १६वें श्लोक में भगवान् ने स्पष्ट कहा है -

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। ८:१६

(हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर अन्य सभी लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्ती पुत्र! मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता।)

मेरे से सम्बन्धित लोगों को प्रत्यक्ष परिणाम मिल रहे हैं, क्योंकि यह परमसत्ता की शक्ति का ही प्रभाव है, जो कि सार्वभौम सत्ता है। अतः इस पर किसी धर्म विशेष या जाति विशेष का कोई एकमात्र अधिकार नहीं है। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि यह शक्ति संसार के मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रकट हो रही है, अतः इसका प्रसार विश्व स्तर पर होगा। हाँ, इसका केन्द्र तो निश्चित रूप से भारत ही रहेगा।

११५.

युग परिवर्तन अनिवार्य है।

२१ फरवरी १९८८

कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। संसार की हर वस्तु परिवर्तनशील है। शक्ति संतुलन ही शान्ति का द्योतक है। असंतुलन ही अशान्ति और दुःखों का कारण है। मानव जाति में आज जो अशान्ति नजर आ रही है, वह असंतुलन का ही कारण है। आज तो स्थिति यह है कि तामसिकता का पलड़ा बहुत भारी है।

संसार भर की राज सत्ता पर, वह शक्ति निरंकुश होकर एक छत्र शासन कर रही है। हम देख रहे हैं कि हमारे देश के सत्ताधारी वर्ग इसी प्रकार के तांत्रिकों का आशीर्वाद प्राप्त करने को भटकते रहते हैं। इस प्रकार तामसिकता के प्रभाव में उन्हें जो करना चाहिए, वही वे बेचारे करने को विवश हैं।

संसार में जब तक यह वर्ग सात्विक सत्ता के दिशा निर्देश से काम नहीं करने लगेंगे, तब तक शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। तामसिक शक्तियाँ, चोर शक्तियाँ हैं। वे हमेशा नकली संत का भेष बनाकर धोखा देती हैं। सारी गड़बड़ ईश्वर की आड़ लेकर चल रही है। एक साधारण व्यक्ति भी कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि करके, संसार को मूर्ख बनाकर एक सिद्ध पुरुष के रूप में, ख्याति प्राप्त करके, पूजा जा रहा है।

तामसिकता का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण लोगों की बुद्धि ऐसी भ्रमित हो रखी है कि वे भले बुरे की पहचान ही नहीं कर सकते। क्योंकि कुए में ही भांग पड़ी हुई है, अतः जिधर देखो, इन्ही के झुण्ड नजर आते हैं। अब ऐसी तामसिक शक्तियों का अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। मैं ऐसे कई सज्जन लोगों से मिला हूँ, जब वे किसी संत के चमत्कारों की प्रशंसा करके उसके गुणों का बखान करते हैं तो मुझे उन सीधे-साधे और ईश्वर के प्रति जिज्ञासु लोगों पर बहुत तरस आता है। मैं चुपचाप सुनकर हँस देता हूँ। सभी घटी हुई घटना को इस प्रकार बताते हैं कि बेचारे भोले-भाले लोग उनको अच्छा संत समझकर, अच्छी भेंट-पूजा करते हैं।

कर्ण पिशाचिनी अपने सीमित दायरे के अन्दर साधारण व्यक्ति के मन की बात जानकर, उस व्यक्ति को बताने में सक्षम होती है जिसके अधीन वह कार्य करती है। अब वह तथाकथित संत जितना अधिक चतुर होगा, उतना ही भौतिक लाभ उठाते हुए, पर्दे के पीछे

असलियत को छिपाये रखेगा। आध्यात्मिकता के नाम पर, आज इसी शक्ति का बोलबाला है। अन्धों में काना ही राजा होता है, ठीक वही हालत आज संसार में आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है।

धर्म प्रत्यक्षानुभूति का विषय है। इसमें उपदेश और अन्य भौतिक चमत्कार होते ही नहीं। जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अन्धकार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, और किसी को कुछ भी वस्तु दिखाने की जरूरत नहीं होती, हर व्यक्ति स्वतः ही स्वयं हर वस्तु को देखने में सक्षम हो जाता है; उस परमसत्ता से जुड़े हुए संत के साथ क्षणभर ही सत्संग करने से मनुष्य के अन्दर ऐसी रोशनी प्रकट हो जाती है कि उसे बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। उसका पथप्रदर्शन स्वयं सात्विक शक्तियाँ करने लगती हैं। जैसे प्रकाश होने पर अंधेरा भाग जाता है, ठीक वैसे ही उस व्यक्ति में सात्विक शक्तियों के चेतन होते ही तामसिक शक्तियाँ कोसों दूर भाग जाती हैं।

ऐसी स्थिति में जब उसे स्वयं सब दिखने लगता है तो फिर उपदेश किस काम का? उपदेश तो मात्र झूठी सांत्वना का नाम है। उपदेश तो क्षणिक लाभ का प्रलोभन मात्र है। मैं देखता हूँ, संसार के अरबों लोग उपदेश सुन चुके हैं। अगर उससे कुछ लाभ होता तो आज संसार की ऐसी बुरी हालत कभी नहीं होती।

इस युग की भौतिक सत्ता पर पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का अधिकार है। तामसिक शक्तियाँ अपने गुणधर्म के ही अनुसार उसका उपयोग कर रही हैं। यही कारण है कि भौतिक विज्ञान, प्राणियों के संहार के लिए काम में लिया जा रहा है। अगर संसार की राज सत्ता पर, सात्विक शक्तियों का प्रभाव हो जाए तो स्थिति बिलकुल विपरीत हो जाएगी।

इस समय तो 'बन्दर के हाथ में उस्तरा' आने वाली स्थिति है। तामसिक शक्तियों ने भौतिक और आध्यात्मिक जगत् के लोगों के बीच में ऐसी झूठी काल्पनिक लक्ष्मण रेखा खींच दी है कि एक-दूसरे के क्षेत्र दो भागों में बाँट दिये हैं।

संन्यासी लोग कहते हैं कि राज सत्ता को उनके क्षेत्र में बिलकुल हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। दूसरी तरफ, राज सत्ता के लोग खुला आरोप लगा रहे हैं कि धर्मगुरु राज सत्ता को प्रभावित करने के लिए धर्म का दुरुपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार इन तामसिक शक्तियों ने दोनों वर्गों को अपने प्रभाव में लेकर, इतना भयंकर संघर्ष प्रारम्भ करवा दिया है कि किसी को समझने का अवसर ही नहीं देती है। तामसिक शक्तियों ने इस प्रकार संसार के जीवों को कष्ट देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सारे संसार में जो ताण्डव नृत्य तामसिक शक्तियाँ करने लगी हैं, उसको देखने से ऐसा लगता है कि अब इनका अन्त बहुत निकट आ चुका है। हर कार्य की अति उसकी आखिरी सीमा होती है। श्री अरविन्द ने कहा है, "जब तक संसार की भौतिक सत्ता पर आध्यात्मिक सत्ता का शासन नहीं होगा, शान्ति असम्भव है।" इस समय संसार के तथाकथित धर्माचार्यों और संतों ने तामसिक शक्तियों के प्रभाव के कारण पलायन वादी रुख अपना रखा है, वह बिलकुल गलत है। संत और धर्मगुरु मानव मात्र का दुःख दूर करने के लिए भेजे जाते हैं। संसार से दूर भागने का अर्थ है वह तामसिक शक्तियों से या तो भयभीत हैं, या उनके इतने अधीन हो चुके हैं कि उनका हर आदेश मानकर वे ऐसा कर रहे हैं।

सत्युग में प्राणी मात्र का सीधा सम्पर्क उस परमसत्ता से होता था; ऐसी स्थिति में सभी संत थे। युग के परिवर्तन के साथ-साथ, ज्यों-ज्यों जीव उस परमसत्ता से दूर हटता गया, संतों ने प्रकट होकर लोगों का पथ प्रदर्शन किया; त्रेता और द्वापर में हमें ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं। परन्तु धीरे-धीरे तामसिकता का शिकंजा मजबूत होता चला गया और आज ऐसा समय आ गया है कि एक मात्र उन्हीं शक्तियों का साम्राज्य है।

तामसिकता की अति हो चुकी है। यही कारण है कि इनका अन्त होने वाला है। संसार के कई आध्यात्मिक संत ऐसी भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं। पिछले कुछ समय से तो हमारे देश के सत्ता पक्ष के लोगों ने भी ऐसी बातें करनी प्रारम्भ कर दी हैं, जिसे सुनकर अचम्भा होता है। २१ वीं सदी के भारत की तस्वीर, जब सत्ता पक्ष दिखाता है तो तामसिक लोग इसका मजाक उड़ाते हैं। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा है कि इस परमसत्ता ने कैसे सत्ता पक्ष से सच्चाई उगलवानी प्रारम्भ कर दी है!

यह कटुसत्य है कि उस शक्ति का सूर्य उदय होने ही वाला है। सूर्योदय का आभास काफी पहले होने लगता है। मनुष्य ही नहीं, प्राणीमात्र के अन्दर से आलस्य समाप्त होकर, एक नई चेतना का संचार होने लगता है और सूर्योदय के साथ ही सभी प्राणी सृजन में जुट जाते हैं।

समय की दूरी केवल भौतिक जगत् को प्रभावित करती है; अध्यात्म जगत् में, वह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इतने लम्बे समय में भौतिक जगत् में जो उन्नति हुई, अध्यात्म सत्ता को उसे अपने अधीन करने में कुछ भी समय नहीं लगेगा। श्री अरविन्द जैसे संत उसे बहुत पहले देख चुके थे। यही कारण है कि २४ नवम्बर १९२६ को भगवान् श्री कृष्ण के अवतरण की स्पष्ट घोषणा, उन्होंने कर दी। अपने क्रमिक विकास के साथ शीघ्र ही वह परमसत्ता संसार में अपना प्रकाश फैलाने ही वाली है।

११६.

अमेरिका को 'फोबिया' रोग हो गया है।

(फोबिया का वायरस और उसका उपचार)

४ मई २००३, मुम्बई

'फोबिया' एक ऐसा रोग है, जिसका उपचार भौतिक विज्ञान अभी तक बिलकुल भी नहीं ढूँढसका है। इसके कारण मनुष्य को अकारण भय लगता है। मेरे एक शिष्य को यह रोग हो गया था। २५-२६ साल के एक लड़के को बीकानेर में यह रोग ७-८ साल से परेशान कर रहा था। मेरे एक शिष्य के घर पर उसने केवल मेरी तस्वीर का, अपने आज्ञाचक्र पर ध्यान किया। २-३ दिन में ही वह उस भयंकर असाध्य रोग से पूर्ण रूप से मुक्त हो गया।

इसी तरह श्री मदन गोलेच्छा नामक तेरापंथी जैनी भी जोधपुर में, मुझसे दीक्षा लेने के बाद, इस रोग से पूर्ण रूप से मुक्त हो गया। यह राजस्थान के बाड़मेर जिले का रहने वाला है और अहमदाबाद में रेडीमेड गारमेन्ट बनाता है। इसी तरह जयपुर युनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर मेरे पास आए और कहा, "मेरी राशि में मार्केश की दशा लग गई है, फलां दिन मर जाऊँगा।" मैंने कहा- एक महीने बाद तक के जीवन की गारंटी कौन देता है? इस बात को एक साल हो गया, अभी भी वह जिन्दा है।

एड्स जैसे असाध्य रोग में भी, मेरी तस्वीर का आज्ञाचक्र पर ध्यान करने से बहुत सुधार आ रहा है। पूर्ण स्वस्थ तो अभी तक दीक्षा लेने के बाद ही हुए हैं। अगर केवल मेरी तस्वीर का ध्यान करने से एड्स जैसे रोग से मानव जाति पूर्ण रूप से मुक्त हो जाती है तो इस रोग का वायरस सम्पूर्ण विश्व में खत्म हो जाएगा।

अभी तक सम्पूर्ण मानव जाति, आधि-दैहिक तथा आधि-भौतिक नामक दो वृत्तियों के कारण कष्ट भोग रही थी। इन वृत्तियों के कारण, सम्पूर्ण भू-मण्डल पर विभिन्न प्रकार के रोगों से मानव जाति, भयंकर कष्ट भोग रही थी। सन १९९१ से, मानव आधि-दैविक कष्टों से ग्रसित हो गया जिसका फल ११ सितम्बर २००१ के हादसे के रूप में विश्व में प्रकट हुआ। आधि-दैविक कष्ट को विज्ञान की भाषा में वायरस रोग कह सकते हैं। पहले दो तत्त्वों से मानव-जाति जो कष्ट भोग रही थी, उसका तो उपचार करने में भौतिक विज्ञान किसी हद तक सफल हो रहा था परन्तु वायरस रोगों का इलाज करने की सामर्थ्य, अभी विज्ञान के लोगों में नहीं है।

इस वृत्ति से पैदा होने वाले रोगों ने विश्व को हिलाकर रख दिया है। मध्य-पूर्व (मिडल

ईस्ट) के वायरस ने सम्पूर्ण विश्व में खून की नदियाँ बहानी प्रारम्भ कर दी हैं। यह वायरस इतना शक्तिशाली है कि यह मौत तक से भयभीत नहीं होता। इसलिए सम्पूर्ण विश्व इसके भय से थर-थर काँप रहा है, क्योंकि मरने से सम्पूर्ण मानव जाति भयभीत है।

किसी जाति, धर्म या देश पर अचानक एक ऐसा कष्ट आ पड़े , जिसे वह जाति, धर्म या देश सहन नहीं कर सके तो उसका सन्तुलन पूर्ण रूप से बिगड़ जाता है। इसे वैज्ञानिक भाषा में 'वायरस डिजीज' (वायरस का रोग) कहा जा सकता है। इससे उस देश, धर्म और जाति के लोगों को अकारण मृत्यु भय लगने लगता है। यह भय उन्हें २४ घण्टे लगातार बना रहता है, जिसके कारण वह मानसिक व शारीरिक रोगों से बुरी तरह ग्रस्त हो जाते हैं।

मध्यपूर्व में पैदा हुए वायरस से अमेरिका जैसा विश्व का सर्वशक्तिमान देश भी थर-थर काँप रहा है तथा अपना सन्तुलन खो बैठा है। विश्व शांति के लिए अमेरिका को मृत्यु भय से शीघ्र ही पूर्ण मुक्ति दिलाना जरूरी है।

'अहिंसापरमोधर्मः' के सिद्धान्त पर आधारित वैदिक धर्म ही यह कार्य कर सकता है। अतः अब वेदान्तियों का यह प्रथम कर्तव्य है कि अमेरिका को शीघ्रातिशीघ्र, इस भय से मुक्त करावें । तभी विश्व में पूर्ण शांति संभव होगी। भारत में 'फोबिया' के वायरस पर काबू करने वाला 'वायरस' सक्रिय हो चुका है। फोबिया वायरस से उबरने के लिए अमेरिका को पुनः अवतारों की भूमि, भारत की शरण में आना ही होगा।

११७.

उत्थान और पतन प्रकृति का अटल नियम है।

२८ मार्च १९८८

कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। यही कारण है कि संसार की हर वस्तु में, क्षण-क्षण में परिवर्तन हो रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के पाँचवे श्लोक में अर्जुन से स्पष्टकहा है-

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।। ४:५

(हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं। हे परंतप! उन सबको तू नहीं जानता है, मैं जानता हूँ।)

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।। ४:६

(मैं अविनाशी स्वरूप अजन्मा होने पर भी, सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी, अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूँ।)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्।। ४:७

(हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ।)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। ४:८

(साधु पुरुषों का उद्धार करने और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।)

उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट होता है कि सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की आवृत्ति अनादि काल से चली आ रही है। बहुत बार हिरण्यकश्यप, रावण और कंस आदि जन्म चुके हैं और बहुत बार ईश्वर अवतरित हो चुके हैं। यह क्रम अनादिकाल से निरन्तर चला आ रहा है।

इस प्रकार चारों युगों की आवृत्ति बहुत बार हो चुकी है।

भगवान् श्रीकृष्ण के यह कहने का कि मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, स्पष्ट अर्थ निकलता है कि ऐसे महाभारत युद्ध बहुत बार हो चुके हैं। इससे महर्षि श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित होती है कि - "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था।"

हर युग के अंत में जब धर्म का रूप विकृत हो जाता है और संसार अंधकार से ढक जाता है तो वह परमसत्ता स्वयं प्रकट होकर, संसार से तामसिक वृत्तियों का नाश करके, अपनी सात्त्विक सत्ता स्थापित करके, पुनः अपने लोक में प्रविष्ट हो जाती है। यह क्रम संसार में निरन्तर चलता रहेगा। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है कि "श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं, वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

इस युग के सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों को अलग-अलग बाँट रखा है। एक कृत्रिम लक्ष्मण रेखा द्वारा दो भागों में बाँट दिया। एक क्षेत्र का दूसरे में हस्तक्षेप पूर्ण रूप से वर्जित कर रखा है। भौतिक विज्ञान के जनक, अध्यात्म विज्ञान पर ऐसे वर्ग ने अपना अधिकार स्थापित कर रखा है, जो कि इसका कुछ भी ज्ञान नहीं रखता। इस अनधिकृत अतिक्रमण ने ही संसार को गहन अँधकार में डाल रखा है। इस युग में भौतिक रूप से पूर्ण विकसित देशों में भी ऐसे तथाकथित धर्मगुरुओं का साम्राज्य है।

धन के बदले में, हर पाप से मुक्ति प्राप्त करने के प्रमाण पत्र तक दिये जा रहे हैं। इस प्रकार संसार भर के साधु पुरुष भयंकर कष्टमें फँस चुके हैं। ऐसा लगता है, भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस समय अपने प्रकट होने का - 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।' कहकर बताया है, वह बहुत निकट है। संसार में जो नर संहार और भयंकर रूप से तामसिक वृत्तियों का एक छत्र शासन हो चला है, स्पष्ट करता है कि वह परमसत्ता प्रकट होने ही वाली है। इस सम्बन्ध में संसार के अनेक संत भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं।

यीशु मसीह ने भी इस सदी के अन्त तक उस सत्य की आत्मा के प्रकट होने की बात कही है। यीशु ने कहा था, "मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।"
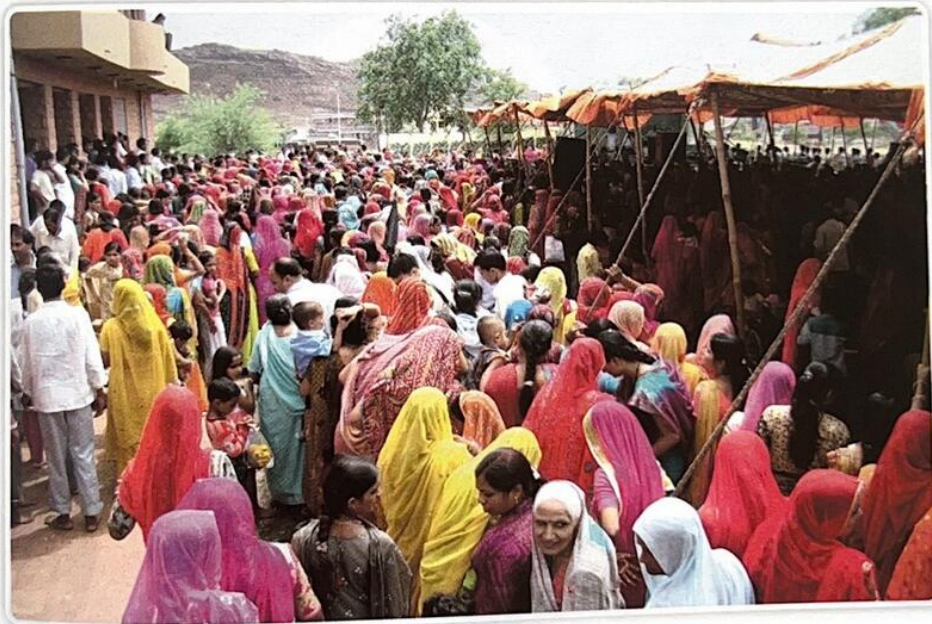
२५ जुलाई २०१०, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
गुरुपूर्णिमा महोत्सव।
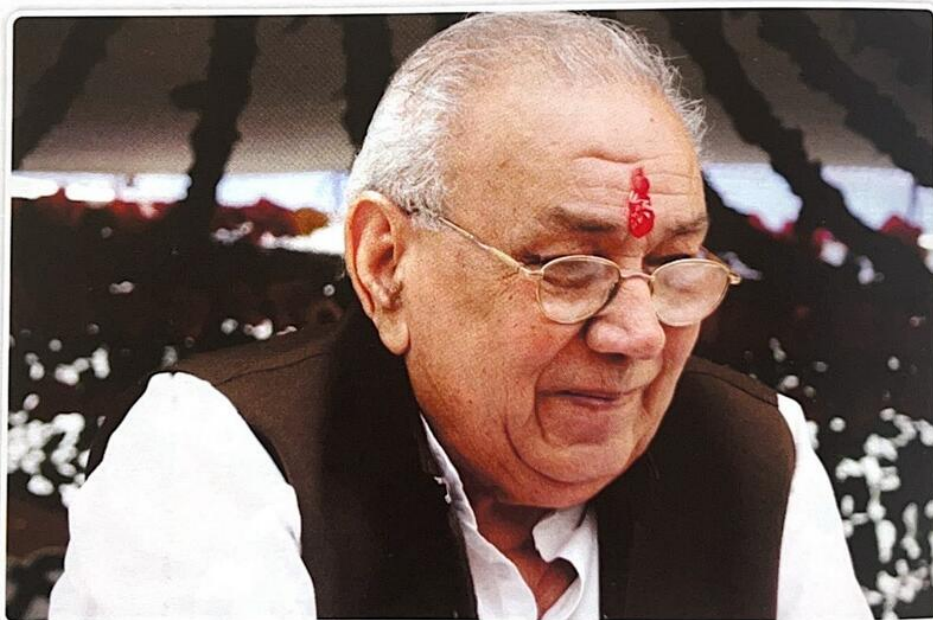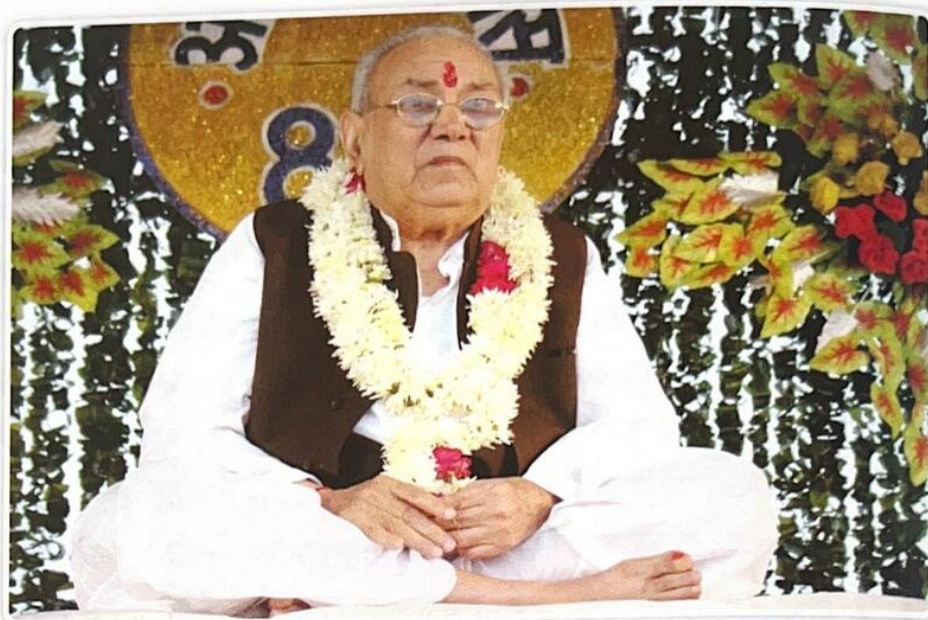
२४ नवम्बर २०१०, कोटा, राजस्थान- अवतरण दिवस समारोह।

२४ मार्च २०११, छतरपुर, नई दिल्ली- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।
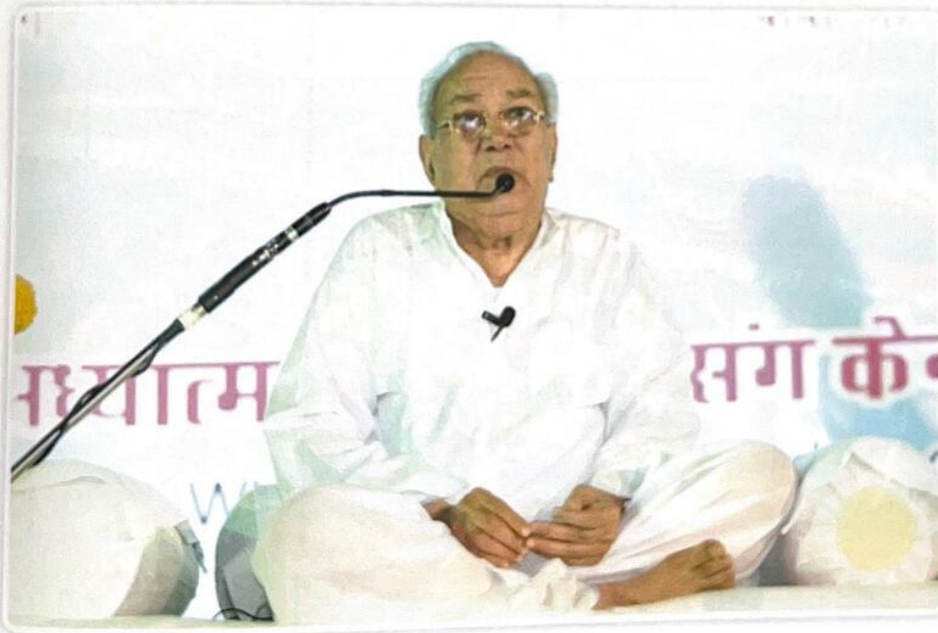
१४ अप्रेल २०११, अहमदाबाद, गुजरात- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

१५ जुलाई २०११, जोधपुर, राजस्थान- गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

प्रेस विज्ञप्तियाँ एवं पत्राचार

११८.

योग द्वारा सभी रोगों व नशों से मुक्ति

(१४ नवम्बर १९९४, जोधपुर)

भारतीय दर्शन में योग की महिमा को पढ़-सुनकर, असंख्य योगाचार्य बन बैठे। आज संसार में लाखों ध्यान और योग के केन्द्र चलाये जा रहे हैं। उनमें योग के नाम से जो शारीरिक कसरत करवाई जा रही है, उससे भारतीय योगदर्शन में वर्णित योग का कोई सम्बन्ध नहीं है। योग साधना के बारे में महायोगी श्री गोरखनाथ जी ने कहा है-

द्विजसेवितशाखस्य श्रुतिकलपतरोः फलम्।

शमनं भवतापस्य योगं भजत सत्तमाः।।

'वेद कल्पतरु है। जिस तरह कल्पतरु की शाखाएँ पक्षियों के आश्रय स्थल हैं, ठीक इसी तरह द्विजों द्वारा वेद की शाखाओं, प्रतिशाखाओं का परिशीलन किया जाता है। वेदरूपी-कल्पतरु का अमरफल 'योग' है। हे सत्पुरुषों! इसका सेवन करो। यह (योग) संसार के त्रिविध तापों (आधि-दैहिक, आधि-भौतिक एवं आधि-दैविक) का शमन(नाश) कर देता है।'

आज संसार में योग का स्वरूप केवल शारीरिक कसरत मात्र रह गया है, जबकि यह तो योग का एक छोटा सा हिस्सा है, और वह भी आन्तरिक चेतन शक्ति कुण्डलिनी द्वारा संचालित होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग संस्कार होते हैं। बाहर का कोई भी व्यक्ति नहीं जान सकता कि साधक को किस प्रकार की यौगिक क्रियाओं की आवश्यकता है, परन्तु उस जगत् जननी कुण्डलिनी को सम्पूर्ण ज्ञान होता है। अतः वह साधक को वही यौगिक क्रियाएँ करवाती है, जिनकी साधक को आवश्यकता है।

आज मोटे तौर से संसार में दो प्रकार के योग प्रचलित हैं- (१) हठयोग (२) ध्यान योग अर्थात् राजयोग। पतंजलि ऋषि ने जब योग सूत्र लिखने शुरू किये तो पहले पाद के दूसरे सूत्र में लिखा है- "चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।" हठयोगी आँख, नाक, कान को बन्द करके, चित्त को स्थिर करने का प्रयास करते हैं। जब तक श्वास अन्दर रुका रहता है, मन शान्त रहता है, परन्तु ज्यों ही वायु बाहर निकलने लगती है, चित्त चलायमान हो जाता है। परन्तु ध्यान योग में चित्त को स्थिर करने का काम गुरु का होता है।

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का विधान होता है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में शक्तिपात

दीक्षा हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। यह दीक्षा चार प्रकार से दी जाती है-

१. स्पर्श से २. मंत्र से ३. दृष्टि मात्र से ४. संकल्प मात्र से।

कलियुग में केवल हरिनाम का जप ही मोक्ष देता है। अतः इस युग में नाम जप (मंत्र जप) ही मोक्ष देता है। इस सम्बन्ध में संत श्री तुलसीदास जी ने भी कहा है-

कलियुग केवल नाम अधारा,

सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।

पतंजलि ऋषि ने भी समाधिपाद के २४ से २९ तक के सूत्रों में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हरिनाम का जप ही मोक्ष देता है।

भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है-

उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।

परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।। १३:२३

(वास्तव में तो यह पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी 'पर' (त्रिगुणातीत अर्थात् ईश्वर) ही है। (केवल) साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करनेवाला होने से भर्ता, जीवरूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्द घन होने से 'परमात्मा' ऐसा कहा गया है।)

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि जीव, मनुष्य योनि में अपने इस उच्चतम विकास को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य का दिव्य रूप में रूपान्तरण सम्भव है। जिस प्रक्रिया से मनुष्य दिव्य रूप में रूपान्तरित होगा, उसी को भविष्यद्रष्टाओं ने 'नई चेतना' की संज्ञा दी है। इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा है-

'मनुष्य जब अतिमानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर द्वारा उसका मन, प्राण और शरीर दिव्य रूप में रूपान्तरित हो जाएगा। इसी का नाम पार्थिव अमरत्व है।' मानवता में इसी परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है- 'आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।'

हिन्दू दर्शन के अनुसार जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड अर्थात् शरीर में है। इस सम्बन्ध में शिव संहिता में कहा है-

'जानाति यः सर्वमिदं स योगी नात्र संशयः।'

अतः जिस क्रियात्मक विधि से मनुष्य अपना पूर्ण विकास करेगा, उसे ही विश्व के भविष्यद्रष्टाओं ने 'नई चेतना' की संज्ञा दी है।

वैदिक दर्शन अर्थात् हिन्दू दर्शन के अनुसार, एक जन्म में दो जीवन जीने की अवधारणा है। पहले जन्म अर्थात् हाड़-मांस के शरीर की रचना भौतिक माता-पिता करते हैं, दूसरा जन्मदाता गुरु होता है, जो आत्म साक्षात्कार करवाता है। इस प्रकार जिस प्रक्रिया से मनुष्य द्विज बनेगा, उसी को नई चेतना कहा है। ईसाई जगत् भी स्पष्ट कहता है कि द्विज बने बिना ईश्वर के राज्य के दर्शन नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में जॉन के ३:३ में कहा है- "मैं तुझे सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

(verily I say unto thee, except a man be born again, he cannot see the kingdom of God.)

भारतीय दर्शन में गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का विधान है। दीक्षा के कई प्रकार हैं, परन्तु शक्तिपात दीक्षा भारतीय दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। यह दीक्षा गुरु चार प्रकार से देते हैं-

१. स्पर्श से - गुरु शिष्य के शरीर को तीन जगह (आज्ञाचक्र, हृदय व मूलाधार) अपने हाथ के स्पर्श से शक्ति का संचार करते हैं अर्थात् शिष्य की कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करते हैं।

२. मंत्र दीक्षा (नाम जप) से।

३. दृष्टिमात्र से भी कुण्डलिनी जाग्रत कर देते हैं।

४. संकल्प मात्र से भी गुरु यह कार्य कर देते हैं। इस चौथी प्रकार की दीक्षा में शिष्य भी संकल्प से वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जैसे-एकलव्य और कबीर ने प्राप्त किया था।

कुण्डलिनी शक्ति जिसे वैदिक दर्शन में जगत् जननी कहा है, जो रीढ़ की हड्डी के सबसे नीचे के हिस्से में सुषुप्त अवस्था में रहती है, जब वह जाग्रत होती है तो उसे सहस्रार में अपना मालिक बैठा दिखता है। वह सुषुम्ना के रास्ते ऊर्ध्व गमन करती हुई, तीनों ग्रंथियों-(१) ब्रह्म ग्रंथि, (२) विष्णु ग्रंथि (३) रुद्र ग्रंथि एवं छह चक्रों- मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र का वेधन(भेदन) करती हुई साधक को समाधि स्थिति, जो कि समत्व बोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है। कुण्डलिनी के जाग्रत होकर सहस्रार में पहुँचने का नाम ही मोक्ष है। इसी से मानव जाति दिव्य रूप में रूपान्तरित होगी। मानव में गुरु द्वारा शक्तिपात

दीक्षा से होने वाली चेतना को ही नई चेतना की संज्ञा दी गई है।

अब बाकी रहा इससे मानव जाति को क्या लाभ होगा और कैसे होगा? देखिये, जब तक यह लोक नहीं सुधरता, परलोक सुधर ही नहीं सकता। इसलिए पहले यह लोक सुधरना चाहिए तथा साथ-साथ परलोक भी सुधरता हुआ स्पष्ट नजर आना चाहिए। विश्व भर में जितनी प्रकार की आराधनाएँ हैं, उनमें भोग है तो मोक्ष नहीं, और मोक्ष है तो भोग नहीं, एक का त्याग करना पड़ता है।

हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुए स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने अमेरिका में कहा था- " विभिन्न मत-मतान्तरों या सिद्धांतों में विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं हैं, वरन हिन्दू-धर्म तो प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का नाम हिन्दू-धर्म नहीं है। हिन्दू-धर्म का मूल मंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है।" स्वामी जी ने इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कह डाला- "अनुभूति-अनुभूति की यह महती शक्तिमयवाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन-मण्डल से आविर्भूत हुई है। एकमात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति सम्भव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल नहीं सकता।"

जिस प्रक्रिया से मनुष्य अपनी सच्चाई का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसे ही भविष्यद्रष्टाओं ने नई चेतना कहा है। क्योंकि सत्युग को छोड़कर मानवता में यह विकास कभी नहीं हुआ, इसलिए इसे नई चेतना कहा है। हमारे दर्शन में मनुष्य को ईश्वर माना गया है। जब मनुष्य आत्म साक्षात्कार कर लेता है तो उसे इस सत्य का ज्ञान हो जाता है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के १३ वें अध्याय के २३ वें श्लोक में कहा है- "वास्तव में तो पुरुष इस शरीर में स्थित हुआ भी 'पर' (त्रिगुणातीत) ही है। केवल साक्षी देने से उपद्रष्ट्रा और यथार्थ सम्मति देनेवाला होने से अनुमन्ता, सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीवरूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्द घन होने से परमात्मा ऐसा कहा गया है।"

इस प्रकार मनुष्य को विराट मानकर ही हमारे ऋषियों ने यह सिद्धांत तय किया कि जो कुछ ब्रह्माण्ड में है, वह सब पिण्ड में अर्थात् शरीर में है। मनुष्य जब अपने इस उच्चतम विकास को प्राप्त कर लेता है, इसी का नाम मोक्ष है। केवल ईश्वर ही जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त है। मनुष्य क्रमिक विकास के साथ अपने असली स्वरूप में अर्थात् ईश्वर के रूप में रूपान्तरित हो जाता है, इसी का नाम मोक्ष है।

२० वीं सदी ने इसे नई चेतना की संज्ञा दी है। क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में इस ज्ञान को प्रात करने की क्रियात्मक विधि मात्र वैदिक दर्शन ही बताता है, अतः सभी पश्चिम के भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर से कहा है कि विश्व में २० वीं सदी के आखिरी दशक में जो धार्मिक क्रांति होगी, उसका नेतृत्व भारत के एक गाँव का ग्रामीण गृहस्थ व्यक्ति करेगा। बिना गुरु के किसी भी विद्या का ज्ञान प्रात करना असंभव है, चाहे वह अपरा विद्या से या परा विद्या से। दोनों में गुरु की निरन्तर आवश्यकता होती है। गुरु द्वारा दीक्षा प्रात करने पर ही यह ज्ञान संभव है।

११९.

धार्मिक क्रांति

(३० नवम्बर २००१)

विषयः- ११ सितम्बर, २००१ को ईसाइयों और मुसलमानों के बीच प्रारम्भ हुआ भीषण नरसंहार का मूल कारण और उसका निदान।

विश्व के सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने एक स्वर में भविष्यवाणी की है कि २० वीं सदी के अन्तिम दशक और २१वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व में धार्मिक क्रांति होगी, जिससे संसार के सभी धर्मों में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे।

ईसाइयों और मुसलमानों का यह संघर्ष उनके पैगम्बरवाद के ठोस सिद्धांतों पर आधारित है, इसे 'उग्रवाद' की संज्ञा देना ठीक नहीं है। पैगम्बरवाद के सिद्धांत के अनुसार विश्व में तीन पैगम्बर होने हैं, उसके बाद कयामत की बात कही गई है। इस प्रकार 'मूसा' प्रथम पैगम्बर, 'यीशु' दूसरा पैगम्बर और 'मोहम्मद साहब' तीसरे पैगम्बर हुए। परन्तु ईसाइयों ने 'मोहम्मद साहब' को तीसरा और अन्तिम पैगम्बर नहीं माना। ईसाइयों का मानना है कि अन्तिम पैगम्बर २०वीं सदी के अन्त से पहले प्रकट हो जाएगा- प्रेरितों के कार्य १:१ से ५ एवं पतरस ३:८। उसे बुलाने की भविष्यवाणी ईश्वर यहोवा ने यशायाह ४६:१० एवं ११ में की है। यीशु ने मत्ती २४:२७, यूहन्ना १५:२६, १६:७, १६:१२, से १५ एवं १ कुरिन्थियों १३:९-१० में उसे भेजने की भविष्यवाणी की है।

बाइबिल में उस अन्तिम पैगम्बर की विश्व स्तर पर पहचान के लिए जो मापदण्ड दिया गया है, उसका वर्णन यशायाह ४१:२१ से २३, ४३:८ एवं ९ में किया गया है। यीशु ने यूहन्ना १६:१३ से १५ में तथा प्रेरितों के कार्य २:१४ से १८ एवं २:३३ में किया है।

इस प्रकार जब तक ईसाई जगत् तीसरे और अन्तिम पैगम्बर का नाम घोषित करके बाइबिल में वर्णित उपर्युक्त सिद्धांतों पर उसे विश्व स्तर पर स्वीकार नहीं कर लेता, तब तक इस खूनी संघर्ष का अन्त नहीं होगा। इस सम्बन्ध में मत्ती २४:१४ एवं १५ में स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी की गई है। क्योंकि यह धार्मिक क्रांति सम्पूर्ण मानव जाति को प्रभावित करेगी, अतः वैदिक दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार सम्पूर्ण मानव-जाति क्रमिक विकास के सिद्धांत के अनुसार पूर्णता प्राप्त करेगी।

वैदिक दर्शन के अनुसार मनुष्य शरीर की संरचना सात प्रकार के शैलों (तत्त्वों) से हुई

हैं- १. अन्न (Matter) २. प्राण (Life) ३. मन (Mind) ४. विज्ञान (Supermind or Gnosis) ५. आनन्द (Bliss) ६. चित् (Becoming) और ७. सत् (Being)। इस प्रकार मानव जाति के प्रथम चार कोश पूर्ण चेतन हो चुके हैं। जब सात में से चार कोश चेतन हो सकते हैं तो बाकी तीनों कोशों के चेतन होने की भी कोई विधि अवश्य है। क्योंकि वैदिक दर्शन अद्वैतवाद के सिद्धांत का जनक है, अतः मानव जाति के अन्तिम तीनों कोश वेदान्ती अर्थात् हिन्दू ही चेतन करने की सामर्थ्य रखते हैं। संसार के किसी दूसरे धर्म तथा देश में यह सामर्थ्य नहीं है। सम्पूर्ण मानव जाति में उपर्युक्त सातों कोशों को चेतन होने की स्थिति की प्रत्यक्षानुभूति करके श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि - 'आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।'

मैं सम्पूर्ण मानव जाति में अद्वैत दर्शन को मूर्तरूप देने ही, मेरे मुक्तिदाता सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी की आज्ञा से निकला हूँ। पूर्ण सत्य की जानकारी हेतु सम्पूर्ण विश्व में जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सप्रेम आमंत्रित किया जाता है।

१२०.

विश्व में आरम्भ हुआ भीषण नरसंहार

(३१ दिसम्बर २००१)

सम्पूर्ण विश्व में जो भीषण नरसंहार आरम्भ हुआ है, यह कलियुग में पैदा हुए पैगम्बरवादी धर्मों की देन है। जिन धर्मों का जन्म ही हिंसा पर आधारित है, उनके संघर्ष की बात समझ में आती है, परन्तु १३ दिसम्बर २००१ को अवतारों की धरती पर हुए आक्रमण का अर्थ साधारण नहीं है। यह युग परिवर्तन का संदेश है।

हिन्दू दर्शन के अनुसार दसवें अवतार के अवतरण के साथ ही युग परिवर्तन का समय आरम्भ हो जाता है। हर अवतार के साथ मानवता में नया विकास होता है, क्योंकि मनुष्य निरन्तर विकसित होने वाला प्राणी है। अतः अवतारवाद का मानव जाति के साथ गहरा सम्बन्ध है।

Man is a transitional being, he is not final but he will be. The step from man to superman is the next approaching achievement in the earth's evolution. It is inevitable because it is at once the intention of the inner spirit and the logic of nature's process.

(अनुवाद- इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है- "मनुष्य एक संक्रमणकालीन प्राणी है, वह अभी पूर्ण नहीं है पर वह पूर्णता प्राप्त करेगा। पृथ्वी के विकास क्रम में मानव से अतिमानस अगला पड़ाव है। यह होना अवश्यंभावी है क्योंकि यह आन्तरिक आत्मा की पुकार के साथ-साथ प्रकृति की प्रक्रिया के अनुसार न्याय संगत भी है।")

इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द द्वारा दिनांक २९ अक्टूबर १९३५ को की गई घोषणा, एक असाधारण बात है। अपनी घोषणा में उन्होंने कहा है-

24 November1926 was the descent of Krishna into the physical. Krishna is not the supramental light. The descent of Krishna would mean the descent of the overmind Godhead preparing, though not itself actually, the descent of supermind and Ananda. Krishna is Anandamaya, he supports the evolution through the overmind leading it towards his Ananda.

(Sri Aurobindo On Himself, 29 October1935)

(अनुवाद- "२४ नवम्बर १९२६ को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध करके, विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।")

(श्री अरविन्द अपने विषय में २९ अक्टूबर १९३५)

इस प्रकार अगर श्री अरविन्द की घोषणा सत्य है तो विश्व में निकट भविष्य में होने वाले महाभारत अर्थात् तीसरे विश्व युद्ध को रोका जाना असम्भव है।

विश्व के सभी भविष्यद्रष्टा संतों ने एक स्वर से भविष्यवाणी की है कि २१वीं सदी में वैदिक धर्म अर्थात् हिन्दू धर्म, विश्व धर्म होगा। यह बात श्रीकृष्ण द्वारा योग युक्त स्थिति में अलीपुर जेल में श्री अरविन्द को दिये दो आदेशों से भी सत्य प्रमाणित होती है, जिसका वर्णन उन्होंने उत्तरपाड़ा अभिभाषण में किया है।

I am guiding, therefore fear not. Turn to your own work for which I have brought you to Jail and when you come out, remember never to fear, never to hesitate. Remember that it is 'I' who am doing this, not you nor any other. Therefore, whatever clouds may come, whatever dangers and sufferings, whatever difficulties, whatever impossibilities, there is nothing impossible, nothing difficult.

I am in the nation and its uprising and I am Vasudeva. I am Narayana, what I will, shall be, not what others will. What I choose to bring about no human power can stop. This is the young generation, the new and mighty nation that is arising at my command.

(अनुवाद- श्री कृष्ण ने कहा- "मैं रास्ता दिखा रहा हूँ, इसलिए डरो मत। मैं तुम्हें जिस काम के लिये जेल में लाया हूँ, अपने उस काम की ओर मुड़ो और जब तुम जेल से बाहर निकलो तो यह याद रखना कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत। याद रखो, यह सब मैं कर रहा हूँ और कोई नहीं।

अतः चाहे जितने बादल घिरे, चाहे जितने खतरे और दुःख कष्ट आयें, कठिनाइयाँ हो, चाहे जितनी असंभवताएँ आयें, कुछ भी असभंव नहीं है, कुछ भी कठिन नहीं है। मैं इस देश और उसके उत्थान में हूँ, मैं वासुदेव हूँ, मैं नारायण हूँ। जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा, दूसरों की इच्छा से नहीं। मैं जिस चीज को लाना चाहता हूँ, उसे कोई मानव शक्ति रोक नहीं सकती।")

अपने प्रथम आदेश में भगवान् ने कहा -

I have given you a work and it is to help to uplift this nation. I have called you to work and that is the 'Adesh' for which you have asked. I give you 'Adesh' to go forth and do my work.

(अनुवाद-"मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है और वह है इस जाति के उत्थान में सहायता देना। मैनें तुम्हें काम के लिये बुलाया है और यही वह आदेश है जो तुमने माँगा था। मैं तुम्हे आदेश देता हूँ कि जाओ और मेरा काम करो।")

अपने दूसरे आदेश में भगवान् ने कहा-

Something has been shown to you in this year of seclusion, something about which you had your doubts and it is the truth of the Hindu religion. It is this religion that I am raising up before the world; it is this that I have perfected and developed through the Rishis, saints and Avatars, and now it is going forth to do my work among the nations. I am raising up this nation to send forth my word. It is for the Dharma and by the Dharma that India exists.

(अनुवाद- "इस एक वर्ष के एकांतवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है, वह चीज दिखायी गयी है, जिसके बारे में तुम्हें संदेह था, वह है हिंदू धर्म का सत्य। इसी धर्म को मैं संसार के सामने उठा रहा हूँ, यही वह धर्म है जिसे मैंने ऋषि-मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है और अब यह धर्म अन्य राष्ट्रों में मेरा काम करने के लिये बढ़ रहा है। मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिये इस राष्ट्रको उठा रहा हूँ। धर्म के लिये और धर्म के द्वारा ही भारत का अस्तित्व है।")

अन्त में भगवान् ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हुए कहा-

(Since long ago I have been preparing this uprising and now the time has come and it is 'I' who will lead it to its fulfillment.)

(अनुवाद- 'मैं एक लम्बे समय से इस उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूँ और अब वह समय आ गया है। अब मैं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊँगा।')

इस प्रकार गीता के चौथे अध्याय के ७वें तथा ८वें श्लोक में दिये गए अपने वचन के अनुसार, वह परमसत्ता दसवें अवतार के रूप में, भारत की पुण्य भूमि पर अवतरित हो चुकी है। इसके कारण सम्पूर्ण मानव जाति क्रमिक विकास के सिद्धांत के अनुसार पूर्णता प्राप्त करेगी, अर्थात् ऋग्वेद में वर्णित सातों कोश १. Matter (अन्न) २. Life force (प्राण) ३. Mind (मन) ४. Supermind & Gnosis (विज्ञान) ५. Bliss (आनन्द) ६. Becoming (चित्) और ७. Being (सत्) चेतन होंगे, तभी विश्व शान्ति सम्भव होगी।

अवतारवाद के सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-

The Avatar's life and actions are not miracles. If they were, his existence would be perfectly useless, a more superfluous freak of nature. He accepts the terrestrial conditions, he uses means, he shows the ways to humanity, as well as helps it otherwise what is the use of him and why is he here?

(अनुवाद- अवतार का जीवन व उसके कार्य चमत्कार नहीं हैं। यदि अवतार अद्भुत चमत्कारों के द्वारा ही काम करें तो इससे अवतरण का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। यदि अवतार का जीवन असाधारण आतिशबाजी का खेल हो तो इससे भी काम न चलेगा। असाधारण अथवा अद्भुत चमत्कार रूप अवतार के होने का कुछ मतलब ही नहीं रहता। भगवान् मानव प्रकृति को अपना लेते हैं और यही होना चाहिए वरना अवतार के अवतरण का उद्देश्य ही पूर्ण नहीं हो सकता। अवतरण का उद्देश्य यही दिखलाना है कि मानव-जन्म मनुष्य की सब सीमाओं के रहते हुए भी दिव्य जन्म और दिव्य कर्म का साधन और कारण बनाया जा सकता है।)

१२१.

२१वीं सदी का भारत

(०७ जनवरी २००२)

भारतीय दर्शन में वर्णित अवतारवाद के सिद्धान्त के अनुसार दसवां अवतार अन्तिम होगा। उसके कारण सम्पूर्ण मानव जाति पूर्णता प्राप्त करेगी। इस प्रकार (१) मत्स्य अवतार (२) कच्छप (३) वराह (४) नृसिंह(नृसिंह) (५) मनु (६) वामन (७) परशुराम (८) राम (९) कृष्ण। इस प्रकार पृथ्वी पर नौ अवतार हो चुके हैं।

श्री अरविन्द ने २४ नवम्बर, १९२६ को अवतरित हो चुके, दसवें अवतार की घोषणा की है। इस प्रकार वह दसवां अवतार, 'कल्कि अवतार' होगा। कल्कि अवतार के सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-

"The sword of 'Kalki' can alone purify the earth from the burden of an obstinately Asuric humanity."

(एकमात्र कल्कि की तलवार ही पृथ्वी को एक उद्दण्ड आसुरी मानवता के भार से पवित्र कर सकती है।)

इस प्रकार श्री अरविन्द के अनुसार-

"Certainly, when the Supramental will touch the earth with a sufficient force to dig itself into the earth's consciousness, there will be no more chance of any success or survival for the 'Asuric Maya'."

(निश्चित रूप से जब अधिमानसिक देव पृथ्वी की चेतना में पर्याप्त बल से प्रवेश करेंगे तब आसुरी माया के विजयी होने या बचने का कोई अवसर नहीं रह जाएगा।)

भारतीय योगदर्शन, मानव जाति को पूर्णता प्राप्त करने की क्रियात्मक विधि बताता है। श्री अरविन्द ने जिस योग की बात कही है उसके अनुसार, उससे सम्पूर्ण मानव जाति के ऋग्वेद में वर्णित सातों कोश चेतन हो जाएंगे।

"The aim of the 'Yoga' I practice is to manifest, reach or embody a higher consciousness upon earth, and not to get away from earth into a higher world or some supreme

absolute."

(मैं जिस 'योग' का अभ्यास करता हूँ उसका उद्देश्य पृथ्वी पर उच्च चेतना को प्रकट करना, उस तक पहुँचना या अवतार लेना है, न कि पृथ्वी से दूर किसी उच्च दुनिया या किसी सर्वोच्च निरपेक्षता में जाना।)

श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है "भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही 'सच्ची स्वाधीनता', 'एकता' और 'महानता' प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका 'रक्षण' करेगा।"

आज भारत में राजसत्ता यूरोपियन राजनीति से चलाई जा रही है। जब योग द्वारा चेतन हुए व्यक्तियों के दिशा-निर्देश से सत्ता चलाई जावेगी, तभी भारत का पूर्ण उत्थान होगा। इस योग द्वारा भारत, सम्पूर्ण पृथ्वी को पाप के भार से मुक्त कर देगा। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द कहते हैं-

"If the truth which the 'Yoga' wants to achieve is attained and if India accepts it, then it will give quite a new turn to Indian politics & different from European politics. It would be a profound change."

(यदि वो सत्य प्राप्त हो जाता है जिसे 'योग' प्राप्त करना चाहता है और यदि भारत इसे स्वीकार कर लेता है, तो यह भारतीय राजनीति को एक नया मोड़ देगा और यह यूरोपीय राजनीति से अलग होगा। यह एक गहरा बदलाव होगा।)

निकट भविष्य में सम्पूर्ण विश्व में जो विकास होगा, जिसका नेतृत्व भारत करेगा, उस सम्बन्ध में श्री अरविन्द कहते हैं -

"India of the ages is not dead nor has she spoken her last creative word; she lives and has still something to do for "herself" and the human people. And that which must seek now to awake is not an anglicized oriental people, docile pupil of the west and doomed to repeat the cycle of the occident's success and failure but still the ancient & immemorable 'Shakti' recovering her deepest self, lifting her head higher towards the supreme source of light and strength and turning to discover the complete meaning and a

vaster form of her 'Dharma'."

(सदियों का भारत मरा नहीं है और न ही उसने अपना अंतिम रचनात्मक शब्द बोला है, वह जीवित है और उसे अभी भी खुद के लिए और मानवता के लिए के लिए कुछ करना है। और जिसे जागृत करने के लिए अब प्रयास करना चाहिए वह अंग्रेजियत से भरे हुए प्राच्य लोग नहीं, न ही पश्चिम के विनम्र शिष्य जो पश्चिम की सफलता और विफलता के चक्र को दोहराने के लिए अभिशप्त हों, बल्कि वही प्राचीन और अविस्मरणीय शक्ति जो अपने गहरे आत्म को पुनः प्राप्त कर रही है, अपना सिर प्रकाश और शक्ति के सर्वोच्च स्रोत की ओर ऊंचा उठा रही है और अपने धर्म के संपूर्ण अर्थ और व्यापक रूप की खोज की ओर मुड़ रही है।)

भारतीय योग दर्शन में मानव जाति में जिस विकास की बात कही गई है, उसके अनुसार, सम्पूर्ण मानव जाति में यह अन्तिम विकास होगा अर्थात् इससे मानव जाति पूर्णता प्राप्त करेगी। इस विकास के सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है- "आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।"

१२२.
ईसाई दर्शन और अवतारवाद
(१२ जनवरी २००२)

ईसाई दर्शन भी अवतारवाद के सिद्धान्त को स्पष्ट शब्दों में स्वीकारता है, इस सम्बन्ध में यीशु ने कहा है-

Matthew 23:38 &39

"Behold your house is left unto you desolate. For I say unto you, ye shall not see me henceforth, till ye shall say, blessed is he that cometh in the name of the Lord."

(अनुवाद:- मत्ती २३:३८-३९- "देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से जब तक तुम न कहोगे कि धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।")

पैगम्बरवादी दर्शन के अनुसार तीन पैगम्बर आने हैं। इस प्रकार मूसा, यीशु तथा मोहम्मद साहब आ चुके हैं। परन्तु ईसाइयों ने मोहम्मद साहब को तीसरा और अन्तिम पैगम्बर स्वीकार नहीं किया। उनका मानना है कि वह आएगा। इस समय ईसाइयों और मुसलमानों का तनाव भीषण नरसंहार का रूप ले चुका है। इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि तीसरा और अन्तिम पैगम्बर, मानव देह धारण किये हुए प्रकट होने वाला है। जब उसे सम्पूर्ण ईसाई जगत् विश्व स्तर पर स्वीकार करेगा, तभी यह नरसंहार समाप्त होगा।

इस सम्बन्ध में बाइबिल में स्पष्ट भविष्यवाणियाँ की गई हैं-

Isaiah 46:10

"Declaring the end from the beginning, and from ancient times the things that are not yet done, saying, my counsel shall stand, and I will do all my pleasure."

(अनुवाद:- यशायाह ४६:१०-"मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।")

Isaiah 46:11

"Calling a ravenous bird from the east, the man that executeth my counsel from a far country, yea, I have spoken it. I will also bring it to pass; I have purposed it, I will also do it."

(अनुवादः- यशायाह ४६:११- "मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति को पूरा करने वाले पुरूष को बुलाता हूँ। मैंने ही यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा, मैंने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूँगा।")

Jesus Christ has repeated this prophecy of God (Jehovah) in Mathew 24:27 and John15:26, 16:7, 16:12 to 15.

(अनुवादः- यीशु ने भगवान् की इस भविष्यवाणी को मत्ती २४:२७ एंव जॉन १५:२६, १६:७, १६:१२ से १५ में दोहराया है।)

Matthew 24:27

"For as the lightning cometh out of the east, and shineth even unto the west, so shall also the coming of the son of man be."

(अनुवादः- मत्ती २४:२७ - "क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।")

John 15:26

"But when the comforter is come, whom I will send unto you from the father, even the spirit of truth, which proceedth from the father, he shall testify of me."

(अनुवादः- यूहन्ना १५:२६ - "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजुँगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।")

John 16:7

"Nevertheless I tell you the truth, it is expedient for you that I go away; for if not away, the comforter will not come unto you, but if I depart, I will send him unto you."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:०७- "तो भी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।")

John 16:12

"I have yet many things to say unto you, but ye cannot bear them now."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:१२ - "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।")

John 16:13

"Howbeit when he, the spirit of truth, is come, he will guide you into all truth; for shall not speak of himself, but whatsoever he shall hear, that shall he speak; and he will 'shew' you things to come."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:१३ - "परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।")

John 16:14

"He shall glorify me; for he shall receive of mine, and shall shew it unto you."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:१४ - "वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।")

John 16:15

"All things that the father hath are mine therefore said I, that he shall take of mine! and shall shew it unto you."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:१५ - "जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिये मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।")

1 Corinthians 13:9 & 10

"For we know in part, and we prophesy in part but when

that which is perfect is come, then that which is in part shall be done away."

(अनुवादः- १ कुरिन्थियों १३:९ और १० - "क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यवाणी अधूरी। परन्तु जब सवर्सिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।")

बाइबिल एक भविष्यवाणियों का ग्रंथ है। इसमें मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर उसके पूर्ण विकास तक की भविष्यवाणियाँ की गई हैं। बाइबिल ने तीसरे और अन्तिम पैगम्बर के अवतरण के सम्बन्ध में स्पष्ट भविष्यवाणी की है। उसकी पहचान कैसे होगी, इस सम्बन्ध में बाइबिल कहती है-

Isaiah 41:21 to 23

"Produce your cause, saith the lord, bring forth your strong reasons, saith the king of Jacob."

"Let them bring them forth, and shew us what shall happen; let them Shew the former things, what they be, that we may consider them, and know the latter end of them, or declare us things for to come."

"Shew the things that are to come hereafter, that we may know that ye are Gods, yea, do good, or do evil, that we may be dismayed, and behold it together."

(अनुवादः- यशायाह ४१:२१-२३

"यहोवा कहता है, अपना मुकद्दमा लड़ो, याकूब का राजा कहता है, अपने प्रमाण दो।"

"वे उन्हें देकर हमको बताएँ कि भविष्य में क्या होगा? पूर्वकाल की घटनाएँ बताओ कि आदि में क्या क्या हुआ? जिससे हम उन्हें सोचकर जान सकें कि भविष्य में उनका क्या फल होगा या होने वाली घटनाएँ हम को सुना दो।"

"भविष्य में जो कुछ घटेगा वह बताओ, तब हम मानेंगे कि तुम ईश्वर हो, भला या बुरा, कुछ तो करो कि हम देख कर एक चकित हो जाएँ।")

John 16:13 to 15

"Howbeit when he, the spirit of truth, is come, he will guide you into all truth; for he shall not speak of himself, but whatsoever he shall hear that shall he speak; and he will Shew

you things to come."

"He shall glorify me, for he shall receive of mine, and shall shew it unto you."

"All things that the father hath are mine, therefore said I, that he shall take of mine and shall Shew it unto you."

(अनुवाद:- यूहन्ना १६:१३-१५

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।"

"वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

"जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिये मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।")

उपर्युक्त भविष्यवाणियों के अनुसार तीसरा और अन्तिम पैगम्बर संसार के लोगों को अनिश्चित काल तक भूत-भविष्य दिखा, सुना देगा। उसी एक आधार पर सम्पूर्ण ईसाई जगत् उसे स्वीकार करेगा। इस सम्बन्ध में बाइबिल स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी करती है-

Isaiah 43:8 & 9

"Bring forth the blind people that have eyes, and the deaf that have ears."

"Let all the nations be gathered together, and let the people be assembled, who among them can declare this, and shew us former things? Let them bring forth their witnesses, that they may be justified; or let them hear, and say, it is truth."

(अनुवाद:- यशायाह ४३:८ एवं ९

"आँख रहते हुए अन्धों को और कान रहते हुए बहरों को निकाल ले आओ!"

"जाति जाति के लोग इकट्ठे किए जाएं और राज्य राज्य के लोग एकत्रित हों। उनमें से कौन यह बात बता सकता या बीती हुई बातें हमें सुना सकता है, वे अपने साक्षी ले आएं जिससे वे सच्चे ठहरें, वे सुन लें और कहें, यह सत्य है।")

इस अन्तिम अवतरण के कारण ईसाई जगत् में जो परिवर्तन आवेगा, उस सम्बन्ध में

बाइबिल भविष्यवाणी करती है:-

Acts 2:17 & 18

"And it shall come to pass in the last days, saith God, I will pour out of my spirit upon all flesh, and your sons and your daughters shall prophesy, and your young men shall see visions, and your old men shall dream dreams."

"And on my servants and on my hand & maidens I will pour out in those days of my spirit; and they shall prophesy."

(अनुवाद:- प्रेरितों के काम २:१७ एवं १८

"कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।"

"वरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपनी आत्मा में से उड़ेलूँगा, और वे भविष्यवाणी करेंगे।")

Acts 2:33

Therefore being by the right hand of God exalted, and having received of the father the promise of the Holy Ghost, he hath shed forth this, which ye see and hear.

(अनुवाद:- प्रेरितों के काम २:३३ - "इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उड़ेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो।")

बाइबिल में यीशु के १८ वर्षों का वर्णन नहीं मिलता। यीशु १२ वर्ष की उम्र में गुम हो गया तथा अचानक ३० वर्ष की उम्र में रेगिस्तान के बीच में प्रकट हो गया। इस अन्तिम अवतरण के कारण ईसाई, यीशु का सम्पूर्ण जीवनकाल देख लेंगे, इस प्रकार ईसाई जगत् की सभी भ्रान्तियाँ खत्म हो जायेंगी।

उस अन्तिम अवतरण का समय बताते हुए बाइबिल भविष्यवाणी करती है कि वह सन् २००० के समाप्त होने के पहले-पहले प्रकट हो जावेगा।

इस सम्बन्ध में यीशु की आत्मा ने मृत्यु के ४० दिन बाद जो भविष्यवाणी की है, यह

बहुत रहस्यपूर्ण है। इसमें कहा है -

Acts 1:4 & 5

"And, being assembled together with them, commanded them that they should not depart from Jerusalem, but wait for the Promise of the father, which, saith he, ye have heard of me."

"For John truly baptized with water, But ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence."

(अनुवादः- प्रेरितों के काम १:४-५

"फिर एक बार जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था तो उसने उन्हें आज्ञा दी, यरूशलेम को मत छोड़ना बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, परम पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करना।"

"क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही दिनों बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।")

In the above mentioned prophecy for recognizing the time to be baptized with the Holy Ghost, he used words of 'not many days hence' so in order to attain the exact time, we shall have to understand that at what time and in which condition Jesus made this prophecy. Jesus made the above mentioned prophecy after leaving the mortal body with the knowledge of spirit.

(अनुवादः- उपर्युक्त की हुई भविष्यवाणी के अनुसार पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेने का समय पहचानने के लिए, यीशु ने 'अब से कुछ ही दिनों में' शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए निश्चित समय जानने के लिए हमें जिस समय और जिस अवस्था में यीशु ने यह भविष्यवाणी की है, उसे समझना होगा। यीशु ने उपर्युक्त भविष्यवाणी नश्वर शरीर को त्यागने के बाद, आत्मा के ज्ञान से की है।)

Since this prophecy was made by the spirit of Jesus, therefore, to find the exact time of baptism by the Holy Ghost, we shall have to calculate according to God's time only, which has been described in 2 Peter 3: 8.

(अनुवादः- चूंकि यह भविष्यवाणी यीशु की आत्मा द्वारा की गई है, इसलिए पवित्र आत्मा से बपतिस्मा का निश्चित समय जानने के लिए हमें यह गणना भगवान् के समय के अनुसार ही करनी होगी जिसका वर्णन २ पतरस ३:८ में किया गया है।)

2 Peter 3:8

"But, beloved, be not ignorant of this one thing that one day is with the Lord as a thousand years, and a thousand years as one day."

(अनुवादः- २ पतरस ३:८ - "पर प्यारे मित्रों! इस एक बात को मत भूलो, प्रभु के लिए एक दिन हज़ार साल के बराबर है और हज़ार साल एक दिन जैसे हैं।")

"Not many days hence" clearly implies that not more than one day. In this way, with the completion of one thousand years of the Christian era, God's one day has been completed. By the end of the year 2000 AD, his second day will end which will be followed by the third day. Therefore, if that Supreme power in the form of a man does not appear before the world before the close of the year 2000 AD, then the prophecies from the Holy Bible will disprove themselves. But it is impossible because the great soul Jesus preached so with confidence.

(अनुवादः- यीशु का 'अब से कुछ ही दिनों में' कहना स्पष्ट रूप से बताता है कि वह समय एक दिन से ज्यादा का नहीं है। इस प्रकार ईसाईयों के एक हजार वर्ष पूरा होते ही भगवान् का एक दिन पूरा हो जाता है। २००० एडी के अन्त में भगवान् का दूसरा दिन पूरा होकर तीसरा दिन शुरू हो जाएगा। इसलिए अगर वह परमसत्ता २००० एडी के समाप्त होने से पहले मानव रूप में संसार के सामने प्रकट नहीं हुई तो पवित्र बाइबिल में की गई भविष्यवाणियाँ झूठी साबित हो जायेंगी परन्तु यह असम्भव है क्योंकि महान् आत्मा यीशु ने यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा है।)

Matthew 24:35 "Heaven and earth shall pass away, but my words shall not pass away."

(अनुवादः- मत्ती २४:३५ - "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।")

उपर्युक्त से तो यही प्रमाणित होता है कि वह तीसरी और अन्तिम शक्ति प्रकट होने का प्रयास कर रही है, उसी के कारण पैगम्बरवादी दोनों धर्मों के बीच भीषण नरसंहार आरम्भ हो गया है।

१२३.

मानव-जाति का भविष्य

२४ जनवरी २००२

युगों के सम्बन्ध में हिन्दू-दर्शन कहता है कि-

सत्युग चार चरणों का धर्म था। इस युग में मानव कर्म से पहचाना जाता था। यह युग 'ब्रह्मतत्त्व' प्रधान युग था। इस युग का अन्त ब्रह्मतत्त्व के ह्रास के साथ हुआ। त्रेतायुग 'क्षत्रिय-तत्त्व' प्रधान युग था। इसे मर्यादा का युग कहा जाता है। यह युग क्षत्रिय तत्त्व के ह्रास के साथ समाप्त हुआ था। इस युग में धर्म का दूसरा चरण समाप्त हो गया। द्वापर 'वैश्य-तत्त्व' प्रधान युग था। इस युग में धर्म के दो चरण थे। यह युग भी ह्रास की तरफ ही झुका और धीरे-धीरे समाप्त हो गया। इस प्रकार धर्म के तीन चरण समाप्त हो गए।

कलियुग एक चरण का युग है। हिन्दू-दर्शन के अनुसार इस युग का अन्त 'कल्कि अवतार' के अन्तर्धान होने के साथ ही हो जावेगा । इस युग का अन्त, पतन से नहीं, इसके उत्थान से होगा । इस युग के अन्त से पहले-पहले सम्पूर्ण मावन-जाति पूर्णरूप से विकसित हो जावेगी। इस प्रकार कलियुग के अन्त के साथ ही 'नया सत्ययुग' आरम्भ हो जावेगा ।

श्री अरविन्द ने इस अन्तिम अवतरण को बहुत नजदीक से देखा था। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द कहते हैं कि २४ नवम्बर, १९२६ को अवतरित हुई वह परमसत्ता, १९६७ में मानवता में प्रत्यक्षानुभूति कराने लगेगी । श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि-

The Supramental consciousness will enter into a phase of realising power in 1967.

(अतिमानसिक चेतना १९६७ में शक्ति की अनुभूति के चरण में प्रवेश करेगी।)

इस अवतरण को अरविन्द आश्रम की संचालिका (Mita Rechard) 'मदर' ने भी बहुत नजदीक से देखा । इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा है-

1968- 'Powerful and prolonged infiltration of supramental forces into the body, everywhere at the same time as though the whole body bathed in the forces that entered everywhere at the same time with a slight friction, the head down to the neck was the last receptive region.'

1969- 'On the 1st Jan, 1969 at two O'clock in the morning, consciousness descended into the earth's atmosphere and settled there. It was a most marvellous descent, full of light, force, power, joy and peace and suffused the whole earth.'

'Since the beginning of this year 'a new' consciousness is at work upon earth to prepare man for a 'new' creation, the superman. For this creation to be possible to substance that constitutes man's body must undergo a big change. It must become more receptive to the consciousness and more plastic under its working.'

'In the Supramental creation there will no more be religions. All life will be expression, the flowering in forms of the divine unity manifesting in the world. And there will be no more what men now call 'the Gods'. These great divine beings themselves will be able to participate in the new creation, but for that they must put on what we may call the Supermental substance on earth. If there are some who choose to remain in their world, as they are, if they decide not to manifest themselves physically, their relation with the other beings of the supramental world on earth will be a relation of friends of collaborators, of equal to equal, because the highest divine essene will have manifested in the beings of the new supramental world on earth.'

'When the physical substance will be supramentalised, to be born on earth in a body, it will not be a cause of inferiority rather the contrary, there will be gained a plenitude which could not be obtained otherwise.'

'All that is of the future, a future that has begun, but will take some time before realising itself integrally. In the meanwhile, we are in a very special situation, extremely special, which has had no precedent. We are attending on the birth of a new world, altogether young, altogether weak & weak not in its essence, but in its external manifestation not

yet recognized, not yet felt, denied by most but it is there, it is there endeavouring to grow and quite sure of the result.'

'Yet the road to reach there is a new road that has never before been traced, none went by that way, none did that. It is a beginning, a universal beginning. Therefore it is an adventure absolutely unexpected and unforeseeable.'

(शरीर में अतिमानसिक शक्तियों का शक्तिशाली और लंबे समय तक प्रवेश, हर जगह एक ही समय में जैसे कि पूरा शरीर उन शक्तियों में नहा गया हो जो एक ही समय में हर जगह हल्के घर्षण के साथ प्रवेश करती थीं, सिर से लेकर गर्दन तक अंतिम ग्रहणशील क्षेत्र था।

१ जनवरी १९६९ को प्रातः दो बजे चेतना पृथ्वी के वायुमंडल में अवतरित हुई और वहीं स्थापित हो गई। यह अत्यंत अद्‌भुत अवतरण था। प्रकाश, ऊर्जा, शक्ति, आनंद और शांति से भरपूर और यह सम्पूर्ण पृथ्वी में व्याप्त था।

इस वर्ष के आरम्भ से ही एक 'नई' चेतना मानव को अतिमानव में परिवर्तित करने के लिए काम कर रही है। इस रचना को संभव बनाने के लिए मनुष्य के शरीर को बनाने वाले पदार्थ को एक बड़े बदलाव से गुजरना होगा। इसे चेतना के प्रति अधिक ग्रहणशील और इसकी कार्यप्रणाली के अंतर्गत अधिक लचीला बनना होगा।

अतिमानसिक सृष्टि में कोई धर्म नहीं होगा। सारा जीवन एक अभिव्यक्ति होगा, विश्व में प्रकट होने वाली दिव्य एकता के रूपों में और अब वह नहीं रहेगा जिसे मनुष्य 'भगवान' कहते हैं। ये महान दिव्य प्राणी स्वयं नई सृष्टि में भाग लेने में सक्षम होंगे, लेकिन इसके लिए, उन्हें पृथ्वी पर जिसे हम अतिमानसिक पदार्थ कह सकते हैं, धारण करना होगा। यदि कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी दुनिया में वैसे ही बने रहना चुनते हैं, जैसे वे हैं, यदि वे खुद को शारीरिक रूप से प्रकट नहीं करने का निर्णय लेते हैं, तो पृथ्वी पर अतिमानसिक दुनिया के अन्य प्राणियों के साथ उनका संबंध सहयोगियों, दोस्तों, या समान के बराबर का रिश्ता होगा क्योंकि सर्वोच्च दिव्य सार पृथ्वी पर नई अतिमानसिक दुनिया के प्राणियों में प्रकट हुआ होगा।

एक शरीर के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए जब भौतिक पदार्थ अतिमानसिक हो जाएगा तो यह हीनता का कारण नहीं होगा, बल्कि इसके विपरीत इससे बहुत फायदा होगा जो अन्यथा प्राप्त नहीं किया जा सकता था।

यह सब भविष्य का है, एक ऐसा भविष्य जो शुरू हो चुका है, लेकिन जिसको समग्र

रूप से साकार करने में कुछ समय लगेगा। इस बीच, हम एक बहुत ही खास स्थिति में हैं , बेहद खास, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। हम एक नई दुनिया के जन्म में भाग ले रहे हैं , जो पूरी तरह से युवा है, पूरी तरह से कमजोर है, जो अपने सार में नहीं, बल्कि अपनी बाहरी अभिव्यक्ति में कमजोर है, जिसे अभी तक पहचाना नहीं गया है, अभी तक महसूस नहीं किया गया है, ज्यादातर लोगों ने इससे इनकार किया है, लेकिन यह वहाँ है, यह वहाँ विकसित होने का प्रयास कर रहा है और परिणाम को लेकर पूरी तरह आश्वस्त है।

फिर भी वहाँ तक पहुँचने का रास्ता एक नया रास्ता है जिसका पहले कभी पता नहीं था, कोई उस रास्ते से नहीं गया, कोई नहीं गया। यह एक शुरुआत है, एक सार्वभौमिक शुरुआत है इसलिए यह बिलकुल अप्रत्याशित और साहसिक कार्य है।)

अलीपुर जेल में श्री अरविन्द ने भगवान् से जो वरदान प्राप्त किया, उस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है-

'For the sake of humanity I have got the great boon from the Lord that the earth could have asked for.' According to the boon bestowed upon Sri Aurobindo by Lord Krishna-

'Soon an occult power will incarnate from the above world of consciousness and that will subdue the evil empire of death and falsehood and will establish His Almighty's Kingdom.'

(मानवता के लिए मुझे भगवान से वह महान वरदान प्राप्त हुआ है जो यह पृथ्वी मांग सकती थी।, भगवान कृष्ण द्वारा श्री अरविन्द को दिए गए वरदान के अनुसार-

"जल्द ही चेतना की उच्चतर दुनिया से एक गुप्त शक्ति अवतरित होगी और वह मृत्यु और झूठ के दुष्टसाम्राज्य को वश में कर लेगी और अपने सर्वशक्तिमान साम्राज्य की स्थापना करेगी।")

The Holy Bible also declares in clear words about the Divine transformation that is to take place in human beings. Following references from the Holy Bible confirm this heavenly change-

(1) Daniel 12:3 & 4 'And they that be wise shall shine as the brigthness of the firmament, and they that turn many to

righteousness as the stars for ever and ever.' 'But thou, O Daniel, shut up the words, and seal the book, even to the time of the end (many shall run to and fro) and knowledge shall be increased.'

(2) Proverbs 4:18- 'But the path of just is as the shining light, that shineth more and more unto the 'perfect day'.

(3) Matthew 13:43- 'Then shall the righteous shine forth as the sun in the 'kingdom' of their 'father'- 'Who hath ears to hear, let him hear.'

(4) 2 Corinthians 3:18- 'But we all, with open face beholding as in a glass, the glory of the lord, are changed into the same image from glory to glory, even as by spirit of the lord.'

(पवित्र बाइबिल भी मनुष्य में होने वाले दैवीय परिवर्तन के बारे में स्पष्टशब्दों में घोषणा करती है। पवित्र बाइबिल के निम्नलिखित सन्दर्भ इस स्वर्गीय परिवर्तन की पुष्टिकरते हैं।

दानिय्येल १२:३ और ४ - 'तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे। परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख। और बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ-ढांढ करेंगे, और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा।'

नीतिवचन ४:१८ परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक-अधिक बढ़ता रहता है।

मत्ती १३:४३ - उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे; जिस के कान हों वह सुन ले।

२ कुरिन्थियों ३:१८ परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं।)

बाइबिल में वर्णित उपर्युक्त परिवर्तन, तीसरे और अन्तिम पैगम्बर के अवतरण के कारण होगा। उस अन्तिम पैगम्बर की पहचान के सम्बन्ध में बाइबिल स्पष्ट भविष्यवाणी करती है कि 'जो व्यक्ति अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को दिखा-सुना देगा, सम्पूर्ण

ईसाई जगत् उसे तीसरा और अन्तिम पैगम्बर स्वीकार करेगा।'

No religion or philosophy, except the Indian Yoga system, knows the mode of seeing and hearing the indefinite past and future. Indian yoga system is the only philosophy in the world, which provides the practical method to acquire this knowledge.

In the third chapter of Patanjali Yoga Sutra, it is said that when a Yogi attains the power of 'Pratibh' (Spontaneous enlightenment from purity), he comes to know about everything. In the aphorism 33 of chapter 3, it is said-

'Pratibhadwa Sarvam' (3:33)

(By the power of 'Pratibh' (intuition) comes all knowledge.)

Intuitive knowledge is the highest kind of knowledge which simultaneously embraces the past, present and future with their states in one whole. The Yogi can know the fine, concealed and obscure objects by practicing 'Samyams', which creates intuitive power.

(भारतीय योग पद्धति को छोड़कर कोई भी धर्म या दर्शन अनिश्चित अतीत और भविष्य को देखने और सुनने की विद्या नहीं जानता। भारतीय योग पद्धति विश्व में एकमात्र दर्शन है, जो इस ज्ञान को प्राप्त करने की व्यावहारिक विधि प्रदान करती है।

पतंजलि योग सूत्र के तीसरे अध्याय में कहा गया है कि जब कोई योगी 'प्रातिभ' की शक्ति प्राप्त कर लेता है, तो उसे हर चीज के बारे में पता चल जाता है। अध्याय ३ के सूत्र ३३ में कहा गया है- 'प्रातिभ' की शक्ति से सारा ज्ञान प्राप्त होता है। सहज ज्ञान उच्चतम प्रकार का ज्ञान है जो एक साथ अतीत, वर्तमान और भविष्य को उनकी अवस्थाओं के साथ एक साथ समाहित करता है। योगी 'संयम' का अभ्यास करके सूक्ष्म, गुप्त और अस्पष्टवस्तुओं को जान सकता है, जिससे सहज शक्ति पैदा होती है।)

मैं एक भगवे वस्त्रधारी नाथ का शिष्य हूँ। मेरे मुक्तिदाता सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ

जी योगी (ब्रह्मलीन) के निर्देशानुसार, मैं मानवता में 'अद्वैत दर्शन' को मूर्त रूप देने संसार में निकला हूँ। विश्व के सभी जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को पूर्ण सत्य की जानकारी हेतु, सप्रेम आमंत्रित करता हूँ।

१२४.
भारतीय योग दर्शन
(०२ फरवरी २००२)

आज सम्पूर्ण विश्व में भारतीय योग दर्शन के नाम पर जो शारीरिक कसरत करवाई जा रही है, उसका भारतीय योग दर्शन में वर्णित योग से कोई सम्बन्ध नहीं है। भारतीय योग का तो मूल उद्देश्य 'मोक्ष' है। पातंजलि योग दर्शन में रोग का कहीं भी वर्णन नहीं मिलेगा।

भारतीय योग दर्शन में जिस योग का वर्णन है, उसका मूल उद्देश्य मोक्ष है। मोक्ष तो मनुष्य का उच्चतम विकास है। मोक्ष का अर्थ है, मनुष्य अपने जीवन काल में ही पूर्णता प्राप्त कर ले। इस स्थिति पर पहुँचने पर साधक पूर्ण शान्ति अनुभव करता है, उसे किसी प्रकार का शारीरिक और मानसिक कष्ट नहीं रहता। यही नहीं साधक सभी प्रकार के नशों से सहज में, बिना किसी प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्ट के पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है।

सिद्धयोग, नाथ मत के योगियों की देन है। इसमें सभी प्रकार के योग सम्मिलत हैं, इसलिए इसे 'पूर्णयोग' या 'महायोग' भी कहते हैं। इस सम्बन्ध में महायोगी श्री गोरखनाथ जी ने कहा है- 'भारतीय योग वेदरूपी कल्पतरु का अमर-फल है, इससे साधक के त्रिविध ताप (१) आधिदैहिक (२) आधिभौतिक (३) आधिदैविक नष्ट हो जाते हैं।'

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में 'शक्तिपात-दीक्षा' सर्वोत्तम है। यह भारतीय योग दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। इसमें गुरु चार प्रकार से साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है- (१) साधक के विभिन्न चक्रों का स्पर्श करके (२) मंत्र दीक्षा (३) साधक के गुरु से दृष्टि मिलाने मात्र से (४) मानस दीक्षा, इसमें साधक अपने मन से किसी को गुरु मानकर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, जैसे कबीर, एकलव्य।

शक्तिपात दीक्षा से जब साधक की कुण्डलिनी-शक्ति जाग्रत हो जाती है, तब वह जाग्रत शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और सभी प्रकार की यौगिक कियाएँ जैसे आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वयं सीधा अपने नियंत्रण में करवाती है। साधक इनमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। भौतिक विज्ञान को यह एक खुली चुनौती है। जब गुरु कृपा-रूपी शक्तिपात-दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो वह ऊर्ध्व-गमन करने लगती है। इस प्रकार वह छह चक्रों और तीनों ग्रंथियों- ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि एवं रुद्रग्रन्थि का भेदन करती हुई, साधक को समाधि-

स्थिति, जो कि समत्व बोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है।

समाधिस्थ होने के लिए पहली शर्त है, पूर्ण रोग-मुक्ति। अगर शरीर में किसी प्रकार का रोग है तो ध्यान हर समय रोग की तरफ रहेगा, साधक समाधिस्थ हो ही नहीं सकता। वह जाग्रत कुण्डलिनी-शक्ति साधक के उसी अंग की यौगिक कियाएँ करवाएगी, जो बीमार है। इस प्रकार साधक के सभी शारीरिक रोग पूर्ण रूप से ठीक हो जाते हैं। मानसिक रोग भी पूर्ण रूप से ठीक हो जाते हैं।

यह भारतीय योग दर्शन का उच्चत्तम दिव्य विज्ञान है। हमारे दर्शन में कई संतों ने कहा है कि ईश्वर के नाम में नशा होता हैं। इस सम्बन्ध में संत सद्गुरुदेव श्री नानक देव जी महाराज ने कहा है-

भांग धतूरा नानका उतर जाय परभात।
'नाम खुमारी' नानका चढ़ी रहे दिन-रात॥

इसी प्रकार संत कबीरदास जी ने कहा है-

'नाम-अमल' उतरै न भाई,
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,
नाम-अमल दिन बढ़े सवायो।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में, योगी को जो परम शान्ति प्राप्त होती है, उसका कारण आनन्द कहा है। गीता के पाँचवें अध्याय के २१वें श्लोक तथा छठे अध्याय के १५, २१, २७ एवं २८ वें श्लोक में इसे अक्षय आनन्द, परमानन्द पराकाष्ठवाली शान्ति, अनन्त आनन्द, अति उत्तम आनन्द एवं परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द कहा हैं।

इस प्रकार सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त मंत्र एवं ध्यान योग के द्वारा साधक के सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग पूर्ण रूप से ठीक हो जाते हैं। यही नहीं, साधक को सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार के कष्ट के, सहज में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। यह परिवर्तन भी वैदिक दर्शन अर्थात् हिन्दू दर्शन के ठोस सिद्धान्तों पर आधारित है। हिन्दू-धर्म में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। कल्पना करना तो शेख चिल्ली (एक मूर्ख जो बड़ी-बड़ी कल्पित व हवाई योजनाएँ बनाता हो, जिसका धरातल पर कोई आधार नहीं हो।) का काम है।

वैदिक दर्शन में सृष्टि उत्पत्ति का कारण सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को माना है।

इस प्रकार हर मनुष्य में ये तीनों वृत्तियाँ होती हैं। हरेक में एक वृत्ति प्रधान होती है। जो वृत्ति प्रधान होती हैं, वह जिस खान-पान को पसन्द करती हैं, उस व्यक्ति को उन्हीं वस्तुओं को खाना-पीना पड़ता है। इन तीनों वृत्तियों के खान-पान के सम्बन्ध में श्री कृष्ण ने गीता के १७वें अध्याय के ८, ९, एवं १० वें श्लोक में विस्तार से वर्णन किया हैं। और गीता ही में १४ वें अध्याय के १० वें श्लोक में इन वृत्तियों के परिवर्तन की बात कही गई है। पतंजलि योग दर्शन में भी ऋषि ने कैवल्यपाद के दूसरे सूत्र में वृत्ति बदलने के सिद्धान्त को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है।

इस प्रकार भारतीय योगदर्शन, मानव जाति के पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि बताता है। आज संसार में असंख्य बीमारियाँ असाध्य मानी जा रही हैं, परन्तु भारतीय योग दर्शन के लिए कोई रोग असाध्य नहीं हैं। कुण्डलिनी द्वारा जो योग करवाया जाता है, उससे मनुष्य के सभी अंग पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाते हैं, अतः उनमें अभूतपूर्व ढंग से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है। इस योग में साधक को कई प्रकार की यौगिक मुद्राएँ स्वतः होती हैं। इनमें एक मुद्रा का नाम 'खेचरी मुद्रा' है। इसमें साधक की जीभ पीछे खिंचती है और सख्त होकर ऊपर की तरफ तालू में धंस जाती है। इस प्रकार तालू के अन्दर जीभ एक विशिष्ट स्थान को दबाती है, इस दबाव के कारण ऊपर से एक विशेष प्रकार का रस टपक कर साधक के मुँह में आ जाता हैं। साधक व्यावहारिक रूप से उसका स्वाद मुँह में अनुभव करता है। नाथ योगियों ने इसे अमृत कहा है। इस सम्बन्ध में महायोगी श्री गोरखनाथ जी ने कहा हैं-

गगन मण्डल में ऊँधा कुँआ, तहाँ अमृत का वासा।
सगुरा होई सो भरि-भरि पीवे, निगुरा जाय पियासा॥

इस प्रकार भारतीय योग दर्शन में वर्णित योग, मानव जाति की सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के साथ-साथ, जन्म-मरण के चक्कर से भी पीछा छुड़ा देता है।

मैं एक साधारण गृहस्थ व्यक्ति हूँ। मेरे मुक्तिदाता सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहेतु की कृपा के कारण मुझ में अनायास ही शक्तिपात की सामर्थ्य आ गई है। भारत में मेरे लगभग ७-८ लाख स्त्री-पुरुष शिष्य हैं। इनमें हजारों की संख्या में इंजीनियर, डॉक्टर तथा विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक सम्मिलित हैं। मेरे शिष्यों में सभी धर्मों और जातियों के लोग हैं। सभी में भारतीय योग दर्शन में वर्णित उपर्युक्त सिद्धान्तों के अनुसार अभूतपूर्व परिवर्तन आ रहे हैं। भौतिक विज्ञान जिन रोगों को असाध्य मानता है, वे सभी पूर्ण रूप से ठीक हो रहे हैं।

श्री अरविन्द ने यौगिक शक्तियों से कई असाध्य रोगियों को रोग मुक्त किया था, परन्तु श्री अरविन्द ने स्पष्ट शब्दों में कहा हैं कि- 'मैं Supramental Force का उपयोग इस कार्य में नहीं कर पा रहा हूँ।' श्री अरविन्द कहते हैं- 'As for the force I shall write some other time. I have told you that it is not always efficacious but works under conditions like all forces, it is only the 'Supramental Force' that works absolutely because it creates its own conditions. But the force I am using is a force that has to work under the present world conditions.'

(जहाँ तक 'शक्ति' की बात है तो मैं इसके बारे में फिर कभी लिखूंगा। मैंने आपको बताया है कि यह हमेशा प्रभावोत्पादक नहीं होती है लेकिन सभी शक्तियों की तरह किन्ही परिस्थितियों में काम करती है। केवल 'अतिमानसिक शक्ति' ऐसी शक्ति है जो पूरी तरह से काम करती है क्योंकि यह अपनी स्थितियाँ स्वयं बनाती है। लेकिन मैं जिस शक्ति का उपयोग कर रहा हूँ वह एक ऐसी शक्ति है जिसे वर्तमान विश्व परिस्थितियों में काम करना होगा।)

श्री अरविन्द ने श्री कृष्ण को Supramental Force कहा है। मैं तो मेरे सद्‌गुरुदेव की कृपा से, उसी परमसत्ता (Supramental Force) की शक्ति से सम्पूर्ण मानव जाति में यह परिवर्तन ला रहा हूँ। इससे मानव जाति के सभी रोग ठीक हो रहे हैं, जिन्हे भौतिक विज्ञान असाध्य कहता है।

पूर्ण सत्य की जानकारी हेतु, वेबसाइट- www.the-comforter.org पर जाने का कष्टकरें।

१२५.
अमेरिकनों को प्रेम-संदेश
(०९ जून २००३)

यीशु के पश्चात् पश्चिमी जगत् में निरन्तर खूनी संघर्ष चल रहा है। उसका मूल कारण, उनकी पवित्र धार्मिक पुस्तक बाइबिल की भविष्यवाणियों पर आधारित है। भविष्यवाणियों के अनुसार तीसरे और अन्तिम पैगम्बर के बाद 'कयामत' ही आवेगी। यीशु के ५०० साल बाद, मोहम्मद साहब ने अपने आपको तीसरा और अन्तिम पैगम्बर घोषित कर दिया, परन्तु मूसा और यीशुवादियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उनकी मान्यता है, वह आने ही वाला है; समय उन्हें ज्ञात नहीं।

११ सितम्बर, २००१ को अमेरिकनों पर हुए क्रूर और निर्दयी आक्रमण ने गिरजाघरों की नींव हिला दी। आज सम्पूर्ण अमेरिका मृत्यु-भय से थर-थर काँप रहा है। इस क्रूर आक्रमण ने उन्हें इतना भयभीत किया कि सभी अमेरिकनों को 'फोबिया' नामक वायरस ने जकड़ लिया। इस बीमारी में मनुष्य को अकारण मृत्यु-भय लगता है। अगर अमेरिकनों की यही स्थिति कुछ दिन और चली तो सम्पूर्ण विश्व को खतरा पैदा हो सकता है। क्या इस्लाम के वायरस का रोगी अमेरिका, हूणों के अभी-अभी प्रकट हुए वायरस 'सार्स' का आक्रमण सहन कर सकेगा? सम्पूर्ण विश्व के लिए यह शुभ संदेश नहीं है।

अमेरिका इतना भयभीत हुआ कि उसने डर के मारे यीशु को पेंटागन में लाकर बैठा दिया। ११ सितम्बर, २००१ को याद करो, क्या उस दिन पेंटागन पूर्ण सुरक्षित रहा था? ऐसा भयभीत अमेरिका विश्व के लिए खतरा है। इसका भय तत्काल खत्म होना बहुत जरूरी है। यह शुभ कार्य यीशु के अतिरिक्त कोई कर ही नहीं सकता। अतः मानवता की रक्षा के लिए यीशु को पुनः अवतरित होना ही पड़ेगा।

मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों और भौतिक आधार की घटनाओं से स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि यीशु 'तेल अवीव' में प्रकट हो चुका है। मैं, सभी अमेरिकनों और इजराइल के सभी यहुदियों से प्रेमपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि प्रत्येक शुक्रवार की शाम चर्च में जाकर या अपने घर में, बन्द कमरे में बैठकर, जीवित यीशु के सामने मोम बत्तियाँ जलाकर, अपनी-अपनी आँखें बन्द करके, करुण पुकार करें कि "हे प्रभु! शीघ्र पृथ्वी पर पधारकर, हमारे प्राणों की रक्षा करो।" मुझे पूर्ण विश्वास है, वह दयालु एक क्षण की भी देरी नहीं करेगा। सभी के अन्दर,

पुनर्जीवित यीशु, सदेह (Physically) दिखेगा तथा भौतिक जगत् में सभी का पथ प्रदर्शन करेगा। १८ सालों के अन्तराल के बाद, ३० साल के सुन्दर दिखने वाले यीशु का आँखें बन्द करके, मनमंदिर में ध्यान करने पर यीशु दर्शन देगा, क्रूस पर लटका यीशु नहीं।

विश्व के सभी यहूदी स्त्री-पुरुष को तो प्रार्थना करनी बहुत आवश्यक है। पुनर्जीवित यीशु सभी को उनकी अपनी-अपनी मातृ भाषाओं में बोलकर, अपना शुभ-संदेश सुनाएगा।

पवित्र बाइबिल में वर्णित भविष्यवाणी है कि स्वर्ग (पिता) पृथ्वी (माता) को आलिंगन कर चूम लेगा और वे दोनों एक हो जावेंगे।

भजन संहिता ८५:१०,११

"करुणा और सच्चाई आपस में मिल गये हैं। धर्म और मेल (Peace, शांति) ने आपस में चुम्बन किया है।"

"पृथ्वी में से सच्चाई उगती है और स्वर्ग से धर्म झुकता है।"

इस प्रकार दोनों तत्त्वों के एक दूसरे में लय हो जाने के कारण, जिनको कि कभी, किसी प्रकार से एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकेगा, स्वर्ग नीचे उतरकर, पृथ्वी पर हमेशा-हमेशा के लिए बस जावेगा।

क्या वह समय आरम्भ हो चुका है ? प्रभु सम्पूर्ण विश्व को शुभाषीश दें।

१२६.

सम्पूर्ण मानव जाति शीघ्र ही एड्स से पूर्ण मुक्त होगी।

(१२ दिसम्बर २००३, बीकानेर)

शैव सिद्धान्त में शक्तिपात दीक्षा का विधान है। इस दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है, जो सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों से पूर्ण मुक्त कर देती है। यही नहीं, वृत्तियों में परिवर्तन के कारण, साधक बिना किसी प्रकार के कष्ट के सभी प्रकार के नशों से सहज में मुक्त हो जाता है।

जाग्रत हुई कुण्डलिनी, साधक का शरीर, प्राण, मन, एवं बुद्धि अपने अधीन कर लेती है, और सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ,एवं प्राणायाम सीधा अपने नियंत्रण में करवाती है। साधक चाहकर भी इनमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता। भारतीय योगदर्शन का यह दिव्य विज्ञान, भौतिक विज्ञान के लिए खुली चुनौती है।

भारतीय योगदर्शन, साधक के त्रिविध ताप-आधि-भौतिक, आधि-दैहिक व आधि-दैविक को पूर्ण रूप से शान्त करने की क्रियात्मक विधि बताता है। इससे बाहर कोई रोग नहीं होता है। यही कारण है, भौतिक विज्ञान जिन बीमारियों को असाध्य कहता है, वे सभी ठीक हो रही हैं।

श्री बद्रीनारायण नामक एड्स रोगी, मेरी तस्वीर का ध्यान करने से ठीक हो गया। तस्वीर तो निर्जीव वस्तु है, उसने सजीव प्राणी में यह चमत्कारपूर्ण कार्य कैसे कर दिया? इस सम्बन्ध में भौतिक विज्ञान के जीव वैज्ञानिकों को शोध करना चाहिए।

अतः अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, सम्पूर्ण धर्मों के धर्माचार्यों एवं जीव वैज्ञानिकों को, पूर्ण सत्य की जानकारी हेतु सप्रेम आमंत्रित करता है। अगर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इस क्रांतिकारी परिवर्तन की फिल्म बनाकर मानव शान्ति के लिए प्रयोग करना चाहे तो संस्था इस क्रियात्मक योग की डॉक्यूमेंट्री फिल्म (वृत्त चित्र) बनाने की अनुमति दे सकती है। इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी संस्था से सम्पर्क करके ली जा सकती है। ईसाई दर्शन भी मानवता में इस दिव्य परिवर्तन को स्वीकार करता है।

१२७.
विश्व स्वास्थ्य संगठन को क्रांतिकारी संदेश

नशा, आज सम्पूर्ण विश्व के लिए सबसे बड़ी समस्या है। विशेष तौर से विकसित देश इसकी पकड़ में बुरी तरह से जकड़े हुए हैं। भौतिक विज्ञान इससे मुक्ति दिलवाने में पूर्ण रूप से असफल हो चुका है। इसके अतिरिक्त दमा, गठिया और कैंसर जैसे अनेक रोग असाध्य बने हुए, संसार को दुःखी किये हुए हैं। एड्स जैसा शैतान मानव के लिए मृत्यु का पैगाम ही है। इस प्रकार रोग सुरसा के मुख की तरह फैल रहे हैं और मानव असहाय बना तड़प रहा है। ऐसी ही स्थिति पाँच साल और चल गई तो मनुष्य जाति के लोप होने का खतरा पैदा हो जाएगा। यह बात पूर्ण सत्य है कि भौतिक विज्ञान सही दिशा में प्रगति कर रहा है, परन्तु विज्ञान अब और अधिक आगे बढ़ने में सफल नहीं हो रहा है अर्थात् एक स्थान पर आकर स्थिर हो गया है। वैज्ञानिक असंख्य मात्रा में धन खर्च करके भी प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। भौतिक विज्ञान मानवता में जितना विकास कर सकता था, कर चुका।

दो तरह की विद्या हैं- अपरा और परा। अपरा विद्या का जितना विकास मानव जाति में होना था, हो चुका। अब मानव को पूर्णता प्राप्त करने के लिए, परा मनोविज्ञान का सहारा लेना ही होगा। वैदिक मनोविज्ञान अर्थात् अध्यात्म विज्ञान के अनुसार मानव शरीर की संरचना सात प्रकार के तत्त्वों से हुई है, जिनके अन्दर आत्मा अन्तर्निहित है, वे हैं- (१) अन्नमयकोश (Matter) (२) प्राणमयकोश (Life Force) (३) मनोमयकोश (Mind) (४) विज्ञानमय कोश (Intellect) (५) आनन्दमयकोश (Bliss) (६) चित्मयकोश (Becoming) (७) सत्मयकोश (Being)।

महर्षि श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार- "पश्चिम मानवता में जितना विकास कर सकता था, कर चुका।" अर्थात् वैदिक मनोविज्ञान में वर्णित सात कोशों में से प्रथम चार का विकास अच्छी प्रकार कर लिया है। मानवता में पूर्णता के लिए सातों कोशों का पूर्ण विकास आवश्यक है। मानव के अन्तिम तीनों कोशों 'सत्+चित्+आनन्द= सच्चिदानन्द' का पूर्ण विकास, वैदिक दर्शन ही कर सकता है। संसार का कोई राष्ट्र या धर्म, इस कार्य को करने में सक्षम नहीं है। वैदिक दर्शन ही 'सोऽहम्' की बात कहता है। अब मानवता में यह अन्तिम विकास होना सुनिश्चित है। मानवता में इस विकास को संसार की कोई शक्ति नहीं रोक

सकेगी। भविष्य में मानव जाति में होने वाले इस दिव्य रूपान्तरण को ही देख श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि "आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।"

वैदिक दर्शन के अनुसार मानवता में यह विकास, सद्गुरु से दीक्षा लेने के बाद ही होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार, मनुष्य के पहले जन्मदाता भौतिक माता-पिता होते हैं, जो इस हाड़-मास के शरीर की रचना करते हैं तथा दूसरे जन्म का जन्मदाता गुरु होता है, जिससे दीक्षा लेकर साधक द्विज बनता है अर्थात् आत्म साक्षात्कार करता है। वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार प्रथम चार कोश-अन्न, प्राण, मन और विज्ञान पृथ्वी तत्त्व के गुरुत्वाकर्षण में हैं। अन्तिम तीनों कोश सत्, चित् व आनन्द आकाश तत्त्व के गुरुत्वाकर्षण में हैं। उस लोक में दुःख, कष्ट,और पीड़ा नाम की कोई वस्तु नहीं है। अतः जब तक मानव-जाति में सातों कोश विकसित नहीं होंगे, तब तक शान्ति मात्र मृगमरीचिका ही रहेगी। क्योंकि वैदिक धर्म ही ईश्वरवाद का जनक है, इसलिए यह काम केवल भारत ही करेगा। इस दिव्य ज्ञान का दान तो सम्पूर्ण विश्व को अनादिकाल से भारत ही करता आया है, और आगे भी भारत ही करेगा।

भारतीय दर्शन के अनुसार गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में शक्तिपात दीक्षा उत्तम है। यह हिन्दू दर्शन अर्थात् वैदिक दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। इस दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। उस जाग्रत हुई शक्ति पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व होता है, अतः उसका नियंत्रण और संचालन, गुरु स्वयं करते हैं। जाग्रत हुई कुण्डलिनी ऊर्ध्व गमन करती हुई तीनों ग्रंथियों-ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि एवं रूद्रग्रंथि तथा छह चक्रों का वेधन(भेदन) करती हुई, साधक को समाधि स्थिति अर्थात् समत्व बोध की स्थिति में पहुँचा देती है।

कुण्डलिनी द्वारा जिस योग का संचालन होता है, उसे महायोग अर्थात् पूर्ण योग कहते हैं। इस योग में साधक का सहयोग या असहयोग कुछ भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत्त (अधीन) कर लेती है तथा सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम, सीधा अपने नियंत्रण में स्वयं करवाती है।

इस घोर कलियुग में मानवता में, वैदिक दर्शन का क्रियात्मक रूप से प्रकट होना, बहुत ही आश्चर्य की बात है।

जाग्रत कुण्डलिनी ऊर्ध्वगमन करती हुई, सहस्रार में पहुँचने का प्रयास करती है। ऊपर जाने के लिए किसी सहारे की आवश्यकता होती है। योग दर्शन में मोटे तौर से पाँच प्रकार के

वायु का वर्णन है-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। अपान वायु नाभि से नीचे की तरफ चलता है, अतः जब तक वह ऊपर की तरफ नहीं चलेगा, कुण्डलिनी मूलाधार से ऊपर की तरफ गति नहीं करेगी। अपान वायु की गति ऊपर की तरफ मोड़ने के लिए, योग में तीन प्रकार के बन्धों का वर्णन है। पहला बन्ध मूलाधार में लगता है, जिसके कारण कुण्डलिनी ऊपर की तरफ बढ़ना प्रारम्भ हो जाती है। पूरे शरीर की यौगिक क्रियाएँ साथ-साथ निरन्तर स्वयं होती रहती हैं। साधक तो गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र का मानसिक जप निरन्तर करता रहता है तथा आँखें बन्द करके आज्ञाचक्र पर गुरु का ध्यान करता है। बाकी सारी यौगिक क्रियाएँ कुण्डलिनी सीधा अपने नियंत्रण में स्वयं करवाती है। साधक उसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता। नाभिचक्र से कुण्डलिनी के ऊपर जाते ही दूसरा बन्ध नाभि में स्वयं लग जाता है, जिसे 'उड़ियान-बन्ध' कहते हैं। इसके बाद कुण्डलिनी ज्यों ही कण्ठकूप से ऊपर निकलती है, तीसरा बन्ध स्वयं लग जाता है, जिसे 'जालन्धर-बन्ध' कहते हैं। इसके बाद शरीर के ऊपरी हिस्से की यौगिक क्रियाएँ होना असम्भव है, अतः फिर प्राणायाम स्वयं होने लगता है।

प्राणायाम के पूर्ण होने पर कुण्डलिनी आज्ञाचक्र से ऊपर सच्चिदानन्द के लोक में प्रवेश कर जाती है। इस प्रकार धीरे-धीरे साधक समाधिस्थ होने लगता है। समाधि स्थिति में पहुँचने की पहली शर्त है पूर्ण रोग मुक्ति, क्योंकि रोग रहेगा तो साधक का ध्यान रोग की तरफ जाएगा, राम की तरफ नहीं जाएगा। इस प्रकार कुण्डलिनी यौगिक क्रियाओं द्वारा सभी प्रकार के शारीरिक रोगों जैसे-गठिया, अस्थमा, डायबिटीज(शुगर, मधुमेह) आदि सभी रोगों से पूर्ण मुक्ति दिला देती है।

दूसरा नम्बर आता है मनोरोगों का। वैदिक दर्शन में (योग दर्शन में) सभी प्रकार के रोगों से मुक्त होने का ठोस आधार है। सभी प्रकार के मनोरोग भी ठोस दार्शनिक आधार के कारण ठीक होते हैं। ईश्वर के नाम में नशा होता है। गुरु जो ईश्वर का नाम जपने को कहता है, उससे साधक चौबीसों घण्टे एक प्रकार के आनन्द में रहता है। इस आनन्द का वर्णन भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के पाँचवें अध्याय के २१ वें तथा छठे अध्याय के १५वें, २१वें, २७ वें तथा २८ वें श्लोक में विस्तार से किया है। संतों ने इसे 'नाम खुमारी' की संज्ञा दी है। संत सद्गुरुदेव श्री नानकदेव जी महाराज ने इस सम्बन्ध में कहा है-

भांग-धतूरा नानका, उतर जाय परभात।
नाम-खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।।

इस सम्बन्ध में कबीर दास जी ने भी कहा है-

'नाम-अमल' उतरै न भाई।

और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,

'नाम-अमल' दिन बढ़ै सवायो।

इस प्रकार नाम खुमारी के कारण साधक का मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है तथा क्रोध, चिन्ता, चिड़चिड़ापन पूर्णरूप से खत्म हो जाता है। जिसके कारण हाईब्लड प्रेशर, पागलपन, उन्माद, अनिद्रा इत्यादि सभी प्रकार के मनोरोग बिना दवा के ही पूर्णरूप से खत्म हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के नशों से बिना किसी प्रकार के कष्ट के, सहजरूप से मुक्ति मिल जाती है। यह मुक्ति भी ठोस दार्शनिक आधार पर होती है। वैदिक दर्शन के अनुसार मनुष्य मात्र तीन वृत्ति (जाति) के होते हैं-सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। हर व्यक्ति में तीनों वृत्तियाँ होती हैं, परन्तु उनमें से जो अधिक प्रभावशाली होती है, वह व्यक्ति उसी जाति का होता है। जैसे किसी में रजोगुण प्रधान होता है, किसी में सतोगुण और किसी में तमोगुण। हर वृत्ति (जाति) के अलग-अलग खानपान होते हैं, जिसका वर्णन गीता के १७ वें अध्याय के ८,९,१०वें श्लोक में विस्तार से किया गया है। मनुष्यों की वृत्तियाँ बदली जा सकती है, उसका वर्णन भी गीता के १४ वें अध्याय के १० वें श्लोक में विस्तार से किया गया है।

शक्तिपात दीक्षा से ज्यों ही साधक की कुण्डलिनी जाग्रत होती है, रजोगुण और तमोगुण वाली वृत्तियाँ पूर्णरूप से शान्त हो जाती हैं और साधक पूर्णरूप से सात्विक वृत्ति (जाति) में बदल जाता है, और उसके खान-पान स्वतः बदल जाते हैं। वृत्ति (जाति) बदलने की बात पतंजलि योगदर्शन के कैवल्यपाद के दूसरे सूत्र में भी कही गई है। इस प्रकार साधक की वृत्ति बदल जाने के कारण बीड़ी-सिगरेट, भांग, गांजा, सुल्फा, शराब और हेरोइन जैसे नशों से बिना किसी प्रकार के कष्ट के सहज में मुक्ति मिल जाती है। सभी नशों से आन्तरिक भाव से घृणा हो जाती है तथा उन पदार्थों से भयंकर बदबू आने लगती है। इस प्रकार साधक अपने जीवन में फिर कभी उन्हें ग्रहण नहीं करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए कटिबद्ध है, इसलिए मैं इस संस्था के कर्णधारों को यह क्रांतिकारी संदेश दे रहा हूँ। सभी प्रकार की औपचारिकताओं में न फंसकर, पूर्ण सत्य की जानकारी स्वयं प्राप्त करने के लिए शीघ्र अपना प्रेक्षक भेजें। मात्र इसी दिव्य ज्ञान से विश्व शान्ति संभव होगी।

१२८.
भारतीय योग दर्शन-२
(१२ जून २००४)

सेवा में,

प्रधानमंत्री,

भारत सरकार,

नई दिल्ली, भारत

विषयः- भारतीय योग दर्शन के आधार पर मानव जाति को एड्स से मुक्ति!

आज मानव जाति विभिन्न प्रकार के असाध्य रोगों जैसे कि कैंसर, एड्स, गठिया, डाइबिटिज, अस्थमा आदि से पीड़ित है। भौतिक विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है परन्तु फिर भी वह आजतक इन बीमारियों का इलाज नहीं ढूँढ़ पाया है। इसी के साथ आज एड्स भयानक गति से संसार में फैल रहा है। इन्हीं कारणों से मानव जाति भारतीय योग दर्शन की ओर आशान्वित है क्योंकि भारतीय योग दर्शन मनुष्य के त्रिविध ताप (आधि दैहिक, आधि भौतिक एवं आधि दैविक) को शांत करने की क्रियात्मक विधि बताता है। आज योग के नाम पर जो शारीरिक कसरत करवाई जा रही है, उसका भारतीय योग दर्शन से कोई लेना-देना नहीं है। भारतीय योग दर्शन में वर्णित योग का मुख्य उद्देश्य मोक्ष है परन्तु मोक्ष की स्थिति तक पहुँचने के लिए सम्पूर्ण रोगों का नाश होना जरूरी है।

गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु, शक्तिपात दीक्षा द्वारा साधक की कुण्डलिनी जाग्रत करता है। सभी प्रकार की दीक्षा में शक्तिपात दीक्षा सर्वोत्तम मानी जाती है। यह दीक्षा चार प्रकार से दी जाती है।

(१) स्पर्श दीक्षा (२) मंत्र दीक्षा (३) दृष्टि दीक्षा (४) मानस (संकल्प-दीक्षा)

हिन्दू दर्शन के अनुसार सद्गुरु वह है जो साधक के अन्दर निहित सुप्त कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करके उसे आत्मसाक्षात्कार कराता है। शास्त्रों के अनुसार कुण्डलिनी जगत् जननी है, यह परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, यह सर्वज्ञ है, सर्वत्र है और सर्वशक्तिशाली है।

कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने पर ध्यान के दौरान साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने वश में कर लेती है और विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे- आसन, बंध, मुद्रा,

प्राणायाम आदि स्वयं करवाती है और साधक इन्हें चाहकर भी रोक नहीं सकता।

इसे सिद्धयोग या महायोग भी कहते हैं क्योंकि इसमें कुण्डलिनी शक्ति स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाएँ करवाकर, बिना दवाई के साधक को सभी प्रकार के रोगों से मुक्त कर देती है। इस योग के संबंध में महायोगी गोरखनाथ जी ने कहा है- 'यह योग वेद रूपी कल्पतरु का अमर फल है। यह साधक के त्रिविध ताप (आधि दैहिक, आधि भौतिक एवं आधि दैविक) शांत करता है।'

जब तक कुण्डलिनी मनुष्य शरीर में सुप्त अवस्था में रहती है, मनुष्य का व्यवहार पशु समान रहता है। जब तक शक्तिपात दीक्षा द्वारा यह शक्ति जाग्रत न हो जाए तब तक मनुष्य परम ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। सद्गुरु की कृपा से कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने पर सभी चक्रों और ग्रंन्थियों का भेदन करती है और इस प्रकार साधक 'समत्वबोध' की स्थिति प्राप्त कर लेता है। इसी को हिन्दू दर्शन में मोक्ष कहते हैं। महर्षि अरविन्द ने इसे पार्थिव अमरत्व कहा है।

भारतीय योग दर्शन के अनुसार कुण्डलिनी शक्ति स्वयं इन यौगिक क्रियाओं का नियंत्रण और संचालन करती है। गुरु का इस जाग्रत कुण्डलिनी पर पूर्ण अधिपत्य होता है। यह योग साधक के त्रिविध ताप शांत करता है जिससे साधक को सभी प्रकार के शारीरिक रोगों से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही सभी प्रकार की मानसिक बीमारियों से भी छुटकारा मिल जाता है। सिद्धयोग में जाग्रत कुण्डलिनी साधक को केवल उसी अंग का योग करवाती है जो बीमार है, इसलिए प्रत्येक साधक को उसके रोग के अनुसार अलग-अलग प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होती हैं। यह यौगिक क्रियाएँ समस्त रोग ठीक करने के साथ-साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को भी बढ़ाती हैं। मानव जाति में यह बदलाव ठोस हिन्दू दर्शन के आधार पर आ रहा है।

मैं एक भगवाधारी आईपंथी नाथ का शिष्य हूँ। मेरे गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी के आदेश से संसार में मानव जाति को शक्तिपात दीक्षा देने के लिए निकला हूँ। मेरे मुक्तिदाता गुरुदेव की अहेतु की कृपा से मुझ जैसे साधारण व्यक्ति में 'शक्तिपात' का सामर्थ्य आ गया। भारत में मेरे लाखों शिष्य हैं जिन्हें पतंजलि योग सूत्र में वर्णित सिद्धियाँ प्राप्त हो रही हैं। मेरे ज्यादातर शिष्य उच्च शिक्षा प्राप्त हैं जिनमें से हजारों इंजिनियर, डॉक्टर और वैज्ञानिक हैं।

मैं अपने शिष्यों को भगवान् के नाम की दीक्षा देता हूँ- एक मंत्र देता हूँ जिसे उन्हें मानसिक रूप से जपना होता है। मानसिक मंत्र जाप की यह आराधना भी हमारे ठोस दर्शन पर

आधारित है।

सभी ईश्वरवादी धर्म शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति को स्वीकार करते हैं। मैं जिस मंत्र की दीक्षा देता हूँ उससे साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। कुण्डलिनी मनुष्य शरीर में रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से में मूलाधार में स्थित होती है। यह जाग्रत होते ही सुषुम्ना नाड़ी के अन्दर से ऊपर की ओर अपनी यात्रा शुरु कर देती है। पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरुद्ध होता है। इसको साफ करने के लिए जगत् जननी कुण्डलिनी साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ करवाती है। जाग्रत होने पर कुण्डलिनी साधक का शरीर, प्राण, मन, और बुद्धि अपने वश में कर लेती है और विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे आसन, बंध, मुद्राएँ, प्राणायाम आदि स्वयं करवाती है। साधक चाहकर भी इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। साधक तो आँखें बंद करके गुरु को आज्ञाचक्र पर देखते हुए, गुरु द्वारा दिए मंत्र का मन ही मन जाप करता है। चूंकि ये मानव जाति में होने वाला बदलाव है इसलिए इसमें धर्म, जाति, वर्ण आदि का कोई महत्त्व नहीं है। साधक अपने धर्म में रहते हुए यह साधना कर सकता है।

इस योग से अनेक असाध्य शारीरिक रोग जैसे कि एड्स, कैंसर, हेपेटाईटिस, गठिया, डाईबिटिज, अस्थमा आदि स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाओं से ठीक हो जाते हैं। मेरे हजारों शिष्य ऐसे अनेक रोगों से ठीक हो चुके हैं जिन्हें मेडिकल सांइस असाध्य मानता है। स्वतः होने वाली ये यौगिक क्रियाएँ केवल उन्हीं अंगों में होती हैं जो ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। यदि साधक पूर्ण रूप से स्वस्थ है तो कोई यौगिक क्रिया नहीं होगी और सीधे समाधि लगेगी।

आज समस्त मानव जाति में अशांति फैली हुई है। लोगों में भय की स्थिति बनी हुई है जिसके अनेक कारण हैं। पिछले कुछ वर्षों में मानसिक तनाव से संबंधित बीमारियाँ बढ़ी हैं। प्रत्येक व्यक्ति तनाव और कष्टमें है। पश्चिम में लोग इससे गंभीर रूप से ग्रसित हैं परन्तु भौतिक विज्ञान के पास मानसिक तनाव को ठीक करने का कोई इलाज नहीं है। डॉक्टर मानसिक रोगी को नशे की दवा दे देते हैं, जिससे व्यक्ति को कुछ देर के लिए आराम मिलता है परन्तु दवाई का असर खत्म होते ही व्यक्ति की स्थिति पहले जैसी हो जाती है।अध्यात्म विज्ञान पर आधारित वैदिक मनोविज्ञान मानसिक तनाव को पूर्ण रूप से ठीक करने की एक क्रियात्मक विधि बताता है। भारतीय योग दर्शन भी भौतिक विज्ञान की तरह, मानसिक रोग के लिए नशे को सही इलाज मानता है परन्तु यह नशा भगवान् के नाम का होना चाहिए, किसी वस्तु का नहीं। हिन्दू दर्शन के अनुसार भगवान् का नाम आनन्ददायक है। हमारे संतों ने भगवान् के नाम

जप से होने वाले नशे को 'नाम खुमारी' कहा है।

इस संबंध में संत सद्गुरुदेव श्री नानकदेव जी महाराज ने कहा है-

भांग धतूरा नानका, उतर जाय प्रभात।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन-रात।।

नाम का नशा उतरता नहीं है, यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। इसी प्रकार संत कबीर दास जी ने कहा है-

नाम अमल उतरै न भाई।

और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै,

नाम अमल दिन बढ़ै सवाई।।

गीता में भगवान् ने इसे आनंद कहा है, दिव्य आनंद कहा है; भगवान् श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में इसकी पाँच श्लोकों में व्याख्या की है-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।। ५:२१

(बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष, अन्तःकरण में जो भगवत्-ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है (और) वह पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।)

युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानं योगी नियतमानसः।

शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।। ६:१५

(इस प्रकार आत्मा को निरन्तर (परमेश्वर के स्वरूप में) लगाता हुआ स्वाधीन मनवाला योगी मेरे में स्थित रूप परमानन्द पराकाष्ठा वाली शान्ति को प्राप्त होता है।)

सुखमात्यन्तिकं यत्तद् बुद्धि ग्राह्यमतीन्द्रियम्।

वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।। ६:२१

(इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी, भगवत स्वरूप से चलायमान नहीं होता है।)

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।। ६:२७

(क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है (और) जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।)

युञ्जन्नेवं सदाऽत्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ।। ६:२८

(पापरहित योगी इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ, सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता है।)

इस प्रकार मैं जो मंत्र अपने शिष्यों को देता हूँ उसका मानसिक जाप करने से सभी तरह के मानसिक रोग और उनसे संबंधित बीमारियाँ जैसे उच्च रक्तचाप, उन्माद, पागलपन आदि बिना किसी दवाई के ठीक हो जाते हैं।

आज हमारे समाज में नशा एक बड़ी समस्या है। यह विश्व के लिए भी एक गंभीर समस्या है क्योंकि आज पूरे संसार में युवावर्ग इसकी चपेट में आ रहा है। आज का भौतिक विज्ञान इसको रोक पाने में पूरी तरह असमर्थ है। अस्पतालों में डॉक्टर जबरन नशा छुड़वाने की कोशिश करते हैं परन्तु कुछ समय पश्चात जब रोगी बाहर निकलता है तो वह वापस नशा करने लगता है। इस योग से, बिना किसी दवाई के साधक के नशे भी छूट जाते हैं। शराब, बीड़ी, सिगरेट, अफीम, गांजा आदि सभी प्रकार के नशों से साधक को बिना किसी समस्या के छुटकारा मिल जाता है। यह बदलाव भी हमारे ठोस दर्शन के आधार पर आ रहा है।

हिन्दू दर्शन के अनुसार प्रत्येक मनुष्य में निम्नलिखित तीन गुण होते हैं-

१. सतोगुण २. रजोगुण ३. तमोगुण

प्रत्येक मनुष्य में अपने पूर्व जन्मों के कर्म अनुसार इनमें से कोई एक गुण प्रधान होता है और बाकि दो गौण। किसी में तमोगुण, किसी में रजोगुण व किसी में सतोगुण प्रधान होता है। प्रत्येक वृत्ति के मनुष्य को अलग-अलग प्रकार का खाना-पीना पसन्द होता है।

भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने प्रत्येक वृत्ति के मनुष्य के खान-पान की व्याख्या की है-

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।

रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।। १७:८

(आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख (और) प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने, स्थिर रहने वाले, स्वभाव से ही मन को प्रिय आहार, सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।)

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।

आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः।। १७:९

(कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, अतिगर्म, तीक्ष्ण, रूखे, दाहकारक, दुःख, चिन्ता और रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार, राजस पुरुष को प्रिय होते हैं।)

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।। १७:१०

(जो भोजन अधपका, रस रहित और दुर्गन्धयुक्त, बासी, उच्छिष्टहै तथा अपवित्र भी है, वह (भोजन) तामस पुरुष को प्रिय होता है।)

इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी वृत्ति के अनुसार खान-पान पसन्द करता है। भौतिक विज्ञान को वृत्तियों के बारे में कोई ज्ञान नहीं है इसलिए वह लोगों को नशा छुड़वाने में सफल नहीं है परन्तु हिन्दू दर्शन नशे से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बताता है। इसके अनुसार मनुष्य की वृत्ति को बदला जा सकता है।

गीता के १४वें अध्याय के १०वें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।

रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।। १४:१०

(और हे अर्जुन! रजोगुण (और) तमोगुण को दबाकर सतोगुण बढ़ता है, तथा रजोगुण (और) सतोगुण को दबाकर तमोगुण बढ़ता है।)

मेरे द्वारा दिए मंत्र का नियमित मानसिक जाप करने से साधक की वृत्ति बदल जाती है और वह सात्विक वृत्ति का हो जाता है। इस कारण से उसका खान-पान बदल जाता है। जो खाना पहले प्रिय लगता था, वृत्ति बदलने के पश्चात उससे घृणा होने लगती है; साधक चाहकर भी उन्हें नहीं खा सकता। इस प्रकार वह सभी प्रकार के नशों से बिना किसी समस्या के मुक्त हो जाता है। मेरे हजारों शिष्य अफीम, शराब हीरोईन आदि नशों से बिना किसी समस्या के मुक्त

हो चुके हैं। जब तक व्यक्ति की वृत्ति नहीं बदलती तब तक उसका नशा छुड़ाना असम्भव है। आज का विज्ञान मनोवैज्ञानिक तरीके से नशा छुड़ाने की कोशिश करता है परन्तु इस समस्या का समाधान केवल परामनोविज्ञान की सहायता से ही सम्भव है। पतंजलि योग दर्शन भी वृत्तियों में बदलाव की बात को स्वीकार करता है।

आज सम्पूर्ण विश्व में मानव जाति विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित है। भौतिक विज्ञान इन समस्याओं से निजात दिलाने में पूर्णतः असफल है। विज्ञान विभिन्न प्रकार के असाध्य रोग जैसे कैंसर, एड्स, गठिया, अस्थमा आदि का इलाज करने में पूर्णतः असफल है। बहुत सी बीमारियाँ ऐसी हैं जिन्हें भौतिक विज्ञान असाध्य समझता है परन्तु भारतीय योग दर्शन में कोई भी रोग असाध्य नहीं है।

कैंसर जैसी भयानक बीमारी जिससे मनुष्य पिछले सौ वर्षों से संघर्ष कर रहा है, परन्तु आज भी भौतिक विज्ञान इसका इलाज करने में असमर्थ है। कुछ वर्ष पहले मैंने बीबीसी पर कैंसर के विषय पर एक वार्ता सुनी थी जिसमें उन्होंने बताया कि कुछ ऐसे तत्त्व मनुष्य शरीर में पैदा हो जाते हैं जो शरीर की कोशिकाओं को आत्महत्या करने के लिए आदेश देते हैं जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति का शरीर गलने लगता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। बाद में मैंने बीकानेर के एक कैंसर विशेषज्ञ डॉ. आर. के. चौधरी से कैंसर का कारण पूछा। उन्होंने कहा कि भौतिक विज्ञान आज तक इसके कारण को नहीं जान सका है इसलिए इसे असाध्य मानता है। मैंने उनसे कहा कि भारतीय योग दर्शन कहता है कि जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है तो इस प्रकार देवता और दानव दोनों मनुष्य के अन्दर ही हैं। अगर किसी कारण से दानव ताकतवर हो जाएँ और काम करने लगें तो इसका परिणाम मनुष्य में विभिन्न प्रकार के रोग जैसे कि कैंसर, एड्स, हिपेटाईटिस-बी आदि की उत्पति है। अगर किसी विधि से देवता को ताकतवर बना दें, जिस शरीर में दानव शासन कर रहे हैं, तब चूंकि देवता दानव से अधिक ताकतवर हैं, वे उन कोशिकाओं को मरने से रोक सकते हैं। ऐसा होने पर क्या होगा? डॉक्टर ने कहा तब कैंसर ठीक हो जाएगा। उस दिन से मैंने लोगों को देवता और दानव की इस लड़ाई के बारे में बताना शुरु कर दिया। इस तरीके से हजारों लोगों के असाध्य रोगों को ठीक किया जा चुका है।

आज एड्स एक भयानक रोग के रूप में संसार में बहुत तेज गति से फैल रहा है जिससे लोग बहुत भयभीत हैं। भौतिक विज्ञान इसका उपचार करने में असफल है परन्तु यह रोग भी सिद्धयोग से ठीक हो रहा है। मैंने भारत तथा अन्य देशों के प्रमुख व्यक्तियों को इसके बारे में

सूचना दी है परन्तु वह भारत से प्रकट होने वाले इस सत्य को जानबूझ कर नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं।

एड्स के मरीज जो आज इससे मुक्ति पाकर एक स्वस्थ जीवन जी रहे हैं उनमें से दो के बारे में मैं यहाँ बताना चाहूँगा- भंवरलाल और बद्रीनारायण। यह दोनों ही मथुरादास माथुर अस्पताल, जोधपुर राजस्थान में भर्ती थे। इस बात की पुष्टि अस्पताल रिकॉर्ड से की जा सकती है। इनमें बद्रीनारायण का केस बहुत ही आश्चर्यजनक तरीके से ठीक हुआ। वह मात्र मेरी तस्वीर पर ध्यान करने से ठीक हो गया। मेरे बहुत से शिष्य शक्तिपात दीक्षा में मेरे द्वारा दिए मंत्र का जाप करने से असाध्य रोगों से ठीक हुए हैं परन्तु बद्रीनारायण केवल मेरी तस्वीर का ध्यान करने से एड्स से मुक्त हो गया। मैं वैज्ञानिकों से निवेदन करता हूँ कि वह इस विषय पर शोध करें। इस विषय पर और अधिक जानकारी के लिए मेरी संस्था की वेबसाइट : www.the-comforter.org पर जाएँ।

यह केवल ईश्वर ही जानता है कि यदि विश्वभर के एड्स रोगी मेरी तस्वीर का ध्यान करेंगे तो क्या होगा! मैं यह विश्वास के साथ कहता हूँ कि भारतीय योग दर्शन में वर्णित सिद्धयोग मानव की अनेक समस्याओं का समाधान करके विश्व में शांति स्थापित कर सकता है।

आज पूरा विश्व तामसिकता से ग्रसित है। प्रत्येक व्यक्ति शांति चाहता है पर वह पूर्ण रूप से भौतिक विज्ञान पर आश्रित है। दुर्भाग्य से जैसे-जैसे विज्ञान प्रगति कर रहा है शांति स्थापित करना उतना ही मुश्किल होता जा रहा है। शांति का संबंध हमारे अन्दर से है इसलिए विश्व शांति केवल वैदिक मनोविज्ञान द्वारा ही सम्भव है; इसका कोई और विकल्प नहीं है।

आज संसार में विज्ञान का बोलबाला है पर सभी विज्ञान के लोग उपरोक्त बदलाव से अचम्भित हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि वह क्या कहें। इसी प्रकार दुनिया के धनी देश भी मानव में होने वाले इस बदलाव से भयभीत हैं। सिद्धयोग ने एक ऐसे 'वायरस' को जन्म दे दिया है जो कि दुनिया के सभी वैज्ञानिकों और धनी देशों द्वारा एकसाथ मिलकर भी काबू में नहीं किया जा सकता। दुनिया की कोई शक्ति इसका रास्ता नहीं रोक सकती। अन्तिम सत्य अभी भविष्य के गर्भ में छिपा है।

मैंने आपके समक्ष अपने विचार इस आशा से प्रस्तुत किए हैं कि आप भी इस पवित्र यज्ञ में अपना योगदान देंगे।

१२९.
वेदान्त और योग

(२६ जनवरी २००५)

श्रीयुत श्री अर्जुन सिंह जी,

मानव संसाधन विकास मंत्री,

भारत।

नमस्कार!

'आउटलुक साप्ताहिक पत्रिका', २४ जनवरी, २००५ के अंक में 'पिट गई ब्राह्मण राजनीति' को पढ़कर भारी दुःख हुआ। विश्व में हिन्दू धर्म की छवि, इन तथ्यों से बहुत खराब हुई है। देश में धार्मिक दृष्टि से एकदम सन्नाटा सा छा गया है। देश की यह स्थिति शीघ्र खत्म करने की हर सम्भव कोशिश देशवासियों एवं सरकार, दोनों को मिलकर करनी चाहिए।

वैदिक दर्शन के दो पक्ष हैं, वेदान्ती एवं योगी; वेदान्त+योग=वैदिक दर्शन है। 'आउटलुक पत्रिका' ने सिक्के के एक पक्ष का ही विश्लेषण किया है। अब उन्हें दूसरे पक्ष की सच्चाई की जानकारी, देश एवं सम्पूर्ण विश्व को देनी चाहिए।

मैं, भगवे वस्त्रधारी नाथ का शिष्य हूँ। मैं जो कुछ कर रहा हूँ, मानव संसाधन मंत्री होने के नाते, कृपया आप इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें। यह कार्य सम्पूर्ण मानव जाति को शान्ति प्रदान करेगा। आप इस पुण्य के भागीदार होंगे।

धन्यवाद।

१३०.

सम्पूर्ण मानव-जाति को एड्स-मुक्त होने हेतु जनहित याचिका

(२५ अगस्त २००३)

महामहीम श्रीयुक्त वी. एन. खरे,

मुख्य न्यायाधिपति,

सुप्रीम कोर्ट, भारत

विषयः- सम्पूर्ण मानव-जाति को 'एड्स-मुक्त' होने हेतु जनहित याचिका

भारतीय योग दर्शन में वर्णित योग का मूल उद्देश्य मोक्ष है परन्तु मानव को उस स्थिति तक विकसित होने के लिए, उसके त्रिविधि-ताप शांत होने आवश्यक हैं।

इस सम्बन्ध में महायोगी श्री गोरक्षनाथ जी महाराज ने कहा है- "यह योग वेदरूपी कल्पतरु का अमर फल है जिससे साधक के 'त्रिविधि-ताप'- (१) आधि-दैहिक, (२) आधि-भौतिक (३) आधि दैविक, (Physical, Mental and Spiritual) शांत होते हैं।"

मैं, एक भगवे वस्त्र-धारी आईपंथी नाथ का शिष्य हूँ। मेरे मुक्तिदाता सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी 'योगी' के दिशा-निर्देशों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के लोगों को 'शक्तिपात-दीक्षा' देने हेतु विश्व में निकला हूँ। भारत में, मेरे शिष्यों की संख्या लाखों में हैं। उनमें विज्ञान के हजारों इंजीनियर, डॉक्टर एवं अन्य वैज्ञानिक सम्मिलित हैं। इस योग से सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग पूर्ण रूप से नष्ट हो रहे हैं। क्योंकि यह परिवर्तन सम्पूर्ण मानव-जाति में समान रूप से हो रहा है, अतः इसमें जाति-भेद एवं धर्म परिवर्तन जैसी कोई समस्या नहीं है। इसमें साधक अपने स्वयं के धर्म में रहता हुआ, इस योग की साधना कर सकता है। योग दर्शन में इसे 'सिद्धयोग' की संज्ञा दी गई है। इसमें सभी प्रकार के योग सम्मिलित हैं, अतः इसे 'महायोग' भी कहा जाता है।

यही नहीं, साधक सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार के कष्ट के, सहज रूप से पूर्ण मुक्त हो जाता है। अफीम जैसे खतरनाक मादक द्रव्य का नशा भी, बिना कष्टके सहज रूप में छूट जाता है। इस परिवर्तन का कारण बताते हुए, गीता और पतंजलि योग दर्शन कहते हैं-

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।

रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।। १७:८

(आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख (और) प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने, स्थिर रहने वाले, स्वभाव से ही मन को प्रिय आहार, सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।)

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।

आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः।। १७:९

(कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, अतिगर्म, तीक्ष्ण, रूखे, दाहकारक, दुःख, चिन्ता और रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार, राजस पुरुष को प्रिय होते हैं।)

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।। १७:१०

(जो भोजन अधपका, रस रहित और दुर्गन्धयुक्त, बासी, उच्छिष्टहै तथा अपवित्र भी है, वह (भोजन) तामस पुरुष को प्रिय होता है।)

इस प्रकार मनुष्य में जो वृत्ति प्रधान होती है, वह जैसा खाना-पीना माँगती है, उसे वह खाना-पीना देना पड़ता है। भौतिक विज्ञान के पास वृत्ति परिवर्तन की कोई विधि नहीं है, यही कारण है भौतिक विज्ञान नशा छुड़वाने में पूर्ण रूप से असमर्थ है। हमारा दर्शन सभी प्रकार के नशों से पूर्ण मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बताता है। इस सम्बन्ध में गीता में कहा है-

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।

रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।। १४:१०

(हे अर्जुन ! रजोगुण और तमोगुण को दबाकर सत्त्वगुण, सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाकर रजोगुण, वैसे ही सत्त्वगुण और रजोगुण को दबाकर तमोगुण बढ़ता है।)

पतंजलि योग दर्शन के कैवल्यपाद के दूसरे सूत्र में ऋषि ने इस सिद्धान्त को स्वीकारते हुए कहा है-

जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात् ।। ४:२

(यह परिवर्तन प्रकृति के पूर्ण होने से होता है।)

उपर्युक्त सभी परिवर्तन ठोस वैदिक दर्शन के सिद्धान्तों पर आधारित हैं, इसमें कल्पना का कोई स्थान नहीं है।

शैव सिद्धांत के अनुसार 'गुरु-शिष्य' परम्परा में दीक्षा का विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में 'शक्तिपात-दीक्षा' सर्वोत्तम है। यह वैदिक दर्शन का उच्चतम 'दिव्य-विज्ञान' है। इसमें गुरु, शिष्य को चार प्रकार से दीक्षा देता है-

(१) स्पर्श से-अपने दाहिने हाथ से शिष्य के 'आज्ञाचक्र' को छूकर (२) मंत्र दीक्षा (३) केवल दृष्टिमात्र से (४) संकल्प मात्र से-योग्य पात्र केवल गुरु की मूर्ति या तस्वीर से ही पूर्णता प्राप्त कर लेता है। एकलव्य और कबीर इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

इस प्रकार शक्तिपात-दीक्षा से साधक की 'कुण्डलिनी-शक्ति' जाग्रत हो जाती है। जाग्रत कुण्डलिनी ऊर्ध्व गमन करती हुई, तीनों ग्रंथियों (ब्रह्म-ग्रंथि, विष्णु-ग्रंथि एवं रुद्र-ग्रंथि) तथा छह चक्रों का भेदन करती हुई, साधक को समत्व बोध तक विकसित कर देती है। इसी को भारतीय दर्शन 'जीवन-मुक्त' होने की संज्ञा देता है। महर्षि श्री अरविन्द ने इसे 'पार्थिव-अमरत्व' की संज्ञा दी है।

जाग्रत कुण्डलिनी साधक का शरीर, प्राण, मन,और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और साधक को सभी प्रकर की यौगिक क्रियाएँ जैसे आसन, बन्ध, मुद्राएँ, एवं प्राणायाम सीधा अपने नियंत्रण में करवाती है। साधक चाहकर भी उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता। इस प्रकार जो योग करवाया जाता है, उससे साधक के सभी प्रकार के शारीरिक रोग पूर्ण रूप से ठीक हो जाते हैं, चाहे भौतिक विज्ञान उन्हें असाध्य मानता है। साधक के शरीर का जो अंग बीमार होता है और पूर्ण रूप से कार्य नहीं कर रहा है, मात्र उसी का योग करवाकर कुण्डलिनी उसे पूर्ण रूप से स्वस्थ कर देती है। इस प्रकार साधक सभी प्रकार के शारीरिक रोगों से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है। शक्तिपात दीक्षा से यह परिवर्तन मेरे लाखों शिष्यों में आ रहा है। गठिया जैसा भयंकर पीड़ादायक रोग भी ठीक हुआ है।

इस विज्ञान के युग में, मानव-जाति में होने वाले इस क्रान्तिकारी परिवर्तन से विज्ञान के लोग भौंचक्के हैं। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। इस अर्थप्रधान युग में विश्व के धनी राष्ट्र इससे अत्यधिक भयभीत हैं। मनुष्य शरीर में सिद्धयोग द्वारा ऐसा वायरस पैदा हो गया है, जिसका मुकाबला विश्व की कोई शक्ति नहीं कर सकेगी। पूर्ण सत्य अभी भविष्य के गर्भ में छिपा है।

आज सम्पूर्ण-विश्व में भयंकर तनाव व्याप्त है। अतः आज विश्व में मनोरोगियों की संख्या सर्वाधिक है, खासतौर से पश्चिमी जगत् में। भौतिक विज्ञान के पास मानसिक तनाव को शान्त करने की कोई कारगर विधि नहीं है। भौतिक विज्ञान मात्र नशे के सहारे, मानव के

दिमाग को शान्त करने का असफल प्रयास कर रहा है। दवाई का नशा उतरते ही तनाव पहले जैसा ही रहता है तथा उससे संबंधित रोग यथावत रहते हैं।

वैदिक मनोविज्ञान अर्थात् अध्यात्म-विज्ञान, मानसिक तनाव को शान्त करने की क्रियात्मक विधि बताता है। भौतिक विज्ञान की तरह भातीय योग दर्शन भी 'नशे' को पूर्ण-उपचार मानता है, परन्तु वह नशा 'ईश्वर' के नाम का होना चाहिए, किसी भौतिक पदार्थ का नहीं। हमारे संतों ने इसे हरि-नाम की खुमारी कहा है। इस सम्बन्ध में संत सद्गुरुदेव श्री नानकदेव जी महाराज ने फरमाया है-

भांग-धतूरा नानका, उतर जाय परभात।
'नाम-खुमारी' नानका चढ़ी रहे दिन-रात।।

यही बात संत कबीर दास जी ने कही है-

'नाम-अमल' उतरे न भाई।
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरै।
'नाम-अमल' दिन बढ़े सवायो।।

गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने 'योगी' की स्थिति का वर्णन करते हुए, पाँचवें अध्याय के २१वें श्लोक में नाम-खुमारी को 'अक्षय-आनन्द' कहा है, तथा छठे अध्याय के १५, २१, २७ एवं २८ वें श्लोक में इसे परमानन्द पराकाष्ठा वाली शांति, इन्द्रीयातीत आनन्द, अति उत्तम आनन्द तथा परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द कहा है। इस युग का मानव भौतिक सुख को ही आनन्द मानता है, यह भारी भूल है।

इस युग का मानव भौतिक विज्ञान में शान्ति चाहता है। परन्तु विज्ञान ज्यों-ज्यों विकसित होता जा रहा है, वैसे-वैसे शान्ति दूर भाग रही है और अशान्ति तेज गति से बढ़ती जा रही है। क्योंकि शान्ति का सम्बन्ध अन्तरात्मा से है, अतः विश्व में पूर्ण शान्ति मात्र वैदिक मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर ही स्थापित हो सकती है। अन्य कोई पथ है ही नहीं।

आज सम्पूर्ण विश्व तामसिक वृत्तियों के चंगुल में बुरी तरह से फंसा हुआ है। सभी प्रकार के नशों ने सम्पूर्ण मानव-जाति को बुरी तरह से ग्रसित कर रखा है। भौतिक विज्ञान के पास इसका कोई उपचार नहीं है। भारतीय योग दर्शन सभी प्रकार के नशों से पूर्ण मुक्ति की

क्रियात्मक विधि बताता है।

भारतीय दर्शन त्रिगुणमयी माया से सृष्टि की उत्पति मानता है- सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण। हर व्यक्ति में ये तीनों वृत्तियाँ होती हैं। उनमें से एक प्रधान तथा दो गौण होती हैं। प्रधान-वृत्ति जो खाना-पीना पसन्द करती है, उसे उस व्यक्ति को खाना-पीना पड़ता है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के १७ वें अध्याय के श्लोक संख्या ८-९ एवं १० में स्पष्ट किया है कि किस वृत्ति को क्या-क्या खाना-पीना पसन्द है। भौतिक विज्ञान की पकड़ में वृत्ति एवं तत्त्व जैसी सूक्ष्म शक्तियाँ नहीं आतीं। यही कारण है आज सम्पूर्ण मानवजाति नशों से अत्यधिक भयभीत है। भौतिक विज्ञान इन वृत्तियों को बदलने की विधि नहीं जानता।

भारतीय दर्शन वृत्तियों को बदलने की क्रियात्मक विधि जानता है। गीता के १४ वें अध्याय के दसवें श्लोक में श्री कृष्ण ने इन वृत्तियों के बदलने की क्रियात्मक विधि बताते हुए, वृत्ति बदलने के सिद्धान्त को स्वीकार किया है।

पतंजलि ऋषि ने योग दर्शन में कैवल्यपाद के दूसरे सूत्र में 'जात्यान्तरण' को स्वीकार करते हुए कहा है- 'यह परिवर्तन प्रकृति के पूर्ण होने से होता है।' भौतिक विज्ञान केवल 'मनोविज्ञान' के सहारे नशों से मुक्ति करवाने का प्रयास कर रहा है। परन्तु यह कार्य मात्र 'परामनोविज्ञान' से ही सम्भव है जिसे भौतिक विज्ञान बिलकुल नहीं समझता।

आज सम्पूर्ण विश्व में मानव जाति विभिन्न प्रकार के असाध्य रोगों से जूझ रही है। भौतिक विज्ञान उनका उपचार करने में असमर्थ है। भारतीय योगदर्शन किसी बीमारी को असाध्य नहीं मानता।

राजस्थान के बीकानेर शहर में मुझे एक कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर मिले। मैंने उनसे पूछा कि, मैंने ८-९ वर्ष पहले बीबीसी से कैंसर के सम्बन्ध में एक खबर सुनी थी, उसके अनुसार मनुष्य के शरीर में ऐसे विजातीय तत्त्व (जीन) पैदा हो जाते हैं, जो मनुष्य के टिशुज को आत्महत्या करने का आदेश देते हैं, इस प्रकार टिशुज आत्महत्या करने लगते हैं तथा मनुष्य का शरीर गलने लगता है और वह मर जाता है।

मैंने कैंसर विशेषज्ञ से कहा, यह तो रेडियो की खबर थी। आप तो कैंसर विशेषज्ञ हो, आप क्या कहते हो? उन्होंने कहा, "भौतिक विज्ञान अभी तक कैंसर का मूल कारण नहीं समझ सका है। यही कारण है, हम इसे असाध्य कह रहे हैं।"

मैंने डॉक्टर साहब से कहा, "भारतीय योग दर्शन सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को मनुष्य शरीर के

अंदर स्थित मानता है। इस प्रकार देव और दानव दोनों मनुष्य शरीर के अन्दर हैं। जब किसी व्यक्ति के अन्दर दानव प्रभावी हो गया और उसने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया, जिसे आपका भौतिक विज्ञान कैंसर, एड्स, हैपिटाइटिस- बी कुछ भी कह ले। जिस व्यक्ति में दानव प्रभावी हो चुका, उसी व्यक्ति में किसी विधि से देव चेतन हो जाए, क्योंकि दोनों मनुष्य शरीर के अन्दर हैं तो क्या होगा? क्योंकि देव, दानव से बलवान होता है, वह उस मनुष्य के अन्दर प्रभावी हुए दानव का आदेश न मानने दे तो क्या होगा?" डॉक्टर साहब ने जबाब दिया- "फिर तो कैंसर ठीक हो जाना चाहिए।" मैंने उसी दिन से दानव पर देव की विजय की क्रियात्मक-विधि बतानी प्रारम्भ कर दी, जिससे लाखों लोगों की असाध्य बीमारियाँ पूर्णरूप से ठीक हो रही हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व एड्स रोग से अत्यधिक भयभीत है। यह छूत की बीमारी है, अतः बहुत तेजी से सम्पूर्ण विश्व में फैल रही है। भौतिक विज्ञान इस रोग के सम्बन्ध में कुछ नहीं समझ सका है। भारतीय योग दर्शन में वर्णित 'योग' से यह रोग ठीक हो रहा है। मैंने इसकी जानकारी भारत सहित विश्व के प्रायः सभी शक्तिशाली राष्ट्रों को दे दी थी परन्तु किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। भारतीय योग दर्शन में वर्णित इस 'सिद्धयोग' से विश्व शांति के रास्ते की सभी रुकावटों का समाधान संभव है।

मैं, महामहीम के सामने इसे एक जनहित याचिका के रूप में पेश कर रहा हूँ। आशा है श्रीमान् इस पवित्र यज्ञ में आहुति देकर मुझे अनुग्रहित करेंगे।

(भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति महामहीम श्री भैरोंसिंह शेखावत ने संस्था को इस पवित्र कार्य के लिए शुभकामना संदेश भेजा है जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है।)

दूरभाष: 23016344
23016422
फैक्स : 23018124
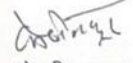
भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
नई दिल्ली - 110011
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
NEW DELHI - 110011

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि **अध्यात्मक विज्ञान सत्संग केंद्र** सिद्ध योग द्वारा एड्स जैसे भयंकर रोग को समूल नष्ट करने के लिए तथा अन्य सभी प्रकार के रोगों की समाप्ति हेतु प्रयासरत है,जो सराहनीय प्रयास है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जबकि प्रत्येक व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। **सिद्ध योग** इसमें अपनी महती भूमिका निभा सकता है।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति जी अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

आपका,
(के.बी. ठाकुर)

नई दिल्ली
1 फरवरी, 2003

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा किए जा रहे कार्य की सराहना करते हुए, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति महामहीम श्री भैरोंसिंह शेखावत द्वारा संस्था को भेजा गया पत्र।)
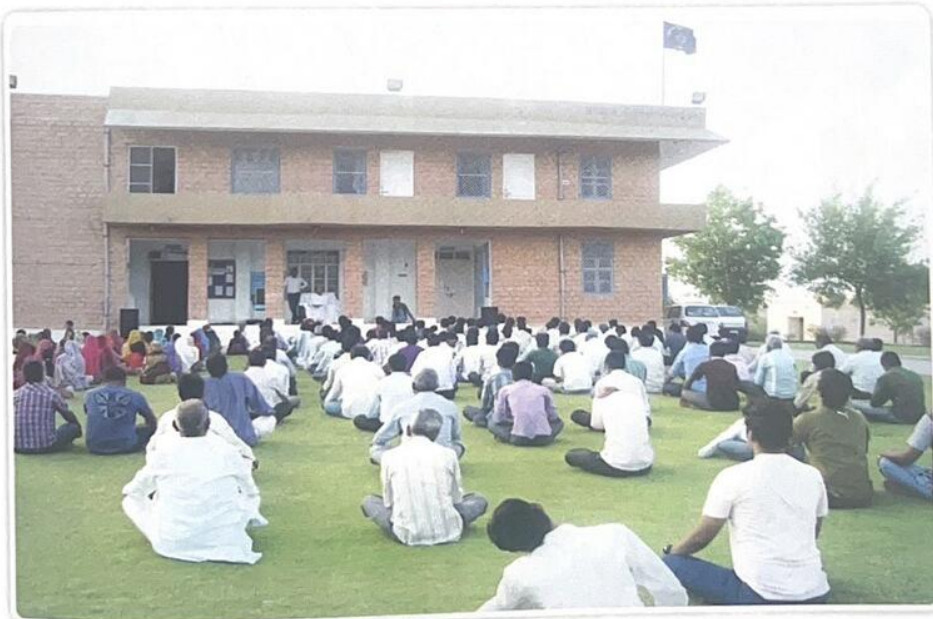
०७ जुन २०१२, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

०३ जुलाई २०१२, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

२२ नवम्बर २०१२, कोटा, राजस्थान- शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम।

२४ नवम्बर २०१२, कोटा, राजस्थान- अवतरण दिवस समारोह।

२२ जुलाई २०१३, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

२४ नवम्बर २०१३, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
अवतरण दिवस समारोह।

१२ जुलाई २०१४, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

गुरुदेव के कुछ प्रवचनों के अंश

१३१.

गुरुदेव के कुछ प्रवचनों के अंश

१. ये हिन्दू धर्म नहीं है।

(२६ मई १९९४, जोधपुर)

जब तक हम मानवता में, ईश्वर का Self-realization, Self-visualization (आत्म साक्षात्कार) नहीं करवा देते हैं, तब तक लोग नहीं मानेंगे। अभी जो कर्मकाण्ड कर रहे हैं- अगरबत्ती, धूपबत्ती, दीपक लगा दिया, चरणामृत ले लिया और छुट्टी-ये हिन्दू धर्म नहीं है।

हिन्दू धर्म तो जो अन्दर बैठा है, उससे जुड़ने का एक तरीका बताता है, जो चौबीस घंटे आपका पथ प्रदर्शन करेगा। वो चौबीस घंटे आपको guide (मार्गदर्शन) करता है-एक ऐसा मानव का विकास संभव है।

२. वो सारी शक्तियाँ अन्दर हैं।

(२२ सितम्बर १९९४, बीकानेर)

इस(वैदिक) दर्शन के विकसित होने से ही २१ वीं सदी में हिन्दू धर्म, विश्व धर्म होगा। उस शक्ति को अन्दर देखो, जो बाहर प्रतीकों में दिखाई गई है- वो सारी शक्तियाँ अन्दर हैं, वो सजीव हैं। अन्दर दिखाने वाली प्रक्रिया बन्द हो गई और प्रतीक ही परमात्मा बन बैठे।

वो तो घट-घट का वासी है, अन्दर देखो। ये अन्दर देखने का एक तरीका है; इससे ये तीसरी आँख खुल जाएगी और सारा system (तंत्र या प्रणाली) दिखेगा कि अन्दर क्या हो रहा है। फिर वो परमसत्ता भी आपसे छुप नहीं सकता; उससे साक्षात्कार हो जाएगा तो उसमें लय हो जाता है, जीव भाव नष्टहो जाता है।

३. वो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान करेगा।

(२२ सितम्बर १९९४, बीकानेर)

ये एक क्रियात्मक योग है। इसमें खण्डन-मण्डन, बहस कुछ नहीं होती है। मैंने आपको कुछ नहीं देना है। इस शरीर रूपी ग्रंथ को पढ़ना है, जो आपके पास है। विधि बता दूँगा। नहीं

पढ़ना चाहो तो आराम से अपने घर बैठे रहो, मेरे को कोई मतलब नहीं और seriously (गंभीरता से) कुछ result (परिणाम) लेना चाहते हो तो पढ़ो। कहीं आना-जाना नहीं है- न गंगा में है, न यमुना में, न मथुरा में, न द्वारका में-करोड़ों गए, किसी को मिला क्या? वो तो अन्दर है, उससे अन्दर मिलो, मिलेगा आपको।

आपके जीवन की हर समस्या का वो समाधान करेगा, direct (सीधा) करेगा। आप लोग जप और ध्यान में अनुभव करोगे; कैसे करेगा, क्या करेगा- वो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि परा विद्या है। अपरा विद्या जो है लिखी-पढ़ी जा सकती है; parapsychology (परामनोविज्ञान) जो है, वो अनिर्वाच्य विषय है तो इसलिए परिणाम मिलेगा, पथ प्रदर्शन होगा।

४. निष्कपट भाव से ये ज्ञान मिलेगा।

(२२ सितम्बर १९९४, बीकानेर)

गुरु के प्रति मेरे जो समर्पित भाव थे, वो ही भाव होंगे तो आप सब कुछ पा जाओगे। आपका way of approach constructive (सकारात्मक रुख) होना चाहिए।

चतुराई, चालाकी, होशियारी से ये ज्ञान नहीं मिलता है। भगवान् ने गीता में चौथे अध्याय के ३४वें श्लोक में बताया है कि तत्त्व ज्ञानी के पास तू किस तरह से जा- 'दण्डवत प्रणाम करते हुए, सेवा भाव से, निष्कपट भाव से तू जा तो तेरे को तत्त्व ज्ञान देंगे।'

मैं आपको ये बात इसलिए बता रहा हूँ कि अगर कोई भी चतुराई से आओगे, किसी प्रकार का अहम् होगा तो ये ज्ञान नहीं मिलेगा, अहम् के नष्ट होते ही इसमें (तत्त्व ज्ञान) मिलने में देर नहीं लगती।

५. अघोषित युद्ध

(१२ जुलाई १९९५)

आज संसार में जिस धर्म का वर्चस्व है, बोलबाला है, उसका सिद्धान्त है मनुष्य पापी है। अब मनुष्य परमात्मा है या कि पापी है इसका फैसला हमें करना है, विश्व स्तर पर करना है। उन्होंने एक अघोषित युद्ध की घोषणा कर दी है। उन्होंने (ईसाईयों ने) इस पुण्य भूमि में आकर के उस वटवृक्ष (ईसाई मिशनरी) को लगा दिया और हम उसका पोषण करने में लगे हुए हैं।

इस वक्त अगर हम वेदान्ति offensive (आक्रामक) नहीं हुए तो वे इस धर्म (सनातन धर्म) का अस्तित्व ही खत्म कर देंगे। मैं तो प्रारम्भ से offensive (आक्रामक) हूँ और उन लोगों को ही target (निशाना) बनाया हुआ है कि मनुष्य पापी नहीं, परमात्मा है। तुम पापी कह दो, हम परमात्मा कह दें। हम मनुष्य को परमात्मा prove (साबित) कर देंगे, विश्व स्तर पर prove (साबित) कर देंगे।

६. हम पापी हैं या परमात्मा?

(१२ जुलाई १९९५)

एक पत्रकार ने प्रश्न किया- क्या आप यह कह रहे हैं कि यीशु के अलावा नरक से बचने का और कोई उपाय नहीं है? अन्य सब धर्मों के बारे में आपका क्या विचार है? क्या उनके अनुयायी भी नरक में जाएंगे? ये प्रश्न किया है और जवाब देने वाले ने जवाब दिया - हाँ निश्चित!

हमको कह दिया कि तुम नरक में जाओगे। अब इस चुनौती को हम स्वीकार नहीं कर रहे हैं तो हम बुज़दिल हैं, कायर हैं, हिन्दू धर्म निश:प्राण है। इसलिए उनका मुकाबला करना है जो हमें पापी बनाने आए हैं; हम उनको परमात्मा बना देंगे। हमारा धर्म अहिंसा पर आधारित है। 'अहिंसा परमोधर्मः' सिद्धान्त पर हिन्दू धर्म, अर्थात् वैदिक धर्म आधारित है। हमारी नींव उस पर है, उन लोगों की नींव हिंसा पर है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में कहा था- "मुझे एक जगह बता दो, सिर्फ एक उदाहरण दे दो, दो उदाहरण का नहीं कहता, एक उदाहरण दे दो जहाँ ईसाईयत बिना तलवार के फैली हो?" ये जो तलवार के धर्म हैं, जो वो चला रहे हैं, वो धर्म हो ही नहीं सकता। वो भय तामसिक शक्तियाँ दिखाती हैं, शैतानी वृत्तियाँ। हम तो 'अहिंसा परमोधर्मः' के सिद्धान्त पर विश्वास करने वाले लोग हैं। उसी दर्शन के अनुसार हम उनको परमात्मा बनाकर छोड़ेंगे। वो पापी हैं, इसलिए वो कहते हैं मनुष्य मात्र पापी है। हम कहते हैं मनुष्य मात्र ईश्वर का स्वरूप है। दो वृत्तियों में झगड़ा है। इन्हीं दो वृत्तियों की लड़ाई है, ये धर्म युद्ध है।

७. हम नाथ हैं।

(१२ जुलाई १९९५)

धर्म परिवर्तन फैलाएँगे ये लोग हमारे देश में और उद्देश्य होगा हमको पापी बनाना। जो

द्वापर में हुआ था नतीजा वही होगा। आप जो लोग इकट्ठे हुए हो तो एक बात बताना चाहता हूँ। आप लोग सब बुद्धिजीवी लोग हो, समझदार लोग हो। ये लड़ाई शुरू हो चुकी है, ये धर्मयुद्ध शुरू हो चुका है।

अब इस वृक्ष(ईसाई मिशनरी) को लगा दिया है हमारी पुण्य भूमि पर और वो सींच रहे हैं हमें पापी बनाने के लिए। परन्तु हमारे पास चाणक्य नीति की देन है। चाणक्य इसी देश में, इसी धर्म में पैदा हुआ था। आपको इसका विवरण बताऊँ, याद नहीं हो तो बताऊँ।

चाणक्य झोंपड़ी बनाकर बाहर रहते थे। धूड़ में (रेत में) कुशा एक घास होती है, वो उनकी झोंपड़ी के आस-पास थी। एक दफे एक कुशा का तिनका उनकी एड़ी में चुभ गया। क्या किया था उन्होंने मालूम है? मठ्ठा (छाछ) लाए और उस घास की जड़ में डाल दिया तो वो कुशा का बीज खत्म हो गया। तो हम भी उस मठ्ठे का, छाछ का प्रयोग करेंगे पापियों पर; कुशा बची, जो ये बचेंगे?

मैं इस पवित्र गुरु-शिष्य परम्परा के पवित्र दिन पर यह घोषणा करना चाहता हूँ कि अब हम इस पाप का अंत करेंगे, विश्व स्तर पर करेंगे और नाथवृत्ति को फैलाएंगे। हम नाथ हैं, जब हम ईश्वर की संतान हैं तब फिर नाथ ही हैं। उस नाथवृत्ति का विकास मानव मात्र में हमको करना है तो हमारा कार्य क्षेत्र केवल जोधपुर या राजस्थान या भारत नहीं होगा।

जैसे नाज़ियों का अंत हुआ था, इन पापियों का अंत होगा। इस दर्शन के, इस धर्म के उत्थान में जितना सहयोग दे सको, दो क्योंकि ये किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है। ये सम्पूर्ण वेदान्तियों का काम है, सम्पूर्ण वैदिक दर्शन को मानने वालों का काम है, चाहे वो भारत में हैं, चाहे विदेश में हैं।

८. बाइबिल अधूरी है।

(१२ जुलाई १९९५)

बाइबिल पूर्णतः अधूरी है। बाइबिल स्वयं घोषणा करती है कि अभी तुम्हारा ज्ञान अधूरा है; अभी तो बाइबिल अधूरी है। उसको वेदान्ति पूरी करेंगे, स्पष्टशब्दों में बोल रहा हूँ। वेदान्ति ही बाइबिल को पूरी करेंगे। बाइबिल वैदिक भाषा बोलती है इसलिए बाइबिल की भविष्यवाणियों का अर्थ ईसाई लगा ही नहीं सकते। क्योंकि ये ज्ञान तो वेदान्तियों का है, वेदान्तियों की देन है इसलिए इस ज्ञान की जानकारी हम ही कराएंगे उन पापियों को और परमात्मा बनाएंगे।

उन्होंने हमारा शोषण किया, हम उस सिक्के में जवाब नहीं देंगे क्योंकि हम अहिंसावादी हैं। वो हिंसावादी हैं; जो कर रहे हैं उनको करने की इजाज़त है, हमको नहीं है। हम 'अहिंसा परमोधर्मः' में विश्वास करते हैं। वो हमें पापी बनाने आए हैं, हम उनको परमात्मा बनाकर भेजेंगे। यही नहीं सम्पूर्ण विश्व को परमात्मा बनाएंगे।

९. सर्वं खल्विदं ब्रह्म

(१९९५, बीकानेर)

देखिए! आज जो हिन्दू धर्म चल रहा है, उसका नाम 'सनातन' नहीं है। सनातन धर्म का मतलब है-मानव मात्र को ईश्वर की संतान मानना। हमारा दर्शन तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है। वेद कहता है- 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' - जो कुछ दिख रहा है वह एक ही परमसत्ता का विराट स्वरूप है। इसको आधार मानकर वैदिक धर्म चलता है। इसमें मानव जाति संपूर्ण विकसित होती है, न कि आज की संकीर्ण वाली जाति। इसे वैदिक धर्म कहते हैं।

१०. मुक्ति

(१९९५, बीकानेर)

देखिए! कुण्डलिनी जो है वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है। यह सृष्टि उत्पत्ति का आदि कारण है। जब तक यह जाग्रत होकर के वापस अपने मालिक के पास सहस्रार में नहीं पहुँच जाती है, मतलब शिव और शक्ति का मिलन नहीं हो जाता है, तब तक मोक्ष एक कल्पना है।

जब सृष्टि उत्पत्ति का कारण (कुण्डलिनी) जो है, अपने मालिक के पास सहस्रार में पहुँच कर लय हो जाती है तो आदमी का द्वैत भाव खत्म हो जाता है। जब तक वो नीचे है तब तक शक्ति दो भागों में बंटी, और वो एक अविभाज्य सत्ता है, इसलिए ज्यों ही वह ऊपर खिसकती हुई यहाँ (सहस्रार) पहुँच जाएगी तो जीव भाव खत्म हो जाएगा।

११. समर्थ सद्गुरु

(१९९५, बीकानेर)

जिस तार में करंट है, उससे कनेक्शन लोगे तो बत्ती जलेगी, उसी तरह जिस गुरु से दीक्षा ले रहे हो, वो उस तत्त्व से जुड़ा हुआ है, उस तत्त्व से ओतप्रोत है तो आपके सामने

उसको खड़ा कर देगा नहीं तो नहीं करवा सकेगा। आज जो बदलाव नहीं आ रहा है, क्योंकि आज गुरु enlightened (प्रबुद्ध) नहीं रहे हैं, मतलब समर्थ सद्‌गुरु नहीं हैं। कोई कपड़े रंग कर के, कोई शरीर रंगकर के गुरु बन जाता है; कपड़ा रंगने से, शरीर रंगने से गुरु का कोई मतलब नहीं है।

१२. प्रवृत्ति मार्ग या निवृत्ति मार्ग?

(१९९५, बीकानेर)

उस परमसत्ता से जुड़ने के दो रास्ते हैं-एक निवृत्ति मार्ग-जो संसार के कर्मों से बिलकुल निवृत्त हो गया, कपड़े रंग लिए और बैठ गया। अब उसको किसी से ईर्ष्या, द्वेष, मोह, लालच नहीं होना चाहिए क्योंकि निवृत्त हो चुका है लेकिन ये इर्ष्या, द्वेष, मोह, लालच आदि उस संन्यासी को कहीं से भी पकड़ लेते हैं और फिर उसके सिर्फ कपड़े ही भगवे रह जाते हैं, बाकि कुछ नहीं रहता है। यह बहुत ही खतरनाक मार्ग है, इसमें slip (फिसलने) होने का एक सौ एक प्रतिशत chance (मौका) है।

ये (सिद्धयोग) प्रवृत्ति मार्ग है- इसमें कर्मों के प्रति आदमी प्रवृत्त रहता है; जो करता है, वो करता रहता है और साथ में एक और काम- नाम जप का करता है। इस आराधना में भोग और मोक्ष दोनों चलते हैं। इस मार्ग (प्रवृत्ति) में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए गुरु द्वारा दिये मंत्र का जाप और ध्यान करना है।

१३. रुद्र ग्रंथि

(१९९५, बीकानेर)

ज्यों ही रुद्र ग्रंथि शांत हुई-उससे खानपान जैसे सभी प्रकार के नशे, मीट, शराब आदि अपने आप छूटते चले जाते हैं; तामसिक वृत्ति शांत हो जाती है, उन पदार्थों से अंदर से घृणा हो जाती है। इससे आज का विज्ञान बड़ा चिंतित है।

१४. आपको वस्तुओं को छोड़ने की जरूरत नहीं है।

(१९९५, बीकानेर)

मैं आपको बताता हूँ कि यह बदलाव कैसे होता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में बड़ा अच्छा वाक्य बोला है-किसी अमेरिकन ने पूछ लिया कि स्वामी जी बड़े लम्बे-चौड़े

उपदेश दे रहे हो, आपका हमारा सौदा नहीं बैठेगा क्योंकि आपके यहाँ तो पहली शर्त है- मांसाहारी या शाकाहारी, और हम तो सारे के सारे ही मांसाहारी हैं। स्वामी जी ने चलती स्पीच में ही जवाब दे दिया-"You need not give up the things, the things will give you up." (मतलब आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की जरूरत नहीं है, वो वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएंगी।) कुण्डलिनी जागरण से आपमें जो बदलाव आता है, वह 'the things will give you up' के हिसाब से आता है, न कि बुद्धि के प्रयास से।

कुण्डलिनी जागरण से सभी प्रकार के नशे छूट जाते हैं, तमोगुण शांत हुआ तो नशे छूट गए, नाम खुमारी से मनोरोग दूर हो गए। शारीरिक रोगों को कुण्डलिनी यौगिक क्रियाओं द्वारा ठीक करा देती है। अब यह कुण्डलिनी द्वारा जो योग संचालित होता है उसे महायोग या सिद्धयोग कहते हैं, इसमें (सिद्धयोग) सभी प्रकार के योग सम्मिलित हैं।

१५. चिकित्सा विज्ञान अभी अपूर्ण विज्ञान है।

(१९९५, बीकानेर)

Medical science (चिकित्सा विज्ञान) अभी अपूर्ण science (विज्ञान) है। अभी तक पूर्ण विकसित नहीं हुई है। हमारे यहाँ (सिद्धयोग में) नशा छूटता है, वो साधक की वृत्ति शांत होने के कारण छूटता है। ज्यों ही तामसिक वृत्ति निष्क्रिय हो गई तो नशे छूट गए। अस्पताल में डॉक्टर क्या करते हैं कि मरीज को जबरन पकड़ करके नशा छुड़ाते हैं, और जब वह नशा मांगता है तो उसमें कुछ ऐसी दवाई डालते हैं, जिससे उसका जी मचलाता है और वह २-३ महीने में छोड़ पाता है। लेकिन उसकी तामसिक वृत्ति निष्क्रिय नहीं हुई है, इसलिए बाहर निकलते ही कुछ समय बाद वापस खाना-पीना शुरू कर देता है। मगर हमारे दर्शन में उस नाम जप से ज्योंहि कुण्डलिनी जाग्रत हुई तो तामसिक वृत्ति निष्क्रिय हो जाएगी। जब निष्क्रिय हो जाएगी तो अन्दर demand (माँग) नहीं रहेगी। जब demand (माँग) नहीं रहेगी तो supply (आपूर्ति) करना जरूरी नहीं; जब demand (माँग) हो तो देना पड़ता है नहीं तो झगड़ा होता है, हमारे यहाँ तो अन्दर ही माँग खत्म कर देते हैं।

Medical science (चिकित्सा विज्ञान) वाले अंदर जा नहीं सकते हैं क्योंकि उनके पास यह ज्ञान नहीं है, इसलिए नशा नहीं छुड़वा सकते हैं। वृत्ति बदलने के कारण मनुष्य पूर्ण रूप से सात्विक हो जाता है।

१६. पूर्ण रोग मुक्ति

(१९९५, बीकानेर)

कुण्डलिनी सब जानती है। वो उसी system (तंत्र, प्रणाली) को ठीक करती है जो बीमार है और चंद दिनों में उस system (तंत्र, प्रणाली) को बिल्कुल ठीक कर देती है क्योंकि समाधि लगने की पहली शर्त है पूर्ण रोग मुक्ति। पूर्ण रोग मुक्त हुए बिना समाधि नहीं लगेगी और बिना समाधि लगे उस परमसत्ता के दर्शन नहीं होंगे और उसके दर्शन के बिना मोक्ष नहीं होगा। इसलिए समाधि लगना नितांत आवश्यक है।

१७. दुःख की जड़

(१९९५, बीकानेर)

शांति मनुष्य की आंतरिक चेतना से संबंध रखती है; शांति बाहर से नहीं मिलती। वैदिक दर्शन में कुण्डलिनी जागरण का सिद्धांत संसार को दिया है, कुण्डलिनी जब अंदर जाग्रत हो जाएगी, तो फिर अन्दर से अंधकार दूर हो जाएगा। अंधकार ही तो दुःख की जड़ है।

१८. नई चेतना

(१९९५, बीकानेर)

भविष्यद्रष्टाओं ने यह बड़ी अजीब बात कही है, महर्षि अरविन्द ने भी कही है कि संसार में एक नई क्रांति, नई चेतना भारत का एक ग्रामीण क्षेत्र का रहने वाला गृहस्थ व्यक्ति संसार में फैला देगा; वो उसका नेतृत्व करेगा। इस संबंध में पश्चिम के भविष्यद्रष्टाओं ने भविष्यवाणियाँ की हैं- "भारत का एक व्यक्ति जो ग्रामीण क्षेत्र का रहने वाला होगा, गृहस्थ होगा, वो इस धार्मिक क्रांति का नेतृत्व करेगा।"

अब नई चेतना क्या है? जो चेतना आज तक आ चुकी, वो दुबारा आ जाए तो वह नई चेतना नहीं कहलाएगी। इसलिए हमारे नौ अवतार जो चेतना दे चुके, उससे आगे जो चेतना आएगी, दसवें अवतार से जो चेतना आएगी, उसी को 'नई चेतना' कहा है।

वैदिन दर्शन के अनुसार दसवाँ अवतार जब होगा तो युग बदल जाएगा और सत्युग प्रारम्भ हो जाएगा। कहने का मतलब है कि नौ अवतार अपना क्रमिक विकास देते रहे हैं। मानव का क्रमिक विकास अवतारवाद से ही होता है। कृष्ण नवें अवतार थे। उन्होंने माया

जगत् तक का सारा विकास कर दिया। अब दसवाँ अवतार जो है वो सत्, चित्, और आनंद - इन तीनों कोशों का विकास करेगा।

१९. दसवाँ अवतार

(१९९५, बीकानेर)

महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी है कि "पश्चिम को जो मानवता में विकास करना था, वो कर चुका। अब जिस विकास की आवश्यकता है, अब वो केवल वेदान्ति कर सकता है, केवल भारत राष्ट्र ही कर सकता है, अन्य कोई राष्ट्र या धर्म नहीं कर सकता है।"

अब ये क्रमिक विकास मानवता में होना है इसलिए इस भारत की भूमि पर दसवें अवतार का अवतरण हो गया। वो दसवाँ अवतार अवतरण ले चुका है- ये बात हमारे संत भी कहते हैं। मगर महर्षि अरविन्द ने तो बहुत ही नजदीक से उसे देखा और उसके जन्म की घोषणा कर दी। जो शक्ति दसवें अवतार के रूप में भारत में अवतरित हो चुकी है, वो ही विश्व में धार्मिक क्रांति का नेतृत्व करेगी।

२०. ईसाई जगत् में क्रांति

(१९९५, बीकानेर)

धार्मिक क्रांति अगर पश्चिमी राष्ट्रों में न हो तो 'विश्व क्रांति' का उसको नाम ही नहीं दिया जा सकता। इस संबंध में बाइबिल बताती है कि इस क्रांति का कारण वह सहायक होगा; ईसा ने कहा कि एक सहायक और भेजूँगा जो बीसवीं सदी के अंत से पहले-पहले प्रकट हो जाएगा। Old Testament (बाइबिल के प्रथम भाग पूर्वार्द्ध का नाम 'पुराना नियम') में यहोवा ने भी कहा है कि एक सहायक पूर्व से बुलाऊँगा मेरे काम को, मेरी युक्ति को पूरा करने के लिए। यीशु ने भी कहा है कि वह पूर्व से आएगा। वो आकर के जो काम करेगा, उससे संसार में और पूरे ईसाई जगत् में क्रांति हो जाएगी।

वह क्रांति एक ही शर्त पर होगी कि वह सहायक ईसाई जगत् को अनिश्चित काल के भूत-भविष्य को दिखाएगा-सुनाएगा। जो मैंने काम किये उनको भी दिखाएगा। ध्यान की स्थिति में वो past को replay (भूतकाल में हुई घटनाओं को दिखा और सुना देगा) कर देगा, और जो आगे होना है उसको भी दिखा देगा, सुना देगा।

ये काम जो सहायक कर लेगा, उसी को ईसाई जगत् मान लेगा। जब वो सहायक प्रकट

होकर भूत-भविष्य को दिखा देगा, सुना देगा और प्रमाणित कर देगा, उसके साथ ही ईसाई जगत् में अपने आप ही क्रांति हो जाएगी।

इसी आधार पर ही ईसाई जगत् में क्रांति होगी और वो क्रांति हमारे दर्शन के आधार पर ही होगी।

२१. पात्र-कुपात्र

(१९९५, बीकानेर)

मानव योनि जब मोक्ष के लिए है तो फिर पात्र-कुपात्र क्यों देखो ? मैं तो नहीं देखता। मैं तो मेरे आराध्यदेव श्री कृष्ण का भगत हूँ। उन्होंने गीता में स्पष्ट कहा है कि चाण्डाल भी अगर मेरी शरण में आ जाएगा तो मैं उसे मोक्ष दे दूँगा। मैंने कभी भी पात्र-कुपात्र नहीं देखा। मुझे तो रास्ता ही बताना है, चलोगे तो मंजिल पर पहुँचोगे, नहीं तो वहीं पड़े रहोगे जहाँ पहले थे।

२२. ध्यान प्रतिदिन करना जरूरी है।

(१९९५, बीकानेर)

सुबह-शाम-दोनों समय ध्यान करना। ध्यान समाधि की पहली stage (अवस्था) है इसलिए प्रतिदिन ध्यान करना बहुत जरूरी है नहीं तो समाधि नहीं लगेगी, योग नहीं होगा, रोग खत्म नहीं होंगे।

२३. महर्षि अरविन्द की आराधना का उद्देश्य

(१९९५, बीकानेर)

महर्षि अरविन्द की आराधना का उद्देश्य एक ही था कि वह परमसत्ता इस धरा पर अवतरित हो, नहीं तो शांति संभव नहीं, संत तो fail (असफल) हो गए- इसलिए महर्षि श्री अरविन्द ने आराधना की। उन्होंने कहा- "मैंने मानवता के लिए परात्पर से इतना बड़ा वरदान प्राप्त किया है, जितना यह पृथ्वी माँग सकती थी।"

सम्पूर्ण पृथ्वी जितना माँग सकती थी, वो वरदान प्राप्त कर लिया। अब उस वरदान में भगवान् ने अरविन्द को क्या कहा? उसको (श्री अरविन्द को) आदेश हुआ कि शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व लोक से एक भागवत शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित मृत्यु एवं असत्य के राज्य को समाप्त कर, यहाँ भी भगवान् के राज्य की स्थापना करेगी, मतलब ये

वरदान अरविन्द को मिला था। इसी हिसाब से महर्षि अरविन्द ने घोषणा कर डाली उसके (भागवत शक्ति) अवतरण की। वो तो अपने आदेश के अनुसार अवतरित हुई और महर्षि को वो दिख गई तो उसने घोषणा कर दी कि २४ नवम्बर १९२६ को भगवान् श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ।

२४. भगवान श्री कृष्ण का संदेश

(१९९५, बीकानेर)

भगवान् श्री कृष्ण ने महर्षि अरविन्द से अलीपुर जेल में कहा- "मैंने तेरे को जेल में इसलिए डाला है कि तू हिन्दू दर्शन के बारे में समझ जाए और जब बाहर निकले तो अपने देशवासियों को कहे कि वो सब लोग हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) के लिए उठें।"

और दूसरे आदेश में कहा कि "मैं बहुत लम्बे समय से इस दर्शन और इस धर्म के उत्थान में लगा हुआ था। मैंने संत भेजे, ऋषि भेजे, मुनि भेजे, अवतार भेजे और इस धर्म को पूर्ण किया। अब मेरा संदेश सुनाने के लिए ये सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा- ये मेरी इच्छा है।" और अन्त में कहा है कि "मैं बहुत लम्बे समय से इस उत्थान की तैयारी कर रहा था। अब वह समय आ गया है, अब मैं स्वयं इस उत्थान को पूर्ण करूँगा।"

२५. योग होना जरूरी नहीं है।

(१७ अक्टूबर १९९६, कोटा)

योग (यौगिक क्रिया) सबको होना जरूरी नहीं है। अगर आपका शरीर पूर्ण स्वस्थ है तो योग नहीं होगा। अगर कोई अंग बीमार है तो फिर उसको ठीक करने के लिए कुण्डलिनी योग करवाती है, फिर तो होगा ही होगा।

२६. चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

(२३ अक्टूबर १९९६, कोटा)

इस (सिद्धयोग) में मन को रोकने का काम गुरु का होता है। पतंजलि योग दर्शन में, दूसरे ही सूत्र में पतंजलि ऋषि ने कहा है कि चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है और नाथ योगियों का कहना है कि उनमना बनो; उनमना मतलब बिना मन के बनो। मन को रोकने के लिए यहाँ (आज्ञाचक्र पर) गुरु को देखना पड़ता है।

२७. नशे आपको छोड़ जाएंगे।

(२३ अक्टूबर १९९६, कोटा)

आप नाम जप की जो आराधना करोगे, उससे आपकी वृत्तियाँ बदलने लगेंगी। ये जो परिवर्तन आएगा ना, आपकी बुद्धि से नहीं आएगा। केवल नाम जप से आएगा, इसलिए मैं कहता हूँ-शराब पी रहे हो, अफीम खा रहे हो तो मत छोड़ो, पीते जाओ। बुद्धि से छूटना होता तो छूट जाता। केवल मैं बताता हूँ उसका नाम जपो, सघन जप करो, फिर देखो वो तुमको छोड़ जाएगा।

२८. 'चाह' नाम की चीज तो नष्ट हो जानी चाहिए।

(२३ अक्टूबर १९९६, कोटा)

सतोगुणी में जो एक चाहत है-अच्छा काम करने की चाह है, भला करने की चाह है-'चाह' नाम की चीज तो नष्टहो जानी चाहिए तो ही मोक्ष है। इसलिए वो कहते हैं त्रिगुणातीत जाति में बदलो-चौथी जाति में।

२९. कर्ता भाव खत्म हो जाता है।

(२३ अक्टूबर १९९६, कोटा)

ये प्रवृत्ति मार्ग है; गीता वाला निष्काम कर्मयोग है। इसमें क्या है कि ऐसे results (परिणाम) मिलेंगे, ऐसी अनुभूतियाँ होंगी जिससे आप समझ जाओगे कि ये ज्ञान, मैं तो प्राप्त नहीं कर सकता था, ये तो कोई और ही करवा रहा है! ये समझ में आ जाएगा कि ये करने वाला कोई और है तो फिर करने वाला ही भोगेगा, तुम क्यों भोगोगे? कर्ता भाव खत्म हो जाता है results (परिणाम) के आधार पर, कल्पना से नहीं होता।

कर्ता भाव ही बाँधता है, बंधन बाँधता है। कर्ता भाव नहीं रह जाता तो बंधन मुक्त हो जाता है। पीछे वाले जो जिस कारण से आए हो, वो कारण तो भोगोगे ही, मगर आगे वापस नहीं आना पड़ेगा क्योंकि कर्ता भाव खत्म हो गया इसलिए plus-minus की खाते में entry नहीं होगी (कर्मों का खाता नहीं रहेगा।)। plus-minus की entry हो जाए (कर्मों का खाता रह जाए) तो चुकाना पड़े, लेना पड़े इसलिए फिर आना पड़ता है। ये अन्तिम जन्म होगा।

३०. सनातन धर्म का उत्थान

(१७ जून १९९९)

यह एक अंधकारपूर्ण युग है। कलियुग का आखिरी चरण चल रहा है। कलियुग एक तरह से, अब रात्रि का समय है। अंधकार में लोग चाँद और तारों के प्रकाश से ही काम चलाते हैं न इसलिए आज चाँद और तारे वाले धर्मों का बोलबाला है। तारा ईसाईयों का है, एक चाँद और साथ जोड़ दिया तो मुस्लिम धर्म हो गया, मगर उनकी life (जीवन) कितनी है? अभी २००० साल पूरे नहीं हुए। धार्मिक जगत् में २००० साल का कोई महत्त्व ही नहीं है, वो तो एक क्षणभर का बच्चा है।

यह(सनातन) तो अनादि धर्म है, अनंत धर्म है। अब रात्रि का पहर है इसलिए वो चाँद-तारे वाले धर्मों का बोलबाला है, मगर जब सूर्य उदय हो जाता है तो चाँद-तारे आकाश में रहते तो हैं, उनकी कोई कीमत होती है क्या? सूरज उनका विरोध नहीं करता है, वो अपना काम करता है मगर वो अस्तित्व (existence) में रहते हुए भी, उनका संसार के लिए दिन में प्रकाश के हिसाब से कोई महत्त्व नहीं है। अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है।

हमारे पतन के काल को ऋषि मुनि नहीं रोक सके क्योंकि कालचक्र अबाध गति से चलता है। हम पतन के काल से गुजरते हुए आ रहे थे। हर चीज़ की एक सीमा होती है, पतन की भी एक सीमा होती है। जब नीचे जाने की जगह ही नहीं है तो फिर उर्ध्वगमन शुरू हो जाता है, उत्थान चक्र शुरू हो जाता है तो इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया है। संसार की कोई शक्ति, इस धर्म के उत्थान को नहीं रोक सकेगी; किसी में वो सामर्थ्य नहीं है।

३१. मनुष्य जन्म से पूर्ण है।

(१७ जून १९९९)

गुरु के पास देने-लेने को कुछ नहीं होता। जो system (शारीरिक तंत्र या प्रणाली) मेरा है, वही आप सबका है। आप जन्म से पूर्ण हो, आपको इसकी जानकरी नहीं है। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा। मैं एक आराधना का तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत जान जाओगे कि आप क्या हो। देने-लेने के लिए किसी के पास कुछ भी नहीं है। बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ है, अंदर है। उसको चेतन करने का एक तरीका है।

३२. जप यज्ञ-सबसे उत्तम

(१७ जून १९९९)

कलियुग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है। ईश्वर के नाम का जप। गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने नाम जप को सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है। भगवान् ने १0वें अध्याय में, जहाँ अपने स्वरूपों का वर्णन किया है तो २५वें श्लोक में भगवान् ने कहा है कि यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है। महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है, इसमें हिंसा नहीं होती। नाम जप में कोई हिंसा नहीं होती।

३३. अपने असली स्वरूप में रूपान्तरण

(१७ जून १९९९)

पाँच तत्त्वों से यह शरीर बना है-आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी। योग की भाषा में आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा शब्द। हमारे ऋषियों ने इसको पकड़ा और इसका नाम रख दिया 'ॐ'। बाकि किसी धर्म ने नहीं पकड़ा। उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति व साक्षात्कार सिवाय वेदान्तियों के, किसी ने नहीं की। 'ॐ' अर्थात ईश्वर, आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा शब्द, वह रूप बदलते हुए नीचे आ रहा है। आकाश से वायु प्रकट होती है, उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्पर्श। वायु से अग्नि प्रकट हुई, उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्वरूप। अग्नि से जल प्रकट हुआ, उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्वाद और जल से पृथ्वी प्रकट हुई, उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा गंध। इस प्रकार पृथ्वी में पाँचों तत्त्व हैं और पृथ्वी से हम सब पैदा हुए। इस तरह से वो परमतत्त्व 'ॐ' अर्थात ईश्वर रूप बदलते-बदलते इस रूप में आकर बैठ गया, इसलिए मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप माना है।

अब इस प्रक्रिया को उलट दो। एक-एक तत्त्व को जीतते हुए, ऊपर उठते हुए, उर्ध्वगमन करते हुए, यहाँ (सहस्रार में) अपने असली स्वरूप में क्यों नहीं बदल जाओगे? scientific (वैज्ञानिक) बात है, एक process (प्रक्रिया) से इस रूप में आए, दूसरे process (प्रक्रिया) से अपने असली form (स्वरूप) में बदल जाओगे। कुण्डलिनी जाग्रत होकर उर्ध्गमन करती हुई सहस्रार में पहुँचती है, उसी का नाम मोक्ष है। वो आपके असली स्वरूप में आपको बदलवा देगी। जिसका नाम जप रहे हो, उसी के रूप में परिवर्तित हो जाओगे, तब तक मौत पीछा नहीं छोड़ेगी। मोक्ष कोई काल्पनिक स्थिति नहीं है, एक वस्तुस्थिति है, क्रियात्मक बदलाव आता है; मैंने लाखों को ये करके बता दिया।

३४. नाद ब्रह्म

(११ नवम्बर १९९९, भरतपुर)

मैं तो नाद अन्दर सुना देता हूँ, बाहर वाली घंटी के बजाय। जो बाहर बजा रहे हो, वो अन्दर बज रहा है तो उसको तुम अन्दर देखो-सुनो। नाद ब्रह्म-ये हमारा विज्ञान है।

३५. यह शक्ति बिना किसी यंत्र के काम करती है।

(११ नवम्बर १९९९, भरतपुर)

देखो! मैं आपको बताऊँ-ये एक force (शक्ति) है, ये force (शक्ति) बिना किसी instrument (यंत्र) के move (चलती) करती है। अरविन्द ने इस force (शक्ति) को Supramental Force (अतिमानस शक्ति) कहा है। वो कृष्ण को Supramental Power (अतिमानस शक्ति) कहते थे और मैं तो कृष्ण के नाम से ही सब कुछ कर रहा हूँ, उसी के नाम से परिवर्तन आ रहा है।

(कृष्ण) ब्रज में आ गया इसलिए (ये बात आपको कुछ समझ में आए पता नहीं, मैं कह नहीं सकता, बाकि) ब्रज में 'कृष्ण' को लोगों ने profession (व्यवसाय) बना लिया है।

इसका आह्वान-मतलब इसको receive (प्राप्त) करने के लिए आप कितने आतुर हो, आपकी कितनी करुण पुकार है, आपकी मानसिकता कितनी deep (गहरी) है, कितनी deep request (गहरी माँग) है, उसको receive (प्राप्त) करने के लिए आप कितने hopeful (आशावान) हो- आपके अन्दर accordingly (उसी के अनुसार) ये move (चलेगी) करेगी-मैं चाहे दुनिया के किसी हिस्से में होऊँ। time (समय) और space (स्थान) का कोई महत्त्व नहीं है, जब सारा ब्रह्माण्ड अन्दर है।

योग की भाषा में-जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है, जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है तो फिर सारा ब्रह्माण्ड आपके अन्दर है तो आप मेरे में हो, मैं आप में हूँ। बाहर है ही नहीं, दूरी है ही नहीं। मगर ये लाभ आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप कितना seriously (गंभीरतापूर्वक) इसको welcome (स्वागत) करते हो, आपकी कितनी deep demand (गहरी चाह) है।

३६. सृजनात्मक सत्ता

(१८ नवम्बर १९९९, भरतपुर)

मैं आराधना की जो विधि बताता हूँ वो एक सृजनात्मक सत्ता है। उससे कोई भी नुकसान का काम संभव ही नहीं है। शांति ही शांति है, इस विद्या से अशांति का नाम नहीं है। इसलिए पात्र-कुपात्र नहीं देखता।

३७. यह तस्वीर नहीं मरेगी।

(जोधपुर)

बीकानेर में magic act (जादू-टोना अधिनियम) के तहत मेरे खिलाफ FIR (प्रथम सूचना रिपोर्ट) करवा दी कि मैं magic (जादू) करता हूँ। मैंने कहा कि हाँ! magic (जादू) करता हूँ, पर magic तो दो तरह के होते हैं- white and black (सफेद और काला), आपने मुझे black magician (काला जादू करने वाला) क्यों मान लिया? मैं जो दे रहा हूँ, उससे बीमारियाँ खत्म हो रही हैं, शांति मिल रही है, आदमी सब रोगों से मुक्त हो रहा है, सब नशों से मुक्त हो रहा है तो अब बोलते नहीं, अब चुप हो गए। वे लोग सोचते हैं कि ८१ वर्ष का तो हो गया, साल दो साल और जीएगा, फिर मर जाएगा, पीछा छूट जाएगा। मैंने कहा, मरना तो तुझको भी पड़ेगा, मुझको भी पड़ेगा, लेकिन मेरी तस्वीर से जो योग हो रहा है, वो कभी नहीं मरेगी, जब तक यह दुनिया रहेगी।

३८. द्वारकाधीश

(जोधपुर)

मैं आपको मेरी एक निजी घटना बताऊं। मैं बद्रीनाथ गया। वहाँ से मुझे उसने कुछ प्रसाद दिया ध्यान की स्थिति में। मैंने कहा कि यह तो बहुत कम पड़ता है। वह कहने लगा कि यह तो मैं मथुरा वाले मोहनलाल से लाया हूँ। वहाँ उसके पास (मथुरा) गया। उसने कहा कि देख, तू जो माँगता है, वो तो मैं द्वारका में दे सकता हूँ, यहाँ नहीं दे सकता। मैंने कहा- "बहाने बनाता है, देना है तो दे दे-वहाँ दे दे, यहाँ दे दे। नहीं देना है तो इन्कार कर दे।" उसने कहा- "नहीं, यहाँ (मथुरा) तो मैं एक ग्वाला था, वहाँ (द्वारका में) तो मैं विश्व का सम्राट था, तू जो चीज माँगता है वो तो वहीं दे सकता हूँ।" फिर मैं द्वारका गया। एक दफे गया, दो दफे गया, तीन दफे गया, जो देवे वो थोड़ा पड़ जावे। एक दफे मैं वहाँ जाकर बैठ ही गया। दो दिन से ज्यादा

रहने नहीं देता था, भगा देता था। एक दफे वहाँ जाकर तीन दिन बैठा रहा। चौथे दिन कहा कि जा, अब जहाँ तू कहेगा, वहाँ मैं तेरे साथ हूँ। अब उसके नाम की दीक्षा देता हूँ और वो बोलता है। भगवान् श्री राम और श्री कृष्ण तो अवतार थे। यह तो अवतारों की धरती है।

३९. ये ज्ञान तो हमेशा भारत ही देता आया है।

(जोधपुर)

हमारे वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार, मनुष्य शरीर के सात कोश होते हैं। पहले चार कोश- पहला कोश matter (पदार्थ) से बनता है-शरीर की बनावट अन्न से बनती है- अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश। विज्ञानमय कोश को पश्चिम ने खूब चेतन कर लिया। मैंने अमेरिका में कहा था कि तुम्हारे विज्ञान ने जो आज तक विकास किया, उससे शांति क्यों नहीं हुई? मैंने उनको कहा कि जब तक ऊपर के तीन कोश जिसको हम 'सच्चिदानंद' कहते हैं-सत्मय कोश, चित्मय कोश और आनंदमय कोश (सत् + चित् + आनंद)- मनुष्य जाति में जब तक ये तीनों कोश चेतन नहीं होंगे, विश्व में शांति नहीं हो सकती। ये ज्ञान तो हमेशा भारत देता आया है, इसका दान तो हमेशा भारत ही करता आया है और अभी भी भारत ही करेगा।

४०. स्वर्ण युग

(जोधपुर)

मैंने उनको कहा कि ऐसा समय आ रहा है कि भारत वापस विश्व गुरु बनेगा। अपनी Golden Age (स्वर्ण युग) में जाएगा। आज का मानव युग परिवर्तन के संधिकाल में जी रहा है। महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है कि Iron Age has ended (कलियुग खत्म हो चुका है), मगर अभी बोलबाला कलियुग का ही है। मगर ऐसा विस्फोट होगा कि दुनिया चकाचौंध रह जाएगी कि यह क्या हो गया!

४१. हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा।

(०१ मार्च २००१)

पश्चिम के बहुत भविष्यद्रष्टा हैं, उनकी भविष्यवाणी है कि २१ वीं सदी में हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा-पर ये बात हमको भी समझ में नहीं आती, हमको भी विश्वास नहीं कि ऐसा होगा!

मुस्लिम और अंग्रेज यहाँ आए थे, उन्होंने हमारी मानसिकता को विकृत कर दिया। सालों की गुलामी ने हमारी मानसिकता को बड़ा दूषित कर दिया, इसलिए हमको ये झिझक हो रही है। यह देश तो विश्व गुरु रहा है। पूरे संसार का धर्म गुरु रहा है और फिर बनेगा।

४२. यह चमत्कार नहीं है।

(०१ मार्च २००१)

हिन्दू धर्म पूर्ण रूप से science (विज्ञान) है। scientific (वैज्ञानिक) सिद्धांतों और भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों पर खरा है। मैं तो संसार के वैज्ञानिकों से मिलने निकला हूँ। जिन बीमारियों को तुम incurable (असाध्य) कह रहे हो, वह cure (रोगमुक्त) क्यों हो रही हैं सिद्धयोग से? हिन्दू दर्शन के ठोस सिद्धांतों पर सारा परिवर्तन आ रहा है, हिन्दू philosophy (दर्शन) के ठोस आधार पर। कोई जादू नहीं है, कोई करिश्मा नहीं है, कोई चमत्कार नहीं है, पर नई चीज है इसलिए (करिश्मा)लग रही है।

४३. कल्पना की गुँजाईश नहीं है।

(०१ मार्च २००१)

(सनातन धर्म के संबंध में) यह पूर्ण विज्ञान है। कल्पना की गुँजाईश नहीं है इस धर्म में, कल्पना करवाई जा रही है, मैं जानता हूँ। मगर एक तरफ हमारा दर्शन तो कहता है वो परमसत्ता कल्पनातीत है, फिर कैसी कल्पना करवाओगे? ये कल्पना करना तो शेखचिल्ली का काम है, हमारे धर्म में कल्पना की कोई गुँजाईश नहीं है।

४४. सृष्टि की उत्पत्ति

(०१ मार्च २००१)

इस युग में केवल नाम जप की आराधना ही सारी समस्याओं का समाधान करती है, और नाम जप की आराधना भी एक ठोस दर्शन पर आधारित है। मैंने आपको पहले बताया कि हमारा धर्म कल्पना में विश्वास नहीं रखता, तो नाम जप भी जो है, ठोस philosophy (दर्शन) पर आधारित है।

दुनिया के सभी ईश्वरवादी धर्म, शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं। गीता में भी कहा है- 'ॐ तत् सत्' से यह सब कुछ रचा गया। यहूदी, ईसाई, मुस्लिम सभी मानते हैं शब्द से सृष्टि

की उत्पति हुई। मगर उस शब्द की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार, उस परमतत्त्व का Self-realization and Self-visualization (आत्मसाक्षात्कार) के बारे में केवल हिन्दू धर्म बोलता है, इसके बारे में और कोई (धर्म) नहीं बोलता है।

४५. अद्वैत

(०१ मार्च २००१)

बाकि सभी धर्मों का विकास द्वैत भाव तक हुआ है-ईश्वर एक अलग सत्ता, मनुष्य एक अलग सत्ता-उसका दर्शन असंभव है, और हिन्दू कहता है मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही वो है, आत्म साक्षात्कार ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है, तो यह हमने एक दर्शन दिया मानवता को अद्वैतवाद का बाकि सारे द्वैतवादी हैं।

आज हमारे देश में भी द्वैतवाद का बोलबाला है, ये बात भी fact (सत्य) है। द्वैतवादियों का बोलबाला है, यह सत्य है। मगर दर्शन जो दिया है हमने दुनिया को वो proved (प्रामाणित) है; पहले से प्रामाणित दर्शन है अद्वैत। दो हैं ही नहीं, एक परमसत्ता का विराट स्वरूप है। अब ये अद्वैतवाद मूर्तरूप ले रहा है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति को आधार मान करके शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का सिद्धांत है। ये सारे शब्द से पैदा हुए तो आप और हम सारे शब्द से पैदा हुए।

४६. धर्म एक पूर्ण विज्ञान है।

(०१ मार्च २००१)

धर्म तो एक पूर्ण विज्ञान है, तुम्हारा विज्ञान तो अभी अधूरा है। आज मैंने वैज्ञानिकों के सामने prove (सिद्ध) करके दिखा दिया कि तुम्हारा विज्ञान अधूरा है। जवाब नहीं दे सकते मेरे को। जिन बीमारियों को वे असाध्य कहते हैं, cure (रोगमुक्त) हो रही हैं- शारीरिक रोग, मानसिक रोग और सभी नशों से सहज में मुक्ति मिल रही है- और सारा परिवर्तन ठोस दर्शन पर आधारित है, कल्पना नहीं है इसमें।

४७. ये धन जो कमाता है, उसी का है।

(०१ मार्च २००१)

वो (मन्त्र जप) बंद मत करना। देखिए! ध्यान और समाधि के लालच में नाम (जप) को

ढीला छोड़ दिया तो कुछ दिन ध्यान लगेगा फिर लगना बन्द हो जाएगा। चाबी नाम है, इसको जितना जपो उतना ही तेज विकास होगा। ये धन जो कमाता है, उसी का है; entry transfer नहीं होती इसकी (यह किसी और को नहीं दिया जा सकता)।

ये तो सांसारिक रिश्ते हैं, साथ आए हो क्या किसी के, जो साथ जाओगे? ये ही साथ जाएगा ईश्वर का नाम तो इसको खूब जपो, मानसिक जपो।

४८. गुरु के प्रति समर्पण

(०१ मार्च २००१)

इस आराधना में अगर कहीं रुकावट आएगी तो वह मैं पहले clear (साफ) कर दूं। इसमें एक ही शर्त आपको परेशान कर सकती है-अगर गुरु के प्रति समर्पित नहीं हो, अहम् खत्म नहीं हुआ।

त्रेतायुग का एक उदाहरण दे दूं- राजा जनक तत्त्व ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। बहुत सारे धर्माचार्यों को बुला लिया, पर पार नहीं पड़ी। उधर से अष्टवक्र जी भी पधार गए। राजा जनक ने कहा कि महाराज ये समस्या है मेरी, ये गुरु तो नहीं बता सके। इसका समाधान कर दोगे क्या?

अष्टवक्र जी ने कहा कि राजन् इसमें कोई दिक्कत तो है ही नहीं। तो कहने लगे कि इसमें समय कितना लगेगा? अष्टवक्र जी ने कहा कि समय तो एक क्षण का भी नहीं लगेगा, घोड़े की एक रकाब में पैर रख, दूसरे में नहीं रख सकेगा, मगर शर्त है कि तेरा अहम् खत्म हो जाए।

यदि कोई अहम् है-इंजीनियर हो, डॉक्टर हो, लखपति हो, करोड़पति हो, उच्च वर्ण हो, फलां हो, फलां हो तो मामला पार नहीं पड़ेगा। ये ज्ञान तो झुककर माँगने से मिलता है, इसकी कीमत तो केवल झुकना है, वो भी अंदर से, दिखावे से नहीं; वो दण्डवत कर लो दिखाने के लिए और अन्दर कुछ और है तो पार नहीं पड़ेगी।

शुरु में मेरे पास एक पण्डित जी आया करते थे। ब्राह्मणों में वे सबसे उच्च थे इसलिए मुखिया कहलाते थे। छोटासा कमरा था, अन्दर घुसते ही नाक रगड़ते हुए दण्डवत करते हुए आते थे। मैं उनको कहता-मुखिया जी! इस शरीर को क्यों कष्ट दे रहो हो, अंदर से झुकना सीख लो। ६ महिने आए, नहीं सीखे। इसलिए यह तो माँग है, झुककर माँगना है।

मेरे गुरु का आदेश है- 'तेरे दरवाजे से कोई खाली हाथ न जाए।' पात्र ही उल्टा रखोगे तो

किसमें डालूंगा? सीधा रखोगे तो सब फैसला हो जाएगा। कोई दिक्कत नहीं आएगी, तत्काल हो जाएगा, अभी हो जाएगा; समय नहीं लगेगा, २४ घण्टे का भी समय नहीं दूंगा।

४९. हिन्दू धर्म परिणाम दे रहा है।

(०१ मार्च २००१)

हमारा योग कहता है भविष्य को देखा-सुना जा सकता है। मैंने अभी कहा न सभी पीछे दिखा रहे हैं, आगे देखने की कोई बात नहीं कर रहा है, केवल एक योग आगे देखने की बात करता है; science (विज्ञान) वाले आसानी से मानने वाले नहीं हैं। अब scientifically prove (वैज्ञानिक विधि से सिद्ध) हो रहा है इसलिए परेशान हैं; ज्यादा इसलिए परेशान हैं कि हिन्दू धर्म result (परिणाम) दे रहा है।

हम नहीं कहते कि हिन्दू बन जाओ, घणे ही बना लिये ईसाई, मुस्लिम-क्या कर लिया? हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता, हिन्दू कभी हिंसा में विश्वास नहीं रखता; ये तो मनुष्य के रूपान्तरण की बात करता है, मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है, मानवमात्र के परिवर्तन की बात करता है और इसी आधार पर यह दर्शन, विश्व धर्म होगा; इसी challenge (चुनौती) के साथ निकला हूँ। शिष्य बनाता रहूँ, भेंट लेता रहूँ, माला पहनता रहूँ, मैं इसमें दिलचस्पी नहीं रखता।

५०. मृत्यु एक वरदान है।

(०१ मार्च २००१)

इससे (सिद्धयोग) मृत्यु का रहस्य clear हो जाएगा (समझ आ जाएगा)-आदमी का शरीर ही जाएगा- मृत्यु एक ऐसा वरदान है जो आने-जाने के चक्र से पीछा छुड़ाता है। आदमी वहाँ जाना नहीं चाहता, यहीं रहना चाहता है इसलिए वापस आ रहा है। जब यह रहस्य समझ आ जाएगा तो फिर आदमी मृत्यु से डरेगा नहीं, बेसब्री से इंतजार करेगा, कब पीछा छूटे।

५१. एक ही शर्त है

(०१ मार्च २००१)

इसको (संजीवनी मंत्र) मानसिक रूप से जपना है और ध्यान करना है सुबह-शाम। ध्यान १५-२० मिनट से ज्यादा मत कीजिएगा नहीं तो गर्मी बढ़ जाएगी और एक ही शर्त है

ध्यान के लिए- कोई ठोस चीज खाकर मत बैठो। ठोस चीज खा लोगे तो शरीर भारी हो जाएगा, ध्यान लगेगा नहीं और यदि यौगिक क्रिया शुरू हो गई तो उल्टी हो जाएगी।

नहाने की सुविधा है तो बहुत अच्छी बात- hygiene point of view (स्वच्छता की दृष्टि) से, नहीं है तो वैसे भी चलेगा, क्योंकि सफाई तो अंदर की करनी है। फिर नाम जप पर जोर देना है, ध्यान पर ज्यादा जोर मत देना, नाम का नशा आ जाएगा तो ध्यान तो जबरदस्ती लग जाएगा, समाधि भी लग जाएगी।

५२. गुरु क्या है?

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

गुरु क्या है? गुरु जो है वो हमारे दर्शन के अनुसार निर्गुण निराकार का सगुण साकार स्वरूप माना जाता है।

५३. कोई रोग असाध्य नहीं है।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

AIDS is a curable disease (एड्स एक साध्य रोग है)। मगर ठीक होने के लिए अगर कहीं रुकावट आएगी तो वो साधक की आस्था पर है। अगर आपका गुरु में विश्वास ही नहीं है तो फिर मामला गड़बड़ है। अगर आप रोग ही ठीक करवाने आए हो और गुरु से कोई लेना-देना नहीं है तो भाई सिर दर्द भी नहीं मिटेगा। और नहीं तो भारतीय योग के सामने कोई रोग असाध्य नहीं है।

५४. हम अहिंसावादी हैं।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

धर्मों का संघर्ष हो रहा है। विभिन्न धर्म के लोग आपस में लड़ रहे हैं। जिन धर्मों का जन्म हिंसा से हुआ है वो तो अहिंसा की भाषा ही नहीं समझते। इसलिए ईसाई कह रहे हैं कि हम बड़े और मुसलमान कह रहे हैं कि हम बड़े। और हम 'अहिंसा परमोधर्मः' में विश्वास रखते हैं।

अब देखिए! आप पढ़े-लिखे लोग हो, नजर पसार के देख लो, विश्व में जितना भी कहीं संघर्ष हो रहा है, उसमें एक तरफ मुस्लिम और दूसरी तरफ सारा विश्व है। कहीं कोई धर्म सामने है, कहीं कोई धर्म सामने है मगर एक तरफ हमेशा मुस्लिम और भयंकर नरसंहार हो रहा है।

अब ये धर्म की लड़ाई है, ये धर्मों का द्वंद्व है और अंत में फैसला एक होना है कि सच्चा कौन है?

विश्व में जितने धर्म हैं, उसमें से एक सच्चा निकलेगा। अब इस रेस में हम भी शामिल हैं। क्योंकि हम अहिंसावादी हैं इसलिए हम उस तरह का काम नहीं करते। २० साल से इस देश में कितना नरसंहार हो रहा है? संसार के किसी आदमी ने कान ही नहीं दिया; हिन्दू आदमी नहीं होता क्या? वो ११ सितम्बर २००१ के हमले ने इनको बता दिया कि उग्रवाद क्या है। जब वो उग्रवाद हमको परेशान कर रहा था तब तो तुमको तकलीफ नहीं हुई।

तुम बम से बड़ा बनना चाहते हो, हम अहिंसा से बड़ा बनना चाहते हैं-लड़ाई तो तुम्हारी है, हमारी भी है। हम अहिंसावादी 'अध्यात्म' काम में लाएँगे, तुम अपना हाईड्रोजन बम चलाना। विश्व में अशांति इतनी बढ़ चुकि है कि शांति की बात सोचना ही मृगमरिचिका है। अब तो ये एक climax (चरम सीमा) पर पहुँचेगी। जो हिंसावादी हैं वो अपने ढंग से पहुँचाएंगे मगर इस रेस से हम बाहर नहीं हैं। मैं आपको ये challenge (चुनौती) के साथ कहकर जा रहा हूँ।

५५. प्रकृति

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

अब जो समय है, इस समय प्रकृति छलांग मारकर चल रही है, घसीटकर नहीं चल रही है, लम्बा समय नहीं लगेगा (परिवर्तन में)।

५६. आप ईसाई कैसे बने?

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

इजराइल से ज्यादा पवित्र मानेंगे इस देश (भारत) को, ये मेरा challenge (चुनौती) है। हमारा धर्म, हमारा देश, हमारे ऋषि हमेशा अहिंसावादी सिद्धान्त से पूजे गए हैं, हिंसा से नहीं। ये दोनों धर्म (ईसाई और मुसलमान) जो लड़ रहे हैं इनके बारे में स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में एक बार कहा- "तुम कहते हो हमारा धर्म बड़ा आक्रामक है, क्या कर लिया आपने? हम जानते हैं आप ईसाई कैसे बने। तुम्हारे पूर्वजों के सामने दो रास्ते थे- ईसाई बन जाओ, नहीं तो मौत को स्वीकार करो तो उस हालात में तुम ईसाई बने हो। काहे के आक्रामक हो? डर के मारे ईसाई बने हो। आक्रामक कभी डरता है क्या?" और फिर स्वामी जी ने एक उदाहरण दिया। १०० साल पहले की बात है, स्वामी जी ने शिकागो में १०० साल पहले कहा

अब ये धर्म की लड़ाई है, ये धर्मों का द्वंद्व है और अंत में फैसला एक होना है कि सच्चा कौन है?

विश्व में जितने धर्म हैं, उसमें से एक सच्चा निकलेगा। अब इस रेस में हम भी शामिल हैं। क्योंकि हम अहिंसावादी हैं इसलिए हम उस तरह का काम नहीं करते। २० साल से इस देश में कितना नरसंहार हो रहा है? संसार के किसी आदमी ने कान ही नहीं दिया; हिन्दू आदमी नहीं होता क्या? वो ११ सितम्बर २००१ के हमले ने इनको बता दिया कि उग्रवाद क्या है। जब वो उग्रवाद हमको परेशान कर रहा था तब तो तुमको तकलीफ नहीं हुई।

तुम बम से बड़ा बनना चाहते हो, हम अहिंसा से बड़ा बनना चाहते हैं-लड़ाई तो तुम्हारी है, हमारी भी है। हम अहिंसावादी 'अध्यात्म' काम में लाएँगे, तुम अपना हाईड्रोजन बम चलाना। विश्व में अशांति इतनी बढ़ चुकि है कि शांति की बात सोचना ही मृगमरिचिका है। अब तो ये एक climax (चरम सीमा) पर पहुँचेगी। जो हिंसावादी हैं वो अपने ढंग से पहुँचाएंगे मगर इस रेस से हम बाहर नहीं हैं। मैं आपको ये challenge (चुनौती) के साथ कहकर जा रहा हूँ।

५५. प्रकृति

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

अब जो समय है, इस समय प्रकृति छलांग मारकर चल रही है, घसीटकर नहीं चल रही है, लम्बा समय नहीं लगेगा (परिवर्तन में)।

५६. आप ईसाई कैसे बने?

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

इजराइल से ज्यादा पवित्र मानेंगे इस देश (भारत) को, ये मेरा challenge (चुनौती) है। हमारा धर्म, हमारा देश, हमारे ऋषि हमेशा अहिंसावादी सिद्धान्त से पूजे गए हैं, हिंसा से नहीं। ये दोनों धर्म (ईसाई और मुसलमान) जो लड़ रहे हैं इनके बारे में स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में एक बार कहा- "तुम कहते हो हमारा धर्म बड़ा आक्रामक है, क्या कर लिया आपने? हम जानते हैं आप ईसाई कैसे बने। तुम्हारे पूर्वजों के सामने दो रास्ते थे- ईसाई बन जाओ, नहीं तो मौत को स्वीकार करो तो उस हालात में तुम ईसाई बने हो। काहे के आक्रामक हो? डर के मारे ईसाई बने हो। आक्रामक कभी डरता है क्या?" और फिर स्वामी जी ने एक उदाहरण दिया। १०० साल पहले की बात है, स्वामी जी ने शिकागो में १०० साल पहले कहा

था - "भारत की भूमि से एक चिन्गारी उठी-बुद्ध के बारे में कहा। एक रुपया खर्च नहीं हुआ, एक खून की बूँद नहीं गिरी और आज विश्व में हर छठा आदमी बौद्ध है।"

११ सितम्बर २००१ के हमले के बाद घबरा गए। मैं उनको पिछले १० साल से challenge (चुनौती) कर रहा हूँ, मगर किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगी। वो (ईसाई) आए दिन लोगों को convert (धर्म परिवर्तन) कर रहे हैं। १०, २०, ५० रोज ईसाई बन रहे हैं। मैंने उनको कहा कि हम आपको ईसाई नहीं बनाएंगे। हिन्दू धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता; वो तो मनुष्य के रूपान्तरण की बात करता है, मनुष्य के विकास की बात करता है-चाहे वो ईसाई है, बौद्ध है, मुसलमान है, जैन है। और ईसाईयों को भी result (परिणाम) मिलने लग गया तो परेशान हो गए। परेशान इसलिए हो गए कि Hinduism (हिन्दू धर्म) जो है result (परिणाम) दे रहा है; मैं नहीं दे रहा हूँ, हिन्दू philosophy (दर्शन) दे रही है।

५७. ये वास्तव में सूर्यनगरी है।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

मेरे गुरुदेव जाते हुए आदेश कर गए कि आगे का काम तेरे को करना है तो मैं retirement (सेवानिवृत्ति) लेकर ये काम कर रहा हूँ। बीकानेर का रहने वाला हूँ, दो साल बीकानेर रहा, फिर नाथ जी का आदेश हो गया कि बेटा! जन्म भूमि में मान्यता नहीं होगी, जोधपुर चला जा तो जोधपुर आ गया। किसी के बुलाने से नहीं आया, किसी के कहने से नहीं आया और जोधपुर में नेहरू पार्क में दो महीने में जो result (परिणाम) मिला, वहाँ मुझे दो साल में नहीं मिला। इस सूर्यनगरी ने बड़ा response (प्रतिक्रिया) दिया तो ये वास्तव में सूर्यनगरी है। ये divine light (दिव्य प्रकाश) इस भूमि में प्रकट हो गई; ये प्रकाश तो अब विश्व स्तर तक फैलेगा। हिन्दू धर्म, विश्व धर्म होगा-मेरा उद्देश्य यही है, मगर scientific (वैज्ञानिक) ढंग से होगा, वो घंटी बजाकर, अगरबत्ती वाली बात नहीं होगी।

५८. ये धर्म-युद्ध है।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का सिद्धान्त है। दीक्षा में गुरु देता-लेता कुछ नहीं है। गुरु तो काँच में तस्वीर दिखाता है-देख तू क्या है? मुझे बड़ा दुख है कि पश्चिम तो इसलिए हमको नहीं सुन रहा है, नहीं पूछ रहा है कि हम Hinduism (हिन्दू धर्म) से result (परिणाम) दे

रहे हैं। मगर दुख तब होता है जब हिन्दू ही इसकी तरफ ध्यान नहीं देते।

आज से चार साल पहले की बात है, मैं डीडवाना जा रहा था, कहीं प्रोग्राम था तो नोखा के पास एक गाँव में ८० नायक हरीजन जो हैं ईसाई बन गए। प्रोग्राम में मैंने कह दिया कि अब मैं दीक्षा देने में interested (इच्छुक) नहीं हूँ। एक district judge (जिला न्यायाधीश) आ गए। District judge (जिला न्यायाधीश) बाद में मुझसे मिले तो कहने लगे कि गुरु जी! आप ऐसा result (परिणाम) दे रहे हो फिर बंद क्यों कर रहे हो? मैंने कहा- जज-साहब! आपको तो भगवान् ने judgement (न्याय करने) की power (शक्ति) दी है। आज ही सुबह मैंने भास्कर अखबार में पढ़ा कि ८० आदमी ईसाई बन गए। हिन्दू धर्म क्या होता है वो ये ही नहीं जानते तो ईसाई धर्म के बारे में उनको क्या मालूम- पर धन के लालच में। मैंने कहा- ये टूट (conversion) नहीं रुकी तो क्या होगा, जज-साहब? तो कहने लगे गुरु जी! हिन्दू धर्म रहेगा ही नहीं।

मैंने कहा- फिर इसको बचाएगा कौन? ईसाई बचाएँगे? मुसलमान बचाएँगे? बौद्ध बचाएँगे? जैन बचाएँगे? या हिन्दू बचाएगा? कहने लगे कि बचाना तो हिन्दूओं को ही पड़ेगा और कौन बचाएगा? तो फिर बचा क्यों नहीं पा रहे हैं? और ये घर में घुसकर तोड़-फोड़ कर रहे हैं। उनको मालूम है हम offense (आक्रमण) तो कर ही नहीं सकते। Defence (बचाव) नहीं कर पा रहे हैं, offense (आक्रमण) क्या करेंगे? तो मैंने कहा- जज-साहब! मैं तो कतई offensive (आक्रमक) हूँ। ये धर्म-युद्ध है, इसमें लठ नहीं चलेगा, ये तो आत्मबल से जीता जाएगा। Western (पश्चिम) शक्तियाँ नहीं चाहती कि मेरा matter highlight (काम सुर्खियों में) हो।

५९. ये गणेश जो है मनुष्य के अन्दर है।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

जिन शक्तियों को आप बाहर पूज रहे हो, वो अन्दर हैं। उनकी आराधना का तरीका है। हर शक्ति का एक मंत्र है और उस पर अन्दर concentrate (ध्यान केन्द्रित) करके उसका दर्शन किया जा सकता है। अब जैसे गणेश जी की मूर्ति है-हमारे ऋषियों ने उसको देखा तो उसकी बाहर आकृति बनाई। बिना देखे आप किसकी आकृति बनाओगे? फिर कहा कि ये गणेश जो है मनुष्य के अन्दर है। मूलाधार में इसका स्थान है। यहाँ ध्यान करो और ये मंत्र जपो तो ये आपको ध्यान की स्थिति में चलता-फिरता दिख जाएगा, six

dimensions (छः आयाम) में जीता जागता। तो जिन मूर्तियों को आप बाहर पूज रहे हो, वो सारे देवता आपके अन्दर हैं, उनको अन्दर चेतन करने का एक तरीका है।

६०. चर्च के नाम पर एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं मिलेगा।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

एक औरत ने मुझे ईमेल किया और उसमें लिखा कि आपने हमारे सामने जो बाइबिल की तस्वीर पेश की, उससे हमको बड़ा दुख हो रहा है। आप ये काम करना बंद कर दो। मेरे को शिष्यों ने पूछा बीकानेर से कि गुरुजी इसका क्या जवाब दें? मैंने कहा कि उससे एक बात पूछो कि हमने आपके सामने जो चित्र put up (दर्शाया) किया है, विश्व के सामने, उसमें बाइबिल के अलावा एक अक्षर भी किसी धर्म के ग्रंथ का है क्या? Purely (शुद्ध रूप से) बाइबिल पर based (आधारित) चित्र आपको दिया। अब अपनी बाइबिल के चित्र से तुम डरोगे, इससे हमारा क्या मतलब? छोड़ दो ईसाई धर्म। तुम्हारी जो बाइबिल कहती है वो हम कह रहे हैं।

बाइबिल के अनुसार 'चर्च के नाम पर एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं मिलेगा' विश्व में; ये बाइबिल कहती है, हम नहीं कहते। ईसा के लिए बड़े गुण-गान करते हैं और ईसा ने क्या कहा है-बाइबिल एक ऐसा ग्रंथ है जो अपने मानने वालों को, अपने अनुयाईयों को, पानी पी-पी कर गालियाँ देता है। हाँ! ये fact (सत्य) है। ईसा ने कहा है- 'मैं तो आग लगाने आया हूँ, शाँति करने आया ही नहीं हूँ।' तब मैंने कहा-उसको शांतिदूत क्यों कहते हो?

६१. बाइबिल कहती है- चर्चों का अस्तित्व नहीं रहेगा।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

मुझे तो एक बात prove (सिद्ध) करनी है कि वैदिक धर्म ही पूर्ण धर्म है बाकि सारे धर्म उसमें merge (समाहित) हो जाएंगे। पश्चिम के कई भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ है कि २१वीं सदी में वैदिक धर्म, विश्व धर्म होगा। चर्चों का अस्तित्व नहीं रहेगा- बाइबिल कहती है, हम नहीं कहते हैं। एक बहुत भयंकर क्रांति होने वाली है।

६२. मनुष्य पापी नहीं परमात्मा है।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

यहाँ आपके जोधपुर में आप सभी जानते होंगे सम्पत राज जी शर्मा, district judge (जिला न्यायाधीश) थे। जज साहब के साथ दो-तीन आदमी और आए और मेरे को कहने लगे कि गुरुजी आपका ये सब अड़ंगा करने का उद्देश्य क्या है? popularity (प्रसिद्धि) चाहते हो? धन चाहते हो? संस्था बना कर करोड़ो रूपये इक्कठा करना चाहते हो? क्या चाहते हो? आखिरी उद्देश्य क्या है?

मैंने कहा कि जज साहब! बात ये है कि मैं एक बात को सत्य प्रमाणित करने निकला हूँ, जो हिन्दू धर्म कहता है कि मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है, पापी नहीं है। उन्होंने कहा कि इसका मतलब सीधी ईसाईयों से लड़ाई? मैंने कहा- हाँ! constructive (सृजनात्मक) लड़ाई, हाईड्रोजन बम वाली नहीं, आत्मबल की लड़ाई।

सारे ईसाई कहते हैं-हम पापी हैं, हम पाप की सन्तान हैं। और क्या कहते हैं बताऊँ? तो प्रचार क्या करते हैं कि परमात्मा का परिवार तो पापियों से मिलकर बना है। हम तो पापी हैं इसलिए चर्च में आपको अगर पूर्ण आदमी ढूँढना पड़े तो नहीं मिलेगा क्योंकि हम तो पापी हैं। मतलब पापी अपने आपको कह करके, कितनी छूट ले ली चर्च में। कुछ भी करो, जी पापी हैं। मैंने कहा- 'मनुष्य पापी नहीं, परमात्मा है। मनुष्य के उच्चतम विकास का मतलब ही परमात्मा है।'

६३. अद्वैत का मतलब क्या होता है?

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

हमारा तो अद्वैत दर्शन है। अद्वैत का मतलब क्या होता है? दो हैं ही नहीं, एक ही है वो ईश्वर जिसने ये विराट रूप धारण किया है। सब में वो ही वो है। उसके अलावा कुछ है क्या? अगर ईश्वर अपनी पूरी शक्ति का प्रर्दशन करेगा और वो घट-घट का वासी है तो मनुष्य को ही माध्यम बनाएगा न। तो ये एक मनुष्य जाति में होने वाला due (अपेक्षित) विकास है।

६४. अफीम छूट गया।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

यहाँ कई लाखों लोग ऐसे हैं जो मुझसे मिले ही नहीं, दर्शन ही नहीं किया, यहाँ आए नहीं, ना ही दीक्षा ली। केवल तस्वीर का ध्यान करने से योग हुआ, उससे नशा छूट गया। सबसे पहले बालेसर में छूटा। एक लड़का मेरा शिष्य था; उसका बाप अफीम खाता था। उसने कहा- चलो! आप हमारे गुरुजी के पास आपका अफीम से पीछा छूटेगा। उसके पिताजी ने कहा- अफीम कभी छूटती है क्या? और कहा-तेरे गुरुजी में ताकत है तो अफीम छुड़ा दें, मैं उनकी अगरबत्ती कर दूँगा। उसने करके देखा और उसकी अफीम छूट गई। ये आठ साल पहले की बात है। हजारों आदमी इस बात के witness (गवाह) हैं।

६५. गठिया ठीक हुआ।

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

बीकानेर में एक औरत आठ-नौ साल से गठिया की patient (मरीज) थी जिसे विश्व incurable (असाध्य) मानता है। एलोपैथी के अनुसार १९९४ में वो incurable (असाध्य) हो चुकी थी। आज वो चलती-फिरती है, भागती है। पहले वो मेरे दीक्षा के प्रोग्राम में आती थी। मैं ऊपर (मंच से) दीक्षा देता था तो वो नीचे कुर्सी पर बैठी मुझे देखते हुए रोती थी कि कभी मैं भी सीढ़ी चढ़कर ऊपर जा सकूँगी! छः इंच की सीढ़ी वो नहीं चढ़ सकती थी। अब वो ठीक हो गई। दस गवाह और आ करके कहते कि हमारे सामने गठिया था, अब ठीक हो गया। मेडिकल रिपोर्ट कहती है, जिस डॉक्टर ने टेस्ट करवाया, उसने कहा अब तेरे गठिया खत्म हो गया।

६६. सूर्य नगरी में आगमन।

(२४ नवम्बर २००२, जोधपुर)

सन् १९९३ में, मैं जोधपुर आया था क्योंकि यहाँ की राजसत्ता, एक समय था, जब नाथों के आदेश से चलती थी। मैं एक नाथ का चेला हूँ। यहाँ नाथ cult (संस्कृति) का बहुत भारी प्रभाव रहा है इसीलिए गुरुदेव ने मुझे यहाँ आने का दिशा-निर्देश दिया। क्योंकि गुरु का आदेश था, इसमें बहुत अजीब चमत्कार दिखा। वास्तव में यह सूर्य नगरी है। यहाँ जो प्रकाश पैदा हुआ है, वह इस देश का काया पलट करेगा।

६७. धर्म पर हमला

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

मैं, नाथ संप्रदाय की तरफ से एक धार्मिक जगत् का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। नाथ cult (संस्कृति) क्या है- इसका introduction (परिचय) करवा रहा हूँ और इस वक्त इस आश्रम की, इस जागृति की, इस देश को सबसे ज्यादा जरूरत है। धर्म पर बड़ा खतरनाक हमला है- बाहर से है, अंदर से है। जो यहाँ रह रहे हैं, उनको तो हमने कुछ adjust (समायोजित) किया, कुछ हजम किया, मगर बाहर से जो निरंतर attack (हमला) हो रहा है जिसे यह राजनैतिक लोग, सीमा पार से उग्रवाद कहते हैं, वह हिंसक है। एक अहिंसक हमला हो रहा है, बहुत भारी अहिंसक हमला हो रहा है, जो आपको दिख नहीं रहा, वह सबसे ज्यादा खतरनाक है।

६८. संस्था का उद्देश्य

(२४ जुलाई २००२, जोधपुर)

इस संस्था का उद्देश्य धन नहीं है, धर्म है। मैं धर्म की लड़ाई लड़ने निकला हूँ।

६९. अपनी बुद्धि मत लगाइए।

(२५ सितम्बर २००३, कोटा)

आपको केवल नाम जपना है, जो मैं बताऊँ। अब देखिए, बुद्धि ज्यादा मत लगाइए, जैसे बताऊँ, वैसे ही जपिए। कोई आगे 'ओम' लगा लेता है, कोई पीछे 'नमः' लगा लेता है, किसी प्रकार के प्रणव लगाने की जरूरत नहीं है, नहीं तो रिजल्ट नहीं मिलेगा। और एक और रुकावट कि जो मंत्र मैं बताऊँ उसके साथ-साथ दूसरा मंत्र नहीं चलेगा। अगर पहले वाला कर रहे हो, और नहीं चाहते तो मत करो, दोनों को साथ मत करना। और मैं जो आपको नाम बताऊँ, उसका आपको जप करना है- उठते-बैठते, खाते-पीते, नहाते-धोते, टट्टी जाते, पिशाब करते, हर समय जपना; २४ घण्टे जपना।

७०. जपने के प्रकार

(२५ सितम्बर २००३, कोटा)

तीन तरह का जप होता है। एक तो बोलकर, उच्चारण से करो, आवाज निकलती है। दूसरे में होंठ-जीभ हिलते हैं, मगर आवाज नहीं निकलती है, तीसरे में मुँह, होंठ और जीभ का प्रयोग बिल्कुल नहीं। मंत्र को मन ही मन जपना है, जैसे आप किताब पढ़ते हो, बिना बोले। उसको (संजीवनी मंत्र) जपना है, मात्र उसी को ही, और कुछ नहीं करना और जिस धर्म को मानते हो, जिस देवता को मानते हो, जिस गुरु को मानते हो, श्रद्धा रखिए, मैं मना नहीं करता। मगर नाम वो ही जपिए, जो मैं बताऊँ। और साथ मिक्स कर लिया तो नतीजा मिले न मिले, मेरी गारंटी नहीं।

७१. ध्यान कहाँ लगाएँ?

(२५ सितम्बर २००३, कोटा)

अब ध्यान कहाँ लगाओ? हमारे योगियों ने शरीर के दो भाग किये। एक भाग आज्ञाचक्र के नीचे-आँख, कान, नाक, मुँह वगैरह, ये शरीर के नव द्वार हैं। इसमें विद्या पर अविद्या का साम्राज्य है। शरीर के नीचे के हिस्से में ध्यान करो, उसी शक्ति का मंत्र जपो तो निश्चित रूप से आपको भौतिक लाभ होगा। नाशवान चीज हासिल होगी, जीवन के साथ ही खत्म हो जाएगी, आने-जाने वाला चक्र नहीं छूटेगा। इसलिए दसवें द्वार पर ध्यान करो। आपने देखा होगा शिव की तस्वीर में तीसरी आँख होती है, वो आप सबके है; वो आँख या दसवाँ द्वार अंदर की तरफ खुलता है। बाकि इन्द्रियाँ बाहर देख रही हैं- ये बाहर निकलने का रास्ता है, अन्दर घुसने का रास्ता नहीं है। मात्र यह है दसवाँ द्वार जो गुरु द्वारा बताए हुए मंत्र-दीक्षा से खुलता है। मगर गुरु proper (सही, समर्थ) होना चाहिए, उसके पास सच्चाई होनी चाहिए।

७२. ध्यान से सुन लो।

(२५ सितम्बर २००३, कोटा)

जो योग होगा उससे आपके सारे शारीरिक रोग ठीक हो जाएंगे, चाहे आप किसी जाति के हो, किसी धर्म के हो, किसी वर्ण के हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। हिन्दू कभी भी धर्म परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता, वो तो मानव में परिवर्तन की बात करता है, चाहे कोई आ जाए। विधि

वो ही अपनानी पड़ेगी, जो हमारा दर्शन (वैदिक) बताता है। गुरु के प्रति सद्भाव रखना पड़ेगा, नाम बताया वो जपना पड़ेगा। यदि केवल रोग ही ठीक कराने आए हो न तो सिर दर्द भी ठीक नहीं होगा, ध्यान से सुन लो।

७३. तिरुपति से आए पति-पत्नी एडस मुक्त हुए।

(०२ जुलाई २००४, कोटा)

अभी तिरुपति से पति-पत्नी आए, उनको एड्स था। मद्रास में treatment (उपचार) चल रहा था। ये बद्री (एड्स का रोगी जो गुरुदेव सियाग सिद्धयोग साधना से रोगमुक्त हो गया।) का पर्चा कहीं ट्रेन में चिपका हुआ मिल गया। वो पढ़कर के, मेरी तस्वीर निकाली और ध्यान करने लग गए तो सीडी-४, सीडी-८ की टेस्ट रिपोर्ट में बहुत improvement (सुधार) हो गया।

मद्रास में डॉक्टर ने कहा आप तो बहुत lucky (भाग्यवान) हो इतनी तेजी से improvement (सुधार) हो रहा है जो आज तक नहीं हुआ तो दवाई लेते रहो। उसने जब मेरे बारे में डॉक्टर से कहा तो डॉक्टर कहने लगा कि न कोई भगवान् है, न ध्यान है, मर जाएगा इसलिए दवाई लेता रह। उसने मुझे कहा कि गुरुजी! डॉक्टर के सामने तो हाँ भर देता हूँ- कहता हूँ- हाँ! दवाई लेता हूँ मगर मैंने दो महीने से दवाई नहीं ली।

७४. आस्था विभाजित नहीं होनी चाहिए।

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

मैं आपको नाम बताऊँगा, उसको आपको जपना है। देखिए! इसमें रिजल्ट नहीं मिलने में जो समस्याएँ मेरे सामने आईं (उसके कुछ कारण हैं।)। दीक्षा लेने के बाद में भी बहुत लोग एड्स से मरे हैं। ऐसा नहीं है कि दीक्षा लेने के बाद लोग बच ही गए, बहुत लोग मरे हैं और इसका एक ही कारण समझ में आया कि-फलां होम्योपेथी डॉक्टर ठीक करता है, वो भटीयाणी माता जी के मंदिर में चलो तो ठीक हो जाएगे, कहाँ उल्टा फंस गया, वो मेरे को छोड़ करके, जप छोड़ दिया, वहाँ चले गए और मर गए। इस तरह से एड्स के patients (मरीज) की आस्था divide (विभाजित) नहीं होनी चाहिए। दवाई लेते हो तो लेते रहिए। दवाई लेते रहिए मगर नाम जप और आस्था रहेगी तो जितने भी एड्स रोगी आए हैं, एड्स से नहीं मरेंगे।

७५. नहाना जरूरी नहीं है।

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

ध्यान के लिए एक ही शर्त है। सुबह-सुबह खाली पेट ध्यान करो। नहाने की व्यवस्था है तो ठीक है, बिना नहाये भी काम चलेगा, वो तो अन्दर वाली सफाई करना है न। नहा-नहाकर तो घणाई (बहुत) शरीर साफ कर लिया, पार नहीं पड़ी। मगर hygienic point of view से (स्वच्छता के लिए) नहाना जरूरी भी है।

७६. नाम जप को ढीला मत छोड़ना।

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

नाम जप लगातार करना है। नाम जप बंद नहीं होना चाहिए। योग और समाधि के लालच में नाम जप को ढीला मत छोड़ना, मैं आपको साफ बता रहा हूँ। नाम ही इलाज करेगा आपका, ये ईश्वर का नाम ही सारी समस्याओं का अंत करेगा।

७७. तीसरी आँख

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

शिव की तस्वीर में यहाँ (आज्ञाचक्र) तीसरी आँख होती है, आप सबके भी है। वो अन्दर खुलती है, बाकि इन्द्रियाँ बाहर खुलती हैं, इसलिए यहाँ (आज्ञाचक्र) ध्यान करो, नाम जप चालू। नाम छोड़ना नहीं, वो समाधि और ध्यान के लालच में नाम (जप) को ढीला छोड़ देते हैं, फिर कुछ दिन ध्यान लगेगा, फिर नहीं लगेगा।

७८. गुरु में विश्वास

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

शरीर का जो system (शरीर की प्रणाली) मेरा है, वो ही system आपका है, मुझमें चेतन हो गया, आपमें नहीं हुआ। इससे अधिक आप में और मेरे में कोई फर्क नहीं है। हाँ! ये चीज डॉलर-पाउंड से नहीं मिलती, सद्‌भाव से मिलती है, गुरु के प्रति सद्‌भाव होना चाहिए। गुरु सिर्फ उसी का भूखा होता है तो आपको सद्‌भाव तो जरूर रखना पड़ेगा और सद्‌भाव भी पहले क्यों होगा? क्या दिया है? नाम जप और ध्यान करोगे, जब आपके अन्दर परिवर्तन

आएगा तो आपको वो परिवर्तन सोचने के लिए मजबूर कर देगा, ये योग क्यों हो गया? रुकता क्यों नहीं है? फिर और जिज्ञासा बढ़ेगी तो फिर अन्दर वाला और स्पष्ट कर देगा सारी चीज।

७९. पार्थिव अमरत्व

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

यह Transformation (रूपान्तरण) वाला subject (विषय) है, ये विज्ञान वालों को बहुत अच्छी तरह से समझना पड़ेगा, मानना पड़ेगा। मनुष्य जो उस सत्ता का एक प्रतिरूप है- ईसाई बड़े परेशान हो रहे हैं, ये ऐसे कैसे हो सकता है, वो तो स्वर्ग में रहता है, स्वर्गस्थ पिता, वहाँ जाएंगे तो मुक्त होंगे! हम जिस योग की बात करते हैं, वो थोड़ा और आगे की stage (अवस्था) है; इसको अरविन्द ने कहा है, ये जीवन मुक्त होने का तरीका है- Terrestrial Immortality (पार्थिव अमरत्व)। आप जीते जी सारी जानकारी प्राप्त कर लोगे कि मैं क्या हूँ- वास्तव में, मैं यह शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ; आत्मा के कोई रोग नहीं होता है।

८०. हीमोफीलिया ठीक हुआ।

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

अब वो सांसारिक झंझटों में फंसे हुए हो, इससे मुक्त होने का तरीका है (सिद्धयोग)। मैं रोग मुक्त करने के लिए नहीं आया हूँ, मैं तो तुमको जीवन मुक्त करने के लिए आया हूँ।

रोग में तो क्या है- अभी वकील साहब बैठे हुए दिखे, हीमोफीलिया ठीक हो गया। बहुत लोग जानते हैं, हीमोफीलिया क्या होता है। अब वे कहते हैं कि ये तो by birth (जन्मजात) बीमारी है हीमोफीलिया- अगर जो कहीं कट गया और खून बहने लग गया तो सारा खून निकल जाएगा, मर जाएगा, जिन्दा नहीं रह सकता। नागौर का एक ७-८ साल का बच्चा हीमोफीलिया से बिल्कुल cure (रोगमुक्त) हो गया। वो डॉक्टर हैरान है कि आपने ये गड़बड़ कर दिया, मैंने कहा क्यूँ? कहने लगे जो फैक्टर नॉर्मल हुआ है, उसके कारण से तो आदमी मरता नहीं, दूसरे वाले फैक्टर के कारण से आदमी मर जाता है, वो तो ठीक नहीं हुआ फिर भी ये तो ठीक हो गया तो आपने हमारी theory (सिद्धांत) बदल दी। मैंने कहा आप experiment (शोध) करो कि ये क्या हो गया- क्यूँ हो गया हीमोफीलिया ठीक? बाकि

तो कर्मजात बीमारी है, हीमोफीलिया तो जन्मजात बीमारी है।

८१. सिद्धयोग में कुछ भी असंभव नहीं है।

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

एक पित्त के गठिया का मेरा शिष्य ठीक हुआ। पित्त के गठिए में pain killer (दर्द निवारक दवा) से भी दर्द ठीक नहीं होता। पहले तो उसको विश्वास नहीं हुआ, फिर दूसरे इंजीनियर साथियों ने कहा तो आ गया। उसने कहा science (विज्ञान) का आदमी हूँ, कहाँ ले जा रहे हो, ये गठिया ठीक करेगा? फिर भी ठीक है, दर्द है तो कभी-कभी ध्यान तो करता रहा। एक दिन ध्यान में उसको एक आदमी की मौत दिख गई, जालौर का एक वकील राजपुरोहित; वो (मेरा शिष्य) भी जालौर का- एक इंजीनियर और एक वकील। उसका (वकील) एक जीप से एक्सीडेन्ट हो गया, २० दिन बाद एक्सीडेन्ट हो गया और वो वकील मर गया। तो वह इंजीनियर बड़ा attentive (सचेत) हुआ और सोचा ये क्या हो गया- आज उसका गठिया ठीक हो गया तो इसमें (सिद्धयोग) कुछ भी असंभव नहीं है।

८२. मुक्ति का रास्ता

(१३ जनवरी २००५, बीकानेर)

अरविन्द ने इसे terrestrial immortality (पार्थिव अमरत्व) कहा है, ये काम आपके इसी जीवन में हो जाएगा और यह विकास नहीं हुआ और मर गए तो आना ही पड़ेगा। ये जन्म-मरण के चक्र से पीछा छुड़ाने का रास्ता है, मुक्ति का रास्ता है। हमारे योग दर्शन का मतलब है मुक्ति, जीवन मुक्त होना। मरने के बाद मुक्ति नहीं होती; जीते जी आप समझ जाओगे कि आप क्या हो- मैं आत्मा हूँ, ये शरीर तो कल जाएगा, फिर आ जाएगा; कल जाएगा, फिर आ जाएगा- ये पुनर्जन्म का हिसाब-किताब है।

८३. सिद्धयोग में दो काम-नाम जप और ध्यान

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

इसमें (सिद्धयोग में)दो काम करने हैं-एक नाम जप, दूसरा ध्यान। अब इस मंत्र के साथ दूसरा मंत्र नहीं जपोगे। अगर दूसरा जप लिया तो आस्था दो जगह divide (विभाजित) हो जाएगी, result (परिणाम) नहीं मिलेगा। 'एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।'

Already (पहले से) गुरु है, उससे काम चलता है तो मैं जो बता रहा हूँ, उसको जपने की जरुरत नहीं है। मगर इसको जपोगे तो दूसरे को छोड़ना पड़ेगा- साफ कह रहा हूँ, कहीं कल को कह दो कि result (परिणाम) नहीं मिला। दूसरा यह मंत्र-तंत्र ताबीज वालों के चक्कर में कतई नहीं जाना, और पहन रखा है तो खोल कर फेंक देना और कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

८४. अंदरवाले से दोस्ती

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

मैं आपके अंदरवाले से जो introduction (परिचय) करवा रहा हूँ न, उससे दोस्ती कर लीजिये। वह फिर आपका पथ प्रदर्शन इस ढंग से करेगा कि प्रॉपर डॉक्टर के पास भी ले जाएगा, proper treatment (उचित इलाज) भी हो जाएगा। मैं बाहर वाली दवाई को इंकार नहीं करता। वह किसी हद तक काम करती है; इसमें कोई शक नहीं है, मगर बहुत सी incurable (असाध्य) बीमारियाँ cure (ठीक) नहीं हो रही, पर वो सिद्धयोग से ठीक हो जाती हैं, जब अंदरवाली शक्ति योग करवाएगी।

८५. खेचरी मुद्रा

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

योग में कई तरह की मुद्राएँ होती हैं; वह कुण्डलिनी करवाएगी, आप नहीं करोगे। वह जो मुद्राएँ करवाएगी, उससे सारे system (अंग) ठीक होंगे। उसमें जो एक सबसे मुश्किल मुद्रा है, उसको कहते हैं-खेचरी मुद्रा। खेचरी मुद्रा क्या होती है? जब साधक ध्यान करता है, तब साधक की जीभ अपने आप पीछे खिंचती है। आप चाह करके उसको नहीं खींच सकते। वह तो अंदर से कुण्डलिनी खींचेगी और वह सख्त होकर, ऊपर तालु में धंस जाती है। ऊपर एक particular point (बिन्दु विशेष) को दबाती है, वहाँ से एक रस टपकता है। मुँह में उसका स्वाद महसूस होता है जैसे नमक और चीनी का होता है, मगर उस जैसा स्वाद बाहर किसी चीज़ में नहीं है। आप बता नहीं सकते कि स्वाद कैसा है क्योंकि बाहर की वस्तुओं में वैसा स्वाद ही नहीं है। हमारे योगियों ने उसको 'अमृत' कहा है।

८६. लेन-देन चुकाने आए हो

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

जितने time (समय) के लिए आए हो उतना टाइम तो रहना ही पड़ेगा। हिसाब-किताब जो चुकाना है वो तो चुकाना ही पड़ेगा। लेन-देन चुकाने के लिए आये हो। जब कर्ता भाव खत्म हो जाएगा तो इस जन्म की plus-minus (लेन-देन) की एंट्री नहीं होगी। जब प्लस माइनस नहीं है तो फिर क्यों आओगे? यह एक क्रियात्मक योग है, जो जीवन मुक्त करता है।

८७. सिद्धयोग से वृत्ति परिवर्तन

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

लोगों की बीड़ी नहीं छूटती और यहाँ तो हेरोइन छूटी है। उसका आधार भी हमारा दर्शन है। सृष्टि की उत्पत्ति त्रिगुणमयी माया से हुई है- ब्रह्मा, विष्णु, महेश या वात, पित्त, कफ कह दो। इससे सृष्टि की उत्पत्ति होती है। हर व्यक्ति में ये तीनो वृत्तियाँ होतीं हैं- एक प्रधान होती है, दो गौण होतीं हैं। जो प्रधान होती है, वो जो माँगती है, उसको देना पड़ता है। तामसिक वृत्ति जो dominate (हावी होना) कर रही है तो उसका खान-पान- मीट-शराब, यह सब खाना ही पड़ेगा उसे क्योंकि अंदर माँग है। मेडिकल साइंस माँग को खत्म नहीं कर पाती। उस वृत्ति से उसका खान-पान छीनती है। इसलिए शराब भी नहीं छुड़ा सकते, अफीम की तो बात ही छोड़ो। मगर हमारे (सिद्धयोग) से छूट जाता है। नाम जप और ध्यान से आदमी की वृत्ति बदलती है।

८८. महर्षि अरविन्द के बारे में लोग क्यों नहीं जानते?

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

महर्षि अरविन्द को इस सरकार (कांग्रेस) ने, इस देश ने कभी recognize नहीं किया क्योंकि वह गाँधी के खिलाफ था। गांधीवादियों का राज रहा इसलिए अरविन्द के बारे में आप कुछ भी नहीं जानते जबकि अरविन्द ने जितना नज़दीक से भविष्य को देखा है, मानवता के विकास को जितना नज़दीक से अरविन्द ने देखा है, उतना किसी ने नहीं देखा।

८९. महर्षि अरविन्द के गुरु कौन थे?

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

विवेकानंद अरविन्द के गुरु थे, ये आप नहीं जानते। १९०२ में विवेकानंद जी की death (मृत्यु) हुई थी और अरविन्द को मई १९०८ में अंग्रेज़ों ने जेल में डाला था; death (मृत्यु) के ६ साल बाद में। अरविन्द ने साफ लिखा है कि काल कोठरी में आकर के स्वामी जी की आत्मा ने उन्हें १५ दिन तक लगातार दीक्षा दी थी। अरविन्द तो विवेकानंद जी का शिष्य था, मगर ये चीज पब्लिक में आने ही नहीं दी।

९०. मन का रुकना

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

मेरा ध्यान यहाँ (आज्ञाचक्र पर) करना, नहीं तो मन रुकेगा नहीं, भागता रहेगा। जब यहाँ (आज्ञाचक्र पर) मैं दिख जाऊँ तो फिर अंदर वाला मामला शुरू हो जाएगा।

९१. ध्यान में स्वतः प्राणायाम

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

जैसे ही कंठ से ऊपर निकली कुण्डलिनी, तीसरा और अंतिम बंध लग जाएगा- 'जालंधर बंध'। इसके बाद में रीढ़ की हड्डी का जो हिस्सा बच गया, उसमें हर तरह का movement (क्रिया) संभव नहीं तो प्राणायाम होता है। प्राणायाम एक ऐसी क्रिया है, मैं इसको कहना नहीं चाहता, अगर बाहर वाला जबरदस्ती करा दे, बिना जरुरत के तो फेफड़े की बीमारी हो जाएगी। कुण्डलिनी वही प्राणायाम करवाएगी जिसकी आपको जरुरत है। सैंकड़ों तरह के प्राणायाम हैं, बाहर से योग करवाने वालों को उनके नाम भी मालूम नहीं हैं।

९२. तीसरी आँख का खुलना

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

ध्यान की स्थिति में तीसरी आँख से साधक unlimited past & future (अनिश्चितकालीन भूत-भविष्य) को देखता-सुनता है। आपकी तीसरी आँख खुल जाएगी। शिव की तीसरी आँख होती है न, वह आप सबके है; इस नाम जप और ध्यान से वह खुल

जाएगी। यहाँ (आज्ञाचक्र पर) गुरु को देखोगे तो मन स्थिर हो जाएगा। जागृति में यहाँ आत्मा का वास होता है। आत्मसाक्षात्कार हो जाएगा। क्षणभर भी अगर आत्मा के अंदर लय हो गए तो बाहरी दबाव से कट जाओगे। इस तरह से अगर १५-२० मिनट ध्यान लगना शुरू हो गया तो फिर बाहर वाले रोग पड़ोसी के नहीं रहेंगे। अब जब future (भविष्य) को देखोगे, past (भूतकाल) को तो verification (सत्यापन, जाँच-पड़ताल) के लिए देख सकते हो कि क्या ऐसा हुआ था, पता लगेगा कि हुआ था, मगर आगे क्या होगा, ये भी दिख जाएगा। जो घटना कल होने वाली है, वो आज दिख जाएगी। ध्यान की स्थिति में, जो शब्द कल बोला जाना है, वो आज सुनाई दे जाएगा । मैं भौतिक साइंस वालों को challenge (चुनौती) देकर निकला हूँ।

९३. गुरु मंत्र

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

एक मर्यादा का वर्णन कर दूँ। धर्म तो मर्यादा पर टिका हुआ है। इसमें एक मर्यादा है। हल्की सी रोक है कि जो गुरु नाम बताता है वो बोल करके या इशारे से, और किसी को नहीं बताओगे और बता दिया तो रिजल्ट नहीं मिलेगा, मुझे दोष नहीं दोगे।

९४. भोग और मोक्ष

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

यह एक बीज मंत्र है। सगुण-साकार के उपासकों के लिए यह राधा और कृष्ण का मंत्र है। निर्गुण-निराकारी के लिए sound and light और वैज्ञानिकों के लिए आकाश तत्त्व और पृथ्वी तत्त्व की बात होगी। इसमें दोनों तत्त्व हैं-राधा और कृष्ण। राधा तत्त्व सांसारिक सुख देगा और कृष्ण शक्ति जो है वो मोक्ष देगा। ये एक आराधना ऐसी है जिसमें भोग और मोक्ष दोनों साथ चलते हैं। बाकि आराधनाएँ, उसमें भोग है तो मोक्ष नहीं, मोक्ष है तो भोग नहीं, एक का त्याग करना पड़ता है। यह गीता वाला निष्काम कर्मयोग है।

९५. वृत्ति परिवर्तन

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

मेडिकल साइंस वृत्ति बदलने की सामर्थ्य नहीं रखती। वो तो टेस्ट-ट्यूब में जो रिजल्ट

आएगा, उसके अलावा कुछ नहीं समझती और हमारे योग में तो टेस्ट-ट्यूब पूरा ब्रह्माण्ड है। तो इस नाम जप और ध्यान से आप की वृत्ति बदल जाएगी। वृत्ति बदलने के साथ-साथ जो चीजें पहले पसंद थीं, अच्छी लग रही थीं, उनसे बदबू आने लग जाएगी। अंदर से नफरत हो जाएगी।

९६. दिव्य प्रकाश

(२१ जुलाई २००५, बीकानेर)

मैंने गायत्री मंत्र जपा, जिससे प्रकाश पैदा हो गया, दिख गया अंदर प्रकाश। Physical body (भौतिक शरीर) गायब और अंदर प्रकाश ही प्रकाश सारा, मतलब यह जिस ऊर्जा से बनी है (उसमें बदल गई)। सविता देव के प्रकाश को अपने अंदर धारण करने की प्रार्थना है गायत्री मंत्र। मैं भी पहले नहीं जनता था कि गायत्री मंत्र क्या है, अब तो जानता हूँ। यह शरीर अपने असली form (रूप) में बदल गया। जिस energy (ऊर्जा), जिस power (शक्ति) से यह body (शरीर) बनी है, उसका असली रूप दिख गया, यह अंग गायब हो गए। यह निर्गुण निराकार की सिद्धि हो गई, innocent way (अनायास) में हो गई।

९७. करता करे न कर सके, गुरु करे सो होय

(२२ सितम्बर २००५)

जिस डॉक्टर के मकान में रहता हूँ उसके बच्चे को हेपेटाइटिस-बी था, शरीर पीला पड़ गया था, किडनी खराब हो गई थी, फिल्टर नहीं कर रही थी इसलिए पेशाब में खून जा रहा था, उधर से खून चढ़ रहा था। डॉक्टर ने कह दिया- 'ओझा जी! आप तो डॉक्टर हो, एमडी हो, हमने जो करना था कर लिया। अब आपकी मर्जी है चाहे यहाँ अस्पताल में रखो या घर ले जाओ।' आज वो पूर्ण स्वस्थ है। और डॉक्टर ने कहा था इसकी brain memory dead (याद्दाश्त खत्म हो जाना) हो गई है। वो अब first division (प्रथम श्रेणी) से पास हो रहा है।

९८. असाध्य रोगों से मुक्ति

(२४ नवम्बर २००५)

अस्सी प्रतिशत बीमारियाँ mental tension (मानसिक तनाव) से related (सम्बन्धित) हैं, मानसिक तनाव से होती हैं। मेडिकल साइंस के पास उस टेंशन को खत्म करने के लिए, एक नशे की दवा है। वो दवाई का नशा जब तक चढ़ा रहता है तो स्नायु मंडल जो है सुस्त हो जाता है, फिर वह कष्ट थोड़ा कम महसूस होता है, नशा उतरते ही दर्द वैसा का वैसा, रोग वैसा का वैसा।

हम भी यह मानते हैं कि नशा proper (उचित) इलाज है mental tension (मानसिक तनाव) का, मगर वो नशा राम के नाम का होना चाहिए। वो नशा matter (भौतिक पदार्थ) का नहीं होना चाहिए, spirit (परमात्मा) का होना चाहिए। मैंने पश्चिम वालों को कहा कि दिक्कत यही है कि तुमने मैटर को ऐसा टाइट पकड़ा है कि स्पिरिट को बिलकुल neglect (नजरअंदाज) कर रहे हो और हमने स्पिरिट को पकड़ा मगर मैटर की तरफ ध्यान नहीं देते। 'मैटर प्लस स्पिरिट' फिर कोई रोग नहीं रहेगा। बाहर के डॉक्टर की दवाई लो और अंदर वाले डॉक्टर से दोस्ती कर लो, जो आपके अंदर बैठा है। दोनों मिल जायेंगे फिर कोई रोग असाध्य नहीं रहेगा। मैंने लाखों आदमियों को चेतन करके मूर्तरूप से ये prove (सिद्ध) कर दिया कि यह सत्य है।

९९. यह अमर धर्म है।

(२४ नवम्बर २००५)

धन चला गया तो फिर आ जाएगा, पर धर्म चला गया तो नहीं आएगा। यह तो West (पश्चिम) का देश पर, धर्म पर attack (आक्रमण) है। एक तरफ से नहीं, दसों दिशाओं से अटैक है, मगर वो नासमझ लोग यह नहीं जानते कि यह अमर धर्म है। अभी कुल २००० साल तो हुए हैं उन दोनों धर्मों को पैदा हुए। हमारे धर्म के सामने तो वो एक क्षणभर का पैदा हुआ बच्चा है।

१००. कृष्ण की इच्छा

(२४ नवम्बर २००५)

यह हमारा विकासवाद है जो मूर्त रूप ले रहा है, ये रुकेगा नहीं। यह मानवीय व्यवस्था

नहीं है, यह ईश्वरीय व्यवस्था है। जेल से निकलने के बाद महर्षि अरविन्द की पहली स्पीच (प्रवचन) है-उत्तरपाड़ा स्पीच। उसको आप पढ़ोगे तो सारी बात समझ में आ जाएगी। कृष्ण की इच्छा है कि यह धर्म (सनातन), विश्व धर्म हो।

१०१. समाधि लगने की पहली शर्त

(२४ नवम्बर २००५)

कुण्डलिनी रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से में साढ़े तीन आन्टे (फेरे) लगा करके सो रही है। वो जब जाग्रत हो जाएगी तो ऊपर कैसे उठेगी? Scienctific (वैज्ञानिक) ढंग से जब कोई उसे नीचे से push करेगा, धक्का देगा तो वो ऊपर उठेगी। योग में पाँच प्रकार के वायु होते हैं-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। हरेक वायु का शरीर में अलग-अलग काम होता है। प्राण वायु से हम सांस लेते हैं। अपान वायु नाभि से नीचे-नीचे के discharges (गन्दगी) को बाहर फेंकता है और कुण्डलिनी रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से में है, जब तक वो अपान वायु ऊपर नहीं उठेगा, कुण्डलिनी ऊपर नहीं उठेगी। तब कुण्डलिनी आपके तीन बंध लगाती है। आपका पहला बंध मूलाधार में लगेगा। अब अपान वायु नीचे नहीं जा सकेगा और वायु का काम होता है चलना, तब फिर वह ऊपर उठेगा। उसके सहारे कुण्डलिनी ऊपर उठेगी। यह सारा काम अपने आप होगा; automatically (स्वतः) होगा, आप नहीं करोगे। आप तो बस यहाँ (आज्ञाचक्र पर) गुरु को देखो और जो नाम बताया है उसको जपते रहो, बाकि सारा कार्यक्रम अंदर वाला करेगा।

ज्यूँ ही नाभि से ऊपर आई कुण्डलिनी तो दूसरा बंध लग जाएगा- 'उड्यािन बंध'। आप चाहे कितने ही मोटे हो, आपकी नाभि, रीढ़ की हड्डी की तरफ खींच जाएगी, चिपक जाएगी। फिर योग होता रहेगा। यह कंठ के गड्ढे से ऊपर निकलते ही तीसरा बंध लग जाएगा। इसको कहते हैं- 'जालंधर बंध'। इसके बाद में, जो रीढ़ की हड्डी का बाकि हिस्सा बच गया, उसमें हर तरह का movement (क्रिया) संभव नहीं, तब प्राणायाम होता है। प्राणायाम आखिरी क्रिया है, ये लोग (योगाचार्य) पहले करवा रहे हैं, ये बहुत खतरा है। इस प्रकार प्राणायाम जब पूर्ण हो जाएगा तो कुण्डलिनी आज्ञाचक्र से ऊपर निकल जाएगी। आदमी समाधिस्थ हो जाएगा। मगर समाधि लगने के लिए पहली शर्त है पूर्ण रोग मुक्ति। समाधि लगे बिना, आप प्रकृति का रहस्य मालूम नहीं कर सकते।

१०२. धर्म अपने आप में एक पूर्ण सत्ता है।

(२४ नवम्बर २००५)

सत्य कभी रुका नहीं है, जितना विरोध होता है उतना तेजी से बढ़ता है। स्वामी विवेकानंद जी ने एक जगह कहा है कि नदी के रास्ते में अगर कोई रुकावट आ जाती है घास-फूस के कारण, पानी इकठा हो जाता है तो उसका वेग दस गुना ज्यादा हो जाता है। इसमें जो मेरे रास्ते में रुकावट डाल रहे हैं वो भ्रम में हैं, ये रुकने वाली चीज़ नहीं है। ये धन से नहीं चल रही है, यह धर्म चल रहा है, धर्म चल रहा है। धर्म अपने आप में एक पूर्ण सत्ता है। राम को माया संचालित नहीं कर सकती। यह एक विज्ञान है, हमारा विज्ञान है जो मूर्त रूप ले रहा है।

१०३. कृष्ण की इच्छा

(२४ नवम्बर २००५)

कृष्ण की इच्छा है कि यह धर्म विश्व धर्म हो। इस ज्ञान का प्रचार पूरे संसार में हो। उत्तरपाड़ा स्पीच में भगवान् कृष्ण ने ध्यान की स्थिति में अरविन्द को कहा है कि मैं इस देश का उत्थान कर रहा हूँ, इसको ऊपर उठा रहा हूँ ताकि यह देश मेरी वाणी का सन्देश पूरे संसार में फैलाए तो अब यह विस्तार होगा।

१०४. स्वामी विवेकानन्द जी की भविष्यवाणी

(२४ नवम्बर २००५)

इस धर्म की, इस देश की शरण में, इस ज्ञान के लिए तुमको (पश्चिम को) आना पड़ेगा। स्वामी विवेकानंद जी की एक भविष्यवाणी है । उन्होंने कहा है कि जब मेरे पश्चिम के कई अनुयाई यहाँ आएंगे और तुमको कहेंगे कि तुम कर क्या रहे हो? धर्म-कर्म, रहन-सहन, और चाल-चलन में आपका धर्म हमारे से कहीं अच्छा है। यहाँ आकर हम खुद उसको स्वीकार कर रहे हैं, आप क्या कर रहे हो? तब यह देश मानेगा। और स्वामी जी कि भविष्यवाणी है कि वह हमारे देश में गुरु बनकर नहीं आएंगे। भौतिक विज्ञान में वो हमारे गुरु होंगे, इस अध्यात्म विज्ञान में यह देश विश्व का गुरु होगा। यह भारत फिर विश्व गुरु बनने जा रहा है। यह कोई साधारण बात नहीं है।

१०५. भारत विश्व गुरु होगा।

(२४ नवम्बर २००५)

स्वामी विवेकानंद जी की भविष्यवाणी जो मुझे याद है- उन्होंने कहा कि यह देश कई दफ़े गिरा, कई दफ़े उठा, मगर यह दो घड़ी की अमावस्या की रात्रि जो है, इतनी गिरावट लाई जितना इस देश में पहले कभी नहीं आई। पर उसके साथ में एक और बात कह दी। उन्होंने कहा कि इस गिरावट के बाद जो उत्थान होगा तो पहले वाले उत्थान जितने भी हुए हैं न इस देश और धर्म के, वो सब गाय के खुर के सामान छोटे लगेंगे, इतना यह देश शिखर पर पहुँच जाएगा; यह विश्व गुरु होगा।

१०६. कृष्ण तो एक सर्वोच्च सत्ता है।

(१३ अप्रेल २००६)

नाम चाबी है, ध्यान तो होता रहेगा, कभी नहीं होगा तो कोई बात नहीं, मगर नाम चालू रखना। ये संजीवनी मंत्र है, उसको most secret (अति गोपनीय) कहा है, मगर कहा है- yet to be revealed (अभी प्रकट नहीं हुआ है)। कृष्ण को उसने absolute power (परमसत्ता) कहा है। इसका नाम जपोगे तो ये परिस्थितियों के विपरीत चलकर भी फायदा कर देगा क्योंकि कृष्ण तो एक Supreme Power (सर्वोच्च सत्ता) है। उसी के नाम से ये सब हो रहा है। कृष्ण के नाम का ही करामात है। ये खेल बड़ा अजीब है, इसमें गुरु का अहम role (भूमिका) होता है।

१०७. मंत्र की ताकत

(०४ मई २००६, बीकानेर)

मैंने, हमारे दर्शन के मंत्र-शास्त्र से रोग ठीक करके prove (सिद्ध) कर दिया कि देखो, मंत्र में क्या ताकत है! तुम्हारे वाले यंत्र से ज्यादा तेज है। एक बहस छिड़ी हुई है। यह एक विकासवाद है। देखिए! यह धर्म जो है आदमी के विकास की एक प्रक्रिया है। हर धर्म में ईश्वर को याद करने के अलग-अलग तरीके होते हैं। कोई मंदिर जाता है, कोई पूजा करता है, कोई हनुमान चालीसा पढ़ता है, हर कोई अपने-अपने ढंग से (आराधना) करते हैं। उसी तरह से, मैं आपको एक तरीका बताऊँगा। आप चाहे किसी जाति के हैं, किसी धर्म के हैं, किसी वर्ण के हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता। और जो बताऊँगा वो हमारी philosophy (दर्शन) पर

based (आधारित) बताऊँगा। और उसको scientifically prove (वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित) करके बताऊँगा कि हमारा धर्म वहाँ से शुरू होता है, जहाँ आकर के विज्ञान थक गया- यह reality (वास्तविकता) है। एड्स के लिए थक ही गया, हथियार डाल दिए और नाम (जप) से एड्स ठीक हो रहा है; हजारों ठीक हो गए।

१०८. कलियुग में आराधना का तरीका

(०४ मई २००६, बीकानेर)

भगवान् की आराधना का अलग-अलग तरीका होता है। कलियुग में भगवान् का नाम जप ही सारे फल देता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि-

कलियुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।

इस युग में नाम जप जितना effective (प्रभावशाली) होता है, और कोई कर्मकाण्ड नहीं होता।

१०९. इसमें लेना-देना नहीं है।

(०४ मई २००६, बीकानेर)

गुरु क्या है? आप सोचते होंगे कि यह शरीर गुरु है, यह तो कल मर जाएगा। गुरु तो अनादि-अनंत होता है, अजर-अमर होता है; गुरु मतलब एक गुरुत्त्वाकर्षण होता है, गुरुत्त्वाकर्षण को गुरु कहते हैं। ये महाराज (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) के पास था, ये दे गया और आदेश कर गया कि आगे से ये काम तेरे को करना है, कर रहा हूँ। मेरे को अगरबत्ती की एक सींक नहीं देनी पड़ी, इसलिए इसमें लेना-देना नहीं है। धन से ठीक नहीं हो सकोगे, चाहे एक करोड़ दे दो। मगर श्रद्धा से गुरु मानकर, बस नाम जप कर लो, फैसला हो जाएगा।

११०. दो सिद्धियाँ

(०४ मई २००६, बीकानेर)

परिस्थितियों वश आराधना करनी पड़ी, रिजल्ट मिला उसकी मुझे जानकारी नहीं थी कि क्या मिलेगा? इस प्रकार पहली-पहली जो सिद्धि हुई वो गायत्री मंत्र की हुई-निर्गुण निराकार की। यह physical body (भौतिक शरीर) जो है divine form (दिव्य रूप) में transform (परिवर्तित) हो गई। उस energy (ऊर्जा) में बदल गई जिससे ये

physical body बनी है। जब जिज्ञासावश गुरुदेव के आदेश से कृष्ण वाला मंत्र जपा तो इसकी भी सिद्धि हो गई। अब यह परिवर्तन आज तक नहीं हुआ, आज तक एक जन्म में दोनों सिद्धियाँ नहीं हुईं हैं ; सगुण और निर्गुण की एक ही जीवन में किसी को सिद्धि नहीं हुई है। एक-एक की सिद्धि होती गई और मोक्ष पाते गए। ये देवयोग है कि यह परिवर्तन मुझमें आ गया। इसलिए यह body transform (शरीर परिवर्तित) हो गई। अब इसकी तस्वीर का ध्यान करने से योग होने लग जाता है।

१११. नशे की लत से छुटकारा

(०४ मई २००६, बीकानेर)

विज्ञान आश्चर्य कर रहा है कि अफीम छूट गया! एक-दो के नहीं, हजारों के छूट गया। वे लोग कह रहे हैं कि गुरुजी! जो २० साल से अफीम खा रहा है, उसका after-effects (अफीम छूटने के कारण आने वाली समस्याएँ) कहाँ गया? After-effects का क्या हुआ? मैंने कहा कि मैं आपकी after effects की बात को नहीं मानता। मैंने कहा, मानलो उदाहरण के लिए मैं अफीम खाता हूँ। सुबह खाया और काम में लग गया तो शाम को नशा उतर गया, अन्दर फिर नशे की माँग हुई तो खाना पड़ा। demand (माँग) को आपकी science (विज्ञान) खत्म नहीं कर सकती; वृत्ति नहीं बदल सकती।

वृत्ति क्या होती है- ये आपकी साइंस के पकड़ में नहीं आता। मैंने कहा इस नाम जप और ध्यान से वृत्ति बदल जाती है। आदमी सतोगुणी हो जाता है। फिर उस चीज से घृणा हो जाती है, अन्दर से घृणा हो जाती है; बदबू आने लग जाती है, जिसकी पहले सुगन्ध आती थी। इस प्रकार साधक को नशा छोड़ जाता है। साधक नहीं छोड़ता, माँग खत्म हो जाती है।

कितने लोग कहते हैं, संत महात्मा कहते हैं कि मत पीओ, कोई छोड़ता है क्या, कोई मानता है क्या? फिर मेरे वाली (बात) कौन सुने? मैं कहता हूँ, मत छोड़ो, है हिम्मत तो आ जाओ मैदान में। (शराब) मत छोड़ो, मगर नाम जप को भी मत छोड़ो। यदि नाम नहीं जपोगे तो नशा नहीं छूटेगा और नाम जपोगे तो नशा पड़ोसी के भी नहीं रहेगा।

एड्स, कैंसर के patient (मरीज) को कोई डरने की जरूरत नहीं है-नाम जपोगे, नहीं मरोगे। यहाँ (मंच) तक आकर के openly (सार्वजनिक रूप से) क्या कोई यह बात कह सकता है, अगर यह गलत होती!

११२. आध्यात्मिक ध्यान

(११ मई २००६)

ये ध्यान का तरीका है। इसको Spiritual Meditation (आध्यात्मिक ध्यान) कहते हैं। (हठयोग में) बुद्धि के प्रयास से Meditation (ध्यान) होता है और यहाँ (सिद्धयोग में) बुद्धि को परे रखकर के ध्यान और योग हो जाता है। ये आपके अंदर एक चेतना जाग्रत हो गई, उससे फायदा होगा। जितना नाम जपोगे, नैया पार हो जाएगी, रोग-शोक तो कहीं खत्म हो जाएंगे। रोग के बाद का जीवन जो है ऐसा दिव्य जीवन होगा, आनंदमय जीवन होगा।

११३. गुरु क्या है?

(०३ दिसम्बर २००६, कोटा)

गुरु क्या है? गुरुत्वाकर्षण ही गुरु है, यह शरीर थोड़े ही गुरु है, यह तो कल मरेगा। वो गुरु तो आपके अंदर बैठा है, सबके अन्दर बैठा है। हमारे धर्म में time and space (समय और स्थान) की कोई कीमत नहीं है। सारा ब्रह्माण्ड अंदर है तो आप मेरे अन्दर और मैं आपके अन्दर, इसलिए तो अमेरिका में बैठे, कनाडा में बैठे लोग ध्यान कर रहे हैं और योग हो रहा है। मेरी तस्वीर से योग हो रहा है।

११४. क्या ये चमत्कार है?

(०३ दिसम्बर २००६, कोटा)

जयपुर में मेरे दीक्षा कार्यक्रम में टाइम्स ऑफ इण्डिया अखबार के संपादक श्री नायडू आये थे। जब एड्स और कैंसर के पोजिटिव और नेगेटिव केसेज देखे तो उन्होंने लिख दिया कि यह wonder therapy (अद्‌भुत इलाज) है। एड्स खत्म हो रहा है, पश्चिम का विज्ञान कह रहा कि यह miracle (चमत्कार) है। मैं उनको कहता हूँ कि न तो यह wonder therapy है और न ही miracle है, यह तो भारतीय दर्शन के अनुसार होने वाला due (अपेक्षित) विकास है।

११५. ईश्वर के पाँच काम

(०३ दिसम्बर २००६, कोटा)

कश्मीरी शैव सिद्धांत के अनुसार ईश्वर के पाँच काम हैं- १. सृष्टि, २. स्थिति, ३. लय, ४. तिरोधान और ५. अनुग्रह। भगवान् का पाँचवाँ काम गुरु करता है। गुरु जब अनुग्रह करके दीक्षा देता है तो साधक को अपनी और पूरे विश्व की वस्तुस्थिति की जानकारी हो जाती है। यहाँ (सिद्धयोग में) जाति, धर्म आदि गौण हैं, क्योंकि यह मानवीय विकास है।

११६. गुरु की वाणी में शक्ति होती है।

(०३ दिसम्बर २००६, कोटा)

महर्षि श्री अरविन्द ने एक बात और स्पष्ट की है कि ऐसा enlightened (प्रबुद्ध) आदमी जब अपने शिष्यों को वैदिक मंत्र की दीक्षा देता है, उपनिषदों की देता है, उस परमसत्ता से जुड़ने के लिए पथ प्रदर्शन करता है तो उसकी शक्ति, उस व्यक्ति की आवाज में है। मेरे में जो enlightenment (प्रबोधन) हो गया मतलब मैं जो बोल रहा हूँ, उसमें एक force (शक्ति) है, जो अभी आपको महसूस नहीं हो रही है। मगर अभी जब ध्यान कराऊँगा तो आपको योग होना शुरू हो जाएगा, अलग-अलग प्रकार का योग होगा।

११७. सार्वभौमिक परिवर्तन

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

मैं उन वैज्ञानिकों से मिलने निकला हूँ कि मेरी तस्वीर से ये क्या होने लग गया? तस्वीर तो एक निर्जीव matter (वस्तु) है। मैं तो किसी का भला-बुरा कर सकता हूँ, पर मेरी तस्वीर क्या कर रही है? इस पर बोलो, अब वो बोलते नहीं हैं। वो इस matter (वस्तु) को नहीं समझते हैं और हड़बड़ाहट में मेरे खिलाफ action (कार्यवाही) करना शुरु कर देते हैं। मुझे कोई शिकवा-शिकायत नहीं है कि भारत सरकार ने क्या किया या राजस्थान सरकार ने क्या किया? उनसे मेरी कोई शिकायत नहीं है क्योंकि वे समझते नहीं हैं। मैं जो कर रहा हूँ, वो तो एक सकारात्मक result (परिणाम) दे रहा है। यह तो universal change (सार्वभौमिक परिवर्तन) है, मानव मात्र में होने वाला परिवर्तन है; किसी धर्म विशेष से इसका कोई संबंध नहीं है।

११८. थाइरॉयड ठीक हो जाता है।

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

थाइरॉयड दो प्रकार का होता है- हाइपो और हाइपर। एक में आदमी मोटा हो जाता है और एक में सूख कर कांटा हो जाता है। वो (कुण्डलिनी) सिर्फ कण्ठ का योग करवाती है और सात दिन में थाइरॉयड ठीक हो जाता है। जबकि डॉक्टर के पास जाओ तो जीवन भर दवाई लेओ, कभी वो एक गोली कर दे, कभी दो कर दे, कभी आधी कर दे तो जीवन भर लेओ। यहाँ तो सात दिन में थाइरॉयड ठीक हो रहा है। कोई बीमारी ऐसी नहीं है हमारे योग दर्शन में, जो incurable (असाध्य) है।

११९. खाली पेट ध्यान करें।

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

मुख्य रूप से सूर्योदय से पहले, नहा-धोकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर ध्यान करना चाहिए। कोई ठोस चीज खाकर ध्यान नहीं करें। चाय वगैरह पी लें कोई दिक्कत की बात नहीं मगर ठोस चीज खाकर नहीं। जब ठोस चीज खा लेगा तो शरीर भारी हो जाएगा, पहली बात तो ध्यान लगेगा नहीं, और यदि ध्यान लग गया, यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई तो खाया हुआ है उसकी उल्टी हो जाएगी।

१२०. अफीम खाने पर असर क्यों नहीं?

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

विज्ञान के पास क्या उत्तर है कि कोई नशे की चीज खावे और उसका effect (असर) नहीं हो? Chemically (रासायनिक) परिवर्तन नहीं आवे, ये क्या हो रहा है? मेरा एक शिष्य था जो RAW (रॉ) में लगा हुआ था, उसकी transfer (तबादला) दिल्ली हो गई। वो अफीम लेता था। वह घबरा गया कि यदि अफसरों को मालुम हो गया कि मैं अफीम खाता हूँ तो नौकरी चली जाएगी। तब वह serious (गंभीर) होकर ध्यान करने लगा। जब मेरे बीकानेर में दीक्षा कार्यक्रम चल रहे थे, तब मुझसे मिलने आया। वह मुझसे कहने लगा कि गुरुजी मैं तो चार गुना ज्यादा (अफीम) खाने लगा तो भी नशा नहीं आता है। मैंने उसे कहा- "फिर क्यूँ खाता है?" वह कहने लगा कि तकलीफ हो जाएगी तो, (इसलिए खाता हूँ)। मैंने कहा- "जब खाने से तकलीफ नहीं होती है तो बिना खाने से क्या होगा?" अब science

(विज्ञान) इस मामले में क्या उत्तर देगी कि अफीम खाया और असर नहीं हुआ?

आपको बताऊं कि अरविन्द ने एक दफे क्या किया था कि इतना ज्यादा अफीम मंगवाया और खा गया, आपको ताजुब होगा कि उससे दस आदमी मर सकते हैं, लेकिन इतना सारा अफीम खाने के बाद भी अरविन्द को कुछ नहीं हुआ क्योंकि वह योगी था। इस योग से आपकी demand (माँग) खत्म हो जाएगी। पहली बात तो खा नहीं सकते और कहीं फंसकर खा लिया तो उसका कोई असर नहीं होगा, नशा आएगा ही नहीं। शराबियों को भी नशा नहीं आता चाहे चार बोतल पी जाएँ, शराब पानी की तरह हो जाती है; इसका क्या जवाब है साइंस के पास? आखिर साइंस को बोलना पड़ेगा।

१२१. हजारों एचआईवी रोगी ठीक हुए।

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

मैं कोई डॉक्टर थोड़े ही हूँ। डॉ. अरविन्द माथुर ने मुझे मैसेज किया कि गुरुजी एचआईवी वायरल लोड टेस्ट करवा लो। भार घटने-बढ़ने से तो डॉक्टर पकड़ में नहीं आएंगे। मुझे क्या मालुम सीडी-४ क्या होता है, सीडी-८ क्या होता है? मैंने एचआईवी वायरल लोड टेस्ट करवाना शुरू कर दिया। डॉ. अरविन्द माथुर ने मुझे बताया कि ५० से नीचे आ गया वायरल लोड, इसका मतलब एचआईवी cure (ठीक) हो गया। यहाँ तो हजारों आदमियों का ५० तो क्या, २० से नीचे आ गया। साइंस जवाब क्यों नहीं देती?

१२२. मैं तो कुछ नहीं देता।

(०२ फरवरी २००७, उदयपुर)

मैं तो कुछ नहीं देता, जन्म से ही साधक के पास सब कुछ है। मैं तो उसको activate (चेतन) करने के लिए भगवान् के नाम का एक तरीका बताता हूँ। उसको ही करना पड़ेगा तो सफल होंगे, मेरे उपदेश से तो पार नहीं पड़ने वाली।

१२३. भौतिक शरीर दिव्य रूप में परिवर्तित हो गया।

(०४ फरवरी २००७, उदयपुर)

मैं समझता हूँ कि यह artificial (कृत्रिम) भय था, मुझसे यह काम करवाया जाना था। प्रकृति ने मुझसे जबरदस्ती करवा लिया। अब वो (जपने का) मिशन पूरा हो गया तो

अगले दिन सुबह जल्दी उठना नहीं था। लेकिन हमेशा की तरह आदतवश आँख खुल गई। मैं बेड पर लेटा हुआ था तो ध्यान लग गया। मैं नहीं समझता था कि ध्यान क्या होता है। क्या देखता हूँ कि मेरी physical body divine form में transform (भौतिक शरीर दिव्य रूप में परिवर्तित) हो गई। यह जो आपका अंग है, वो किसी ऊर्जा के कारण shape (आकार) में आया है। एक force (ऊर्जा) है, उससे आपको यह shape मिला है। मैं एक कदम पीछे हटकर, उस ऊर्जा में परिवर्तित हो गया। मैं नहीं समझ पाया कि क्या हो गया? प्रकाश अंदर, दिखता आँख से है, फिर अंदर कैसा प्रकाश है? कोई organ (अंग) दिखाई न दे- न हार्ट दिखे, न तिल्ली दिखे, कुछ भी न दिखे। Enlightened (प्रबुद्ध) हो गया। फिर भँवरे की गुँजन सुनाई दी। मैंने सोचा पेट में भँवरा कैसे आया? फिर उस आवाज पर concentrate (एकाग्र) हुआ तो नाभि से गायत्री मंत्र जपा जा रहा है, कण्ठ से नहीं, नाभि से, वो परा वाणी है। योग में चार वाणियाँ होती हैं- परा, पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी। अपने आप जपा जा रहा है, जिसका कोई अंत नहीं।

१२४. ये धन से प्राप्त होने वाली चीज है ही नहीं।

(०४ फरवरी २००७, उदयपुर)

बॉम्बे में मेरे को कई आदमियों ने कहा, "गुरु जी पैसे ले लो, पैसे के बिना कलियुग में पार नहीं पड़ेगी।" भारतीय विद्या भवन, मरीन ड्राइव, मुम्बई में मेरा प्रोग्राम था। मुम्बई में मेरे बहुत प्रोग्राम हुए। मैंने कहा- चलो! ले लेता हूँ, कितना ले लें? मैंने कहा कि राम का नाम बेचा नहीं जा सकता, खरीदा नहीं जा सकता, तब मैं उसके नाम से कैसे लूँ? उन्होंने सलाह दी कि ये कार्यक्रम की जो व्यवस्था कर रहे हैं, उसके लिए entry fee (प्रवेश शुल्क) ले लो। मैंने कहा- कितने ले लूं? उन्होंने कहा कि कम से कम ११०० रुपये ले लो। मैंने कहा कि अगले कार्यक्रम से शुरू कर दो लेकिन मुझे बताओ कि कितना धन आ जाए कि मैं संतुष्टहो जाऊं? उन्होंने कहा कि संतुष्ट तो नहीं होंगे, वो तो फिर लालसा बढ़ेगी। ये आज से ७-८ साल पहले की बात है।

मैंने कहा, "मेरे गुरु के आदेश की पालना नहीं कर पाऊँगा, धन के चक्कर में फंस जाऊँगा। इस शरीर की एक सीमा है, उससे आगे एक सेकण्ड भी नहीं रहेगा दुनिया में। ये धन से प्राप्त होने वाली चीज है ही नहीं।"

१२५. आप कर्ता नहीं हो।

(०४ फरवरी २००७, उदयपुर)

हमारे दर्शन में एक सिद्धांत है- गुरु दूसरा जन्मदाता होता है, गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती। वो मुक्ति कोई खिलौना है, जो गुरु के पास जाते ही आपको पकड़ा देगा। वो तो एक क्रियात्मक विकास है। जिस योग की मैं बात कह रहा हूँ, उसको अरविन्द ने 'पार्थिव अमरत्व' कहा है। अगर पूर्व जन्म के सारे कर्मों के बन्धन कटेंगे नहीं, तो दुबारा आना पड़ेगा, जाना पड़ेगा। आपको जीते जी मालुम हो जाएगा कि आप कर्ता नहीं हो, बहुत बार ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जो आपके सामर्थ्य के बाहर हैं, फिर भी हो जाती हैं। फिर आपको धीरे-धीरे इस उदाहरण से समझ में आ जाएगा कि करनेवाला कोई और है। जब करने वाला कोई और है तो आप भोक्ता क्यों बनोगे? इसी जन्म में फैसला हो जाएगा।

१२६. सार्वभौमिक संदेश

(०४ फरवरी २००७, उदयपुर)

देखिए! Parliament (संसद) विश्व का माइक है, अगर वहाँ ये (सांसद) बोल दे कि इनकी तस्वीर से योग हो रहा है, ये हमारे दर्शन का मूर्तरूप है, पतंजलि योग दर्शन का मूर्तरूप है तो पूरे विश्व में message (संदेश) चला जाएगा। इस भू-मण्डल पर जितने एड्स के रोगी हैं, वो ठीक हो जाएंगे। मेरी तस्वीर के ध्यान से तो कितने अरबों लोगों की आस्था इस दर्शन में हो जाएगी, कितनी श्रद्धा हमारे धर्म में हो जाएगी।

१२७. रोमन कैथोलिक महिला

(०४ फरवरी २००७, उदयपुर)

मैं आपको कहता हूँ कि इसको (सिद्धयोग) highlight (सुर्खियों) कर दें तो! सोनिया गाँधी नहीं करेगी। एक रोमन कैथोलिक महिला को क्या मतलब है हिन्दू धर्म से? उसको मालूम है, सरदार जी (पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह) को मैंने घर के पते पर भेजा है, मगर वो डॉलर से डरते हैं। अब क्या किया जाए? हो रहा है ये।

सोनिया गांधी तो इस दर्शन को promote (बढ़ावा देना) करने के लिए नहीं बोलेगी। वो रोमन कैथोलिक औरत जिसकी वेटिकन में आस्था है- क्या वो हमारे दर्शन को विश्व दर्शन बनने देगी? मगर ये रुकेगा नहीं।

१२८. नाम जप से परिवर्तन

(१८ मार्च २००७, सूरत)

यह परिवर्तन जो आएगा, ये ईश्वर का नाम जो मैं बताऊँ, उसके जपने से आएगा, नहीं तो नहीं आएगा। आना-जाना कुछ नहीं है। आप जन्म से पूर्ण हो, आप समझ नहीं पा रहे हो, आप क्या हो? मैं तो आपको अपने आप से introduction (परिचय) करवाऊँगा, कुछ भी नहीं दूँगा। किसी गुरु के पास देने-लेने की गुँजाईश नहीं है। मैं साफ कह रहा हूँ, मेरे पास कुछ नहीं है। जो मेरे पास है, आप सबके पास है। उन शक्तियों को आप चेतन कर सकते हो, गुरुदेव की शरण में जाकर के जैसे मैंने चेतन किया।

१२९. किसी और मंत्र का जाप नहीं

(१८ मार्च २००७, सूरत)

मंत्र यही जपोगे, ध्यान मेरा करोगे। बाकि कोई already (अन्य कोई) मंत्र चल रहा है, उसको बंद करना पड़ेगा। दोनों को साथ मत चलाना। मैं जो कर रहा हूँ, मैं जो बता रहा हूँ, उसी की जिम्मेदारी मेरी है। और जो दोनों को मिला लिया, तो result (परिणाम) नहीं आएगा।

१३०. नाम तो जपना पड़ेगा।

(२००७, अमेरिका)

मैंने कभी नहीं कहा कि बाहर वाले (डॉक्टर) को छोड़ दो। हमेंशा यही कहता हूँ कि बाहर वाला और अंदर वाला-दोनों से दोस्ती कर लो, सब रोग ठीक हो जाएंगे। मैं तो केवल अंदर वाले से introduction (परिचय) करवाता हूँ, दोस्ती तो आपको करनी पड़ेगी। नाम तो उसका (भगवान् का) जपना पड़ता है, नहीं जपोगे तो कुछ नहीं होगा। हाँ! गुरु के प्रति समर्पित भाव से, श्रद्धा से। आपके western (पश्चिम) लोग thanks (धन्यवाद) कह देते हैं, कुछ फीस दे देते हैं, फिर कोई मतलब नहीं; पार नहीं पड़ती है। गुरु को जीवन भर मानना पड़ेगा। गुरु है तो वह omnipresent (सर्वव्यापक) है।

१३१. अजपा जाप क्या है?

(२००७, अमेरिका)

मंत्र जो है न वो राधा और कृष्ण का मंत्र है। चन्द दिनों तक आप याद रखकर दिन में ५-७ दफे ध्यान कर लो (कि जपा जा रहा है या नहीं), फिर वह automatically (स्वतः) शुरू हो जाएगा। फिर आप बात करोगे, बोलोगे, खाओगे, पिओगे, कुछ भी करोगे बाहर उससे कोई मतलब नहीं है, वो अन्दर जपा जाएगा; उसे कहते हैं अजपा जाप।

१३२. पुनर्जन्म

(२००७, अमेरिका)

७ जनवरी १९९७ को ब्रिटेन की एक लड़की मेरे पास आई थी (बीकानेर में)। वो लड़की (एलिजाबेथ हार्पर) आज डेनिस कुसिनिच की पत्नी है। वो २ तारीख को मेरे से मिलने आई थी (अमेरिका में), जब उसने न्यूज़ सुनी कि मैं यहाँ आया हूँ। वो अपने पति को भी साथ लाई थी। वह ब्रिटेन की पहली लड़की है, जो मुझसे मिलने यहाँ आई थी।

उसकी माँ ने कहा कि जब वह ११ साल की थी, तब कहती थी कि मैं पिछले जन्म में पायलट थी। एक दिन इसके पिता इसको प्लेन में ले गए और पायलट को कहा कि इसको प्लेन लैण्ड करने दो तो इस ११ साल की लड़की ने प्लेन लैण्ड कर दिया। १९९७ में जब वो मेरे पास आई तब २१ साल की थी। वो मेरे पास ही बैठी थी। मैंने कहा कि यह तो बहुत गड़बड़ हो गई। उन्होंने कहा कि क्या हुआ? मैंने कहा कि बाइबिल तो कहती है कि कब्रें खुलेगी, और सारे जिन्दा होंगे! ये कब्र से निकल कर पहले क्यों आई?

मैंने कहा कि हमारा दर्शन, पूर्ण दर्शन है। आत्मा का neutral gender है- न वह स्त्रीलिंग है, और न ही वह पुलिंग है। वह पिछले दफा लड़का थी, अब लड़की हो गई।

१३३. दिव्य रूपान्तरण

(२००७, अमेरिका)

महर्षि अरविन्द ने मनुष्य के बारे में कहा है कि "Man is a transitional being. He is not final but he will be." (मनुष्य एक संक्रमणकालीन प्राणी है। वह अभी पूर्ण नहीं है, पर वह होगा।) भविष्यवाणी है कि 'आगामी मानव जाति दिव्य शरीर

धारण करेगी।' सभी धर्मों की भविष्यवाणी है- creation of a new world (एक नए संसार की रचना)। वह कैसा होगा- तो कहते हैं कि 'creation of a spiritual world.' (एक आध्यात्मिक संसार की रचना); फिर उस दुनिया का आदमी कैसा होगा? तो कहा- Divine transformation of human being (मनुष्य का दिव्य रूपान्तरण)। रोग से मेरा कोई मतलब नहीं, मैं तो मानव मात्र का Divine transformation (दिव्य रूपान्तरण) करवाना चाहता हूँ। किसी धर्म या जाति से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।

१३४. नाम जप के बिना मुक्ति नहीं

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

भारतीय दर्शन में जिस योग का वर्णन आता है, उसका तो मूल उद्देश्य मुक्ति है। भारतीय योग दर्शन, रोग की बात ही नहीं करता। आप पतंजलि योगदर्शन उठाकर देख लो, उसमें १९५ सूत्र हैं। उसमें कहीं भी रोग का वर्णन नहीं आया है। वह तो जो हमारे पूर्व जन्म के संस्कार हैं, उनके बीज नष्टकरने की बात करता है।

पतंजलि योग दर्शन के चार अध्याय हैं-समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद। पहले अध्याय-समाधिपाद के दूसरे सूत्र में ऋषि ने कहा है कि चित् की वृत्तियों का निरोध ही योग है। यह जो (मन) भाग रहा है, रुकता नहीं है, यह जब तक चुप होकर बैठ नहीं जाए, तब तक न कोई ध्यान है, न योग है।

समाधिपाद में ही २४ से लेकर २९ सूत्र तक ऋषि ने स्पष्ट कहा है कि हरि नाम के जप के बिना कोई योग सिद्धि नहीं। ईश्वर के नाम के जप के बिना कोई योग सिद्धि नहीं, कोई मुक्ति नहीं। इस युग में केवल ईश्वर का नाम जप ही मोक्ष तक पहुँचा देता है। जब तक सारे कष्ट दूर नहीं होते, तब तक मुक्ति नहीं हो सकती। मेरे जैसे साधारण आदमी के माध्यम से, यह एक ऐसा विज्ञान प्रकट हो रहा है।

१३५. आप कौन हो?

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

मेरे में ये परिवर्तन आ गया, बाबा श्री गंगाईनाथ जी के चरणों में गया (समर्पण से)। आप में भी वो परिवर्तन आ सकता है। मानव मात्र में वो परिवर्तन आ सकता है। हर स्त्री-पुरुष

में ये परिवर्तन आ सकता है। केवल आपको समझने की जरुरत है कि आप क्या हो? मैं तो आपको अपने आप से introduction (परिचय) करवाऊँगा। आप यह शरीर नहीं हो, आत्मा हो, जो अजर-अमर है। हमारे धर्म में कहा है कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती। मुक्ति कोई खिलौना है जो गुरु के पास जाते ही वो आपके हाथ में पकड़ा देगा? वो (गुरु) तो एक रास्ता बताता है कि मंजिल तक पहुँचने के लिए ये रास्ता है और वो केवल एक ही है-नाम जप।

१३६. गुरुदेव की दिव्य वाणी

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

महर्षि अरविन्द ने कहा है कि कोई गुरु अगर शिष्य को मंत्र (दीक्षा) देता है, वेदों की देता है या उपनिषदों की देता है या ईश्वर के नाम की देता है तो उसकी आवाज में ये ताकत होती है। आप सुन रहे हो तो आप को विश्वास नहीं हो रहा कि ये सब कैसे होगा? पर यह आवाज जो आ रही है, यह एक enlightened body (प्रबुद्ध, चेतन, शरीर) में से आ रही है, एक ordinary body (साधारण शरीर) में से नहीं आ रही।

१३७. अद्वैतवाद और सिद्धयोग

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

यह (सिद्धयोग) आदिगुरु शंकराचार्य जी ने जिस अद्वैत दर्शन की बात कही है, prove (सिद्ध) किया है, वह है। अद्वैत दर्शन क्या है? आप जानते हो? मतलब दो है ही नहीं। एक ही परमसत्ता अंदर बैठी है। राम सबके अंदर बैठा है, घट-घट का वासी है। यह अद्वैतवाद है, मैं इसको मूर्तरूप दे रहा हूँ। यह तो आदिगुरु शंकराचार्य पहले से prove (सिद्ध) कर गए, मगर बीच में हमारी संस्कृति पतन की तरफ चली गयी थी, इसलिए यह ज्ञान लुप्त हो गया था। फिर वापस surface (धरातल) में आ गया और पूरे विश्व में फैलेगा।

१३८. दसवां द्वार

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

पतंजलि योग दर्शन में तीसरे अध्याय- 'विभूतिपाद' में ऋषि ने कहा है कि जब साधक को 'प्रातिभ ज्ञान' प्राप्त हो जाता है तो उसे छह सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। उसमें पहली सिद्धि है

ध्यान और समाधि की स्थिति में तीसरी आँख से साधक unlimited past & future (अनिश्चितकालीन भूत-भविष्य) को देखता, सुनता है। जब तक यह दसवां द्वार नहीं खुलेगा, न योग है, न ध्यान है। इसलिए आज्ञाचक्र पर गुरु को देखते हैं। गुरु मन को arrest (रोक लेता) कर लेता है।

१३९. गुरु सर्वव्यापक है।

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

गुरुत्वाकर्षण का नाम ही गुरु है। यह शरीर गुरु थोड़े ही है; यह तो दो-चार साल में मर जाएगा। गुरु तो आपके अंदर बैठा है। हमारे विज्ञान में time (समय) और space (दूरी) की कोई value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो, मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, जिस समय याद करोगे, मैं present (उपस्थित) रहूँगा। गुरु अगर वास्तव में गुरु है तो omnipresent (सर्वव्यापक) है।

१४०. मृत्यु एक वरदान है।

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

जो आया है, उसको जाना है- २० में, ३० में, ५० में या १०० में। आप सब जानते हो कि मरना तो पड़ेगा ही, बचने का कोई उपाय नहीं है, फिर डरते क्यों हो? माया ने मौत को ऐसा डरावना बना दिया है कि कोई उसे स्वीकार नहीं करता और वो किसी को छोड़ती नहीं। इस नाम जप और ध्यान से माया का आवरण क्षीण हो जाएगा, मौत की सच्चाई सामने आ जाएगी। तब फिर देखोगे कि यह तो ऐसा वरदान है ईश्वर का, जो जन्म-मरण से छुटकारा दिलाता है; तब फिर डरोगे नहीं। कबीरदास जी ने कहा है-

'जा मरने से जग डरे, मोरे मन आनंद।
कब मरिहों, कब पहियों पूर्ण परमानन्द।।'

ये स्थिति आपकी इसी जन्म में हो जाएगी, चाहे किसी जाति के हो, किसी धर्म के हो, किसी वर्ण के हो।

१४१. नाम चाबी है।

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

कबीर का एक उदाहरण देता हूँ। कबीर ने कहा है-

जल बिच कुम्भ, कुम्भ विच जल, बाहर भीतर पानी।

विघटा कुम्भ, जल जल ही समाना, यह गति विरले ने जानी।

कबीर कहता है कि घड़ा फूट जाए, गल जाए तो बाहर वाला और अंदर वाला पानी एक हो जाते हैं। आप सब भी यह जो घड़ा (शरीर) लिए बैठे हो न यह तो आज नहीं तो कल गलना ही गलना है। अगर जन्म-मरण के चक्कर से छूटना चाहते हो तो फिर नाम जप और ध्यान लगाओ। लगा दो नाम की झड़ी। यह नाम जप मत छोड़ना। नाम चाबी है। नाम का नशा नहीं आएगा तो ध्यान नहीं लगेगा। नाम जप हर समय करो-उठते-बैठते, खाते-पीते, टट्टी जाते, पेशाब करते, इसमें कोई रोक नहीं है।

१४२. सद्गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव

(१५ नवम्बर २००७, जोधपुर)

गुरु का आदेश है कि तेरे दरवाजे से कोई खाली (हाथ) नहीं जाए। पात्र उल्टा रखोगे तो मेरे वश की बात नहीं है और गुरु के प्रति समर्पित भाव; और गुरु कुछ नहीं चाहता।

१४३. कुण्डलिनी जागरण से विश्व शांति

(१० जनवरी २००८, सूरत)

West (पश्चिम) में तो यहाँ तक मानने लगे हैं कि भारतीय दर्शन में जिस कुण्डलिनी जागरण की बात कही गई है, मात्र उसी से विश्व शांति संभव है; वो भौतिक धन से असंभव है, वो हथियारों से असंभव है। जब तक आतंरिक चेतना जाग्रत नहीं होगी, जिसे भारतीय दर्शन में कुण्डलिनी कहते हैं, वो जब तक मानव जाति में चेतन नहीं होगी, तब तक शांति नहीं होगी, यह पश्चिम की मान्यता है। अब वो बाहर से उसको activate (चेतन) करने की कोशिश करते हैं और वो अंदर है तो उनके पास अंदर घुसने का तरीका नहीं है।

१४४. विश्वव्यापी परिवर्तन

(१० जनवरी २००८, सूरत)

यह परिवर्तन जो आ रहा है, वो मानव मात्र में आ रहा है। जाति, धर्म, राष्ट्रीयता, काला-गोरा आदि से इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने तो साफ कहा है कि अपने धर्म और अपनी जाति में रहते हुए, आप में ये चेतना आ सकती है। भारत सरकार को लिख कर दिया है क्योंकि यह एक universal change (सार्वभौमिक या विश्वव्यापी परिवर्तन) है; मनुष्य मात्र में होने वाला बदलाव है।

१४५. जप का महत्त्व

(१० जनवरी २००८, सूरत)

पतंजलि ऋषि ने साफ कहा है कि हरि नाम के जप के बिना कोई योग सिद्धि नहीं। इससे आत्मसाक्षात्कार हो जाता है और विघ्नों का अभाव हो जाता है। जो कष्ट भोग लिए, वो भोग लिए, आगे नहीं भोगोगे, उससे बचा जा सकता है। यह पतंजलि योग दर्शन कहता है।

१४६. स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाएँ

(१० जनवरी २००८, सूरत)

नाम जप से जब आपकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी तो वह आपको स्वयं यौगिक क्रियाएँ करवाएगी। उसी अंग का योग करवाएगी, जो आपका अंग properly function (ठीक से काम करना) नहीं कर रहा। इसीलिए हर एक को अलग-अलग योग होता है। डायबिटीज वाले को अलग होगा, गठिया वाले को अलग होगा, कैंसर-एड्स वालों को अलग होगा। मतलब जो particular (विशेष) अंग आप का properly function (ठीक से काम करना) नहीं कर रहा है, कुण्डलिनी उसी को tone up (चुस्त करना) करेगी, active (सक्रिय) करेगी। इस तरह उस अंग का योग होता रहेगा, जब तक वह पूर्ण स्वस्थ नहीं हो जाए। अब वह automatically (स्वतः) योग हो रहा है, यह संसार के लिए और वैज्ञानिकों के लिए अचम्भा है कि आदमी चाहकर भी उसे रोक नहीं सकता। कुण्डलिनी जो mother of universe (जगत् जननी) है, उसके लिए कोई बीमारी ठीक करना असंभव नहीं है।

१४७. सिद्धयोग का मार्ग

(१० जनवरी २००८, सूरत)

पतंजलि योग दर्शन साफ कहता है कि योग में आठ अंगों का अनुष्ठान करना होता है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि। जब कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी तो उसके कारण से, पहले पाँच तत्त्व तो activate (सक्रिय) हो जाएंगे। तीन बाकी रह जाएंगे-धारणा, ध्यान और समाधि। अब धारणा पक्की नहीं होगी तो ध्यान लगेगा ही नहीं। अब नाम जप और ध्यान करोगे और अगर आप में कुण्डलिनी जाग्रत हो गई और आपको योग होने लग गया तो आपको मानना पड़ेगा कि कुछ गड़बड़ है, नहीं तो ऐसा आज तक क्यों नहीं हुआ? धारणा पक्की हो जाएगी तो फिर वही ध्यान में बदल जाएगी।

१४८. सबीज और निर्बीज समाधि

(१० जनवरी २००८, सूरत)

समाधि के दो रूप हैं-निर्बीज समाधि और सबीज समाधि। निर्बीज समाधि में, जब सहस्रार में पहुँच जाओगे, पूर्व जन्मों के संस्कार सारे खत्म हो जाएंगे, तब फिर समाधि में आपको आवाज सुनाई नहीं देगी, चाहे आपके पास कितना ही विस्फोट हो जाए। जब तक बीज नष्ट नहीं होंगे, सबीज समाधि में आपको बाहर की आवाजें सुनाई देंगी।

१४९. आध्यात्मिक विज्ञान

(१० जनवरी २००८, सूरत)

यह एक विज्ञान है। भौतिक विज्ञान जहाँ खत्म होता है, वहाँ से हमारा आध्यात्मिक विज्ञान शुरू होता है। पूर्व की spirit (अध्यात्म) और पश्चिम का matter (पदार्थ), ये दोनों जब तक नहीं मिलेंगे, विश्व शांति संभव नहीं है।

१५०. दिव्य रूपान्तरण

(१० जनवरी २००८, सूरत)

Divine force (दिव्य शक्ति) में मेरी body (शरीर) बदल गयी। इस शरीर का एक रोम भी ऐसा नहीं है जिसके पीछे एक energy (ऊर्जा) नहीं है, एक force (शक्ति)

नहीं है। मैं उस force (शक्ति) में बदल गया। अब मुझ पर कोई तरह की तामसिक शक्तियाँ attack (आक्रमण) नहीं कर सकतीं।

१५१. मगर नाम को भी मत छोड़ो

(१० जनवरी २००८, सूरत)

कितने लोग कहते हैं-शराब मत पीओ, अफीम मत खाओ, बीड़ी-सिगरेट मत पीओ, भांग-धतूरा मत खाओ, कोई मानता है क्या? इधर से सुना, उधर से निकाल दिया। मैं कहता हूँ, मत छोड़ो। एक बोतल पीते हो न, आज से डेढ़ शुरू कर दो, मगर नाम को भी मत छोड़ो। नाम और नशा आज तक साथ में नहीं चला। बीस साल में किसी ने यह नहीं कहा कि नाम जपता हूँ और नशा करता हूँ। आज से खत्म हो जाएगा। आप उस नशे को नहीं छोड़ोगे, वह नशा आपको छोड़ जाएगा।

१५२. ध्यान की शक्ति

(१० जनवरी २००८, सूरत)

आपकी science (विज्ञान) मानती है, जो शब्द बोला गया है, वह ब्रह्माण्ड में रहता है। अगर proper (उचित) मशीन हो तो उसको सुना जा सकता है, अभी सुन नहीं पा रहे हैं। हमारा योग दर्शन कहता है, जब शब्द है तो बोलने वाला भी रहा होगा, उसको बोलते हुए देखा-सुना जाना संभव है। वह तो पहले फिल्म बन चुकी, घटना घट चुकी, वह तो undone (नष्ट) हो ही नहीं सकता। अभी जो आगे घटना है, जो शब्द बोला जाना है, जो घटना अभी नहीं घटी, जो शब्द अभी नहीं बोला गया है, उसको आप पहले देख-सुन सकते हो। unlimited future (अनिश्चितकालीन भविष्य) को देख-सुन सकते हो। ध्यान के दौरान unlimited future (अनिश्चितकालीन भविष्य) देख लिया तो समझ आ जाएगा कि किस काम से आगे जाकर नुकसान होगा तो फिर वह काम नहीं करोगे। व्यावहारिक जीवन में आदमी इतना successful (सफल) हो जाता है कि आप अंदाजा नहीं लगा सकते।

१५३. जीवन मुक्ति के लिए दीक्षा

(१० जनवरी २००८, सूरत)

मेरे दीक्षा देने का मतलब जीवन मुक्त होना है। मैं क्या कोई रोग का डॉक्टर हूँ? मगर मोक्ष तक विकसित होने के लिए सारे रोग खत्म हो जाते हैं।

१५४. मंत्र से छेड़छाड़ नहीं

(१० जनवरी २००८, सूरत)

नाम (मंत्र) जप वही करोगे, मैं जिसकी दीक्षा दूँगा। इसमें addition (जोड़ना) या altration (परिवर्तन) नहीं करना। कोई मंत्र के आगे 'ॐ' लगा ले या पीछे 'नमः' लगा ले, ऐसा कुछ नहीं करना। मैं जो बताऊँ, उसको as it is (ज्यों का त्यों, वैसे ही) जपना है और हर समय जपना है।

१५५. मुसलमान और शक्तिपात दीक्षा

(१० जनवरी २००८, सूरत)

बॉम्बे में सैंकड़ो मुसलमान हैं। जो आप को दीक्षा दूँगा, वही उनको दे के आ रहा हूँ। वे एड्स से ठीक हो गए और हज भी कर के आ गए। यह किसी धर्म विशेष से related (सम्बंधित) मामला नहीं है। यह इस मनुष्य शरीर में होने वाला परिवर्तन है।

१५६. दूसरा गुरु

(१० जनवरी २००८, सूरत)

देखिये, अगर कोई दूसरा गुरु बनाया हुआ है तो वो मंत्र (उस गुरु द्वारा दिया गया मंत्र) इसके साथ नहीं चलेगा। दोनों में से एक को चुनना पड़ेगा क्योंकि हर गुरु अलग-अलग stages (स्थिति) तक विकसित होता है।

१५७. मंत्र जाप बहुत जरूरी है।

(१० जनवरी २००८, सूरत)

नाम नहीं जपोगे तो कुछ नहीं होगा और ध्यान और नाम जप अगर बंद कर दिया तो वो

रोग फिर से surface (उभर आएगा) में आ जाएगा।

१५८. कृष्ण नाम की शक्ति

(१० जनवरी २००८, सूरत)

महर्षि अरविन्द ने कहा है कि भारत का उद्धार दो मंत्र से होगा। पहला मंत्र 'वन्दे मातरम' तो प्रकट हो गया १९०६ में, दूसरे के लिए उन्होंने कहा है कि वह संजीवनी मंत्र है, वो mystic (रहस्यमय) है, secret (गुप्त) है, but not yet revealed, yet to be revealed (लेकिन अभी प्रकट नहीं हुआ है, अभी प्रकट होना बाकि है।) अब वह प्रकट हो गया है। कृष्ण के नाम से अगर रोग ठीक नहीं होगा तो फिर वो किसी से ठीक नहीं होगा। यह संजीवनी मंत्र है। आप यह बात सुन रहे हो और अभी जीवन है तो एड्स हो, कैंसर हो, उससे नहीं मरोगे अगर जपोगे ये नाम। यह संजीवनी मंत्र है।

१५९. जीने का तरीका

(०६ नवम्बर २००८)

मैंने कहा-आप तो after-thought (विचारों के साथ) जी रहे हैं, beyond-thought (विचारों से परे) भी जीने का एक तरीका है।

१६०. दर्शन एक पूर्ण विज्ञान

(०१ जनवरी २००९, जयपुर)

अध्यात्म विज्ञान सबसे पूर्ण विज्ञान है। अरस्तु, सिकंदर के गुरु थे; उन्होंने कहा है कि विज्ञान एक अपूर्ण दर्शन है, दर्शन एक पूर्ण विज्ञान है। तो मैं जो कर रहा हूँ, कोई नई बात नहीं कर रहा हूँ; मैं कश्मीरी शैव सिद्धांत को मूर्तरूप दे रहा हूँ।

१६१. गुरुत्वाकर्षण

(०१ जनवरी २००९, जयपुर)

मेरा छोटा लड़का science (विज्ञान) का student (विद्यार्थी) है। जब बुड्ढे आदमी मेरे पैरों के हाथ लगाते तो वो देखता रहता था। एक दिन मेरे को कहने लगा, आप यह क्या कर रहे हो? अब बेटे को क्या बताऊँ? भगवान् सद्‌बुद्धि तो देता ही है, दिमाग में एक बात

आई। चुम्बक का एक टुकड़ा पड़ा था, पिनों को पकड़ा दिया। पिनों का सारा गुच्छा चुम्बक से चिपक गया, powerful (ताकतवर) चुम्बक था। मैंने बेटे से पूछा, 'यह छूटती क्यों नहीं हैं? इनको कौन पकड़ रहा है? कोई दिखता तो नहीं!' वो बोला, 'ये तो गुरुत्वाकर्षण है।' मैंने कहा, फिर पीतल वाला भी तो metal (धातु) है, वो उससे क्यों नहीं चिपकता? वो जवाब नहीं दे पाया! मैंने कहा बेटा, इसी तरह से positive (सकारात्मक) लोग ही झुक रहे हैं, negative (नकारात्मक) न कभी झुके हैं और न ही कभी झुकेंगे। रावण झुका क्या? कंस झुका क्या? दुर्योधन झुका क्या ? उनका वर्चस्व ज्यादा है, इसलिए वो तो नहीं झुकेंगे।

१६२. हिमोफीलिया ठीक हो गया।

(२२ जनवरी २००९, सूरत)

नागौर में एक आदमी का हिमोफीलिया ठीक हो गया। बीकानेर में एक डॉक्टर हैं, gold medalist (स्वर्ण पदक विजेता) डॉ. अब्दुल अज़ीज़ सुलेमानी, जो अब retired (सेवानिवृत्त) हो गए हैं, उन्होंने कहा कि ये तो नोबेल प्राइज (पुरस्कार) का केस है। मैं उनसे बोला कि मेरी तस्वीर से योग हो रहा है, क्या वो नोबेल प्राइज (के योग्य) नहीं है? लोग बड़ा आश्चर्य करते हैं। (मुझे) दोनों सिद्धियाँ हो गईं इसलिए मेरी तस्वीर से योग हो रहा है।

१६३. न्यूटन का सिद्धांत कहाँ गया?

(२२ जनवरी २००९, सूरत)

जोधपुर रेलवे में मुनेश्वर नाम का टीटी है। सन् १९९७ में उसकी बेटी जो ६ या ७ साल की थी, (ध्यान के दौरान) जमीन से डेढ़ फीट ऊपर उठ जाती थी। अब subtle body (सूक्ष्म शरीर) उठ जाए तो बात समझ में आवे, physical body (भौतिक शरीर) उठ गई। फिर आईंस्टीन और न्यूटन का सिद्धांत कहाँ गया? और यहाँ लोगों के शीर्षासन हो जाता है- दोनों हाथ टिकाकर, बिना किसी सहारे के सिर के बल खड़ा हो जाता है, unbalance (असंतुलित) भी नहीं होता है, दीवार की भी जरूरत नहीं; यहाँ (दीक्षा कार्यक्रम में शीर्षासन) हो जाएगा। हजारों को हो रहा है, आपको भी हो सकता है। इस प्रकार ये जो सारा परिवर्तन आएगा, केवल ईश्वर के नाम जप और ध्यान से आएगा।

१६४. एड्स और कैंसर ठीक हुए

(२९ जनवरी २००९, सूरत)

मेरी बात से विज्ञान बहुत परेशान है। वे कहते हैं, बिना दवाई के रोग ठीक होना कैसे संभव है? मगर मैंने दे दिये results (परिणाम)- हजारों एड्स और कैंसर के नेगेटिव और पोजिटिव के तो अब बोल नहीं सकते हैं। रिपोर्ट्स की कॉपी मनमोहन सिंह जी (पूर्व प्रधानमंत्री) और सोनिया गांधी को भेज दी थी।

१६५. नशा आपको छोड़कर चला जाएगा।

(२९ जनवरी २००९, सूरत)

Seriously (गंभीरता से) जिसने भी नाप जपा, उसने दूसरे दिन आकर कह दिया कि शराब तो छूट गई। अफीम छूटने में थोड़ा पाँच-सात दिन का समय लगता है। जब हेरोइन छूट गई तो फिर ये liquor (शराब) आदि तो बहुत ही मामुली सी बात है। इसलिए आज से ही नाम जप शुरू कर दो, नशा आपको छोड़कर चला जाएगा।

१६६. सही उच्चारण

(२९ जनवरी २००९, सूरत)

संजीवनी मंत्र में 'कृष्ण' के उच्चारण में 'कृ' होना चाहिए, 'क्र' नहीं। 'ई' की मात्रा नहीं लगेगी तो राधा तत्त्व शामिल नहीं होगा और राधा के बिना कृष्ण आधा।

१६७. मेरे गुरु का आदेश

(१९ फरवरी २००९, सूरत)

मेरे गुरुदेव, गंगाईनाथ जी महाराज, नाथ मत के अनुयाई थे। गोरखनाथ जी ने नाथ संप्रदाय को बारह भागों में बाँटा। ग्यारह तो शिव उपासक हैं और एक शक्ति का उपासक है। मेरे गुरुदेव को गंगानाथ नहीं कहते, गंगाईनाथ इसलिए कहते हैं क्योंकि यह 'आईपंथी' हैं। अस्थलभोर (हरियाणा) में इसका headquarter (मुख्यालय) है। मैं उनके आदेश से यह काम करने निकला हूँ।

१६८. चार प्रकार की वाणी

(१९ फरवरी २००९, सूरत)

हमारे दर्शन में चार प्रकार की वाणी होती है- वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति और परा। सारे ग्रन्थ 'परा' वाणी में लिखे गए हैं और हम उन्हें 'वैखरी' में सुना रहे हैं इसीलिए समझ में नहीं आ रहे क्योंकि आदमी उस level (स्थिति) तक चेतन नहीं हुआ है।

१६९. मुझे कौन मानेगा?

(१९ फरवरी २००९, सूरत)

मेरे गुरुदेव ३१ दिसंबर १९८३ को ब्रह्मलीन हुए। वह जाते वक्त आदेश कर गए कि आगे का काम, तेरे को करना है। मैंने कहा, "बाऊ जी! मुझे कौन recognize (मान्यता देना, मानना) करेगा?" उन्होंने कहा, "तेरे को एक सिद्ध आसन दिया है, तू जहाँ भी बैठेगा, बैठ जा।" तब से लागातर ये काम कर रहा हूँ, १९९० से।

१७०. कुण्डलिनी जागरण

(१९ फरवरी २००९, सूरत)

आप लोग जिसको बाहर पूजते हो-राधा कह दो, सीता कह दो, अम्बा कह दो, दुर्गा कह दो, पार्वती कह दो, योगियों ने उसका नाम कुण्डलिनी रख दिया। वह हर स्त्री-पुरुष में, हर मानव में होती है। वह रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से में जिसे sacrum (एक त्रिकोणीय हड्डी) कहते हैं, basement (निम्नतल) में साढ़े तीन आंटे लगा करके, पूँछ को अपने मुँह में दबाकर सोई हुई रहती है। लोग कहते हैं कि इसको जाग्रत करने से आदमी पागल हो जाएगा या मर जाता है; उनकी यह बात ठीक है। हठयोग से ऐसा आप नहीं कर सकते। मगर कोई गुरु समर्थ है और उसको पीछे से अपने गुरु का आदेश है कि अब यह काम तेरे को करना है तो फिर वो नुकसान नहीं करती। वह गुरु उसको control (नियंत्रित) किये हुए रहता है, चाहे वह विश्व के किसी हिस्से में बैठा है और वह ऊर्ध्वगमन करने लगती है, ऊपर उठने लग जाती है।

१७१. नाद

(०५ मार्च २००९, वापी)

ध्यान करने बैठोगे तो योग होगा, चलते-फिरते योग नहीं होगा। पहले तो आँख बंद करके ध्यान करना, बाद में तो खुली आँख से भी ध्यान लग सकता है। आखिर में आपको कान में नाद भी सुनाई देने लग जाएगा- झींगुर की आवाज, चिड़ियों की चहचहाहट, बंसी आदि अपने प्रारब्द्ध कर्म के अनुसार।

१७२. मंत्र जाप लगातार

(०५ मार्च २००९, वापी)

इस प्रकार जब आप नाम जप और ध्यान करोगे, जोर ज्यादा नाम (जप) पर देना। नाम का नशा नहीं आएगा तो ध्यान लगेगा नहीं, समाधि नहीं लगेगी, इसलिए round the clock (हर समय) जपते ही रहो।

१७३. ईसाई दर्शन, वैदिक दर्शन है।

(२६ मार्च २००९, गांधी नगर)

ईसा इजराइल में जाकर दुबारा प्रकट हुआ तो वह वैदिक दर्शन की बात करने लग गया- "Except a man be born again, he cannot see the kingdom of God." (यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।) मैंने कहा- 'Be born again' तो हिन्दू दर्शन है। हाड़मांस के शरीर की रचना करने वाले भौतिक माता-पिता, पहले गुरु और मंत्र दीक्षा देकर द्विज बनाता है, वह दूसरा गुरु। तो यह कहाँ से सीखा? तो वे परेशान हैं। और मैं उनसे कहलवाऊँगा कि- 'जिसको हमने ईसाई दर्शन कहा है, ये ज्ञान भारत से सीखा है तो वास्तव में यह वैदिक दर्शन है, हिन्दू दर्शन है।'- ये मैं उनसे ही कहलवाऊँगा।

१७४. जितना जपोगे उतना ही फायदा होगा।

(२६ मार्च २००९, गांधी नक्षर)

कबीर ने कहा है कि "कबीरा कमाई आपकी, कभी न निष्फल जाय" तो ये नाम (संजीवनी मंत्र) जब आप जपोगे, आपको ही फायदा होगा, दूसरे को नहीं होगा और जितना

ज्यादा नाम जपोगे, उतना ही फायदा होगा।

१७५. संजीवनी मंत्र की शक्ति

(२६ मार्च २००९, गांधी नगर)

अब वो मंत्र बता दूँ। यह बीज मंत्र है। बरगद के पेड़ का बीज, राई के दाने जितना छोटा होता है, लेकिन उसमें क्या यह दिखता है कि यह किलोमीटर तक फैलेगा? इसलिए इस मंत्र की शक्ति का आप अन्दाजा नहीं लगा सकते हैं, क्योंकि यह बीज मंत्र है।

१७६. भगवान् ही विज्ञान है।

(०५ नवम्बर २००९, पाली)

वो अमेरिका वाले कहते हैं कि 'Science is God.' (विज्ञान भगवान् है)। मैंने कहा- नहीं, 'God is science' (भगवान् विज्ञान है) बोलो। भगवान् ने मनुष्य को पैदा किया है, उसने science (विज्ञान) तो बाद मे सीखी है, इसलिए God is science.

१७७. इस साधना से ठीक हो जाओगे।

(०५ नवम्बर २००९, पाली)

आपको यहाँ (आज्ञाचक्र) मेरा ध्यान करना है, professional (व्यावसायिक) गुरु है तो उनको मानते रहिए, कोई बात नहीं है, मगर रोग के लिए मेरे अलावा, जो कोई हनुमान जी के चले जाते हैं, कोई किसी माता जी के चले जाते हैं, नाम जप छोड़ते हैं, मुझसे disconnect (नाता टूटना) हो जाते हैं, case relapse (रोग का फिर से आ जाना) हो जाता है, फिर मैं उसको tackle (संभालता) नहीं करता हूँ। इस रोग को ठीक कराने के लिए किसी भैंरूजी, हनुमान जी या माता जी के मंदिर में नहीं जाइएगा बाकि जो पूजते हो, पूजते रहिए। मैं जो नाम (मंत्र) बताऊँगा, वो जपोगे और मेरा ध्यान यहाँ (आज्ञाचक्र) करोगे, चाहे किसी जाति के हो, किसी वर्ण के हो, इससे ठीक हो जाओगे। ये तो human body (मानव शरीर) में होने वाला बदलाव है।

१७८. आप क्या हो?

(१४ जनवरी २०१०, बैंगलोर)

आप by birth (जन्म से) पूर्ण हो, मैं आपको कुछ नहीं दूँगा। मैं तो अपने आप से आपका परिचय कराऊँगा कि आप क्या हो। आप ये शरीर नहीं हो आप आत्मा हो जो अमर है। देने-लेने की किसी गुरु में सामर्थ्य नहीं है। मुझमें जो विकास हुआ वो गंगाईनाथ जी महाराज के आशीर्वाद से हुआ। वो व्यवहार तो आपको मेरे साथ करना पड़ेगा।

१७९. जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा

(१४ जनवरी २०१०, बैंगलोर)

इस नाम जप से आप चेतन हो जाओगे और समझ में आ जाएगा कि मौत तो एक ऐसा वरदान है, जो जन्म-मरण के चक्र से पीछा छुड़ाता है।

जब आपकी मौत दिख जाएगी तो फिर घबरा जाओगे। फिर आँख बंद करके भगवान् से प्रार्थना करोगे कि मैं तो बेवकूफ था, ये गलती तो हो गई, अब की माफ कर देना तो ये तीसरा नेत्र खुल जाएगा। जिसे भगवान् कहते हो, वो यहाँ (सहस्रार में) है, पलक उलटते ही उसके दर्शन हो जाएँगे; उस परमसत्ता से साक्षात्कार हो जाएगा। जब भगवान् के दर्शन हो जाएंगे तो फिर दूसरा जन्म क्यों लोगे?

१८०. आध्यात्मिक ज्ञान

(१४ अप्रेल २०११, अहमदाबाद)

यह धन (आध्यात्मिक ज्ञान) ऐसा है, जो कमाता है, उसी के खाते में जाता है। इसकी entry transfer (प्रवेश स्थानांतरण) नहीं होती।

१८१. भारत का विभाजन खत्म होगा।

(१४ अप्रेल २०११, अहमदाबाद)

महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी है कि यह जो विभाजन है (भारत का), यह खत्म होगा, नहीं तो भारत और भी कमजोर हो जाएगा। Partition must and will go. (विभाजन तो समाप्त होकर ही रहेगा) आप जानते हो partition (विभाजन) जो हो गया

उसको खत्म होने में कितना भयंकर time (समय) लगेगा और कितना खून खराबा होगा? अरविन्द ने इसको स्पष्ट कहा है, मगर वो तो होगा।

१८२. दिव्य वाणी में मंत्र दीक्षा

(०३ जुलाई २०१२, जोधपुर)

मेरी तस्वीर के सामने, मेरी आवाज में मंत्र सुन कर दीक्षा पूरी हो जाती है क्योंकि मैं 'कल्कि' हूँ।

१८३. श्री कृष्ण की बंसी और कल्कि अवतार

(०३ जुलाई २०१२, जोधपुर)

ध्यान में मालूम हुआ, एक लड़का १८-१९ साल का, श्याम रंग का, वो मेरे पास आया और मेरे को कहने लगा, 'आप इस बंसी को बजाओ'; मैंने कहा, मुझे बजानी नहीं आती है। बंसी मेरे हाथ में पकड़ाई और गायब हो गया। फिर मैं श्री गंगाईनाथ जी के पास गया और तब से मैं राधा और कृष्ण के नाम की दीक्षा देने लग गया। कृष्ण नौवें अवतार थे। हमारे धर्म में दसवाँ अवतार आखिरी अवतार होता है। कृष्ण बंसी देकर चला गया और मुझे तो फँसा गया। आगे यह काम मेरे को करना है। इसलिए मैं कल्कि हूँ, दसवाँ अवतार हूँ। इसके बाद में कोई अवतार नहीं आएगा। हजार साल का सतयुग आएगा।

१८४. रहस्य की बात

(०३ जुलाई २०१२, जोधपुर)

महर्षि अरविन्द ने जो लिखा, वो मेरे बारे में लिखा। मैं आपको साफ बताऊँ कि महर्षि अरविन्द ने जो लिखा वो १०० प्रतिशत मेरे लिए लिखा।

१८५. समर्पण

(०३ जुलाई २०१२, जोधपुर)

गुरु सिर्फ समर्पण चाहता है और गुरु को कुछ नहीं चाहिए।
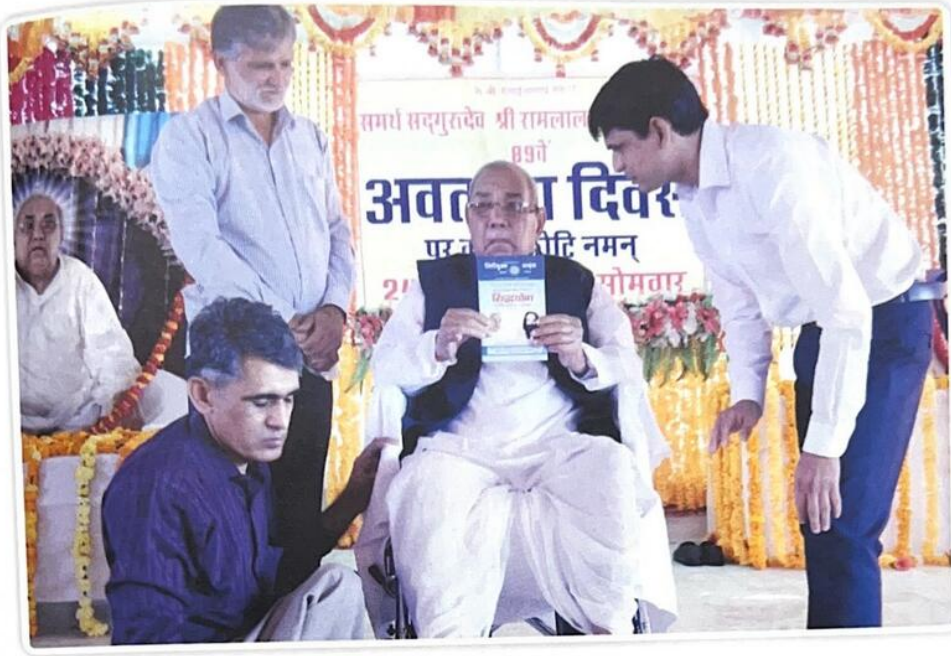
२४ नवम्बर २०१४, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
अवतरण दिवस समारोह।

३१ जुलाई २०१५, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

२४ नवम्बर २०१५, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
अवतरण दिवस समारोह।

१९ जुलाई २०१६, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

२४ नवम्बर २०१६, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान
अवतरण दिवस समारोह।

कृष्ण और कल्कि अवतार

१३२.

श्री कृष्ण सिद्धि

(प्रस्तुत लेख गुरुदेव के जीवन से सम्बंधित है। इसे गुरुदेव ने अपने एक शिष्य को माखिक रूप से बताया था।)

०१ जनवरी १९६९ को गुरुदेव को गायत्री सिद्धि प्राप्त हुई। इसके कुछ समय पश्चात् गुरुदेव को ब्रह्ममुहूर्त में भगवान् श्री कृष्ण के नाम का जप करने का आदेश मिला। तब गुरुदेव ने भगवान् श्री कृष्ण का नाम जपना प्रारम्भ कर दिया।

कुछ समय बाद उनको बद्रीनाथ जाने की इच्छा हुई। बद्रीनाथ धाम जाकर गुरुदेव ने भगवान् से प्रार्थना की तो ध्यानावस्था में बद्रीनाथ जी ने कहा कि- "मेरे पास जो कुछ है, वह तो मैं मोहनलाल (श्री कृष्ण) से लाया हूँ। अतः आप वृन्दावन या मथुरा जाओ।" गुरुदेव ने जब वृन्दावन जाकर करुण प्रार्थना की तो भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि- "यहाँ तो मैं ग्वाला था, आप द्वारिका जाओ, वहाँ पर मैं द्वारिकाधीश था। वहाँ से जो आप माँगोगे, वही मिल जाएगा।"

गुरुदेव ने तंग आकर कहा कि देना है तो दे दे, फालतू के बहाने क्यों बनाता है? इसके बाद गुरुदेव ने देखा कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हुए पास में आ गए तथा गुरुदेव से कहा कि आप भी बाँसुरी बजाओ। गुरुदेव ने कहा कि मुझे बाँसुरी बजानी नहीं आती है। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं आपको बाँसुरी बजाना सिखा दूँगा, ऐसे कहते हुए बाँसुरी गुरुदेव के हाथ में रख दी तथा भगवान् श्रीकृष्ण अदृश्य हो गए। इसके बाद गुरुदेव कई बार द्वारिका जाकर आए। यात्रा के प्रत्येक दौर में भगवान् श्री कृष्ण दर्शन देते तथा कहते कि तेरी आराधना के पूर्ण होने पर जो तू माँगेगा, वही तुझे मिलेगा। सन् १९८४ में द्वारिका की अंतिम यात्रा पर श्रीकृष्ण ने गुरुदेव को दर्शन दिये तथा कहा कि आज मेरी सारी दिव्य शक्ति, मैं आपको देता हूँ। अब यहाँ मेरे पास वापस आने की व मेरे से माँगने की जरूरत नहीं है तथा जब आपकी कुण्डली के तुला राशि का चन्द्रमा उच्च राशि में आएगा, तब मैं आपको धन और सारे भौतिक सुख स्वतः ही दे दूँगा। गुरुदेव कहते हैं कि श्री कृष्ण के दर्शन के बाद मुझे श्री कृष्ण की सिद्धि हो गई।

एक दिन गुरुदेव ने ध्यान में देखा कि वह एक अद्भुत सागर के किनारे पहुँच गए हैं। पुराणों में सुमेरू पर्वत का वर्णन आता है, वैसा ही पहाड़ गुरुदेव ने देखा जिसके पास एक नाव

डोरी से बंधी हुई खड़ी थी। फिर गुरुदेव को वह नाव अपने पास आती हुई दिखाई दी। उस नाव के अंदर एक नव-दस मास का अति सुंदर बालक सोया हुआ दिखाई दिया। उसका चेहरा अतिसुंदर, अद्‌भुत और प्रकाशमय था।
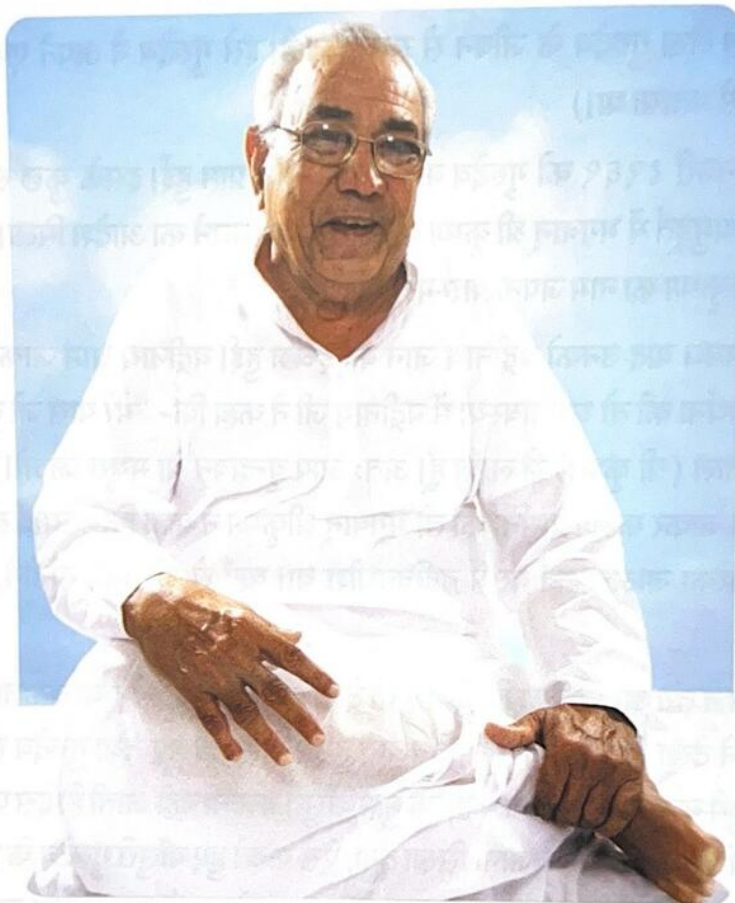
जब गुरुदेव ने ध्यान से देखा तो बालक रूप में श्री कृष्ण सोये हुए दिखाई दिये। बालक रूपी श्रीकृष्ण ने गुरुदेव के पास आकर कहा कि मैं पृथ्वीलोक पर श्री कृष्ण रूप में रहता हूँ परन्तु दिव्यलोक में, मैं इसी बालक रूप में रहता हूँ। अब इसके बाद श्रीकृष्ण के दर्शन पूरे हुए। गुरुदेव कहते हैं कि श्री कृष्ण की शक्ति, हर समय उनके साथ रहती है तथा हर कार्य को बखूबी पूरा करती है।
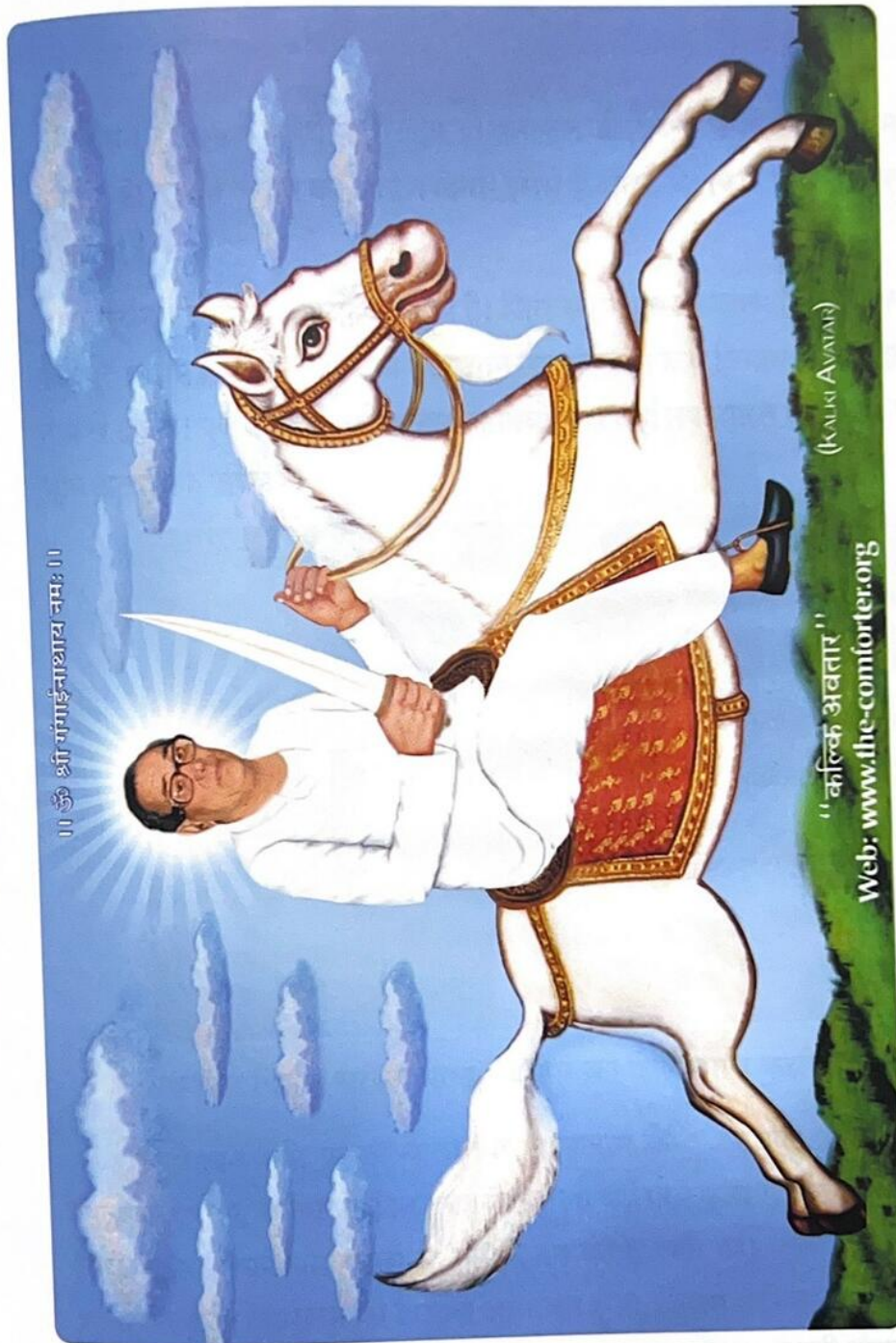
।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।
''कल्कि अवतार''
(KALKI AVATAR)
Web: www.the-comforter.org

कल्कि अवतार

१३३.
आश्रम में कल्कि अवतार की तस्वीर

(सन् २००५ में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने जोधपुर आश्रम में कल्कि अवतार की तस्वीर लगाने का आदेश दिया। इससे संबंधित विशेष जानकारी प्रस्तुत लेख में दी जा रही है।)

सूर्यनगरी जोधपुर नाथों की भूमि है। जिस स्थान पर अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम स्थित है, वह स्थान राजस्थान सरकार के राजस्व विभाग में 'नाथद्वारा' गाँव के नाम से दर्ज है। पूर्व काल में अनेक नाथ ऋषियों द्वारा यहाँ तपस्यारत होने के कारण से यह भूमि अत्यधिक पवित्र है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर का शिलान्यास करते हुए गुरुदेव।

इस पावन भूमि पर अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम की नींव, ९ सितम्बर १९९९, गुरुवार के दिन सुबह करीब १० बजे परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा अपने करकमलों से भूमि पूजन करके रखी गई। उसी दिन शाम को यहाँ शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम का विशाल आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते हुए, काफी संघर्ष के बाद सन् २००२ के अंत में यह आश्रम बनकर तैयार हुआ।

सन् २००३-२००४ की बात है, जब एक दिन गुरुदेव ने एक कागज पर कुछ विशेष बातें लिखकर साधक श्री सांगाराम जी को दीं और कहा कि इस कागज में लिखी हुई सभी बातें आश्रम के ध्यान-कक्ष की दीवारों पर लिखवा दो। गुरुदेव के आदेशानुसार पेंटर को बुलवाकर वह सभी बातें ध्यान-कक्ष की दीवारों पर लिखवा दी गईं जो कि आज भी मौजूद हैं।

ध्यान-कक्ष में गुरुदेव के मुख्य आसन के बिलकुल सामने, जहाँ से इस ध्यान-कक्ष में घुसने का दरवाजा है, उस दरवाजे के ऊपर खाली जगह रह गई थी। गुरुदेव जब भी ध्यान-कक्ष में आते थे तब दीवारों पर लिखी बातों को पढ़ते थे। एक दिन श्री सांगाराम जी ने मन में सोचा कि खाली जगह पर विराट स्वरूप का चित्र लगवा दिया जाए। मन में ऐसा विचार आने पर उन्होंने गुरुदेव से पूछा, "गुरुदेव आपकी आज्ञा हो तो इस खाली जगह पर विराट स्वरूप का चित्र बनवाकर लगा दें?" गुरुदेव ने मना कर दिया और कहा कि अभी इस जगह को खाली ही रहने दो। गुरुदेव के आदेशानुसार उस जगह को खाली ही छोड़ दिया गया।

वर्ष २००४-२००५ की बात है जब गुरुदेव अपने पैतृक गाँव पलाना स्थित अपने घर पर विराजमान थे। एक दिन गुरुदेव के कहने पर जोधपुर आश्रम से श्री सांगाराम जी पलाना स्थित गुरुदेव के घर पर उनसे मिलने गए। गुरुदेव ने उनसे कुछ चर्चा करते हुए अचानक कहा कि जोधपुर आश्रम में मंच के सामने, दरवाजे के ऊपर जो खाली जगह छोड़ी हुई है, जिसके लिए आपने मुझसे पूछा था कि क्या यहाँ विराट स्वरूप का चित्र लगा दें, वहाँ पर कल्कि अवतार का चित्र बनवाकर लगा दो और कहा कि उड़ते हुए सफेद घोड़े पर, सफेद वस्त्रों में व्यक्ति जिसके हाथ में दुधारी नंगी तलवार हो, बना दो। फिर कहा कि उस व्यक्ति की जगह मेरा चित्र बना दो, दुधारी नंगी तलवार हाथ में लिए हुए। गुरुदेव का आदेश पाकर वो वापस जोधपुर आश्रम आए और पेंटर को बुलवाकर कार्य शुरू करवाया गया। गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार उस पेंटर ने कल्कि अवतार का चित्र बना दिया जिसे गुरुदेव के गाँव से वापस आश्रम आने से पूर्व उस खाली स्थान पर लगवा दिया गया।

जब गुरुदेव वापस आश्रम पधारे तब ध्यान-कक्ष में कल्कि अवतार के उस चित्र को निहारते हुए उन्होंने कहा - 'हाँ! यह बिलकुल ठीक है, मैं ही कल्कि अवतार हूँ।'

फिर गुरुदेव ने श्री अरविंद की किताब से एक उद्धरण निकालकर चित्र के नीचे लिखने को कहा। गुरुदेव के आदेशानुसार वह उद्धरण कल्कि अवतार की तस्वीर के नीचे पेंटर को बुलवाकर लिखवा दिया गया। वह उद्धरण इस प्रकार है- "एकमात्र कल्कि की तलवार ही पृथ्वी को एक उद्दण्ड आसुरी मानवता के भार से पवित्र कर सकती है।"

आश्रम में कल्कि अवतार की तस्वीर लग जाने के कुछ महीनों पश्चात श्री सांगाराम जी के मन में गुरुदेव के कल्कि अवतार होने को लेकर शंका होने लगी। उस समय वह बहुत लम्बे समय से अपने गृहस्थी के कार्यों में व्यस्त होने के कारण ज्यादा समय अपने परिवार के साथ गाँव में ही व्यतीत कर रहे थे। मन में उठी उसी शंका के साथ एक दिन वो अनायास ही आश्रम पहुँचे। उस समय गुरुदेव आश्रम के कार्यालय में विराजमान थे। गुरुदेव को प्रणाम करके वह उनके सामने बैठ गए। उनके बैठते ही गुरुदेव ने अपनी तरफ इशारा करते हुए उनसे कहा - 'मैं कल्कि अवतार हूँ।'

(अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर)

कल्कि अवतार का वह चित्र आज भी जोधपुर आश्रम के ध्यान-कक्ष में उसी स्थान पर लगा हुआ है।

सामान्य जानकारी

सामान्य जानकारी

ऊँ (अ ऊ म) अर्थात् ईश्वर जो सृष्टि उत्पति का कारण है।

वसुधैव कुटुम्बकम्- सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।

सोअहम्- मैं वही हूँ।

तत्त्वमसि- तू वही है।

सर्वं खल्विदं ब्रह्म- सब कुछ उस एक ही परमसत्ता का विराट स्वरूप है।

विद्या के दो प्रकार- अपरा व परा

समाधि के दो प्रकार- सबीज (सविकल्प, सम्प्रज्ञात) और निर्बीज (निर्विकल्प, असम्प्रज्ञात)

आराधना के दो प्रकार- बहिर्मुखी और अंतर्मुखी

माया के तीन लोक- भूलोक, द्युलोक, पाताललोक

मायातीत तीन लोक- सत्लोक, अलखलोक, अगमलोक

तीन बन्ध- मूलाधार, उड़ियान, जालंधर।

तीन ग्रंथि- ब्रह्म ग्रंथि, विष्णु ग्रंथि व रूद्र ग्रंथि

तीन गुण- सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण

तीन अग्नि- जड़ अग्नि(साधारण अग्नि), विद्युत अग्नि और सौर अग्नि (सूर्य संबंधी या वैदिक अग्नि)

त्रिविध ताप- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक

तीन बल- जनबल, धनबल व मनबल

चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

चार आश्रम- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास

चार युग- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग

चार वेद- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वेद

चार प्रकार की वाणी- वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति व परा।

पाँच तत्त्व और उनकी तन्मात्रा- आकाश (शब्द), वायु (स्पर्श), अग्नि (रूप), जल (स्वाद) व पृथ्वी (गंध)

पाँच वायु- प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान।

पंच कर्मेन्द्रियाँ- मुँह, हाथ, पैर, लिंग व गुदा।

पंच ज्ञानेन्द्रियाँ- आँख, कान, जिह्वा, नाक व त्वचा

ईश्वर के पंचकृत्य- सृष्टि, स्थिति, लय, तिरोधान एवं अनुग्रह

सात चक्र-मूलाधार, स्वाधिष्ठन, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञाचक्र व सहस्रार।

सात कोश- अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश, आनन्दमयकोश, चित्मयकोश और सत्मयकोश।

अष्टंग योग- यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान और समाधि।

आठ सिद्धियाँ- अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व व ईशित्व।

नाम खुमारी व नाम अमल का अर्थ- ईश्वर के नाम जप से उत्पन होने वाला नशा।

दस अवतार- मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, मनु, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण और कल्कि।

शरद नवरात्रि- यह हिन्दू महीने के आश्विन (आसोज) के शुक्ल पक्ष की एकम से नवमी तक होता है। सद्गुरुदेव सियाग ने १९६८ की शरद नवरात्रि में गायत्री मंत्र की आराधना शुरू की थी और १ जनवरी १९६९ को उन्हें निर्गुण निराकार (गायत्री) की सिद्धि हो गई।

गुरुदेव के अवतरण के संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने २९ अक्टूबर १९३५ को घोषणा की- "२४ नवम्बर १९२६ को भौतिक सत्ता में श्रीकृष्ण के अवतरण का दिन था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ होगा विज्ञान और आनंद के अवतरण को तैयार करनेवाले अधिमानसिक भगवान् का अवतरण, स्वयं विज्ञान और आनंद का अवतरण नहीं। श्रीकृष्ण आनंदमय हैं; वे अधिमानस के द्वारा विकासक्रम में सहायता पहुँचाते हैं और इसे आनंद की ओर ले जाते हैं।" (संदर्भ-

श्री अरविन्द सोसायटी, पाण्डिचेरी से प्रकाशित महर्षि श्री अरविन्द द्वारा लिखित पुस्तक 'अपने विषय में' के पृष्ठ-१५० पर।)

कल्कि अवतार-'एकमात्र कल्कि की तलवार ही पृथ्वी को एक उद्दण्ड आसुरी मानवता के भार से मुक्त कर सकती है।' -महर्षि श्री अरविन्द (संदर्भ- मीरा अदिति सेंन्टर, मैसूर (कर्नाटक) से प्रकाशित 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक के पृष्ठ-१५८ पर।)

सिद्धयोग

ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी तेज शक्ति का पुंज है। गुरु उस तार का नाम है जो उस पुंज से जुड़ा हुआ है। अगर आपका सम्बन्ध उस तार से हो जाता है तो आपके अन्दर तत्काल प्रकाश प्रकट हो जाएगा। उस चेतन गुरु का दिया हुआ शब्द तत्काल आपके अन्दर प्रकाश पैदा कर देगा।

शक्तिपात दीक्षा में साधक को विभिन्न यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम अपने आप होने लगते हैं। इन सभी यौगिक क्रियाओं में साधक का सहयोग या असहयोग कुछ भी कार्य नहीं करता है। साधक तो आज्ञाचक्र पर ध्यान करते हुए गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र का जप करता रहता है। सभी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ, वह जाग्रत शक्ति (कुण्डलिनी) सीधा अपने नियन्त्रण में स्वयं करवाती है। भौतिक विज्ञान को यह खुली चुनौती है।

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
पता- होटल लेरिया के पास
चौपासनी, जोधपुर, राजस्थान, भारत- 342001
फोन- +91 291 2753699, +91 9784742595
ईमेल- avsk@the-comforter.org
वेबसाइट- www.the-comforter.org

ISBN: 9788197530630